नबियों के किस्से

लेखक

सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह.)

(मौलाना अली मियाँ)

अनुवादक

सय्यद अहमद अली नदवी

अनुवादक के क़लम से

मेरी दिली ख़्वाहिश थी कि मैं हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी की अरबी में लिखी "क़ससुन नबीय्यीन" नामक किताब का हिन्दी में तर्जुमा करूँ।

मैंने इस काम को करने का इरादा तो कर लिया लेकिन तर्जुमा करने का तरीक़ा न जानने और उसका अनुभव न होने के कारण मेरा इरादा कमज़ोर पड़ने लगा। मगर मेरे बुज़ुर्ग और मेरा सही मार्गदर्शन करने वाले मौलाना सैय्यद राबे नदवी तथा मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद नदवी ने मेरी हिम्मत बढ़ाई और मैंने अल्लाह का नाम लेकर इस काम को शुरू कर दिया।

इस काम को आगे बढ़ाने में मेरे हमदर्द साथियों ने मेरी हर प्रकार से सहायता की, आज मैं इस किताब का पहला भाग जिसमें हज़रत इब्राहीम अ० और हज़रत यूसुफ अ० के क़िस्से हैं, पेश करने के क़ाबिल हुआ।

इस पर मैं अल्लाह का जितना भी शुक्र करूं कम है। यह काम केवल उसी के फज़ल से पूरा हो सका है।

मैं विशेषकर अपने मित्र सैय्यद इब्राहीम हसनी जो मेरे बहनोई भी हैं, का बेहद मशकूर हूँ, जिनके सहयोग से यह काम पूरा हुआ। मैं मौलवी रहमान नकवी तथा मास्टर खुर्शीद का भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने Proof Reading में मेरी मदद की। मैं अपने दोनों भतीजों सैय्यद हसन मुसन्ना व सैय्यद सोहेल हसनी का भी ममनून हूँ जिन्होंने Computer Typing & Composing का काम किया। अल्लाह ताला इन सब हज़रात को अच्छा बदला दें।

अनुवादक
सैय्यद अहमद अली

मूर्तियों को किसने तोड़ा ?

मूर्तियों का बेचने वाला

बहुत समय पूर्व एक गाँव में एक प्रसिद्ध आदमी था। उसका नाम आजर था। आज़र मूर्तियों का व्यापार करता था। इस गाँव में बहुत बड़ा घर था और इस घर में बहुत सी मूर्तियाँ थीं। लोग इन मूर्तियों की पूजा करते थे। आज़र भी इन मूर्तियों को पूजता था।

आज़र का बेटा

आज़र का एक नेक और शरीफ़ लड़का था। उसका नाम इब्राहीम था। इब्राहीम लोगों को मूर्तियों की पूजा और सजदा करते देखते थे। इब्राहीम यह भली प्रकार जानते थे कि यह मूर्तियाँ पत्थर की हैं। वह यह भी जानते थे कि यह मूर्तियाँ सुनती और बोलती नहीं हैं। यह न तो किसी को लाभ पहुँचा सकती हैं और न ही हानि। वह देखते थे कि यदि कोई मक्खी भी उन पर बैठ जाये तो वह उसको भगा नहीं सकती। वह यह भी

देखते थे कि यदि कोई चूहा उनका खाना खाने लगे तो वह उसको भी भगा नहीं सकती हैं। इब्राहीम अपने मन में सोचा करते थे कि फिर भी लोग मूर्तियों को सजदा क्यों करते हैं और इनसे क्यों माँगते हैं?

इब्राहीम का उपदेश

इब्राहीम अपने पिता से कहते थे कि :– ऐ पिताजी! आप इन मूर्तियों की पूजा क्यों करते हैं? ऐ पिताजी! आप इनको सजदा क्यों करते हैं? ऐ पिताजी! आप इन मूर्तियों से माँगते क्यों हैं? यह मूर्तियाँ न तो बात करती हैं और न आप की बात सुनती हैं। यह मूर्तियाँ न तो कोई लाभ पहुँचाती हैं और न ही कोई हानि। इनका हाल तो यह है कि अगर इनके सामने आप खाने पीने की वस्तु रख दें तो यह उसको न खाती है न पीती है।

आज़र इन बातों से क्रोधित हो जाता था। परन्तु इब्राहीम अपनी क़ौम को उपदेश देते रहते थे। इब्राहीम के उपदेशों से जनता बड़ी क्रोधित होती थी और समझती न थी। एक दिन इब्राहीम ने दिल में इरादा किया कि जब यह लोग चले जायेंगे, उस समय मैं इनकी मूर्तियों को तोड़ दूँगा। तब इन लोगों की समझ में बात आयेगी।

इब्राहीम अ० मूर्तियों को तोड़ते हैं

ईद का दिन आया और लोग खुशी मनाने लगे। ईद की खुशी मनाने के लिये लोग निकले बच्चे भी निकले,

इब्राहीम के वालिद भी निकले और इब्राहीम अ0 से कहा "क्या तुम हमारे साथ नहीं चल रहे हो?" इब्राहीम अ0 ने कहा कि मैं बीमार हूँ। इब्राहीम के अतिरिक्त सभी लोग त्योहार मनाने अपने घरों से चले गये। इब्राहीम अ0 लोगों के चले जाने के बाद मूर्तियों के पास आये और उनसे कहने लगे कि :– "क्यो भाई तुम बोलते क्यो नहीं सुनते क्यों नहीं हो? यह तुम्हारे सामने खाने–पीने का सामान रखा हुआ है उसको खाते–पीते क्यों नहीं हो?" मगर वह मूर्तियाँ तो पत्थर थीं और पत्थर बोलते नहीं हैं। इब्राहीम ने मूर्तियों से कहा "तुम बोलती क्यों नहीं हो? मूर्तियाँ चुप रही और नहीं बोली इब्राहीम अ0 को गुस्सा आ गया। उन्होंने कुल्हाड़ी हाथ में ली और मूर्तियों को तोड़ डाला मगर एक बड़ी मूर्ति को छोड़ दिया और कुल्हाड़ी उसकी गरदन पर लटका दी।

यह किसने किया?

त्योहार मनाने के बाद लोग घरों को वापस आ गये तथा बुत ख़ाने गये। मूर्तियों को जब सजदा करने का इरादा किया कि ईद का दिन था तो उनको टूटा हुआ पाकर दंग रह गये और डर भी गये तथा क्रोध में चीख़ कर बोले कि हमारे उपासको के साथ किसने यह व्यवहार किया है? उनमें से कुछ लोगों ने कहा कि यह काम केवल इब्राहीम का ही हो सकता है। वे सब इब्रहीम अ0 के पास आये और पूछा "ऐ इब्राहीम क्या तुमने हमारे

देवताओं के साथ दुर्व्यवहार किया है?" इब्राहीम अ० ने उत्तर दिया "तुम लोग उनसे क्यों नहीं पूछ लेते यदि वे बोल सकते हों? मेरा ख़्याल तो यह है कि उनमें से जो सबसे बड़ा है उसी ने यह सब किया है।" वे सब यह जानते थे कि मूर्तियाँ पत्थर की हैं और पत्थर बोलता नहीं है। बड़ी मूर्ती भी पत्थर की है तथा उसमें चलने फिरने की ताक़त नहीं है। वह कहीं मूर्तियों को तोड़ सकती है? उन सब ने इब्राहीम अ० से कहा "ऐ इब्राहीम तुम तो जानते हो हो कि यह मूर्तियाँ बोलने की शक्ति नहीं रखतीं।"

इब्राहीम अ० ने कहा फिर कैसे तुम लोग मूर्तियों को पूजते हो जब कि वह न लाभ पहुँचा सकती हैं न हानि?

तुम लोग कैसे मूर्तियों से अपनी आवश्यकता माँगते हो जब कि वह न बोल सकती हैं न सुन सकती हैं?

क्या तुम लोग कुछ भी नहीं समझते और कुछ भी बुद्धि नहीं रखते? लोग चुप रहे और लज्जित हुए।

वह सब एक स्थान पर जमा हुए और बोले अब हमें क्या करना चाहिये? इब्राहीम ने हमारी मूर्तियों को तोड़ा है और हमारे उपास्यों का अपमान किया है। उसको इसका दण्ड अवश्य मिलना चाहिये। तुम लोग बताओ कि उसको क्या दण्ड दिया जाये? सब बोल पड़े कि इब्राहीम ने हमारे उपास्यों का अपमान किया उसको जलती आग में डाल दिया जाये और अपने देवताओं की सहायता की जाए। उन्होंने अलाव जलाया और इब्राहीम अ० को उसमें डाल

दिया। लेकिन अल्लाह ने इब्राहीम अ० की सहायता की और आग को ठंडा होने का आदेश दिया। आग ठंडी हो गयी और इब्राहीम अ० को जलने से सुरक्षित रखा। जब लोगों ने देखा कि आग इब्राहीम अ० को जला नहीं रही है और वह तो उसमें खुश और सुरक्षित हैं तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और डर भी लगा।

मेरा रब कौन है?

एक रात इब्राहीम अ० ने तारा देखा और कहने लगे कि यह मेरा रब है। जब वह तारा ग़ायब हो गया और डूब गया तो कहा कि यह मेरा रब नहीं हो सकता। उसके बाद चाँद को देखा तो कहने लगे कि यह मेरा रब है। उसके डूबने पर बोले कि यह भी मेरा रब नहीं है। प्रातः जब सूर्य को देखा तो बोले कि यह मेरा रब है। यह बड़ा भी है और ज्यादा रौशन भी है। जब रात आयी और सूर्य अस्त हो गया तो इब्राहीम अ० बोल उठे कि यह भी मेरा रब नहीं हो सकता। अल्लाह तो ज़िन्दा है उसको मौत नहीं आ सकती। अल्लाह सदैव बाक़ी रहने वाला है। वह ग़ायब नही हो सकता। अल्लाह बड़ा बलवान और शक्तिशाली है उस पर कोई चीज़ ग़ालिब नहीं आ सकती।

तारा कमज़ोर है उस पर सुबह ग़ालिब आ गई। चाँद कमज़ोर है उस पर सूर्य ग़ालिब आ गया। सूर्य कमज़ोर है उस पर रात और बादल ग़ालिब आ गये। यह सब कमज़ोर हैं। ये मेरी मदद (सहायता) नहीं कर सकते।

मेरी मदद तो अल्लाह ही कर सकता है जो ज़िन्दा है, मरेगा नहीं और सदैव रहेगा। वह ग़ायब नहीं होगा। वह बलवान और शक्तिशाली है। उस पर कोई भी वस्तु ग़ालिब नहीं आ सकती है।

मेरा रब (परवरदिगार) अल्लाह है

इब्राहीम अ० ने जान लिया कि उनका रब अल्लाह है क्योंकि वह हमेशा ज़िन्दा रहेगा। उसको मौत नहीं आयेगी। वह सदैव रहने वाला है वह ग़ायब नहीं हो सकता। इब्राहीम ने जान लिया कि अल्लाह ही चाँद, सूरज तथा सितारों का रब है और वही सारे जहान का रब है। अल्लाह ने इब्राहीम को सीधा मार्ग दिखाया। उनको नबी और अपना दोस्त बनाया और उनको आदेश दिये कि वह अपने समाज को नेकी का पाठ पढ़ायें और उनको मूर्ति पूजा से रोकें।

इब्राहीम अ० के उपदेश

इब्राहीम अ० ने समाज को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और उनको मूर्तिपूजा से रोका। इब्राहीम अ० ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम किसकी पूजा करते हो? क़ौम बोली "हम तो मूर्तियों को पूजते हैं।" इब्राहीम अ० ने कहा "ऐ मूर्खों ऐसी चीज़ की पूजा क्यों करते हो क्या जब तुम उन को पुकारते हो तो वह तुम्हारी पुकार सुनते या वह तुम को लाभ या हानि पहुँचा सकते हैं? वह कहने लगे कि ऐ

इब्राहीम! हमने तो अपने बाप दादा को मूर्ति पूजा करते हुए पाया है। इब्राहीम अ० ने कहा कि मैं तो इन मूर्तियों की पूजा नहीं कर सकता। मैं तो मूर्तियों का दुश्मन हूँ। मैं तो उस रब की इबादत करता हूँ जो सारी दुनिया का मालिक है। उसने मुझे पैदा किया वही मुझे रास्ता दिखाता है। वही मुझे खिलाता है। जब भी मैं बीमार होता हूँ वही मुझे ठीक करता है। वही मुझे मारेगा और फिर ज़िन्दा करेगा। यह पत्थर (मूर्ति) हैं। निःसंदेह मूर्तियाँ न किसी को पैदा कर सकती हैं न सत्मार्ग दिखा सकती है न किसी को खिला सकती हैं न पिला सकती हैं जब कोई बीमार हुआ तो उस को अच्छा भी नहीं कर सकतीं न यह किसी को मार सकती न जिला सकती है।

बादशाह के सामने

शहर में एक ज़ालिम बादशाह था। जनता उसको सजदा करती थी। उसने सुना कि इब्राहीम केवल अल्लाह को सजदा करता है। किसी दूसरे को सजदा करने से इन्कार करता है तो बादशाह को बहुत गुस्सा आया और इब्राहीम अ० को बुलवाया। उसके बुलाने पर इब्राहीम अ० उसके पास पहुँचे। इब्राहीम अल्लाह के अलावा किसी से नहीं डरते थे। इब्राहीम अ० आये तो बादशाह ने पूछा। इब्राहीम तुम्हारा खुदा कौन है? इब्राहीम अ० ने जवाब दिया कि मेरा खुदा अल्लाह है। बादशाह बोला कौन अल्लाह? इब्राहीम ने उत्तर दिया वह अल्लाह जो मारता

है और जिलाता है। बादशाह ने कहा कि मैं भी मार सकता हूँ और जिला सकता हूँ। बादशाह ने उन्हीं के सामने दो आदमियों को बुलवाया। एक को क़त्ल करवा दिया और दूसरे को छोड़ दिया और कहने लगा कि देखा तुमने! मैंने एक को मार दिया और दूसरे को छोड़ दिया। इब्राहीम ने सोचा बादशाह बड़ा मूर्ख हैं। इब्राहीम अ0 ने इरादा किया बादशाह और क़ौम को समझाएं। इब्राहीम ने उससे कहा कि मेरा अल्लाह तो सूरज को मशरिक़ (पूरब) से निकालता है तुम ज़रा उसको मग़रिब (पश्चिम) से निकाल कर दिखाओ। इस प्रश्न पर बादशाह को हैरत (आश्चर्य) हुई और वह खामोश हो गया। वह कोई उत्तर नहीं दे सका।

पिता को उपदेश

अब इब्राहीम अ0 ने अपने पिता को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और उनसे कहा कि ऐ पिताजी! "आप ऐसी वस्तु की पूजा क्यों करते हैं जो न देख सकती हैं और न ही सुन सकती हैं। आप उसकी पूजा क्यों करते हैं जो आपको कभी कोई लाभ व हानि नहीं पहुँचा सकती। ऐ पिताजी! शैतान की इबादत मत करो अल्लाह की इबादत करो।" इस बात पर पिता (आज़र) को उन पर बहुत गुस्सा आया और इब्राहीम अ0 से कहा कि तुम मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो और अब मुझसे एक भी शब्द इस विषय में मत कहना। नहीं तो मैं तुम्हें मारूंगा। इब्राहीम बड़े

क्षमाकारी थे पिता की बात का बुरा नहीं माना। बस उनसे कहा रुखसती का सलाम लो मैं आपकी इच्छानुसार यहाँ से चला जाउँगा और अपने रब से दुआ करूंगा। इब्राहीम को बहुत दुःख हुआ उन्होंने इरादा किया किसी दूसरे मुल्क चले जाएं और अपने रब की इबादत करें और लोगों को अल्लाह की ओर बुलाएं।

नाराज हो गये तो

जब इब्राहीम अ० बादशाह, समाज तथा पिता से निराश हो गये तो उन्होंने किसी दूसरे शहर जाने का निश्चय कर लिया जहाँ वह अल्लाह की इबादत कर सकें और लोगों को उसकी तरफ़ बुलायें। इब्राहीम अ० ने अपनी पत्नी हाजिरा के साथ अपने पिता और शहर को अलविदा कहा और मक्का जाने का निर्णय किया। मक्का धरती का वह हिस्सा था जहाँ पानी के लिये न तो कुँआ था और न ही कोई नहर। इसी कारण वहाँ घास और वृक्ष नहीं थे। उस स्थान पर न तो कोई मनुष्य था और न ही कोई जानवर। इब्राहीम अ० ने यहाँ अपनी पत्नि हाजिरा तथा पुत्र इस्माईल के साथ पड़ाव किया। जब वह इन दोनों को छोड़ कर जाने लगे तो हाजिरा ने उनसे कहा कि "ऐ मेरे सरदार हमको यहाँ छोड़ कर आप कहाँ जा रहे हैं। आप को मालूम है कि इस स्थान पर खाने को खाना नहीं है, और न पीने को पानी हमें इस हाल में छोड़कर जाने का क्या अल्लाह ने आप को

आदेश दिया है।" इब्राहीम अ0 ने कहा हां! हाजिरा ने कहा यदि यह अल्लाह का आदेश है तो हमें कोई चिन्ता नहीं है। अल्लाह ही हमारी रक्षा करेगा।

ज़म–ज़म का कुआँ

इब्राहीम अ0 के पुत्र इस्माईल अ0 को प्यास लगी। उनकी माता ने उनके पानी पिलाना चाहा मगर उस जगह न कोई नहर थी और न ही कोई कुआँ कि वह उनको वहाँ से पानी पिलातीं। पानी के लिये परेशान सफ़ा से मरवा और मरवा से सफा तक दौड़ती रहीं अल्लाह ने उनकी सहायता की और धरती से पानी निकल पड़ा। उससे हाजिरा ने अपने पुत्र की प्यास बुझाई और खुद भी पानी पिया और पानी बाकी रहा यही ज़म–ज़म का कुआँ है। अल्लाह ने इस ज़म–ज़म में बरकत दी। आज भी दुनिया भर के लोग उसका पानी पी रहे हैं। हाजी ज़म–ज़म का पानी अपने घरों को लाते हैं। क्या तुमने ज़म–ज़म का पानी पिया है?

'इब्राहीम अ0 का सपना'

बहुत दिनों बाद इब्राहीम अ0 मक्का आए और अपने परिवार (हाजिरा और इस्माईल अ0) से मिले। इसमाईल अ0 को देख कर इब्राहीम अ0 को बहुत खुशी हुई। उस समय इस्माईल अ0 बहुत छोटे थे। वहीं वह खेलते–कूदते और अपने पिता के साथ ही बाहर घूमने जाते थे।

इब्राहीम अ0 उनको बहुत चाहते थे। एक रात इब्राहीम अ0 ने सपने में उनको कुर्बान (ज़ब्ह) करते देखा।

इब्राहीम अ0 सच्चे नबी थे और नबियों के सपने भी सच्चे होते हैं। इब्राहीम अ0 को अल्लाह ने मित्र बनाया था। इब्राहीम अ0 को सपने में अल्लाह का जो आदेश प्राप्त हुआ उन्होंने उसका पालन करने की ठान ली। इब्राहीम अ0 ने इस्माईल अ0 को अपना सपना बताया तथा उनकी राय जानना चाही। इस्माईल अ0 ने अपने पिता से कहा "अल्लाह ने आप को जो आदेश दिया है वही करें, मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। मुझे तो आप सब्र करने वालों में पायेंगे।" इब्राहीम अ0 ने इस्माईल अ0 को अपने साथ लिया तथा एक छुरी भी ले ली और इस्माईल अ0 को ज़ब्ह करने मिना पहुँचे। इस्माईल अ0 को ज़मीन पर लिटाया और छुरी उनकी गरदन पर रखी। मगर अल्लाह तो इब्राहीम की केवल परीक्षा ले रहा था कि इब्राहीम को जो आदेश दिये जा रहे हैं वह उसका पालन करते हैं या नहीं। वह उसे अधिक चाहते हैं या अपने पुत्र को। इब्राहीम अपनी परीक्षा में सफल हुए। अल्लाह ने इस्माईल अ0 के स्थान पर जन्नत से एक दुम्बा भिजवाया और उसको इस्माईल के स्थान पर ज़ब्ह करने को कहा। इब्राहीम अ0 के इस कार्य को अल्लाह ने पसंद किया तथा सारे मुस्लिम समाज को बक़राईद के दिन कुर्बानी करने का आदेश दे दिया।

दुरूद व सलाम हो इब्राहीम खलीलुल्लाह पर।
दुरूद व सलाम हो उनके पुत्र इस्माईल पर।।

'काबा'

इब्राहीम अ० चले गये उस के बाद फिर आए और अल्लाह की इबादत के लिए एक घर बनाने का निर्णय किया क्योंकि घर तो बहुत से थे लेकिन ऐसा घर कोई नहीं था जिसमें अल्लाह की इबादत होती। इस्माईल अ० ने भी अपने पिता के साथ अल्लाह का घर बनाने का निर्णय किया। और यह दोनों बाप–बेटे पहाड़ से पत्थर लाने लगे और दोनों मिलकर अल्लाह का घर बनाने लगे। इब्राहीम अ० और इस्माईल अ० घर बनाते जाते और अल्लाह से दुआ माँगते कि "ऐ रब तू हमारी इस मेहनत को स्वीकार कर ले। तू सुनने वाला और बड़ा जानकार है।" अल्लाह ने इब्राहीम अ० और इस्माईल अ० की दुआ को स्वीकार किया और काबा में बरकत दी। हम सब काबा की तरफ़ मुंह करके ही अपनी हर नमाज़ पढ़ते हैं। मुसलमान हज के समय काबा जाते हैं, वहाँ उसकी परिक्रमा करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। अल्लाह ने काबे में बरकत दी और इब्राहीम अ० और इस्माईल की जानिब से उसे कबूल किया।

दुरूद व सलाम हो इब्राहीम पर
दुरूद व सलाम हो इस्माईल पर
दुरूद व सलाम हो मोहम्मद पर

बैतुल मक़दिस

इब्राहीम अ० की एक दूसरी पत्नी भी थीं उनका नाम सारा था। सारा से इब्राहीम अ० को एक और पुत्र था उनका नाम इसहाक़ था इब्राहीम अ० शाम में रहे थे वहीं उनके पुत्र इसहाक़ रहते थे। इसहाक़ अ० ने भी शाम में अल्लाह का घर बनाया जिस तरह उनके पिता इब्राहीम अ० और भाई इस्माईल अ० ने मक्का में बनाया था। शाम में जो अल्लाह का घर इसहाक़ अ० ने बनाया उसी को बैतुल मक़दिस कहते हैं। यही मस्जिदे अक़सा है जिसके इर्द–गिर्द अल्लाह ने बरकत दी।

अल्लाह ने इसहाक़ अ० की संतान में बरकत दी जैसा की इस्माईल अ० की संतान में बरकत दी। उन्हीं की औलादों में बहुत से बादशाह और नबी हुए इन्हीं में इसहाक़ अ० के पुत्र याकूब अ० थे। वह भी नबी थे। याकूब अ० के 12 पुत्र थे उन्हीं में यूसुफ़ बिन याकूब अ० थे। यूसुफ़ अ० का क़िस्सा भी बड़ा अजीब है जो कि कुरआन मजीद में है।

'क़िस्सों में अच्छा क़िस्सा यूसुफ़ अ० का'

'अजीब सपना'

यूसुफ़ अ० के ग्यारह भाई थे। यूसुफ़ अ० बहुत ही खूबसूरत और बुद्धिमान बालक थे। उनके पिता याकूब अ० दूसरे भाईयों के मुकाबले उनको बहुत चाहते थे।

एक रात यूसुफ़ अ० ने अजीब सपना देखा। देखा कि 11 सितारे, चाँद और सूरज उनको सजदा कर रहे हैं। यूसुफ़ अ० बहुत छोटे थे, वह इस सपने को समझ न सके। यह बात उन की समझ में न आयी कि सितारे, चाँद और सूरज आदमी को कैसे सजदा कर रहे हैं। उन्होंने इस अजीब व ग़रीब सपने का ज़िक्र अपने पिता याकूब अ० से किया। वह कहने लगे कि "ऐ पिताजी! मैंने सपने में देखा है कि ग्यारह सितारे, चाँद और सूरज मुझे सजदा कर रहे हैं।" याकूब अ० नबी थे वह इस सपने को समझ गये और बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने यूसुफ़ अ० से कहा कि बेटे यह सपना बहुत अच्छा है। अल्लाह तुम्हारा सम्मान बढ़ायेगा और तुम्हारी एक प्रतिष्ठा होगी। यह

सपना खुशख़बरी है तुम्हारे ज्ञान की और तुम्हारे नबी होने की। अल्लाह ने तुम्हारे दादा इसहाक़ और इब्राहीम पर बड़ा उपकार किया है वह तुम पर और याकूब की संतान तथा परिवार पर भी उपकार करेगा। याकूब अ० बहुत बूढे हो गये थे वह लोगों के स्वभाव को भली–भाँति जानते और पहचानते थे। उनको पता था कि शैतान इन्सान को किस प्रकार बहकाता है। उन्होंने अपने बेटे यूसुफ़ से कहा कि "ऐ मेरे बेटे! इस सपने का अपने भाईयों में से किसी से जिक्र करोगे तो वह तुम से ईर्ष्या (हसद) करने लगेंगे।"

भाईयों की ईर्ष्या (हसद)

यूसुफ़ की माता से उनका एक भाई और था जिसका नाम बिनयामीन था। याकूब अ० इन दोनों को बहुत चाहते थे। यूसुफ़ अ० के दूसरे भाई इन दोनों से हसद करने लगे थे। वे कहते थे कि हमारे पिता इन दोनों को हमसे ज़्यादा क्यों चाहते हैं? वह दोनों छोटे हैं और कमजोर हैं। फिर भी पिताजी को उनसे इतनी मुहब्बत क्यों हैं? वह हम लोगों को यूसुफ़ के समान क्यों नहीं चाहते? जबकि हम उन दोनों से अधिक बलवान और युवा हैं। यह बात समझ में नहीं आती। यूसुफ़ छोटे तो थे ही नासमझी में अपना सपना भाईयों को बता दिया। भाई सपना सुनकर क्रोध में आ गये और उन लोगों की जलन यूसुफ़ के प्रति और बढ़ गयी। एक दिन सब भाई इकट्ठा

हुए और वे यूसुफ़ को क़त्ल करने अथवा किसी अपरिचित स्थान पर छोड़ आने की योजना बनाने लगे। वे कहने लगे कि यदि हमने यूसुफ़ को ठिकाने लगा दिया तो पिताजी फिर हमें उसी प्रकार चाहने लगेंगे। उन भाईयों में से एक कहने लगा कि उनको क़त्ल करने या दूर छोड़ आने से यह ज़्यादा ठीक रहेगा कि उनको किसी कुएँ में डाल दिया जाये। कोई राही उनको निकाल लेगा। उसकी इस योजना पर सब सहमत हो गये।

'याकूब के पास उनका प्रतिनिधि मण्डल'

जब सारे भाई इस योजना पर सहमत हो गये तो वह सब याकूब अ० के पास आये। याकूब अ० यूसुफ़ अ० के बारे में बहुत डरते थे। वह जानते थे कि उन के भाई उन से जलते हैं, उनसे मुहब्बत नहीं करते हैं। इस लिये याकूब अ० यूसुफ़ अ० के भाइयों के साथ नहीं भेजते थे यूसुफ़ अ० बस अपने (माजाई) भाई के साथ खेलते थे और दूर नहीं जाते थे उनके सब भाई यह बातें जानते थे लेकिन उन्होंने बुराई का इरादा कर लिया था।

अपने पिता से कहने लगे कि आप हमारे साथ यूसुफ़ को खेलने क्यों नहीं भेजते। वह हमारे प्यारे भाई है। वह हमारे छोटे भाई है। आपको किस बात का डर है। हम सब एक बाप की संतान हैं और सब भाई आपस में खेलते-कूदते हैं। फिर हम सब क्यों न जायें और एक साथ खेलें-कूदें। हमने कल जाने का कार्यक्रम बनाया

है। आप यूसुफ़ को हमारे साथ जाने की अनुमति दे दें वह हमारे साथ खेलें खायें। हम उनकी रक्षा का आपको विश्वास दिलाते हैं।

याकूब अ0 को यूसुफ़ के भाईयों के प्रति यह डर था कि कहीं अपने हसद और जलन के कारण यूसुफ़ अ0 को हानि न पहुँचाएँ। यूसुफ़ अ0 से उनके हसद की जानकारी याकूब अ0 को थी। इसी लिये याकूब अ0 यूसुफ़ को उनके भाईयों के साथ कहीं नहीं भेजते थे। याकूब अ0 बुद्धिमान बुजुर्ग थे। यूसुफ़ के भाईयों ने जब उनके सामने यूसुफ़ को अपने साथ ले जाने की बात रखी तो उनको डर लगा और अपने पुत्रों से कहा कि मुझे इस बात का डर है कि तुम सब खेल–कूद में इतने व्यस्त हो जाओगे कि अपने छोटे भाई का ख़्याल नहीं रहेगा और उसे भेड़िया उठा ले जायेगा। बेटे बोले "यह कैसे हो सकता है।

हम सब साथ खेलेंगे। हम सब बलवान हैं। भेड़िये का उनको खाना असम्भव है।" इसके बाद याकूब अ0 ने यूसुफ़ अ0 को ले जाने की अनुमति दे दी।

जंगल की ओर

अनुमति मिल जाने पर सब भाई बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे दिन वह यूसुफ़ अ0 को ले कर चल दिये और उनको जंगल के एक कुएँ में फेंक दिया। उन्हें अपने छोटे भाई यूसुफ़ को कूएँ में डालते समय जरा भी रहम नहीं आया। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि यूसुफ़ छोटा है और

कुआँ गहरा और जंगल में है। उस पर क्या बीतेगी फिर पिताजी बूढ़े हैं उन पर क्या गुज़रेगी। वह इस कष्ट को सहन भी कर सकेंगे या नहीं उन्होंने बिना सोचे समझे यूसुफ़ को कुएँ में डाल दिया। अल्लाह यूसुफ़ अ० के साथ था। अल्लाह ने उनको उदास नहीं होने दिया बल्कि उनके साथ होने की खुशख़बरी दी और उनसे कहा कि यह भाई फिर तुम्हारे पास आयेंगे और जो कुछ उन्होंने तुम्हारे साथ किया है तुमको बतायेंगे और अपने इस कार्य पर लज्जित होंगे। उधर यूसुफ़ अ० को कूएँ में डालने के बाद सब एक जगह जमा हुए और सोचने लगे कि यूसुफ़ अ० के बारे में पिताजी से क्या कहेंगे। उनमें से कुछ ने तो यह कहा कि पिताजी को भेड़िये के खाने का भय पहले ही से था हम यही बात जाकर उनसे कह देंगे कि पिताजी आपने सच कहा था। यूसुफ़ अ० को वास्तव में भेड़िया खा गया। उनमें से कुछ बोले कि ठीक है हम यही कह देंगे पर इसका क्या प्रमाण है? कहने लगे इसका प्रमाण ख़ून होगा। भाईयों ने बकरी का बच्चा जब्ह किया उसके ख़ून में यूसुफ़ अ० का कुर्ता रंग दिया। भाई इस बात से बहुत खुश हुए।

याकूब अ० के सामने उपस्थिति

रात को रोते हुए सब अपने पिताजी के पास आये और बोले "पिताजी! हम सब खेलने चले गये थे और सामान के पास यूसुफ़ को छोड़ दिया था। भेड़िया आया

और यूसुफ़ को खा गया।" फिर उन्होंने अपने साथ लाये झूठे ख़ून में डूबी हुई कमीज़ उनके सामने रख दी। याकूब अ० अपनी संतानों के मुक़ाबले अधिक बुद्धिमान तथा अनुभवी थे। याकूब अ० जानते थे कि इन मूर्खों को पता नहीं कि जब इन्सान को भेड़िया खाएगा तो उसका कपड़ा फाड़ देगा। और यूसुफ़ अ० की क़मीज़ कहीं से नहीं फटी है और केवल ख़ून में डूबी हुई है। फिर यह ख़ून भी झूठा है। मालूम होता है कि इन सब ने यह कहानी गढ़ी है। उन्होंने अपनी औलाद से कहा कि तुम्हारी बातों में सत्यता नहीं है। अब तो सब्र के अलावा क्या किया जा सकता है। याकूब अ० यूसुफ़ अ० को बहुत ज़्यादा चाहते थे। इसलिए उन्हें इस खबर से बड़ा रंज हुआ। लेकिन उन्होंने सब्र किया।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कूएँ में

यूसुफ के भाई यूसुफ़ को कुएँ में डाल कर लौट आये और उनको कुएँ में अकेला छोड़ दिया। भाईयों ने खुशी में खाना खाया और आराम की नींद सोये। बेचारे यूसुफ़ कुएँ में अकेले पड़े थे। उनको न खाना मिला न पानी, और न सोये। भाईयों ने घर आ कर यूसुफ़ को भुला दिया मगर यूसुफ़ अ० भूखे प्यासे कुएँ में जाग रहे थे और सब को याद कर रहे थे। पिता भी उनकी याद में सो नहीं पा रहे थे। यूसुफ़ अ० उस अंधेरी रात में डरावने जंगल के अंधेरे कुएँ में पड़े थे।

कुएँ से महल की तरफ़

उस जंगल से व्यापारियों का क़ाफ़िला जा रहा था। रास्ते में उनको प्यास लगी। वे पानी पीने के लिये कुआँ ढूंढने लगे। कुआँ दिख जाने पर उन लोगों ने अपने एक आदमी को पानी लाने भेजा। वह कुएँ के पास आया और पानी निकालने के लिये डोल डाला। जब उसने डोल खींचा तो वह अधिक वज़नदार था। कड़ी मेहनत के बाद उसने डोल को खींचा तो उसमें एक ख़ूबसूरत सा लड़का बैठा था। डोल में लड़के को पाकर उस आदमी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह चीख़ पड़ा अरे यह तो लड़का है। व्यापारी बहुत खुश हए और उस बच्चे को छुपा लिया और मिस्र ले आये। मिस्र के बाज़ार में उसको बेचने लगे और उसकी बोली लगाने लगे। आख़िर मिस्र के अजीज ने उसे थोड़े से दिरहमों में ख़रीद लिया। मूर्ख व्यापारियों ने यूसुफ़ अ० को नहीं पहचाना और उनका सौदा कर दिया। मिस्र का अजीज यूसुफ़ अ० को खरीद कर महल ले आया और अपनी पत्नी से कहा इसका ख़्याल रखना। लड़का भला मालूम पड़ता है। शायद इससे हमें लाभ पहुँचे।

यूसुफ़ अ० की स्वामीभक्ति

जब अज़ीज की पत्नी ने यूसुफ़ को ख़्यानत (सम्भोग) पर उकसाया तो यूसुफ़ ने ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया और कहा कि ऐसा कभी नहीं हो सकता। मेरे मालिक ने मुझे आदर दिया, मेरा सम्मान बढ़ाया और मेरे

साथ अच्छा व्यवहार किया। ऐसे व्यक्ति के साथ मैं ख़्यानत नही कर सकता। मुझे अल्लाह का डर है। इस बात पर अजीज की बीवी बड़ी क्रोधित हुई और अपने शौहर से यूसुफ़ की शिकायत कर दी। अजीज समझदार था वह बात समझ गया कि औरत झूठी है। वह यूसुफ़ को जान चुका था और परख चुका था। उसने अपनी पत्नी से कहा कि तुम गलती पर हो। वास्तव में ऐसा नहीं है जो तुम कह रही हो। यूसुफ़ की ख़ूबसूरती के पूरे मिस्र में बड़े चर्चे थे। जो भी उन को देखता बस देखता ही रह जाता और देखने वाला कहता कि आदमी इतना हसीन नहीं हो सकता यह तो कोई फ़रिश्ता जान पड़ता है। अपनी असफलता पर उस औरत को बहुत क्रोध आया और यूसुफ़ अ0 से बोली कि अब तो तुम को जेल की हवा खानी पड़ेगी। यूसुफ़ अ0 ने कहा कि मुझे बदकारी के मुक़ाबले जेल जाना ज्यादा पसन्द है। कुछ दिन बाद अजीज ने यह जानते हुए भी कि यूसुफ़ अ0 निर्दोष हैं उनको जेल भेज दिया।

जेल वालों को उपदेश

यूसुफ़ अ0 जेल चले गये वहाँ उनको देख कर क़ैदियों को यह विश्वास हो गया कि यूसुफ़ अ0 शरीफ़, शिक्षित और ज्ञानी नवयुवक हैं। इनके दिल में दया और नम्रता है। क़ैदी यूसुफ़ को बेहद चाहने और उनका आदर करने लगे थे।

यूसुफ़ अ० के साथ दो आदमी और जेल आये। उन दोनों ने यूसुफ़ अ० को अपने सपने बताये जो उन्होंने देखे थे। एक ने कहा कि "मैंने देखा है कि मैं शराब निकाल रहा हूँ।" दूसरे ने कहा कि "मैं अपने सिर पर रोटियों का थाल उठाये हूँ और उसमें से चिड़ियाँ खा रही हैं।" दोनों ने अपने सपनों की ताबीर यूसुफ़ अ० से जानना चाही। यूसुफ़ अ० सपनों की ताबीर जानते थे इस लिये कि वह नबी थे। यूसुफ़ अ० के समय में लोग अल्लाह को छोड़ कर दूसरों की पूजा करते थे और बहुत से देवता अपनी तरफ़ से बना रखे थे। कोई धरती का देवता था तो कोई समुद्र का। कोई खाने का देवता था तो कोई बारिश का था। यूसुफ़ उनकी मूर्खता पर हंसते थे। वह यह सब जानते थे और उनकी नासमझी पर रोया करते थे। यूसुफ़ अ० ने उनको अल्लाह की तरफ़ बुलाने का फ़ैसला कर लिया। और अल्लाह चाहता था कि उसके दीन के उपदेश देने का काम जेल से ही शुरू हो और जेल वालों को उपदेश क्यों न दिया जाए वह भी तो आदम की औलाद हैं। जेल वाले भी तो अल्लाह के बंदे हैं। और उसकी रहमत के हक़दार यह भी उतने ही हैं जितने कि जेल से बाहर वाले। यूसुफ़ अ० जेल में थे मगर आज़ाद थे। वह फ़कीर थे मगर सख़ी थे। नबी तो सच्ची और हक़ की बात हर जगह खुलेआम निडर होकर कहते हैं। नबियों ने हर समय में नेक और उदार कामों

की शिक्षा दी है और अच्छाई की तरफ़ बुलाया है।

यूसुफ़ की दानाई

यूसुफ़ अ० सोचते थे कि आदमी अपने स्वार्थ के लिये खुशामद करता है पैरों पर गिरता है। कड़वी और सख़्त बातें सुनता है। यह दोनों कैदी मेरे पास अपने स्वार्थ के लिये आये हैं यदि मैं इन से कुछ कहूँगा तो यह सुनेंगे और उसको अवश्य (ज़रूर) सुनेंगे। यूसुफ़ अ० ने तुरन्त ताबीर नहीं बताई, यूसुफ़ अ० ने जल्दी नहीं की बल्कि कहा कि तुम्हारा खाना आने से पहले पहले तुम्हारे सपनों की ताबीर बता दूँगा। दोनों शान्त होकर बैठ गये। यूसुफ़ अ० ने उनको बताया कि "मैं सपनों की ताबीर देना जानता हूँ और यह चीज़ मेरे रब ने मुझे सिखाई और बताई है इस पर दोनों प्रसन्न हुए और सन्तुष्ट हुए। इस अवसर का लाभ उठाते हुए यूसुफ़ अ० ने अपना उपदेश आरंभ कर दिया।

ख़ुदा (ईश्वर) को एक मानने का उपदेश

उन दोनों से यूसुफ़ अ० ने कहा कि यह वह ज्ञान है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है। यह ज्ञान अल्लाह हर किसी को नहीं देता। यह ज्ञान उसको नहीं मिलती जो ईश्वर के साथ किसी और को शरीक करे। क्या तुम जानते हो मेरे रब ने मुझे यह ज्ञान क्यों सिखाया है? इस लिये कि मैंने शिर्क वालो का रास्ता छोड़ दिया है। मैंने

तो अपने बाप दादा इब्राहीम अ0, इस्हाक़ अ0 और याकूब अ0 के मार्ग को अपनाया है। हमारे लिये जाइज नहीं कि हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करें। यूसुफ़ अ0 ने कहा। ईश्वर को एक मानना केवल हमारे लिये ही आवश्यक नहीं है यह तो सारे समाज के लिये है। यह तो अल्लाह की हम पर दया है। परन्तु लोग ईश्वर का शुक्र अदा नहीं करते। यूसुफ़ अ0 ने अपनी बात रोक कर उन से पूछा कि तुमने हर चीज का एक अलग ईश्वर बना लिया है। कहते हो खुश्की का ईश्वर, समुद्र का ईश्वर, रोजी का ईश्वर बारिश का ईश्वर। हम तो कहते हैं कि सारे संसार का ईश्वर एक अल्लाह है। तुम ही बताओ कि भाँति–भाँति के ईश्वर ज्यादा ठीक हैं या केवल एक जो शक्तिशाली है। कहाँ है स्थल का देवता और समुद्र का देवता? उन्होंने धरती पर क्या वस्तुएं बनायी है? या उन की साझेदारी आसमानों में है? देखो आकाश तथा धरती की ओर देखो मनुष्य की ओर यह सब अल्लाह ने पैदा किया है। मुझे दिखाओ उसके अतिरिक्त लोगों ने क्या पैदा किया है? तुम मुझे बताओ कि तुम्हारे भगवान ने क्या बनाया? इनमें कोई वास्वतिकता नहीं है। तुमने अपने स्वार्थ के लिये इनके नाम रख लिये हैं। तुमको जान लेना चाहिये कि बादशाहत केवल अल्लाह की है। धरती व आकाश उसी के हैं। इस संसार का चलाने वाला वही है। उसी के आदेश पारित होते हैं। तुम

किसी और की पूजा मत करो, केवल अल्लाह की इबादत करो। यही धर्म ठीक और सीधा है लेकिन अधिकतर मनुष्य इस बात को नहीं समझते।

सपनों की ताबीर

यूसुफ़ अ० ने नसीहत, दावत तथा उपदेश के बाद उन दोनों क़ैदियों को उनके सपनों की ताबीर बताना आरम्भ किया और कहा :– "तुम में से एक तो अपने मालिक को शराब पिलायेगा तथा दूसरे को फाँसी हो जायेगी और उसके सर को चिड़ियाँ खायेंगी।" यूसुफ़ अ० ने पहले वाले से कहा कि तुम अपने मालिक से मेरी चर्चा करना। दोनों आदमी कारागार से छूट गये पहला आदमी बादशाह का साक़ी (शराब पिलाने वाला) हो गया और दूसरे को फाँसी हो गयी। पहले वाला (साक़ी) बादशाह से यूसुफ़ अ० की चर्चा करना भूल गया। इसी कारण उनको कुछ वर्ष और कारागार में रहना पड़ा।

बादशाह का सपना

मिस्र के बादशाह ने एक विचित्र सपना देखा। उसने सपने में देखा कि सात मोटी और सात दुबली गायें हैं। सातों दुबली गायें मोटी गायों को खा रही हैं। उस ने सात हरी और सात सूखी बालियाँ देखीं इस सपने से बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपने दरबारियों से इसकी ताबीर जानने के लिये कहा तो दरबारियों ने

उससे कहा कि चिंता की कोई बात नहीं है नींद में आदमी बहुत सी चीज़ें देख लेता है जिनका कोई महत्त्व नहीं होता है। इस तरह के सपने अधिकतर दिख जाते हैं। शराब पिलाने वाला बोला कि ऐसी बात नहीं है इस सपने की ताबीर मैं बता दूँगा। वह साक़ी यूसुफ़ अ० के पास आया और उनसे बादशाह का सपना बताया और उसकी ताबीर पूछी। यूसुफ़ अ० बड़े दयालु, दयावान और दानी थे। यूसुफ़ अ० ने उसको सपने की ताबीर बतायी और उसके साथ उससे बचने और सुरक्षित रहने के उपाय भी बताये। यूसुफ़ अ० ने उससे कहा कि सात वर्ष खेती करो और दाना बाली में ही छोड़ दो आवश्यकतानुसार उसमें से खाने के लिये लो। सात वर्ष बाद भयानक अकाल पड़ेगा तब जो तुमने बालियों में छोड़ा या जमा किया था उसी में से खाओ यह अकाल सात वर्ष तक पड़ेगा उसके बाद स्थिति ठीक होगी और लोग सुख की साँस लेंगे।

वह साक़ी वापस गया और बादशाह को उसके सपने की ताबीर बतायी।

यूसुफ़ के पास बादशाह का दूत

बादशाह ने अपने सपने की ताबीर तथा उसके उपाय सुने तो बड़ा प्रसन्न हुआ उसने पूछा यह सपने की ताबीर किसने बतायी है। वह कौन शरीफ़ व्यक्ति है जिसने हमें ताबीर के साथ–साथ तदबीर भी बतायी? साक़ी ने उत्तर

दिया यह मेरे मित्र यूसुफ़ हैं। उन्होंने ही मेरा सपना सुन कर मुझे आप का साकी होना बतलाया था। बादशाह का यूसुफ़ से मिलने को जी चाहा। बादशाह ने साकी से कहा कि उनको मेरे पास लेकर आओ मैं उनको अपने साथ रखूंगा।

यूसुफ़ का जाँच के लिये कहना

बादशाह का दूत यूसुफ़ अ0 के पास आया और उसने कहा कि बादशाह आपको बुला रहे हैं। यूसुफ़ अ0 यह नहीं चाहते थे कि वह केवल बादशाह के बुलाने पर कारागार से चले जायें और लोग यूसुफ़ अ0 पर उंगली उठायें और कहें कि यही यूसुफ़ है जो कल तक जेल में थे और जिन पर अज़ीज़ की पत्नी के साथ ख़्यानत करने का दोष लगा था यूसुफ़ अ0 बुद्धिमान थे और बहुत सूझ–बूझ के व्यक्ति थे। उन्होंने कोई जल्दबाजी नहीं दिखाई और जाने से केवल इसलिये इनकार कर दिया कि उन पर दोष लगाया गया। उसकी जाँच हो। अगर मैं निर्दोष पाया गया तभी मुझे रिहा किया जाये। उनके स्थान पर कोई दूसरा होता तो इस निमंत्रण का लाभ उठाता और जेल से आज़ाद हो जाता।

बादशाह ने वास्तविकता जानी और यह जान लिया कि यूसुफ़ अ0 निर्दोष हैं। और लोगों को भी यह बात मालूम हो गयी। इसके बाद यूसुफ़ अ0 बाहर आये तो बादशाह ने उनका बड़ा आदर किया।

राज्य–उपज मंत्री

यूसुफ़ अ० जानते थे कि लोगों में अमानतदारी बहुत कम है और उनमें ख़यानत बहुत बढ़ गई है। यूसुफ़ अ० देख रहे थे कि मनुष्य अल्लाह के माल में किस प्रकार से घोटाला कर रहे हैं। यूसुफ़ अ० को यह जानकारी थी कि धरती पर बड़े–बड़े भण्डार हैं लेकिन सरकारी लोग उसे नष्ट कर रहे हैं और उस में घोटाला कर रहे हैं। वे अल्लाह से नहीं डरते। वह देखते कि मनुष्य को खाने के लिये नहीं मिलता लेकिन सरकारी लोगों के कुत्ते और बिल्ली खाते हैं। वे अच्छा खाते और पहनते हैं परन्तु आम जनता भूखी और नंगी रहती है। इन भण्डारों से ग़रीब का कोई भला नहीं होता था। जो कर्मचारी भण्डारों का कार्य देख रहे थे वे यह भी जानते थे कि भण्डार कहाँ–कहाँ हैं तथा उनसे किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है।

भण्डारों के कर्मचारी उनमें से खूब खा रहे थे तथा घोटाला कर रहे थे। यह सब देखकर यूसुफ़ अ० को कष्ट होता था। यूसुफ़ अ० यह नहीं चाहते थे कि जनता का माल सरदार और पूंजीपति खायें। यूसुफ़ अ० यह नहीं चाहते थे कि जनता भूखी मरे और पूंजीपति उनका माल हड़प कर लें। यूसुफ़ अ० को सत्य बोलने में कोई लज्जा नहीं आती थी। भण्डारों का हाल और उन पर पूंजीपतियों का नियंत्रण तथा गरीबों की भुखमरी देख कर यूसुफ़ अ० ने बादशाह से भण्डारों की देख–रेख का समस्त कार्य

उनके नियंत्रण में देने अर्थात राज्य–उपज मंत्री बनाने की राय दी और कहा कि मैं इस कार्य को सही ढंग से चलाऊँगा। इस प्रकार यूसुफ़ अ० मिस्र के राज्य–उपज के मंत्री हो गये उधर लोगों ने सुख की साँस ली इस पर यूसुफ़ ने अल्लाह का शुक्र अदा किया।

यूसुफ़ अ० के भाईयों का आगमन

यूसुफ़ अ० की सूचनानुसार समस्त मिस्र व शाम में अकाल के कारण भुखमरी थी। याकूब अ० व शाम वालों को यह सूचना मिली कि जिसको भण्डारों का चार्ज मिला है वह बड़ा दानी, नेक व दयालु है। उसके पास लोग जाते हैं और राशन लेकर लौटते हैं। याकूब अ० ने भी अपने पुत्रों को पैसा देकर राशन लाने हेतु मिस्र भेजा परन्तु उन्होंने बिनयामीन को उन लोगो के साथ जाने की अनुमति नहीं दी। यूसुफ़ अ० के साथ जो घटना घट चुकी थी। उससे वह डर गये थे इस कारणवश बिनयामीन को अपने से दूर नहीं जाने देते थे। जब भाईयों का यूसुफ़ अ० से मिलन हुआ तो वे यूसुफ़ अ० को पहचान न सके। वे तो यही समझ रहे थे कि यूसुफ़ अ० तो कुएँ में मर चुके होंगे परन्तु यूसुफ़ अ० ने उनको अच्छी तरह पहचान लिया उनको देख कर दिल में कहा कि इन पागलों ने हमें मारने की योजना बनायी थी परन्तु अल्लाह ने हमारी रक्षा की। यूसुफ़ अ० ने उनको पहचानते हुए भी कुछ नहीं कहा और न ही उनको लज्जित होने दिया।

यूसुफ़ अ० अपने भाईयों के बीच

जब उनके राशन लेने की बारी आयी तो यूसुफ़ अ० ने उनसे पूछा कि तुम लोग कहाँ से आये हो? उन लोगों ने उत्तर दिया कि हम कनआन से आये हैं। फिर उनसे उनके पिता का नाम पूछा वे बोले हमारे पिता का नाम याकूब बिन इसहाक़ बिन इब्राहीम है। यूसुफ़ अ० ने फिर पूछा कि तुम लोगों के अतिरिक्त कोई और भाई भी है? उन लोगों ने उत्तर दिया कि हाँ एक बिनयामीन नाम का और है। यूसुफ़ अ० ने पूछा कि अपने साथ उसको क्यों नहीं लाये। वे कहने लगे कि पिताजी को उससे बहुत प्रेम हैं वे उसे अपने से जुदा नहीं कर सकते। यूसुफ़ अ० ने पूछा कि अपने से जुदा न करने का क्या कारण है क्या वह अभी बहुत छोटा है? वे बोले नहीं यह बात नहीं है हमारा भाई यूसुफ़ नाम का भी था। वह एक दिन हमारे साथ था। हम सब खेल में व्यस्त हो गये उसको सामान के पास छोड़ दिया उसी समय एक भेड़िया आया और उसको खा गया। यूसुफ़ अ० अपने दिल में हंसे लेकिन उन से कुछ नहीं कहा यूसुफ़ अ० के दिल में अपने भाई बिनयामीन से मुलाकात की इच्छा पैदा हुई। उधर अल्लाह ने याकूब अ० का दोबारा इम्तिहान लेने का इरादा हुआ। यूसुफ़ अ० ने उन लोगो को ग़ल्ला देने का आदेश दिया और उन लोगों से कहा कि तुम अपने उस भाई को मेरे पास लाओगे अगर उसे अगली बार न लाए तो यहाँ गल्ला न पाओगे।

यूसुफ़ अ0 ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि उनका माल इनके सामान में छुपा कर रख दिया जाए अतः उनका माल उनके गल्ले में रख दिया गया।

याकूब अ0 और उनके पुत्र

वे राशन लेकर घर लौटे और याकूब अ0 से कहने लगे कि ऐ पिताजी जब हम पुनः राशन लेने जायें तो हमारे साथ बिनयामीन को भी कर दीजियेगा। नहीं तो हमें राशन नहीं मिलेगा क्योंकि भण्डार के मंत्री ने उनको साथ लाने का आदेश दिया है। आप उसको साथ कर दीजियेगा। हम उसकी रक्षा करेंगे। याकूब अ0 ने पुत्रों से कहा "क्या वैसी ही रक्षा करोगे जैसी यूसुफ़ की की थी? क्या तुम्हारी बातों पर उसी प्रकार विश्वास कर लूँ जिस प्रकार यूसुफ़ के मामले में तुम पर किया था? यूसुफ़ के साथ जो कुछ तुम लोगों ने व्यवहार किया था उसको इतनी जल्दी भुला दिया। क्या तुम बिनयामीन का भी उसी तरह ख़्याल रखोगे जिस प्रकार यूसुफ़ का रखा था। अल्लाह ही रक्षा करने वाला है और वही रहम करने वाला भी है।"

राशन के साथ जब भाईयों ने उसकी रक़म भी रखी देखी तो वे बोल उठे पिताजी अज़ीज़ तो बड़ा नेक है। उसने राशन का दाम भी हमसे नहीं लिया हमारा सारा पैसा उसने लौटा दिया। आप अगली बार बिनयामीन को अवश्य भेजें ताकि उसके हिस्से का भी राशन आ जाये। याकूब अ0 ने अपने पुत्रों से कहा कि मैं बिनयामीन

को तुम्हारे साथ उस समय तक नहीं भेज सकता जब तक तुम उसको वापस लाने का अल्लाह से अहद न कर लो। जब उन्होंने बिनयामीन को वापस लाने का अल्लाह से अहद कर लिया तो याकूब अ० ने अपने पुत्रों से कहा कि जो कुछ भी हम कह रहे हैं अल्लाह उसका निगराँ है। इसके बाद याकूब अ० ने अपने पुत्रों को नसीहत करने के लिये जमा किया वह बोले ऐ मेरे पुत्रों! तुम सब एक ही द्वार से वहाँ प्रवेश मत करना बल्कि अलग–अलग द्वार से प्रवेश करना।

बिनयामीन, यूसुफ़ अ० के पास

पिता की आज्ञा का पालन करते हुए सब भाईयों ने अलग–अलग द्वारों से प्रवेश किया और यूसुफ़ अ० के पास पहुँचे गये। यूसुफ़ अ० ने जब बिनयामीन को देखा तो बहुत प्रसन्न हुए उनको अपना मेहमान बनाया व अपने घर उतारा। कुछ देर बाद बिनयामीन से कहा कि मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ। तो बिनयामीन सन्तुष्ट हो गया। कई वर्षों के बाद यूसुफ़ अ० बिनयामीन से मिले थे। सब घर वालो, माता–पिता की ख़ैरियत जानी। यूसुफ़ अ० का मन चाहा कि बिनयामीन उनके पास रह जायें ताकि उसे प्रतिदिन भेंट हो। घर की बातें हो। यूसुफ़ अ० सोचने लगे कि बिनयामीन को कैसे रोका जाये। उनको तो कल जाना है और भाईयों ने पिताजी से उनको वापस लाने का वादा व अल्लाह से अहद किया है। बिना कारण बिनयामीन को रोका भी नहीं जा

सकता अगर बिना कारण उनको रोका गया तो दुनिया कहेगी कि यूसुफ़ अ० ने एक कनआनी को बिना कारण क़ैद कर लिया है जो कि ठीक नहीं है। यह अन्याय होगा। यूसुफ़ अ० बुद्धिमान और समझदार थे उनके पास पानी पीने का एक कीमती बर्तन था। उन्होंने वह प्याला बिनयामीन के सामान में रखवा दिया। वह लोग जब रवाना होने लगे तो उनको रोका गया और कहा गया कि तुम लोगों ने चोरी की है। भाईयों ने आश्चर्य से पूछा क्या चोरी हो गया है और किसको चोर कह रहो हो? उन लोगों ने कहा कि बादशाह का कटोरा गायब है। जो ढूंढ कर लायेगा उसको पुरस्कार में एक ऊंटनी के बोझ भर गल्ला दिया जाए गा। भाई बोले आप कैसी बात कर रहे हैं क्या हम गड़बड़ी करने आये हैं। ख़ुदा की क़सम हम लोग चोर नहीं हैं। कहा कि ठीक है अगर तुम झूठे निकले तो तुम को क्या सज़ा दी जाये। भाईयों ने कहा कि जिसके सामान में वह वस्तु निकले उसको दंड के रूप में रोक लिया जाये। वह कटोरा बिनयामीन के सामान में से निकल आया। तब भाईयों को बड़ी लज्जा आयी परन्तु हठ्धर्मी से कहने लगे कि यदि बिनयामीन ने चोरी की है तो ऐसा हो सकता है क्योंकि इससे पूर्व इनके भाई यूसुफ़ अ० भी चोरी कर चुके हैं। यूसुफ़ अ० ने जब उनकी यह बात सुनी तो उनको इस झूठे आरोप पर आश्चर्य हुआ परन्तु उन्होंने इसको ख़ामोशी से सुना व क्रोधित नहीं हुए। भाईयों ने

कहा ऐ बादशाह इसके पिता बहुत बूढ़े हैं आप हम लोगों में से किसी एक को अपने पास रोक लें। आप तो सबके साथ बड़ा एहसान करने वाले हैं। यूसुफ़ अ० ने उनसे कहा कि यह कैसे हो सकता है कि अपराध कोई करे और दंड कोई और पाये। यह अन्याय होगा। इस प्रकार बिनयामीन यूसुफ़ अ० के साथ रहे तथा भाई अपने घर लौट गये। यूसुफ़ अ० लम्बे समय से अकेले रह रहे थे। परिवार में से किसी को देखा नहीं था आखिरकार बिनयामीन को अल्लाह ने उनसे मिला दिया। तो क्या वह उनको रोक न लेते कि उनको देखें और उनसे बात करें। क्या यह जुल्म है कि भाई भाई के पास रहे? कदापि नहीं कदापि नहीं।

याकूब अ० के पास

भाईयों को चिन्ता हुई कि क्या मुंह लेकर अपने बाप के पास जायेंगे और उनसे क्या कहेंगे। एक बार वह यूसुफ़ अ० के मामले में अपने पिता को कष्ट पहुँचा चुके हैं। आज फिर बिनयामीन के मामले में उनको मुसीबत में डालें यह अच्छा नहीं लगता। सबसे बड़े भाई ने तो बाप का सामना करने से इनकार कर दिया और अपने भाईयों से कहा कि तुम पिताजी के पास जाओ और कहो, पिता जी आप के बैटे ने चोरी की हम आपसे वही कह रहे हैं जो हमने देखा है और जाना है। वास्तविकता क्या है इसकी जानकारी हमें नहीं है। हमें छिपी बातो की जानकारी नहीं है। याकूब अ० ने जब कहानी सुनी तो वह समझ

गये कि इसमें अल्लाह की मस्लेहत है। अल्लाह फिर कोई परीक्षा ले रहा है। कल यूसुफ़ के लिये मुसीबत में पड़े और आज बिनयामीन के लिये कष्ट उठाना पड़ रहा है। अल्लाह दोहरी आजमाइश में कभी नहीं डालता। दो बच्चों का कष्ट नहीं देता। इसमें जरूर अल्लाह की कोई मस्लेहत है। वह बराबर अपने बन्दों को आज़माइश में नहीं डालता और अगर डालता है तो फिर बाद में उनको खुशी भी देता है और उन पर इनाम करता है। वह कहने लगे कि बड़ा बेटा मिस्र में ही रुक गया और उसने कनआन आने से इन्कार कर दिया। क्या मुझे तीन बेटों का कष्ट उठाना पड़ेगा? यह नहीं हो सकता। याकूब अ० को सुकून हो गया और कहने लगे कि सम्भव है अल्लाह तीनों को सही सालिम मेरे पास लाये। वह बड़ा दाना और जानकार है।

भेद का खुलना

याकूब अ० मनुष्य थे उनके सीने में भी इन्सान का दिल था पत्थर दिल नहीं थे। जब यूसुफ़ अ० की याद आती तो रंजीदा हो जाते, कहते हाए अफ्सोस यूसुफ़ पर पता नहीं यूसुफ़ किस हाल में है। परन्तु उनके बेटे उनको बुरा भला कहते वे उनसे कहते कि इस तरह तो आप यूसुफ़ को याद करते–करते मर जायेंगे। याकूब अ० उनसे कहते तुम्हें इससे क्या! मैं अपनी शिकायत और कष्ट अल्लाह से कहता हूँ। तुम कहाँ उस बात को जानते हो जिसको मैं जानता हूँ याकूब अ० जानते थे

कि निराश होना कुफ्र है। उनको अल्लाह से बड़ी आशा थी।

याकूब अ0 ने अपने बेटों से मिस्र जाकर यूसुफ़ अ0 को तलाश करने का आदेश दिया कि वे यूसुफ़ अ0 को ढूंढने का प्रयत्न करें। निराश न हों। सब भाई तीसरी बार मिस्र गये और यूसुफ़ अ0 से जाकर मिले उन्हें अपनी विपदा सुनाई और उनसे सहायता माँगी। यूसुफ़ अ0 के दिल में मुहब्बत का तूफान उठा मगर रंजीदा भी हुए। अपने हृदय पर नियंत्रण न रहा दिल में आया कि मेरे बाप के बेटे हैं, नबियों की सन्तान हैं, एक बादशाह के सामने अपनी विपदा रखते हैं कब तक बात छुपाई जाए, कब तक इन का यह बुरा हाल देखा जाए। कब तक मैं अपने पिता को न देखूं यूसुफ़ अ0 अपने पर नियंत्रण न रख सके। और भाईयों से बोले कि तुम्हें पता है कि तुमने यूसुफ़ ओर उसके भाई के साथ क्या किया था? जब तुम्हारा अज्ञानता काल था? भाई जानते थे कि इस भेद को हमारे और यूसुफ़ के अतिरिक्त कोई तीसरा नहीं जानता। उनको यह अन्दाज़ा हो गया कि यही यूसुफ़ हैं। अल्लाह की कुदरत कि यूसुफ़ कुएँ में मरे नहीं और आज तक ज़िन्दा हैं। या सलाम यूसुफ़ ही मिस्र के अज़ीज़ है? सारे भण्डारों के मालिक है। वही हमको राशन दिलवाता है। उनको यक़ीन हो गया कि यही यूसुफ़ है। वह सब बोल पड़े "क्या आप ही यूसुफ़ हैं?" यूसुफ़ अ0 ने उत्तर दिया "हाँ मैं ही यूसुफ़ हूँ। और

यह मेरा भाई बिनयामीन है। अल्लाह ने हम पर बड़ी दया की। जो अल्लाह से डरता है और सब्र करता है, ऐसे भले लोगों के भले कामों को अल्लाह अकारत नही करता।" भाईयों ने कहा "खुदा की क़सम अल्लाह ने आपको हम पर प्रधानता दी हम तो बड़े पापी हैं।" यूसुफ़ अ0 के साथ भाईयों ने जो कुछ भी किया उस पर यूसुफ़ अ0 ने उनको बुरा नहीं कहा बल्कि उनसे कहा कि जो कुछ तुमने हमारे साथ किया अल्लाह उसको क्षमा करेगा। वह सब से अधिक दया करने वाला है।

यूसुफ़ अ0 ने याकूब अ0 के पास भेजा

यूसुफ़ अ0 की याकूब अ0 से मिलने की लालसा ओर बढ़ गयी और क्यों न बढ़ती पिता को देखे और उनसे मिले एक लम्बा समय बीत गया था। अब जबकि भेद खुल गया है कैसे इन्तेजार करते। यूसुफ़ अ0 को खाना पानी कैसे अच्छा लगता जब कि उनके वालिद को न खाना अच्छा लगता था न पीना न सोना। यूसुफ़ अ0 की जुदाई के ग़म में रोते रोते आँखों की रोशनी भी जाती रही। भेद खुल जाने के बाद अल्लाह ने चाहा कि याकूब अ0 की आँखों को ठंडक पहुँचे। यूसुफ़ अ0 को इस बात का जब पता चला तो उन्होंने भाईयों को अपना कुर्ता दिया और कहा कि इसको ले जाओ और अब्बा के चेहरे पर डाल देना इससे उनके आँखों की रोशनी लौट आयेगी फिर तुम सब मेरे पास आ जाना।

याकूब अ0 यूसुफ अ0 के पास

भाईयों ने यूसुफ़ अ0 का कुर्ता ले कर कनआन की दिशा में कूच किया। उधर याकूब अ0 को यूसुफ़ अ0 की खुश्बू महसूस होने लगी वह कहने लगे कि मुझे यूसुफ़ अ0 की खुश्बू आ रही है। घर वालों ने कहा खुदा की कसम आप वही पुरानी बातों को दोहराते हैं जिस में कोई सत्यता नहीं है। जबकि याकूब अ0 बिल्कुल सच बोल रहे थे। यूसुफ़ अ0 का कुर्ता जैसे ही याकूब अ0 के चेहरे पर डाला गया तुरन्त उनकी आँखों में रोशनी आ गयी। वह बोले कि मैं तुमसे कहता था कि जो कुछ मैं जानता हूँ वह तुम लोग नहीं जानते। पुत्रों ने कहा पिताजी हमसे भूल हुई हम बड़े पापी हैं। आप हमारे पापों की क्षमा के लिये दुआ करें। याकूब अ0 ने उनसे कहा कि ठीक है मैं तुम लोगों के पापों को क्षमा करने के लिये अपने रब से दुआ करूंगा वह पापों को क्षमा करने वाला और बड़ा दयालु है। याकूब अ0 सपरिवार मिस्र पहुँचे वहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ। इन बाप बेटे के मिलन की खुशी का कोई अन्दाजा नहीं लगा सकता। मिस्र में वह दिन बड़ा मुबारक व दर्शनीय था। यूसुफ़ अ0 ने अपने पिता तथा माता को राज गद्दी पर बिठा दिया और सब ने यूसुफ़ अ0 को सजदा किया। इस अवसर पर यूसुफ़ अ0 ने कहा कि यह है उस सपने की ताबीर जो मैंने देखा था आज मेरे रब ने उसको साकार कर दिया। मैंने देखा था कि 11 सितारे, चाँद

और सूरज मुझे सजदा कर रहे हैं यूसुफ़ अ० ने अल्लाह का शुक्र अदा किया। याकूब अ० और उनकी औलाद काफ़ी समय तक मिस्र में रही। याकूब अ० और उनकी पत्नी का निधन भी मिस्र में ही हुआ।

अच्छा परिणाम

यूसुफ़ अ० ने बड़ा साम्राज्य पाने के बाद भी अल्लाह की इबादत और उसका ज़िक्र नहीं छोड़ा। वह अल्लाह का ज़िक्र और उसी की इबादत करते थे। उसी से डरते व उसी का कानून लागू करते थे। उनको शासन का कोई लालच नहीं था। वह तो यह दुआ करते थे कि वह बादशाहों की मौत न मरें ताकि उनकी हालत बादशाहों जैसी न हो। वह तो चाहते थे कि नेक बंदों की तरह मरें ओर नेकी के साथ उठाये जायें। वह दुआ माँगते थे कि :– "ऐ रब तूने मुझे बादशाहत दी और सपनों की ताबीर बताने का ज्ञान दिया। ऐ आकाश और धरती के पैदा करने वाले तू ही मेरा दुनिया में और आख़िरत में वली और मददगार है मुझे मुसलमान मारना और नेकूकारों (नेकी करने वालों) से मिलाना।" अल्लाह ने उनको इस्लाम की हालत में मौत दी और उनके बाप, दादा इब्राहीम, इसहाक़ और याकूब से मिला दिया।

अल्लाह उन पर और हमारे नबी पर दुरूद व सलाम भेजे।
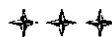
नूह अ० की कश्ती (नाव)

अल्लाह ने आदम की औलाद में बड़ी बरकत दी। उस में मर्द और औरतें बहुत हुई आदम का परिवार फैल गया और उन की संख्या अधिक हो गयी, संख्या इतनी ज्यादा हुई कि यदि आदम वापस संसार में आयें और देखें तो वह पहचान न सकें और यदि उन से कहा जाये कि यह सब आप की औलाद तथा आप का परिवार है तो उनको आश्चर्य हो और कहें कि "सुब्हानल्लाह क्या यह सब मेरी औलाद हैं? यह सब मेरा परिवार है?"

आदम की औलाद में लोग बड़े बलवान थे। उन्होंने रहने के लिये बहुत से घर बनाये वह खेती बाड़ी करते और ज़िन्दगी का लुत्फ (मज़ा) उठाते थे वह सब आदि बाप आदम के धर्म पर कायम थे अल्लाह की पूजा करते थे और उसकी पूजा में किसी को शामिल नहीं करते थे। वह सब एक उम्मत थे। उनका एक बाप है और उनका खुदा एक है।

शैतान की जलन (हसद)

लेकिन शैतान को यह बात कहाँ पसन्द थी कि लोग बराबर अल्लाह की इबादत करें और यह उम्मत एक रहे और इन में मतभेद न हो यह नहीं हो सकता यह नहीं हो सकता है कि आदम की औलाद तो जन्नत 'स्वर्ग' में जाये और शैतान जहन्नम 'नर्क' में जाये। यह नहीं हो सकता यह नहीं हो सकता। उसने आदम को सजदा करने से इनकार कर दिया था अल्लाह ने उसे मलऊन कहा और उसे दुत्कार दिया था। उस ने कहा क्यों न वह आदम की नस्ल से अपना बदला ले और उन को अपने साथ जहन्नम (नर्क) में ले जाये। ऐसा ही होना चाहिये और ऐसा ही होगा। "यह शैतान ने सोचा"

शैतान विचार

शैतान ने सोचा कि यदि लोगों को मूर्तियों की पूजा के लिये बुलाया जाये तो वह नर्क में जा सकते हैं और जन्नत में कभी दाखिल न हो सकेंगे। शैतान को इसकी जानकारी थी कि अल्लाह शिर्क के अलावा हर पाप माफ़ कर सकता है यदि वह क्षमा करना चाहे। इस लिये शैतान ने यह फैसला किया कि वह लोगों को शिर्क की दावत देगा जन्नत में उन को कभी दाखिल न होने देगा।

उस ने विचार किया कि इस का तरीका क्या हो। लोग अल्लाह की पूजा कर रहे हैं उन को बुतों की पूजा की दावत यदि दी जायेगी तो वह स्वीकार नहीं करेंगे।

लोग भड़क भी जायेंगे और मारेंगे भी और कहेंगे कि "अल्लाह की पनाह" क्या हम अल्लाह के साथ किसी और को शरीक करें और बुतों की पूजा करें। शैतान यक़ीनन मरदूद है।

शैतान का बहाना

शैतान ने एक दरवाजा देख लिया जिस से लोगों के दिमागों में दाखिल हुआ जा सकता है। कुछ लोग थे जो लोग अल्लाह से डरते हैं और उस की इबादत "पूजा" रात दिन करते थे और उस का जिक्र सदैव करते रहते थे। वे अल्लाह से मुहब्बत करते थे और अल्लाह उन से मुहब्बत करता था और उन की दुआएं कबूल करता था और लोग उन बुजुर्गों से मुहब्बत करते थे और उनकी बुजुर्गी तसलीम करते थे। यह बाते शैतान खूब जानता था। पस शैतान लोगों के पास गया और उन नेक लोगों का जिक्र करने लगा जो मर गये थे। उन से पूछने लगा कि फलाँ व फलाँ तुम में कैसे थे?' लोगों ने जवाब दिया सुब्हानल्लाह! वह तो अल्लाह वाले थे, अल्लाह के वली थे। उन्होंने जब दुआ की अल्लाह ने कबूल की। उन लोगों ने जब अल्लाह से माँगा तो अल्लाह ने उन को अता किया।

महान पुरूषों की तस्वीरें

शैतान ने उन से पूछा कि उन के बिछड़ने का तुम्हे बड़ा सदमा (तकलीफ) होगा। वह कहते कि हाँ– उनके

बिछड़ने का हम पर बहुत असर है। शैतान ने फिर उन से पूछा कि उन के लिये तुम्हारा प्यार "चाहत" कितनी हैं। वह बोलते कि बहुत ज्यादा है। शैतान ने उन से कहा कि यदि यह बात है तो तुम उनको 'प्रतिदिन' क्यों नहीं देखते वह जवाब देते यह कैसे हो सकता है वह तो मर चुके हैं। शैतान ने उन को समझाया कि तुम उन की तस्वीरें बनाओं और प्रतिदिन सुबह उन को देखा करो। शैतान की यह बात उन को पसंद आई और उन्होंने उन मरे हुए लोगों की तस्वीरें बनाकर रोज़ देखना शुरू (आरम्भ) कर दिया। वह उन की तस्वीर देखते और उनको याद करते।

तस्वीरों से मूर्तियाँ

अब लोगों ने तस्वीरों को मूर्तियों में तबदील कर दिया और अधिक तादाद में उन लोगों की मूर्तियाँ बनाने लगे। उन को अपने घरों और मस्जिदों में रख दिया। वह अल्लाह की इबादत करते थे उस के साथ किसी को शरीक न करते थे। वह यह अच्छी तरह जानते थे कि यह मूर्तियाँ नेक लोगों की है और यह मूर्तियाँ पत्थर की हैं जिन में लाभ तथा हानि पहुँचाने की ताक़त नहीं। यह खाना किसी को नहीं दे सकते लेकिन उनसे बरकत लेते थे और उन का आदर करते थे इसलिये कि यह मूर्तियाँ नेक और अच्छे लोगों की थीं। मूर्तियों की तादाद बढ़ती गई। उनका आदर और अधिक होने लगा।

अब जब भी कोई नेक आदमी मरता उस की मूर्ति बनाते और उसका वही नाम रख देते जिसकी मूर्ति होती थी।

स्टेचू से बुतों तक

यह लोग गुजर गये, उन के लड़कों ने अपने बाप दादा को मूर्तियों की अत्यधिक आदर करते और उनसे बरकत हासिल करते देखा था। उन्होंने यह भी देखा था कि उन के बाप दादा उनको चूमते चाटते थे और उन को छूते थे और उन के करीब दुआ करते थे और उन को देखा था कि उन के सामने अपने सर को झुकाते थे और उन के सामने शीश नवाते थे। बेटे अपने बाप दादा से आगे बढ़ गये। वह उन को सजदे करने लगे, उन से माँगने लगे और उन के नाम पर बली चढ़ाने लगे। इस प्रकार यह बुत (मूर्तियाँ) 'खुदा' भगवान हो गई और इन की लोग उसी प्रकार पूजा करने लगे जैसे वह पहले अल्लाह की पूजा करते थे ऐसे भगवानों की तादाद में बढ़ोत्तरी हुई और उनका नाम रखना शुरू कर दिया कि यह वद्द है यह सुवाअ है, यह यगूस है यह यऊक है और यह नस्र है।

अल्लाह का प्रकोप (क़हर)

अल्लाह उनकी इन हरकतों पर बहुत नाराज़ हुआ और उनपर लानत भेजी। अल्लाह उनसे नाराज क्यों न

होता? क्या इसी लिये अल्लाह ने उन को पैदा किया है, क्या इसी लिये अल्लाह ने उन को खाना देता है कि वह अल्लाह की जमीन पर चलें और उस की नाशुक्री करें। अल्लाह का रिज़क़ खायें और उस के साथ किसी दूसरे को शरीक करें यह कितनी ज्यादती और ना–इन्साफी की बात है और यह कितना बड़ा जुल्म है। अल्लाह का कहर लोगों पर आया, वर्षा कम होने लगी पैदावार में कमी आ गई और नस्ल (वंश) भी कम हो गई फिर भी लोगों की समझ में यह बात नहीं आयी मगर लोगों ने इस काम को नहीं छोड़ा और न अल्लाह से तौबा की।

रसूल (अल्लाह का पैग़ाम लाने वाला)

अल्लाह ने चाहा कि उनके पास उन्हीं का एक आदमी भेजें जो उन से उनकी अपनी जबान में बात करे और उनको समझाये तथा नसीहत करे। बादशाह हर व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से कहाँ बात करते हैं और वह हर व्यक्ति को किसी कार्य को करने के आदेश कब देता है वह मनुष्य है हर व्यक्ति उन को देख सकता है और उनकी बातों को सुन सकता है लेकिन कोई भी न तो अल्लाह को देख सकता है और न ही उस का कलाम सुन सकता है। किसी में इस बात की कुदरत नहीं है लेकिन जब अल्लाह ही इस बात का इरादा कर ले। इसीलिये अल्लाह ने एक रसूल (दूत) भेजने का निश्चय किया ताकि वह लोगों से बात करे और उन सब को नसीहत करे उनको समझाये।

मनुष्य या फ़रिश्ता

अल्लाह ने चाहा कि रसूल इन्सान हो और उन्हीं में से हों उसको लोग पहचानते हों और उस की बात को समझें। यदि रसूल फ़रिश्ता होगा तो लोग कहेंगे कि भाई कैसे काम चलेगा हम तो आदमी हैं और वह फ़रिश्ता है। हम खाते–पीते हैं। हमारा परिवार है। हम अल्लाह की इबादत कैसे करें और जब रसूल इन्सान हो तो वह कहेगा कि मैं खाता–पीता हूँ मेरा भी परिवार है। मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ तो फिर तुम उसकी इबादत क्यों नहीं करते। और यदि रसूल (दूत) फ़रिश्ता होता तो कहते कि तुमको तो भूख व प्यास लगती नहीं है। तुम न तो बीमार पड़ते हो और न तुमको मौत आ सकती है। तुम हमेशा अल्लाह की इबादत करते हो और उस को याद करते हो। हम तो इन्सान हैं हमें भूख व प्यास भी लगती है, हम बीमार भी पड़ते हैं और हमें मौत भी आती है। हम हमेशा अल्लाह की इबादत और उस को याद कैसे कर सकते हैं। जब रसूल इन्सान होगा तो वह उन से यह कहेगा कि मैं तुम्हारी तरह हूँ। मुझे भी भूख–प्यास लगती है मैं भी बीमार होता हूँ और मुझे भी मरना है मैं अल्लाह की इबादत और उसको याद करता हूँ तुम क्यों अल्लाह की इबादत और उसको याद नहीं करते। उस वक्त लोगों से जवाब न बन पड़ेगा और कोई उज्र न कर सकेंगे।

नूह अलैहिस्सलाम रसूल

अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को उनकी क़ौम में रसूल बनाकर भेजा उन की क़ौम में बहुत से मालदार और सरदार थे। लेकिन अल्लाह ने अपने काम के लिये नूह अलैहिस्सलाम को चुना अल्लाह ने किसी अन्य का चयन नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि उस का कार्य कौन ठीक ढंग से कर सकता है। नूह अलैहिस्सलाम बड़े भले और साधारण इन्सान थे नूह अलैहिस्सलाम बड़े इज्जतदार और बुद्धिमान थे। नूह अलैहिस्सलाम बड़े दयालु नसीहत करने वाले, सत्यवादी और अमानतदार, दूसरों को समझाने वाले थे अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को चुना और उनको वह्य की कि अपनी क़ौम को उन पर दर्दनाक अज़ाब आने से पूर्व डराइये। नूह अ० क़ौम के सामने खड़े हुए और अपनी क़ौम से कहा कि मैं तुम्हारे पास रसूल बनाकर भेजा गया हूँ मेरी बात मानो कामयाब होगे।

क़ौम ने क्या जवाब दिया

नूह अ० ने जब बस्ती वालों से कहा कि मैं तुम में रसूल बनाकर भेजा गया हूँ तो बस्ती वालों में से कुछ खड़े हुए और बोले कि तुम नबी कब हो गये। कल तक तो तुम हमारे साथ थे और आज रसूल होने का दावा कर रहे हो! नूह अ० के कुछ मित्रों ने कहा कि यह तो हमारे साथ बचपन में खेलता था हर दिन हम में बैठता–उठता था

इस का नबुव्वत कब मिल गई दिन में या रात में? पूंजीपतियों और घमंडियों ने कहा कि क्या अल्लाह को और कोई दूसरा नहीं मिला। क्या सब लोग मर गये हैं क्या पूरी क़ौम में एक गरीब ही इस कार्य के लिये मिला?

(मूर्खों) जाहिलों ने कहा कि यह तो तुम जैसा आदमी है यदि अल्लाह चाहता तो फरिश्ता उतार सकता था। हमने तो अपने बाप–दादा से ऐसा कुछ नहीं सुना। कुछ लोग यह भी कहने लगे कि इज्जत शोहरत और सरदारी हासिल करने के लिये नूह अ० ने यह तरीका अपनाया और यह 'नाटक' रचा है।

नूह और उनकी बस्ती वाले

नूह अ० की क़ौम जानती थी कि बुतों की पूजा सही है और बुतों की पूजा करना समझदारी है उनकी राय थी कि जो बुतों की पूजा नहीं करते वह मूर्ख और गुमराह हैं। रास्ता भटके हुए हैं वह कहते थे कि जब हमारे बाप–दादा बुतों की पूजा करते थे तो हम क्यों न करें।

नूह अलैहिस्सलाम जानते थे कि बुतों की पूजा गुमराही और सरासर बेवक़ूफी है। वह जानते थे कि जिन बाप दादा की यह जिक्र करते हैं वह सब भटके हुए थे। हज़रत आदम जो सब बापों के बाप हैं बुतों की पूजा नहीं करते थे वह केवल एक अल्लाह की इबादत करते थे। यह क़ौम गुमराही और बेवक़ूफी में पड़ी हुई है। यह पत्थर की पूजा करते हैं और उस अल्लाह की इबादत नहीं

करते जिसने उन्हें पैदा किया है। "नूह" अलैहिस्सलाम खड़े हुए और बुलंद आवाज़ में कहा कि 'ऐ लोगो! अल्लाह की इबादत करो। उसके अलावा कोई दूसरा रब नहीं है। यदि तुम अपनी हठधर्मी पर कायम रहे तो मुझे तुम पर बड़े दिन (कियामत) के अजाब का खतरा है।

बस्ती के सरदारो ने कहा कि हम तुम्हें खुली गुमराही में देख रहे हैं और भटका हुआ देखते है। हज़रत 'नूह' ने कहा कि मैं गुमराह नही हूँ। मैं तो अल्लाह की तरफ़ से रसूल बनाकर भेजा गया हूँ मैं तुमको अपने रब का पैगाम पहुँचाने आया हूँ मैं तुम को नसीहत करता हूँ और मैं अल्लाह की ओर से वह जानता हूँ जो तुम नही जानते हो।

कमीनों (बुरे लोग) की पैरवी

हज़रत नूह अ0 ने बड़ी कोशिश की कि उन की बस्ती वाले ईमान ले आयें अल्लाह की इबादत करने लगें और बुतों की पूजा करना छोड़ दें, लेकिन थोड़े लोगों को छोड़कर कोई ईमान नहीं लाया। जो थोडे ईमान लाए वह अपने हाथों से काम करते थे और हलाल रोजी खाते थे। पूंजीपतियों ने अपने धन और घमण्ड के कारण नूह की बात मानने से इन्कार किया और ईमान नहीं लाये। अपने बच्चों और अपनी दौलत में ऐसे फँसे कि आखिरत की सोच दिल से निकल गई और फिर कहने लगे कि हम शरीफ हैं और यह लोग कमीने हैं, जलील हैं। जब "नूह" अलैहिस्सलाम दावत देते तो वह कहते कि क्या हम तुम

पर ईमान लायें? जब कि तुम्हारी पैरवी कमीने लोग कर रहे हैं। तुम्हारे साथ गरीब हैं। और यह भी कहते कि इन गरीबों, मिसकीनों को निकाल दो। हज़रत नूह अ० ने उनकी यह बात मानने से इन्कार कर दिया और कहा कि इन मोमिनों को मैं निकालने वाला नहीं हूँ मेरा दरवाजा कोई बादशाह का दरवाजा नहीं है। मै तो तुमको होशियार करने आया हूँ।

नूह अलैहिस्सलाम जानते थे कि यह गरीब मिसकीन सही तौर पर ईमान लाये हैं और यह इसमें मुखलिस हैं। अल्लाह नाराज होगा यदि मैंने इनको निकाला तो फिर उनकी कोई मदद न कर सकेगा। हज़रत नूह अ० ने क़ौम से कहा कि "ऐ मेरी क़ौम! यदि मैंने इनको निकाला तो फिर अल्लाह के मुकाबले में मेरी मदद कौन करेगा?"

दौलत वालों की दलील (तर्क)

पूंजीपति कहते कि नूह अ० जिस बात की दावत देते हैं उसमें न तो कोई भलाई है और न वह हक है। इसलिये कि हमारा तजुर्बा (अनुभव) कहता है कि हम हर खैर में आगे हैं। खाने की अच्छी किस्में हमारे लिये हैं। अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनना हमारे भाग्य में है। हर चीज़ हमारी सेवा के लिये है हम देखते हैं कि शहर में कोई खैर (लाभ की वस्तु) हमारे पास आने में गलती नहीं करता हम को छोड़ कर आगे नहीं जाता यदि यह दीन (धर्म) अच्छा होता तो मिसकीनों और गरीबों से पहले

हमारे पास आता अगर इस में भलाई होती तो हमसे पहले यह गरीब लोगों के पास न जाता।

नूह अलैहिस्सलाम की दावत

नूह अलैहिस्सलाम ने लोगों को समझाने की बड़ी कोशिश की और उनसे कहा कि लोगों! मैं तुमको डराने आया हूँ अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और उसकी मानों अल्लाह तुम्हारे पापों को माफ़ कर देगा और एक समय तक तुम को अजाब से मुहलत देगा बेशक अजाब का वक्त आ जाता हैं तो फिर नहीं रुकता। क्या अच्छा होता कि तुम इस को समझते। अल्लाह ने बारिश रोक दी उस की नाराजगी बढ़ गयी उसने इनकी खेती की पैदावार कम कर दी और उनकी सन्तानों में भी कमी कर दी। नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों से कहा कि लोगो! यदि तुम अल्लाह पर ईमान ले आओ तो अल्लाह तुम से खुश हो जायेगा और तुम्हारे यह सारे दुख–दर्द दूर कर देगा। अल्लाह वर्षा करेगा तुम्हारे रोजगार और तुम्हारी सन्तान में बरकत देगा। नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और उनसे कहा कि क्या अल्लाह को नहीं पहचानते तुम्हारे चारो तरफ़ उसकी निशानियाँ ही तो है तुम इस पर विचार क्यों नहीं करते। कब तुम्हें समझ आयेगी। तुम्ही बताओ आसमान किसने बनाया? चाँद में रोशनी किसने पैदा की? और सूरज को रौशन किसने किया? और जमीन को फर्श

किसने बनाया? सोचो! और विचार करो। लेकिन वह लोग मूर्ख थे वह ईमान नहीं लाये उलटा उनपर यह असर हुआ कि जब नूह अलैहिस्सलाम अल्लाह की दावत देते वह अपने कानों में अंगूलियाँ डाल लेते। बताओ वह आदमी कैसे बात समझेगा जो सुनेगा नहीं और वह कैसे सुनेगा जो सुनना नहीं चाहे।

नूह अलैहिस्सलाम की दुआ

एक समय तक नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों को दावत दी और 950 वर्ष तक क़ौम को नसीहत करते रहे लेकिन नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ईमान नहीं लाई और मूर्ति पूजा नहीं छोड़ी। कब तक नूह अलैहिस्सलाम उनके ईमान लाने का इन्तेजार करते, कब तक ज़मीन पर हो रहे बिगाड़ को देखते और कब तक मूर्ति पूजा बरदाश्त करते। कब तक यह देखते रहते कि खायें तो अल्लाह का और पूजा दूसरों की करें। नूह को गुस्सा क्यों न आता इन बातों पर। जितना सब्र किया कोई कर नहीं सकता। 950 वर्ष उन्होंने सब कुछ सहन किया।

आख़िर अल्लाह की वह्य नूह अलैहिस्सलाम पर आई कि जिन को ईमान लाना था ला चुके अब यह लोग ईमान नहीं लायेंगे। "वह्य" (ईशवानी) के बाद हज़रत नूह ने एक बार फिर कोशिश की और उनको ईमान लाने को कहा उनकी क़ौम ने उनको जवाब दिया कि ऐ नूह तुम अब तक हम से लड़ते रहे और इस लड़ाई झगड़े में

दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। रोज की चिक–चिक से अच्छा है कि तुम वह ले आओ जिससे तुम हमको डराया करते हो यदि तुम सच्चे हो।

नूह अलैहिस्सलाम अपने लोगों से बिल्कुल नाउम्मीद हो गये और उनको अल्लाह के लिये गुस्सा आया और उन्होंने बद–दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस धरती पर काफ़िरों में से किसी को न छोड़ना और न बचाना।

सफीना 'बड़ी कश्ती'

अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल की और उनकी क़ौम को डूबाने का फैसला किया लेकिन नूह अलैहिस्सलाम और उनकी कौम के मोमिनीन को बचाने का भी फैसला किया। नूह अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने एक बड़ी कश्ती बनाने का आदेश दिया। नूह अलैहिस्सलाम ने कश्ती बनाना आरम्भ किया। कौम ने उनको यह काम करते देखा तो उनको एक मशगला हाथ लग गया और उन का मज़ाक "खिल्ली" उड़ाने लगे और यह कहते "अरे यह क्या नूह? तुम कब से बढ़ई हो गये? हम तुमसे पहले ही कहा करते थे कि देखो इन नीचे लोगों में मत उठो–बैठो। लेकिन तुमने हमारी बात नहीं मानी। तुम बढ़ई और लोहारों में बैठने लगे बढ़ई हो गये यह जो कश्ती तुम बना रहे हो इस को कहाँ चलाओगे। ऐ नूह तुम्हारी बातें सब की सब अजीब है। अब बताओ यह कश्ती रेत में चलेगी या

पहाड़ पर चढ़ेगी। समुद्र यहाँ से बहुत दूर है। क्या इसे जिन उठाकर ले जायेगा" या इसको बैल खीचेगे? नूह अलैहिस्सलाम यह सब बातें सुनते और सब्र करते रहे। इस से भी अधिक सख्त बातें उन्होंने सुनी और सब्र किया लेकिन नूह अलैहिस्सलाम उनको शर्मो–हया (लज्जा) दिलाते हुए यह कहते कि जैसे तुम आज हमारा मजाक उड़ा रहे हो ऐसे ही कल हम तुम्हारा मजाक उड़ायेंगे।

तूफान

अल्लाह की पनाह– अल्लाह का वादा आ पहुँचा तूफानी और मूसलाधार बारिश हुई। और बहुत बारिश हुई ऐसा लगता था कि जैसे आसमान में छेद हो गये वह पानी को रोक नही पाता, धरती से पानी उबला और बह पड़ा। हर तरफ पानी फूट रहा था और बह रहा था यहाँ तक कि पानी ने सब को हर तरफ से घेर लिया।

अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को वह्य की "हुक्म दिया" अपने साथ चरिन्द और परिन्द का एक–एक जोड़ा (नर–मादा) साथ ले लें। इस लिये कि तूफान ऐसा होगा जिस से ईन्सान और हैवान का बचना मुमकिन नहीं होगा। नूह अ० ने वही किया जिसका उन्हें हुक्म मिला था। उनकी कश्ती में वह लोग सवार हुए जो उनकी कौम में ईमान लाये थे। उसके साथ चरिन्द व परिन्द्र का एक–एक जोड़ा था। पहाड़ों के बराबर मौजे मारती पानी की लहरों में कश्ती चलने लगी। कौम

अपने को बचाने के लिये ऊँची–ऊँची जगहों और टीलों पर चढ़ने लगी इस अजाब से बचने के लिये कहीं स्थान नहीं मिला। लेकिन आज कहीं पनाह नहीं सिवाय अल्लाह के।

नूह अलैहिस्सलाम का बेटा

नूह अलैहिस्सलाम का बेटा काफिरों के साथ था। जब नूह अलैहिस्सलाम ने उसको तूफान में घिरा पाया तो बेटे से कहने लगे आओ हमारे साथ कश्ती में सवार हो जाओ और काफिरों के साथ मत रहो। उसने जवाब दिया कि मैं तो पहाड़ पर चढ़ जाऊंगा वहाँ मुझे पानी से नजात मिल जायेगी। हज़रत नूह अ0 ने उससे कहा कि आज केवल वह बच सकता है। जिसको अल्लाह बचाना चाहे। इन दोनों के बीच मौज आई और उनके बेटे को डुबो दिया।

हज़रत नूह अ0 को अपने बेटे के डूबने का बड़ा दु:ख था और क्यों न होता आखिर उनका बेटा था। हज़रत नूह ने सोचा कि वह डूबने से तो न बच सका कियामत में वह जहन्नम की आग से तो बच जाये। वह जानते थे कि जहन्नम की आग पानी से कहीं अधिक सख़्त होगी और आखिरत का अजाब ज्यादा तकलीफ देने वाला होगा।

अल्लाह ने वादा किया है उनके परिवार के बचाने का और अल्लाह का वादा सच्चा है। उन्होंने अपने बेटे के लिये अल्लाह से दुआ की।

वह तुम्हारे परिवार का नहीं था

नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह को पुकारा और कहा कि ऐ अल्लाह मेरा बेटा मेरे परिवार में से है और तेरा वादा सच्चा है और आप बहुत अच्छे हाकिम है लेकिन अल्लाह इन्सान को नहीं देखता वह तो कर्मों को देखता है। अल्लाह मुशरिक के लिये किसी की शफाअत (सिफारिश) स्वीकार नहीं करता चाहे वह नबी के परिवार का हो और चाहे वह नबी का बेटा ही क्यों न हो।

अल्लाह ने हज़रत नूह अ० से कहा कि तुम्हारा बेटा तुम्हारे परिवार का नहीं था। उसके कर्म अच्छे नहीं थे। तुम मुझ से ऐसी माँग मत करो जिसकी तुम्हें जानकारी नहीं ऐसी जाहिलाना बातों से बचो। नूह अलैहिस्सलाम को इसका एहसास हुआ और तौबा की और कहने लगे ऐ अल्लाह मैं तुझसे ऐसी बातों की माँग पर तेरी पनाह माँगता हूँ। जिसकी मुझे जानकारी नहीं। यदि तूने मुझे क्षमा नहीं किया मुझ पर कृपा नहीं की तो मैं बड़े नुकसान में रहूँगा।

तूफान के बाद

अल्लाह ने मुशरिकीन को डुबाने का निश्चय किया और यह कार्य पूरा हो गया। वर्षा रुक गयी पानी नीचे चला गया और कश्ती जोदी पहाड़ पर सही सालिम आ लगी तो कहा गया बुरा हो जालिमों का। अब नूह अ० तुम भी सलामती से उतरो। नूह अ० और कश्ती वाले कश्ती

से उतर कर खुश्की पर चलने फिरने लगे।

नूह अलैहिस्सलाम की कौम "काफ़िर" तबाह व बरबाद हो गई उनकी तबाही पर न तो आसमान रोया और न जमीन।

अल्लाह ने हज़रत नूह अ० की औलाद को बड़ी बरकत दी वह जमीन पर फैल गई और जमीन भर गई। उन में कौमे हुई, बादशाह हुए, सम्राट हुए, ऋषिमुनी, नबी और पैगम्बर हुए।

आलमो में नूह अलैहिस्सलाम पर सलामती हो।
आलमो में नूह अलैहिस्सलाम पर सलामती हो।।
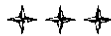
नूह अलैहिस्सलाम के बाद 'हज़रत हूद अलैहिस्सलाम'

अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम की सन्तान में बरकत दी और वह जमीन में फैल गयी। उन्हीं में एक कौम आद भी थी। उस कौम के मर्द बड़े जियाले मजबूत और बलवान थे। उनके बदन बिल्कुल फौलादी थे। वह सब पर भारी पड़ते थे। वह किसी से नहीं डरते थे, उनसे सब डरते थे।

कौम आद को हर चीज में अल्लाह ने बरकत दी थी। सारा मैदान उनके ऊँटों, बकरियों तथा घोड़ो से भर जाता था। उनके घर लड़को से भरे पड़े थे। आद की भेड़, बकरी तथा ऊँट जब चरने बाहर निकलते बड़ा अच्छा लगता था। इसी प्रकार जब आद के बच्चे सुबह खेलने घर से निकलते थे बड़ा अच्छा लगता था। आद की जमीन हरी--भरी थी, उसमें चश्में और नहरें थी। बागात तथा पार्क थे जिससे आद की जमीन की खूबसूरती बढ़ गीई थी।

आद की नाशुक्री 'अल्लाह का एहसान न मानना'

लेकिन आद ने अल्लाह की इन नेअमतों, बरकतों पर कभी शुक्र अदा नहीं किया। उन्होंने "हज़रत नूह अ० की कौम पर जो अजाब आया और" जो कुछ उनके बारे में अपने पुर्खो, माता–पिता से सुना था। उस को भुला दिया और जो निशान उन्होंने स्वयं देखे उससे सबक नहीं लिया। वह यह भूल गये कि किस कारण नूह अ० की कौम पर अल्लाह ने अजाब भेजा था।

वह वैसे ही मूर्तियों की पूजा करने लगे जैसे नूह अ० की कौम मूर्तियों की पूजा करती थी।

वह अपने हाथों से पत्थर की मूर्तियाँ बनाते और तराश्ते थे फिर उनकी पूजा करते थे और उनको सजदा करते थे। वह अपनी आवश्यकताएं उनके सामने रखते थे उनसे माँगते थे और उनके नाम की बली चढ़ाते थे वह बिल्कुल नूह अलैहिस्सलाम की कौम के नक्शे कदम पर चलने लगे। वह मूर्ख हो गये उनकी अकलें (बुद्धि) उनको मूर्तियों की पूजा से नहीं रोक सकीं। दीन धर्म के मामले में वह दुनिया के बेवकूफतरीन (महामूर्ख) लोग थे।

कौम आद की बगावत

आद की ताकत उनके लिये मुसीबत बन गयी और लोगों पर बोझ हो गयी। केवल इसलिये कि उनका अल्लाह पर ईमान और आखिरत पर यकीन नहीं था।

फिर क्या चीज उनको जुल्म, अत्याचार और बगावत 'सरकशी' से रोकती। लोगों पर जुल्म करने से यह कैसे रुकते। वह अपने से अधिक बलवान ताकतवर किसी को नहीं मानते थे और न उनको इसकी चिन्ता थी कि जो जुल्म वह कर रहे है। उनपर उनकी पकड़ होगी और उसका हिसाब उनको देना होगा वह बिल्कुल जंगली हो गये थे। जहाँ हर बड़ा छोटे पर इख़्तियार रखता है और ताकतवर और बलवान अपने से कमजोर को मार डालता है।

जब क्रोध में आ जायें तो पागल हाथी की तरह हो जाते थे जो हर उस चीज को मार डालता है जो उसके रास्ते में मिले। वह जब किसी से जंग करते उसकी फसल व खेती बाड़ी को तबाह 'नष्ट' कर देते थे। वह जब किसी गाँव व शहर में दाखिल होते तूफान मचा देते थे। हर एक की बेइज्जती करते, इज्ज़तदार लोगों को जलील बनाते और उनकी पगड़ी उछालते थे। छोटे लोग उनकी इस आदत के कारण उनसे डरते थे और उनसे भागते थे और उनसे छुपते फिरते थे। यह ताकत, यह घमण्ड उनके लिये वबाले जान बन गया। इसलिये कि न तो उनको अल्लाह का डर था और न मरने के बाद की जिन्दगी पर भरोसा था।

आद के महल

कौमे आद के पास काम भी कुछ अधिक नहीं था सिवाये खाने, पीने और खेल–कूद के। उनमें से कुछ तो

वह थे जो बड़े—बड़े महल बनवाने,में गर्व महसूस करते थे। कुछ केवल बंगलों को काफी समझते थे। उनकी दौलत और उनका फन इसी गारा मिट्टी और पत्थर में बरबाद हो रहा था।

कोई जगह खाली नज़र आती उस पर एक आलीशान महल या बंगला निर्माण कर लेते थे और निर्माण ऐसा कराते गोया उनमें उनको हमेशा रहना और कभी मरना नहीं है।

बहुत से बेचारे ऐसे भी थे जिनका न तो खाने के लिये खाना, पहनने के लिये कपड़ा और न रहने तथा सर छिपाने के लिये घर था। और कुछ के पास घर थे जिनमें कोई रहने वाला नहीं था खाली पड़े थे जो उनके महलों को देखता उसको यह यकीन हो जाता कि इस कौम को आखिरत पर यकीन और ईमान नहीं है।

हूद रसूल बनाकर भेजे गये

अल्लाह ने चाहा कि इस कौम में एक रसूल भेजे क्यों कि अल्लाह जमीन में गड़बड़ी को पसन्द नहीं करता वह यह भी नहीं चाहता कि उसके बन्दे काफिर हों। कौमे आद अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं करती थी, सिवाये खाने—पीने और खेल—कूद के कामों के।

वह मूर्ख थे इसलिये बुद्धि का प्रयोग दीन—धर्म में नहीं करते थे वह दुनिया के मामले में तो बड़े बुद्धिमान थे लेकिन दीन—धर्म के मामले में वह बेवकूफ थें। पत्थरों की

पूजा करते थे। अल्लाह ने चाहा कि उनमें एक रसूल भेजे जो उनको सीधे रास्ते पर लाये। अल्लाह ने चाहा कि रसूल उन्हीं में से हो जिसको वह पहचानते हों और उसकी पूरी बात उनकी समझ में आये अल्लाह ने कौमे आद के एक शरीफ घर में पैदा होने वाले आदमी हज़रत हूद को चुना जिनकी परवरिश अच्छे वातावरण और नेक लोगों में हुई।

हूद अलैहिस्सलाम की दावत 'तबलीग़'

हज़रत हूद ने अपनी कौम को दावत दी और कहा कि ऐ कौम अल्लाह की पूजा करो। उसके सिवाये कोई अन्य पूजा के योग्य नहीं है। ऐ कौम पत्थरों की पूजा क्यों करते हो। उस अल्लाह की पूजा क्यों नहीं करते जिस ने तुम्हें पैदा किया है। ऐ कौम यह पत्थर जिनको कल तुमने तराशा था आज तुम उसकी पूजा कर रहे हो। तुम्हें क्या हो गया है? तुम उस की पूजा क्यों नहीं करते जिसने तुम्हें जन्म दिया और जो तुम्हें खाने को देता है और जिसने तुम्हारे परिवार, तुम्हारी दौलत, तुम्हारी खेती बाड़ी और नस्ल में बरकत दी और तुम्हें हज़रत नूह अ० की कौम के बाद इस जमीन पर जानशीन बनाया और तुम्हें बलवान बनाया और तुम्हारे बदन को ताकत दी। इस सब का बदला तो यह था कि तुम केवल अल्लाह की पूजा करते। तुम देखो कि एक कुत्ता जिस को तुम हड्डी डालते हो वह तुम्हारा घर नहीं छोड़ता और तुम्हारे साथ साये

की तरह हर समय लगा रहता है।

क्या तुमने देखा कि उस कुत्ते ने अपने मालिक को छोड़ दिया हो और किसी दूसरे के घर चला गया हो। तुम बताओ कि किसी जानवर ने पत्थर की पूजा की है। क्या किसी जानवर ने किसी पत्थर को सजदा किया है। फिर तुम क्यों कर रहे हो?

इन्सान जानवर से भी अधिक जलील है। क्या इन्सान जानवर से भी गया गुजरा है।

कौम का जवाब

कौम तो खाने–पीने, खेल–कूद में मगन थी और दुनियावी जिन्दगी से सन्तुष्ट थी। इस कारण हूद अलैहिस्सलाम की बातें सुनने का उन्हें समय नहीं था और वे बड़े तंग दिल हो गये थे। हज़रत हूद से कहने लगे कि ऐ हूद तुम क्या कहना चाहते हो? हूद तुम चाहते क्या हो? तुम्हारी बातें समझ में नहीं आ रही हैं। उनमें से कुछ कहते कि हूद तो बेवकूफ़ और पागल है।

जो दोबारा हज़रत हूद ने कौम के सामने इस्लाम की दावत दी तो उनके शरीफ और इज्जतदार लोग बोले कि "ऐ हूद हमें तो तुम बेवकूफ नज़र आते हो और तुम्हारी बातें गलत और झूठी मालूम पड़ती है।"

"ऐ कौम मूर्ख मैं नहीं हूँ, मैं तो संसार के पैदा करने वाले की तरफ से रसूल बनाकर भेजा गया हूँ। मैं तो अपने पैदा करने वाले की तरफ से तुम्हें नसीहत करने आया हूँ।"

हूद अलैहिस्सलाम की दानाई और कोशिश

हज़रत हूद बराबर अपनी कौम को नसीहत करते रहे और उनको बुद्धिमानी तथा विनम्रता से अल्लाह की तरफ बुलाते रहे। हज़रत हूद ने अपनी कौम से कहा कि 'ऐ कौम मैं तो कल तक तुम्हारा भाई और मित्र था क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो।'

ऐ मेरे भाई— मुझसे डरते क्यों हो, मुझसे भागते क्यों हो। मैं तुम्हारी दौलत में से कुछ नहीं ले रहा हूँ मैं तो तुमसे किसी बात की माँग नहीं कर रहा हूँ, मुझे तो मेरे काम का बदला अल्लाह देगा।

ऐ मेरी कौम! यदि तुम अल्लाह पर ईमान ले आओगे तो तुम्हें डर किस बात का। खुदा की कसम यदि तुम ईमान ले आओ तो अल्लाह तुम्हारे माल में जरा सी भी कभी नहीं करेगा। बल्कि अल्लाह तुम्हारे रिज़क़ में बरकत देगा और तुम्हें अधिक ताकतवर तथा बलवान बनायेगा।

ऐ कौम तुम्हें मेरी रिसालत पर ताज्जुब क्यों है। अल्लाह एक एक से बातें नहीं करता। अल्लाह एक एक को किसी कार्य के करने का आदेश नहीं देता। वह हर एक से मखातिब होकर नहीं कहता कि यह करो यह मत करो।

अल्लाह तो हर कौम से ही किसी आदमी को भेजता है। जो उनसे बेतकल्लुफ बातें करें और उनको नसीहत कर सके। अल्लाह ने मुझे रसूल बनाकर भेजा है। मैं तुम से बातें भी कर रहा हूँ और तुम्हें नसीहत भी कर रहा हूँ।

इसमें आश्चर्य की क्या बात है। अल्लाह ने अपना पैगाम उस आदमी के जरिये भेजा जो तुम में से है। वह तुम्हें डराने और समझाने आया है। उसकी बात सुनो और समझो।

हूद का ईमान

कौम आद को कुछ जवाब नहीं बन पड़ा और उनके समझ में नहीं आया कि हज़रत हूद को क्या उत्तर दें। लेकिन आजिज़ आकर बोले कि ऐ हूद हमारे भगवान तुम से नाराज हो गये इस लिये तुम मूर्ख हो गये हो। हमारे ईश्वरों की तरफ से तुम पर वबाल आया है। हज़रत हूद बोले कि यह पत्थर की मूर्ति न तो किसी को लाभ पहुँचा सकती है और न हानि। यह पत्थर की मूर्ति न तो बात कर सकती है और न सुन सकती है। और न उनमें देखने की ताकत है। भलाई व बुराई इन के वश में नहीं है। और न ही उनमें लाभ और हानि पहुँचाने की ताकत है। और ऐसे ही तुम भी किसी के लिये भलाई बुराई का इख्तियार नहीं रखते हो, और न मुझे लाभ हानि का इख्तियार रखते हो मैं तो तुम्हारे भगवानों पर न तो विश्वास रखता हूँ और न उन से डरता हूँ। मुझे इन बातों से कोई मतलब नहीं जो तुम करते हो तुम्हारा दिल जो चाहे वह करो मैं उस से भी डरता नहीं हूँ मुझे अपने पैदा करने वाले पर पूरा भरोसा है जो तुम्हारा भी रब है और मेरा भी। हर चीज उसके वश में है। एक पत्ता भी उसकी आज्ञा बिना गिर नहीं सकता, हिल नहीं सकता।

आद की दुश्मनी

आद ने हज़रत हूद की तबलीग व नसीहत सुनी लेकिन ईमान नहीं लाये। हज़रत हूद की ताकत, उनकी दानाई व नसीहत बेकार गई कौम ने उल्टा हज़रत हूद से कहा कि – 'ऐ हूद इन बातों का तुम्हारे पास क्या सुबूत है तुम्हारे केवल नसीहत से अपने पुराने भगवानों को नहीं छोड़ सकते। क्या हम अपने उन भगवानों की पूजा छोड़ दें जिन की पूजा हमारे पूर्वजों ने की है' और कहने लगे ऐसा हो ही नहीं सकता और 'ऐ हूद तुम हमारे माबूदों पर विश्वास नहीं रखते उन पर ईमान नहीं लाते तथा उन से नहीं डरते हम भी तुम्हारे ईश्वर पर ईमान नहीं लाते और न उनके अजाब की हमें परवाह है। बहुत बार हम तुम से अजाब के बारे में सुन चुके हैं। कहाँ है वह अजाब और कब आयेगा वह ऐ हूद?

हज़रत हूद ने कहा कि इसकी जानकारी केवल अल्लाह को है। मैं तो केवल तुमको उसके अजाब से डराता हूँ। आद ने कहा कि हम उस अजाब के इंतेजार में हैं और हमें उस अजाब के देखने का बड़ा शौक है।

इनकी इस ढिटाई पर हज़रत हूद को बड़ा आश्चर्य हुआ और उनकी बदबख्ती और मूर्खता पर अफसोस किया।

अजाब

आद प्रतिदिन बारिश का इन्तेजार करते प्रतिदिन

आकाश की ओर देखते लेकिन उनको बादल का एक टुकड़ा भी नज़र नहीं आता। उनको वर्षा की आवश्यकता थी, बारिश का बड़ा शौक था। एक दिन उन्होंने बादल देखे बहुत खुश हुये कि आज बादल आया है। खुशी में चीख पड़े कि यह बादल बरसेगा—यह बादल बरसेगा, खुशी में नाचने लगे और एक दूसरे को पुकारने लगे कि बादल आया यह बरसेगा लेकिन हज़रत हूद समझ गये कि अजाब आ पहुँचा, हज़रत हूद ने कौम से कहा कि अरे मूर्खों यह बारिश का बादल नहीं है। इन बादलों में हवा है और इसमें बड़ा दर्दनाक अजाब है और फिर ऐसा ही हुआ। सख्त हवा चली इतनी सख्त हवा कि लोगों ने कभी न देखी थी और न सुनी। तूफानी हवा चली जिसने पेडों को जड़ से उखाड़ फेंका, घरों को मिसमार कर दिया, जानवरों को एक स्थान से दूर ला फेका। रेगिस्तान की धूल उड़ी, दुनिया अंधेरी हो गयी कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही थी। उनके दिलों में डर बैठ गया, घरों में घुस गये और दरवाजे अन्दर से बन्द कर लिये, बच्चे माओं से चिमट गये लोग दीवारों से चिमट गये और लोग घरों में घुस गये। बच्चे चीख़ने और चिल्लाने लगे, औरतें रोने लगीं और चिल्लाने लगी, और मर्द दुआ करने और पनाह माँगने लगे। गोया कहने वाला कह रहा था कि 'आज वही बच सकता है जिसको अल्लाह चाहे।' यह तूफान सात रात और आठ दिन लगातार आया कौम मर

गयी, पेड़ गिरकर जमीनबोस हो गये। यह अजीब दृश्य था। लोग मरे पड़े थे उनके जिस्मों को चिड़ियाँ खा रही थीं और मकान उजड़ गये जिसमें अब उल्लू का बसेरा था।

अल्लाह ने हूद और उनपर जो ईमान लाये, महफूज़ रखा और कौमे हूद को उनकी सरकशी और कुफ्र के कारण बरबाद कर दिया।

कौमे आद ने अपने पैदा करने वाले का इन्कार किया। कौमे हूद के लिये दूरी हो बद–बख्ती हो।
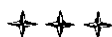
'समूद की ऊँटनी'

आद के बाद

जिस प्रकार नूह अलैहिस्सलाम की कौम के वारिस आद थे ऐसे ही आद के वारिस समूद थे। समूद पूरी तरह आद के नक्शे क़दम पर चल रहे थे जैसे कौमे आद, कौमे नूह के नक्शे कदम पर चले थे। समूद की जमीन भी खूबसूरत थी, हरियाली थी, बाग व पार्क थे, ऐसे बागात थे जिसके नीचे से नहरें बहती थीं।

खेती बाड़ी करते थे और उनको इमारतों का शौक था, सनअतो हिरफत और अक्ल में आद की तरह थे वह पहाड़ों को काटकर बड़े आलीशान मकानों का निर्माण करते और पत्थरों पर खूबसूरत नक्शो निगार बनाते थे। पत्थर का उन्होंने काम किया और अपनी बुद्धिमानी और कारीगरी के गुण से उन्होंने उससे वह सब कुछ बनाया जो इन्सान ढंग से बनाता है। जब कोई व्यक्ति शहर में प्रवेश करता तो वह दंग रह जाता। उनके बड़े अजीब पहाड़ों के बराबर ऊँचे–ऊँचे महल देखकर ऐसा मालूम

होता था कि इन महलों का निर्माण जिन्नों ने किया है इन्सानों ने नहीं। दीवारों पर फूल बूटे ऐसे बनाते गोया मौसमे–बहार ने उसको उगाया हो।

अल्लाह ने समूद को हर चीज से नवाजा उनके लिये धरती में अल्लाह ने बड़ी बरकत उतारी और अल्लाह ने हर चीज के दरवाजे समूद पर खोल दिये। आकाश से वर्षा होती। धरती उनके फूल पौधों और खेती से लह–लहाती। उनके बागात फलों से पटे होते अल्लाह ने उनके रिज़्क़ और निर्माण में बड़ी बरकत दी थी

समूद की नाशुक्री

इन सारी नेयमतों पर समूद ने अल्लाह का न तो कभी शुक्र अदा किया और न अल्लाह की इबादत की। बल्कि और अल्लाह को भुला दिया और उनकी सरकशी, ना फरमानी और नाशुक्री और बढ़ गयी। अल्लाह ने उनको जो दिया था उस पर यह सोच कर खुश होते कि हम से अधिक कोई बलवान नहीं और न कोई हम से अधिक ताक़तवर है। वह सोचते थे कि हमें दुनिया में सदैव रहना है मरना नहीं और वह अपने महलों और बागों में हमेशा रहेंगे। वह सभी सोचते कि मौत इन पहाड़ों में आ नहीं सकती और उनके महलों तक पहुँचने के लिये उसको रास्ता भी नहीं मिलेगा। शायद वह ऐसा इसलिये सोचते थे कि नूह अलैहिस्सलाम की कौम वादी में थी इसीलिये वह डूब गयी। आद तबाह व बरबाद

इसलिये हुए कि वह नर्म जमीन में थे हम खौफ और मौत से सुरक्षित स्थान में हैं।

बुतों की पूजा

यह बात उनके लिये काफी नहीं थी उन्होंने पत्थरों को तराशा, और बुतों की पूजा करने लगे।

पत्थरों की पूजा इसी अन्दाज से करते जिस अन्दाज से उनसे पहले आद और कौमे नूह करती थी।

अल्लाह ने उनको पत्थरों का बादशाह बनाया और वह अपनी मूर्खता के कारण पत्थरों के गुलाम हो गये। अल्लाह ने उनको इज़्ज़त दी और पाक रिज़्क दिया लेकिन उन्होंने अपने को जलील किया और मनुष्य की बेईज़्ज़ती की।

अल्लाह तो किसी पर जुल्म नहीं करता लेकिन इन्सान अपने ऊपर खुद जुल्म करता है। आश्चर्यजनक बात यह है कि पत्थर जिसको अपने हाथों से तराशा और जो न किसी बात को स्वीकार करते हैं और उनमें इन्कार करने की शक्ति है उनके सामने झुकते हैं और उनसे माँगते हैं।

क्या कोई बलवान एक कमजोर की पूजा कर सकता है। क्या कोई सरदार अपने गुलाम को सजदा कर सकता है। फिर क्यों इन्होंने अल्लाह को भुला दिया और अपने को भूल गये। इन्होंने अल्लाह की इबादत करने से इन्कार कर दिया अल्लाह ने उनको जलील किया।

सालेह अलैहिस्सलाम

अल्लाह ने चाहा कि उन्हीं में से एक रसूल भेजें जैसे कि अल्लाह ने कौमे नूह और कौमे आद में भेजा था। अल्लाह जमीन में गड़बड़ी–फसाद नहीं चाहता। वह यह भी नहीं चाहता कि उसके बन्दे कुफ्र औ शिर्क करें। कौमे समूद में नेक, अच्छे व्यवहार और अच्छे चरित्र का एक युवा था। उसका नाम साले था। सालेह का परिवार शरीफ था और वह खुद बुद्धिमान थे। यह अच्छे और भले युवक थे हर व्यक्ति उनकी तारीफ करता था और सब उनके बर्ताव, चरित्र और उनके स्वभाव से प्रभवित थे। लोग उनकी मिसाल देते थे कि भाई यह सालेह है। इनकी अपनी शान है, बान है और आन है देखना यह आगे बड़ा धनवान होगा, शरीफ होगा। इसके हसीन और खूबसूरत बागात और महल होंगे इनके पिता यह सोचकर कितने खुश होंगे कि उनके सपूत ने अपनी सूझ–बूझ और बुद्धिमानी से यह धन कमाया। लोगों में जब निकलेगा तो आन–बान और शान से घोड़े पर सवार होगा और नौकरों चाकरों तथा गुलामों की एक फौज होगी। लोग उसको सलाम करेंगे उसका आदर करेंगे और उस पर सब को गर्व होगा और यह बात बड़े हर्ष की होगी कि इसमें धन दौलत के सब गुण और अच्छाइयाँ हैं लेकिन अल्लाह ने इसके बिल्कुल खिलाफ इरादा किया अल्लाह ने उनको नुबुव्वत देना चाहा उनकी कौम में उनको नबी

बनाकर भेजना चाहा ताकि वह अपनी कौम को सीधा और सही रास्ता दिखलायें। कौम को अंधेरे से रोशनी में लायें। इससे बढ़कर इज्जत और मान सम्मान की और क्या बात हो सकती है।

हज़रत सालेह की दावत

हज़रत सालेह ने बुलन्द आवाज में पुकार कर कहा कि ऐ कौम अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त और कोई इबादत के लायक़ नहीं है।

हज़रत सालेह की कौम के धनवान खेल–कूद, खाने पीने में मसरूफ थे। बुतों की पूजा करते और किसी तरफ नहीं देखते थे। हज़रत सालेह अ० की दावत उनको अच्छी नहीं लगी।

उनको इस पर गुस्सा आ गया और कहने लगे कि यह कौन है। उनके सेवकों ने कहा कि यह सालेह हैं। फिर वह बोले कि यह कहते क्या हैं? सेवको ने कहा कि यह कहते हैं कि अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है। वह यह भी कहते हैं कि अल्लाह तुम्हें मरने के बाद फिर जिन्दा करेगा। और तुम्हारे कर्मों का फल देगा। और रसूल होने का दावा करते हैं और कहते हैं कि अल्लाह ने मुझे मेरी कौम का रसूल बनाकर भेजा है।

धनवान इस बात पर हंसे और कहने लगे कि यह बड़ा मिस्कीन है। भला यह बताओ कि यह कैसे रसूल हो

सकता है। इसके पास न तो महल है और न कोई बाग। इसके पास खेती बाड़ी भी नहीं और न इसके पास खजूर के बागात हैं। यह रसूल कैसे हो सकता है?

धनवानों ने देखा कि कुछ लोग सालेह की दावत को कुबूल करने वाले हैं तो उनको अपनी सरदारी खतरे में पड़ती नज़र आयी वह उनसे कहने लगे कि यह तो तुम्हारी तरह इन्सान है जो तुम खाते हो यह खाता है, जो तुम पीते हो यह पीता है। यदि तुम ने अपने ही तरह के आदमी की बात मानी तो तुम को बड़ा घाटा होगा। क्या यह मुमकिन है कि तुम मर जाओगे मिट्टी हो जाओगे, तुम्हारी हड्डियाँ सड़ जायेगीं, तुम को फिर जिन्दा किया जायेगा। कितनी अजीब बात है जिसका यह वादा करते हैं हमारी यह जिन्दगी जिसमें जी रहे हैं और जिसमें हम मर रहे हैं हम दोबारा उठाये जायेंगे। यह सालेह ईश्वर पर झूठी बाते कहता है हम तो इस की बात पर विश्वास नहीं कर सकते।

हमारा ख्याल गलत निकला

हज़रत सालेह की बात उनकी कौम ने नहीं मानी अल्लाह की नाफरमानी की और उसपर ईमान नहीं लाये। सालेह अ० ने उनको जब नसीहत की और बुतों की पूजा से रोका तो कहने लगे कि ऐ सालेह! तुम तो बहुत अच्छे और नेक लड़के थे हमारा तो यह ख्याल था कि हम लोगों में तुम बड़े आदमी होगे और शरीफ होगे। हमारा

ख्याल था कि तुम फलाँ व्यक्ति की तरह होगे लेकिन तुम वैसे नहीं निकले। तुमने हमें बड़ा ना उम्मीद किया। तुम्हारी आयु के लड़के अपनी सूझबूझ से आज बड़े आदमी बने हुये हैं। ऐ सालेह! तुम ने गरीबी का रास्ता अपना कर हमारी आशाओं पर पानी फेर दिया और हमें बड़ा निराश किया। तुम्हारे पिता भी गरीब व मिस्कीन थे तुम्हारी माता भी मिस्कीन थीं हमने तुम से बेकार की अच्छी आशा रखी। हज़रत सालेह ने कौम की यह बातें सुनी तो उनको बेहद अफसोस हुआ। हज़रत सालेह जब अपनी कौम के पास से गुजरते तो उनकी कौम कहती कि अल्लाह सालेह के पिता पर रहम फरमाये। इसने कैसे अपने बेटे को बरबाद किया है।

साहले की नसीहत

हज़रत सालेह इसके बावजूद बराबर अपनी कौम को नसीहत करते रहे हैं और अपनी कोशिश से अपनी कौम को अल्लाह की तरफ बुलाते रहे और कहते, "ऐ मेरे भाई– क्या तुम यह समझते हो कि यहाँ हमेशा रहोगे? क्या तुम यह समझते हो कि तुम इन महलों में सदैव रहोगे? क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे यह बागात, पार्क और नहरें हमेशा रहेंगी और तुम उनके फल इत्यादि सदैव खाते रहोगे?"

क्या तुम हमेशा पहाड़ों को काटकर मकान बनाते रहोगे। हरगिज, हरगिज ऐसा नहीं हो सकता। बताओ

तुम्हारे माता–पिता फिर क्यों मर गये। वह तो महलों में रहते थे उनके तो बाग वगैरा थे उनके पास तो खेती बाड़ी थी वह भी तो पहाड़ काटकर मकान बनाते और उनमें रहते थे लेकिन यह सब बेकार हुआ इससे उनको कोई लाभ नहीं मिला। उनको जब मौत आयी मर गये पनाह का कोई रास्ता नहीं मिला। ऐसे ही तुम भी मरोगे।

अल्लाह तुम्हें फिर दोबारा जिन्दा करेगा और तुमसे इन नयमतों के बारे में पूछा जायेगा जो तुम्हें दुनिया में उसने दी हैं।

मुझे तुम से कोई बदला नहीं चाहिये

हज़रत सालेह ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरे भाई! तुम मुझसे क्यों भाग रहे हो तुम्हें मुझसे क्या डर है? मैं न तो तुम्हारा माल हड़प करना चाहता हूँ और न ही मुझे तुम से कुछ चाहिये।

मैं तो केवल तुम्हें नसीहत करता हूँ और अपने रब का पैगाम तुम तक पहुँचाता हूँ मुझे इस का कोई बदला नहीं चाहिये। इसका बदला तो मुझे मेरा पैदा करने वाला देगा।

मेरे भाईयो मेरी बात क्यों नहीं मानते? मैं तो तुम्हें नसीहत करने वाला हूँ। तुम उन लोगों की बात मानते हो जो जुल्म (अत्याचार) करते हैं। दूसरों का माल हड़प कर जाते हैं धरती पर गड़बडी फैलाते हैं और शान्ति भंग करते हैं। सालेह की कौम इस बात पर लाजवाब हो गयी और कोई उत्तर नहीं बन पड़ा तो कहने लगे, ऐ सालेह!

हमें तुम जादूगर मालूम पड़ते हो। तुम तो बस हमारी तरह एक मनुष्य हो कोई अल्लाह की निशानी हमें लाकर दिखाओ यदि तुम सच्चे हो।'

अल्लाह की ऊँटनी

हज़रत सालेह ने कौम से कहा कि तुम कैसी निशानी चाहते हो बताओ। वह बोले कि यदि तुम सच्चे हो तो इस पहाड़ से गर्भवती ऊँटनी निकालर दिखलाओ। कौम यह खूब जानती थी कि ऊँटनी तो ऊँटनी से पैदा हो सकती है। ऊँटनी जमीन से तो नहीं उग सकती है और न पत्थर से पैदा हो सकती है उनको यह पूरा यकीन था कि वह निशानी का सवाल करके कामयाब और सालेह लाचार हैं। लेकिन हज़रत सालेह को अपने पैदा करने वाले पर यकीन मजबूत था वह जानते थे कि अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखता है। उन्होंने अल्लाह से उसकी दुआ की जिसको कौम ने चाहा। पहाड़ से हामिला ऊँटनी निकली और उसने बच्चा दिया। लोगों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ और डरने लगे और फिर भी एक आध को छोड़कर कोई ईमान नहीं लाया।

बारी

हज़रत सालेह ने कौम से कहा कि यह अल्लाह की निशानी है तुम ने जो चीज माँगी अल्लाह ने उसे पैदा कर दिया। अब तुम इसका आदर करो और इसको कोई

तकलीफ मत देना यदि ऐसा न करोगे तो तुम पर अजाब आयेगा। यह ऊँटनी अल्लाह की धरती पर रहेगी और खायेगी, पियेगी, घूमेगी, फिरेगी तुम पर इसके पानी चारे की कोई जिम्मेदारी नहीं है। अल्लाह की जमीन में चारा और पानी बहुत है यह ऊँटनी काफी बड़ी है और पैदाइश के एतबार से वह अजूबा है। उनके जानवर उस को देखकर भड़क जाते और भाग जाते थे जब वह ऊँटनी आती तो पानी पी जाती। दूसरे जानवर उसको देखकर भड़क जाते और भाग जाते थे। जब यह सूरत हज़रत सालेह ने देखी तो कौम से कहा कि बारी बारी बना लो एक दिन तुम्हारे जानवर पानी पियेंगे और एक दिन यह ऊँटनी पानी पिया करेगी। जब ऊँटनी की बारी आती वह जाती और पानी पीती और जब कौम के जानवारों की बारी आती उनके जानवर जाते और पानी पीते थे।

समूद की सरकशी

कौम बड़ी घमण्ड़ी हो गयी और सरकशी पर आमादा हो गयी थी कहने लगी कि हमारे जानवर रोज पानी क्यों न पियें। लोग परेशान थे इस ऊँटनी से जिस को देखकर उनके जानवर बिदक जाते और भाग जाते थे। हज़रत सालेह ने ऊँटनी को बेइज्जत और परेशान करने से उनको होशियार किया। कौम ने उनकी बात की कोई परवाह नहीं की और ढिटाई से बोले कि इस को कौन मारेगा एक आदमी खड़ा हुआ और कहा कि मैं मारूंगा

एक दूसरा खड़ा हुआ वह बोला मैं इसे मारूंगा यह दोनो अभागे ऊँटनी के निकलने का इन्तेजार करने लगे जब ऊँटनी निकली तो पहले ने उसे नेजा मारा तथा दूसरे ने उसे जब्ह कर दिया।

अज़ाब

हजतर सालेह को जब पता चला कि ऊँटनी जब्ह कर दी गयी है वह बहुत रंजीदा हुये और इस पर बेहद अफसोस किया और लोगों से कहा कि अब केवल तीन दिन और अपने घरों में ऐश कर लो और देखो यह बात झूठी नहीं है। शत प्रतिशत सत्य होगी।

शहर में नौ आदमी ऐसे थे जिन्होने गुण्डागर्दी मचा रखी थी और किसी तरह वह काबू में नहीं आते थे उन्होंने कसम खाई कि सालेह और उनके परिवार को रात में मार डालेंगे और जो कोई हम से पूछेगा हम कह देंगे हमें पता नहीं हम नहीं जानते। जब तीसरा दिन आया और उन पर अजाब आया अजाब अल्लाह की पनाह दहाड़े मारता भूचाल था उसमें इतनी सख्त आवाज व चीख थी जिस ने दिल फाड़ दिये ऐसा भूचाल था जिसने उनके घरों को मिसमार कर दिया वह दिन समूद पर बड़ा कठिन था सारे लोग मर गये पूरा शहर बरबाद हो गया।

हज़रत सालेह और मुसलमानों ने इस मनहूस शहर से हिजरत की। हजरत सालेह ने वह शहर छोड़ा और अपनी कौम पर एक नज़र डाली जो मरे पड़े थे उनको

देखकर दर्द भरी आवाज में कहा कि ऐ कौम मैंने अपने पैदा करने वाले का पैगाम तुम तक पहुँचाया और तुमको नसीहत भी की लेकिन तुम पर उस नसीहत का कुछ असर न हुआ।

आज यदि उस शहर को देखो तो खाली महल है और कुएं सूखे और बेकार मिलेंगे। वीरान बस्ती है जिसमें न कोई पुकारने वाला है और न कोई जवाब देने वाला है। 'शाम' जाते हुये जब हूजुर स0 का उस बस्ती से गुजर हुआ फरमाया उन के मकानों में मत दाखिल हो जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया लेकिन रोते गिड़गिड़ाते और पनाह माँगते वह डरते हुये, कि कहीं तुम्हें भी वह न पहुँचे जो उन्हें मिला। ऐ लोगो! देखो अनजाम अल्लाह ने समूद को भलाई से महरूम कर दिया।
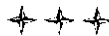
पुनः मिस्र का बयान

नोट : हजरत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह अलैहिमुस्सलाम और उनकी कौमों के बयान के बाद अब फिर मिस्र की ओर आते हैं और याकूब अ० के निधन से आरंभ करते हैं।

कुछ दिनों के बाद याकूब अ० का इन्तेकाल (निधन) हो गया। उनके मरने (निधन) पर मिस्र वालों को बड़ा दुःख और सदमा पहुँचा बड़े गम के साथ उनको दफनाया और यह समझा मानो उनका बाप मर गया।

उनके मरने के कुछ समय बाद युसुफ अ० का इन्तेकाल (निधन) हो गया। उनके निधन पर पूरे मिस्र ने दुःख मनाया। गम का पहाड़ उन पर टूट पड़ा और वह बहुत रोये।

यूसुफ की ताजियत (पुर्से) में मिस्र वाले उनके भाईयों के पास जाते तो उनके एहसानों का जिक्र करते और रो–रो कर उनसे कहते थे कि आप का भाई नहीं

मरा। हमारा भी चाहने प्यार करने वाला भाई हमसे बिछड़ गया है। आज हमने न्याय करने वाला बादशाह खो दिया है। उसने अपने समय साफ सुथरा शासन दिया, हमें बड़ी परेशानियों से निकाला हमारे आराम का उसने पूरा ख्याल रखा। उसने जुल्म, अत्याचार समाप्त किया और कमजोरो की सदैव सहायता की है। जब भूख से हमारे पड़ोसी देश के लोग मर रहे थे उसने हमें खाना दिया, हमारी सहायता की और हमें भूख से मरने नहीं दिया। हम गुमराह थे उसने हमें सही मार्ग दर्शाया। हम अल्लाह को नहीं पहचानते थे उसने अल्लाह का परिचय कराया। हमारा आख़िरत (परलोक) पर विश्वास और यकीन नहीं था, उसकी शिक्षा से हम आख़िरत पर यकीन करने लगे। ऐसी विशेषताएं रखने वाले व्यक्ति को हम कैसे भुला दें।

आप उनके परिवार के हैं। आप हमारे लिये वैसे ही इज्जत के हकदार हैं जैसे वह हमारे लिये थे। यह शहर आप का और हम आपके हैं। आप हमारे लिये वैसे ही रहेंगे जैसे आप अपने भाई के जमाने में रहे।

बनी इस्राईल (कनाआनी) मिस्र में

बनी इस्राईल में यह बात कुछ दिन तक बाक़ी रही। वह अपनी बातो पर कायम भी रहे उन्होंने कनानियों के एहसानों को माना और उनको इज्जत भी दी। लेकिन

उनमें और उनके विचारों में तबदीली (परिवर्तन) आने लगी। उनके कर्म खराब हो गये। वह अल्लाह की शिक्षा भुला बैठे, अल्लाह की तरफ बुलाना छोड़ दिया और वह दुनिया में पड़ गये। लोगों को भी वह अच्छी नज़र से नहीं देखते थे। यह भी भूल बैठे कि यह कैसे हैं। और इसके बाप दादा क्या थे। बनी इस्राईल के कर्म बिगड़ गये। अब उनमें नसल (वंश) के सिवा कोई बात नहीं थी जिस पर वह गर्व करते। वह आम लोगों की तरह हो गये अपनी विशेषता खो दी।

उन में ईर्ष्या जलन पैदा हो गइ। किसी को खुश और धनवान देख नहीं सकते थे। गरीबों को जलील समझना, उनको छोटा समझना उनकी आदत बन गयी थी।

मिस्र के पूर्व निवासी भी कनानियों को विदेशी कहने लगे कि मिस्र तो मिस्रियों का है। कनानी मिस्री नहीं हैं। वह तो कनान से आये थे। यूसुफ को तो मिस्र के बादशाह ने खरीदा था। उनको मिस्र पर हुकूमत करने का कोई हक नहीं था। इन मूर्खों ने यूसुफ का प्यार उन का प्रेम उनके एहसानात जो उन्होंने इन पर किये थे बिल्कुल भुला दिये थे।

मिस्र का फ़िरऔन

अब मिस्र पर फ़िरऔन बादशाहों की हुकूमत आ गई। यह बनी इस्राईल से बेहद कीना (शत्रुता) रखते थे और उनसे नाराज़ रहते थे।

एक सख्त और ज़ालिम बादशाह मिस्र पर हुकूमत करने आया। वह यह नहीं समझता था कि बनी इस्राईल नबियों की औलादों में से हैं। यूसुफ के घर के हैं और यूसुफ के मिस्र और मिस्रियों पर बड़े एहसानात हैं। इसका बदला यह होना चाहिये था कि इनके साथ न्याय होता और इनको वह स्थान दिया जाता जिसके यह मुस्तहिक हैं।

लेकिन वह बनी ईस्राईल के मुकाबले किबतियों को आदर देता। वह बनी इस्राईल को एक कौम और किबतियों को एक दूसरी कौम समझता था, वह समझता था कि किबती बादशाहों के खानदान से सम्बन्ध रखते हैं और बनी इस्राईल गुलामों की कौमों में से हैं। फ़िरऔन बनी इस्राईल से सेवकों और गुलामों का सा मामला करता। उनको खिदमत करने वाला जानवर समझता था और कहता जैसे जानवरों को रोज़ का रोज़ खाने को दिया जाता है वैसे ही इनको भी मिलना चाहिए। फ़िरऔन बड़ा ज़ालिम बादशाह था। उसको बड़ा घमण्ड था। वह अपने सिवा किसी को कुछ नहीं समझता था। वह अपने को खुदा (भगवान) समझता था। उसके बड़े—बड़े महल थे उसके नीचे बहने वाली नहरें थीं और उसको इन पर बड़ा घमण्ड था। वह कहा करता कि यह सब चीजें मेरे लिये हैं, मेरे आराम के लिये हैं।

वह चाहता था उसके देश के वासी उसको भगवान जानें, उसकी पूजा करें। तथा उसे सजदा करें। जैसे वह बाबुल शहर के बादशाह नमरूद का जानशीन हो। वह किसी को अपने से बढ़ते देखता तो उसको क्रोध और गुस्सा आता। बनी इस्राईल के दिल में ईमान और अल्लाह पर यकीन था। वह अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत तथा किसी के सामने अपने सर को झुकाना स्वीकार नहीं कर सकते थे। इसलिये उन्होंने फ़िरऔन के आगे सर झुकाने से साफ इन्कार कर दिया। उनके इन्कार से फ़िरऔन का क्रोध और बढ़ गया।

बच्चों का कत्ल

एक ज्योतिष किबती ने फ़िरऔन से आकर कहा कि बनी इस्राईल में ऐसा एक लड़का पैदा होगा जो तुम्हारी बादशाहत व सल्तनत की समाप्ति की वजह बनेगा। इस खबर ने फ़िरऔन को पागल कर दिया।

उनसे उसी समय अपनी पुलिस को यह आदेश दिया कि वह शहर में पता लगाये और जैसे ही बनी इस्राईल में किसी लड़के की सूचना मिले, शीघ्र वहाँ जाये और उस बच्चे को मार डाले वह मूर्ख समझता था कि वह भगवान है। उसको इख्तियार है जिसको चाहे मारे और जिसको चाहे छोड़ दे। हजारों बच्चों को उनके

माता–पिता के सामने कत्ल कर दिया। बनी इस्राईल में जिस दिन किसी बच्चे का जन्म होता उस दिन उन पर गम के पहाड़ टूट पड़ते और रोना–पीटना मच जाता। एक एक दिन में सैकड़ों बच्चे कत्ल होते जैसे ईदेअज्हा में भेड़, बकरियाँ और गाय जब्ह होती हैं। फ़िरऔन मिस्र की जमीन पर बहुत बढ़ गया था, वहाँ के लोगो को फिर्कों में बाट रखा था, एक फिर्का बनी इस्राईल को बहुत घटा कर रखा था। उनके बच्चों को कत्ल करवाता और उनकी औरतों को जिन्दा छोड़ देता था। बड़ा फसाद (उतपात) फैलाने वालों में से था।

मूसा अलैहिस्सलाम का जन्म

अल्लाह ने चाहा कि वह बात होकर रहे जिससे फ़िरऔन डरता और जिससे वह बचना चाहता है।

उस बच्चे का जन्म हुआ जिसके जरिये अल्लाह ने फ़िरऔन का राज्य जाना लिख दिया था।

उस का जन्म हुआ जिसके जरिये अल्लाह ने बनी इस्राईल की आज़ादी लिख दी थी।

उस का जन्म हुआ जिसके जरिये अल्लाह ने लोगों की इबादत से निकाल कर अल्लाह की इबादत में लाना लिख दिया था।

फ़िरऔन और उसकी फ़ौज के न चाहते हुए भी मूसा बिन इमरान का जन्म हुआ।

पुलिस के न चाहते हुए भी उन्हीं के आस पास मूसा ने तीन माह गुज़ार दिये और उनको इसकी भनक भी नहीं लगी।

नील में

पुलिस की खोज और फिर उनका पता चल जाने के

बाद उनके कार्यों से मूसा की माँ बड़ी परेशान थीं और डर रही थीं कि यह प्यारा सा बच्चा उनके हत्थे न चढ़ जाये। ऐसी हालत (स्थिति) में उनका ऐसा सोचना स्वाभाविक था। उनको चिन्ता थी कि इस बच्चे को कहाँ और कैसे बचायें।

पुलिस सूंघती फिर रही है, उसको पता चल गया तो क्या होगा? यह सोचकर वह डर जाया करती थी।

अल्लाह ने मूसा की माँ के दिल में यह डाल दिया कि मूसा को एक संदूक में रखकर नील में डाल दें। एक माँ के लिये बच्चे को नील में डाल देने की बड़ी परीक्षा थी। वह सोचने लगी कि संदूक पता नहीं कहाँ जाये। संदूक में बच्चा भूखा–प्यासा रहेगा, कौन उसको दूध पिलायेगा और कैसे वह संदूक में साँस लेगा। ऐसा न हो कि संदूक ही में मर जाये। इस प्रकार की बातें उनके दिमाग में आती रहीं हर माँ अपने बच्चे के लिये ऐसा ही सोचती है।

उन्होंने अल्लाह पर भरोसा किया और सोच लिया कि जो हालात हैं उन में बच्चा घर में सन्दूक से अधिक सुरक्षित न रहेगा। यहाँ तो पुलिस पीछे पड़ी है। वह तो बच्चों की दुश्मन है। मूसा की माँ ने वही किया जिसको करने का अल्लाह ने उनको आदेश दिया था। उन्होंने मूसा को संदूक में रखा और संदूक नील में डाल दिया। मूसा को नील में डालते समय थोड़ी परेशानी हुई लेकिन

अल्लाह पर पूरा भरोसा किया और सब्र किया। यह बयान कुर्आन में इस प्रकार है :–

हमने मूसा की माँ को वह्य की कि "मूसा को दूध पिलाती रहो, और जब डर महसूस करो तो निश्चित हो कर उस को दरया में डाल दो और न डरो न गमगीन हो। हम इनको फिर तुम्हारे पास लौटा देंगे और समय आने पर इनको रसूल बना देंगे।

फ़िरऔन के महल में

फ़िरऔन के समुद्र के किनारे बहुत से महल थे। हर एक में वह बारी–बारी से तफरीह के लिये जाता था। एक दिन वह साहिल (नदी तट) पर तफरीह कर रहा था। उसके साथ उसकी मलिका (रानी) भी थी। दोनों तफरीह कर रहे थे। अचानक उन दोनों की नज़र संदूक पर पड़ी। मौजें उससे खेल रही थीं मानो उस को प्यार कर रही हैं। मलिका ने फ़िरऔन से कहा कि आप वह संदूक देख रहे हैं? फ़िरऔन ने कहा कि नील में संदूक कहाँ? वह तो लकड़ी है जो नील में गिर गयी है। मलिका ने कहा कि नहीं वह तो संदूक ही है। संदूक करीब आया तो लोग बोल पड़े अरे हाँ यह तो संदूक ही हैं बादशाह ने अपने नौकरों में से एक नौकर से उस संदूक को निकालकर लाने को कहा। संदूक लाया गया। उस को खोला तो उस में मुसकुराता हुआ एक खूबसूरत लड़का था। सबको

बड़ी हैरत हुई। हर एक उस को लेने और देखने लगा। फ़िरऔन को भी हैरत हुई। कुछ नौकर बोले कि यह बच्चा इस्राईली मालूम पड़ता है। बादशाह को तो इसे क़त्ल करा देना चाहिये।

मलिका ने अब उस बच्चे को देखा तो उसकी ममता दिल में पैदा हुई और मुहब्बत में उस को सीने से लगाया और उसको प्यार करने लगी। बादशाह से कहा कि इसको क़त्ल मत कीजिये। यह तो हमारे आप के लिये आँखों की ठंडक होगा। सम्भव है कि यह हमारे लिये लाभदायक हो या फिर हम इसको बेटा बना लें।

इस तरह मूसा–बिन इमरान फ़िरऔन के महल में पहुँच गये। फ़िरऔन और उसकी पुलिस के न चाहने पर भी वह जीवित रहें। कौओं की आँखें और चींटी की सूंघ होते हुए भी पुलिस मूसा तक न पहुँच सकी।

अल्लाह ने चाहा कि बच्चों का दुश्मन फ़िरऔन उस बच्चे की परिवरिश (पालन–पोषण) करे जिसके हाथों उस की हुकूमत जानी है।

बेचारा फ़िरऔन मूसा के मामले में धोखा खा गया। उसके साथ उसके वजीर हामान और उसका लश्कर (सेना) भी धोखा खा गयी। सो फ़िरऔन के लोगों ने मूसा के संदूक को उठा लिया ताकि मूसा उन के दुशमन बने और उनके लिये रंज का सबब बनें बेशक फ़िरऔन, हामान और उन की फौजी चूक गये।

बच्चे को दूध कौन पिलाये

यह नया और खूबसूरत बच्चा महल में सब का खिलौना था। हर आदमी उसको लेता और प्यार करता था। हर एक उसको चाहता और उसकी तारीफ़ (प्रशँसा) करता था इसलिये कि मलिका उस को बेहद चाहती और प्यार करती थी। मलिका के चाहने की वजह से हर एक इस खूबसूरत बच्चे को खेलाता और उसको प्यार करता था। बच्चे को दूध पिलाने के लिये मलिका ने दाई बुलाई. दाई आई और दूध पिलाना चाहा तो वह बच्चा रोता और दूध नहीं पीता था। मलिका ने दूसरी दाई बुलाई। उसका भी बच्चे ने दूध नहीं पिया और रोता रहा। चार पाँच दाई बुलाई गई लेकिन उसने किसी का दूध नहीं पिया और रोना भी बंद नहीं हुआ। सब को हैरत थी उस के दूध न पीने पर। सब परेशान थे कि बच्चा क्यों बराबर रो रहा है। हर दाई ने पूरी कोशिश की दूध पिलाने और मलिका को खुश करने की इनाम (पुरस्कार) की लालच में। लेकिन अल्लाह ने हर दाई का दूध उन पर हराम कर दिया था नये महल में बच्चे ने सुबह की। महल में उसी का जिक्र था एक औरत दूसरी से पूछ रही है बहन तुम ने नये लड़के को देखा जवाब मिला हाँ देखा लड़का बहुत खुबसूरत है। लेकिन वह बच्चा अजीब बच्चा है किसी दाई का दूध नहीं पीता। कोई दाई जब उसको दूध पिलाना चाहती है तो दूध पीने से इन्कार करता और रोता

है। बेचारा बिना दूध पिये कैसे जियेगा। हाँ बहन कितने दिन गुजर गये और बच्चे ने दूध नहीं पिया।

अपनी माँ की गोद में

मूसा की माँ ने मूसा की बहन से कहा कि ऐ! बेटी जा और भाई की खबर ले। मुझे यकीन है कि वह जिन्दा होगा। अल्लाह ने उसको जिन्दा सुरक्षित लौटाने का मुझसे वादा किया है। और अल्लाह का वादा सच्चा है।

मूसा की माँ के कहने पर बहन भाई का पता लगाने घर से निकल पड़ी। उसने रास्ते में लोगों को महल में एक खूबसूरत बच्चे के पहुँचने के बारे में बातें करते सुना।

मूसा की बहन सीधे महल पहुँची और वहाँ खड़े होकर उन औरतों की बातें सुनने लगी जो इस बच्चे के बारे में आपस में बातें कर रही थीं। एक औरत दूसरी से कह रही थी कि बहन मलिका ने असवान से जिस दाई को बुलाया था वह आई? उसने कहा कि हाँ आई थी लेकिन बच्चे ने उसका भी दूध नहीं पिया। हैरत है? कमाल का बच्चा है। फिर वही औरत बोली कि शायद यह सातवीं दाई थी जिसका मलिका ने तजुर्बा (अनुभव) किया है। लोग तो कहते थे कि उसका दूध अच्छा और दाई भी बड़ी साफ–सुथरी थी। उसका दूध हर लड़का पी लेता है। यह बातें सुनकर मूसा की बहन ने बड़े अदब से उन औरतों से कहा कि मैं इस शहर में एक ऐसी औरत को जानती हूँ जिसका दूध यह बच्चा जरूर पी लेगा। औरत

बोली— मुझे तो विश्वास नहीं। हमने तो छः दाइयों का अनुभव किया है। लड़के ने किसी का भी दूध नहीं पिया। एक दूसरी और औरत बोली कि सातवीं दाई का अनुभव कर लेने में हरज ही क्या है?

इन बातों की खबर मलिका तक पहुँची। उसने शीघ्र उस लड़की को अपने पास बुलाया और कहा कि अभी जाओ और उस दाई को लेकर आओ। मूसा की माँ आईं और सेविका ने बच्चे को उसको दे दिया उनसे चिमट गया और दूध पीने लगा गोया उनको वह पहले से जानता है। वह उनका दूध कैसे नहीं पीता आखिर वह उनकी चाहने वाली माँ थी। और कई दिन के भूखे थे। उनके दूध पीने पर मलिका महल वालों और फ़िरऔन का हैरत (आश्चर्य) हुई। फ़िरऔन कहने लगा कि इतनी दाइयों को बुलाया किसी का दूध नहीं पीया। इस औरत को देख कर उससे चिपट गया और दूध पीने लगा। यह इस की माँ तो नहीं? इस पर मूसा की माँ फ़िरऔन से कहने लगी कि बादशाह यह बात है कि मैं बहुत साफ–सुथरी रहती हूँ और मेरे बदन में ऐसी खुशबू आती है कि हर बच्चा पी लेता है। फ़िरऔन उनके जवाब से संतुष्ट हो गया और बच्चा उनके हवाले कर दिया। और मूसा की माँ मूसा को गोद में लिये घर लौट आई।

"हमने उनको उनकी माँ के पास लौटा दिया ताकि

उनकी आँखों को ठंडक पहुँचे और वह गमगीन न हों और यह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन इस बात को बहुत से लोग नहीं जानते।

फ़िरऔन के महल में

जब दूध पिलाने का समय समाप्त हुआ मूसा की माँ ने मूसा को महल पहुँचा दिया। अब मूसा की परवरिश शहजादों की तरह महल में होने लगी। इस तरह मूसा के दिल से बादशाहों और धन वालों का रोब व दबदबा निकल गया। मूसा अपनी आँखों से देख रहे थे कि वह बादशाह और उनका परिवार किस तरह आराम व राहत से रहते हैं। उनके नौकर चाकर भी आराम से रह रहे हैं। और बनी इस्राईल उनके आराम के खातिर तकलीफें और कष्ट उठा रहे हैं। उनके आराम के खातिर दिन भर भूखे प्यासे गरमी और धूप में काम करते हैं और इस के बदले उनको केवल इतनी मजदूरी मिलती थी जो दिन भर के लिये काफी होती थी।

मूसा अ० बनी इस्राईल का कष्ट उनका परिश्रम देखकर बेचैनी और दुःख महसूस करते थे। उनकी बेबसी और उनके परिश्रम को देखकर अफसोस करते और उनको गुस्सा आता था लेकिन यह सब कुछ खामोशी से बरदाश्त करते थे

मूसा अ० सोचते थे कि आखिर बनी इस्राईल का कुसूर और पाप क्या है? क्या उनका किबती न होना पाप

है? किबती न होना तो कोई पाप नहीं है। यह तो फ़िरऔन की धाँधली और जुल्म है।

एक क़िबती की मौत

जब मूसा अ० जवान और बलवान हुए तो अल्लाह ने उनको हिकमत और दानाई (बुद्धि और समझ) दी मूसा अ० जुल्म व अत्याचार को पसंद नहीं करते थे। कमजोरों और मजलूमों से मुहब्बत करते थे उनकी मदद करते थे जैसे सभी नबी करते हैं। एक दिन फ़िरऔन के शहर में दाख़िल हुए उस वक्त लोग खेल–कूद में व्यस्त थे। वहाँ उन्होंने देखा कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं। उनमें से एक इस्राईली और दूसरा उनका दुश्मन किबती है। इस्राईली ने मूसा को देखकर अपनी सहायता के लिये पुकारा और किबती की ज्यादती की उनसे शिकायत करने लगा मूसा अ० को बहुत गुस्सा आया और उसको एक घूंसा मारा और वह मर गया। इस पर मूसा को बहुत अफसोस हुआ और बड़े शर्मिन्दा हुए और कहने लगे कि यह शैतानी काम था। अल्लाह से तौबा की (हर नबी इसी तरह करता है।) और कहा कि "यह शैतानी काम था। शैतान खुला और गुमराह करने वाला दुश्मन है।" अल्लाह ने मूसा की तौबा कुबूल की इसलिये कि उन्होंने जानकर उसको कत्ल के इरादे से घूंसा नहीं मारा था यह अलग बात है कि उसका समय ही आ गया था और अल्लाह को यही मंजूर था। इसीलिये घूंसा

उसकी मौत का कारण बना।

मूसा अ० की दुआ अल्लाह ने कुबूल की तो वह बेहद खुश हुए और अल्लाह की तारीफ और बड़ाई बयान करते हुए कहा कि मैं अब किसी पापी का साथ (सहयाता) नहीं दूँगा।

शहर में रात गुजारी। हर समय डर था फ़िरऔन की पुलिस का जो बहुत चतुर कौओं की तरह देखने वाली और चींटी की तरह सूंघने वाली थी। किस समय वह आ जाये और उनको पकड़ कर जालिम बादशाह के सामने खड़ा कर दे।

पुलिस ने एक किबती जो फ़िरऔन के सेवकों में था मुर्दा पाया तो कातिल का पता लगाने की भरपूर कोशिश की लेकिन उसमें वह सफल नहीं हुए और कातिल का कोई सुराग नहीं मिला। कातिल का पता बताने वाला कोई नहीं था कातिल का पता केवल मूसा जानते थे या वह इस्राईली जिसके कारण क़िबती मरा। सुबह हुई तो क़िबती की मौत का पूरा शहर में चर्चा था लेकिन कोई कातिल का नाम नहीं जानता था। कातिल के पता न चलने पर फ़िरऔन को बहुत गुस्सा आया और कातिल का पता लगाने के सख्त आदेश दिये।

राज खुलता है

दूसरे दिन मूसा अ० बाहर निकले तो फिर एक दूसरे किबती और उसी इस्राइली को आपस में लड़ते देखा।

इस्राईली ने हज़रत मूसा को देखा तो फिर अपनी सहायता के लिये उनको पुकारा। हज़रत मूसा अ० ने उससे कहा कि तू बड़ा फसादी है। लोगों से बराबर लड़ता झगड़ता है और अपनी सहायता के लिये पुकारता है। क्या मैं हर बार तेरी मदद करूंगा। तेरा तो अब यही काम रह गया है।

मूसा अ० आगे बढ़े कि किबती को समझायें बुझायें और मामले को रफा–दफा कर दें।

इस्राइली ने मूसा का गुस्सा देखा और अपनी तरफ आते देखा तो यह समझ बैठा कि कहीं आज मूसा मुझे मारें और मैं मर जाउं जैसे किबती को मारा था और वह मर गया था। वह बोल पड़ा कि "ऐ मूसा तुम मुझे मार डालना चाहते हो जैसे कल तुम ने एक किबती को मार डाला था। क्या तुम जालिम और बलवान बनकर अपना जीवन बिताना चाहते हो। तुम मुझे माफ करो मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता नहीं तुम न्याय नहीं कर सकते।" उस समय किबती ने समझ लिया कि कल किबती को मार डालने वाले मूसा थे। वह दौड़ता हुआ गया और पुलिस को इसकी सूचना दी कि किबती का कातिल मूसा है। यह खबर फ़िरऔन को भी गई। फ़िरऔन यह जानकर कि मूसा कातिल है तो गुस्सा से पागल हो गया और कहने लगा कि यह वही लड़का है जिसने मेरे महल में रहकर परवरिश पाई और हमारे साथ रहा। और उसी ने यह जुल्म ढाया। लेकिन अल्लाह ने मूसा अ० को फिरऔन

और उसकी पुलिस की पकड़ से दूर रखने का इरादा कर लिया था।

मूसा अ० ने किबती को जानकर नहीं मारा था। उसका समय आ गया था वह मर गया। लेकिन फ़िरऔन और उसकी पुलिस यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थी और उनको कोई सफाई कुबूल नहीं थी।

अल्लाह ने यह फैसला फरमा दिया था कि फ़िरऔन और उसके मुल्क का जवाल मूसा के जरिये ही हो। बनी इस्राइल की फ़िरऔन और उसके अत्याचार का अंत मूसा के जरिये हो। अल्लाह ने बनी इस्राइल को बंदों की पूजा से निकाल कर अल्लाह की इबादत की तरफ लाने का कार्य मूसा को सौंपा। मूसा के कातिल हो ने की खबर पाकर फ़िरऔन और उसके मंत्री व परामर्शदाता परामर्श करने लगे मूसा को पकड़ने और उनको कत्ल करने को। उस बैठक में एक व्यक्ति जो यह सब बातें सुन रहा था और उनकी पूरी योजना का जानकार था तथा मूसा को जानता और पहचानता था। वहाँ से उठा और सीधे मूसा के पास आया और उनको पूरी बातो से जानकार कराया और कहा कि मेरा मश्वारा है कि आप अभी इस देश को छोड़ दें। इस तरह आप फ़िरऔन की योजना से सुरक्षित हो जायेंगे।

मूसा अ० ने उसकी बात मान ली और एहतियात के साथ शहर से निकल पड़े और कहते थे "ऐ मौला मुझे जालिम कौम से नजात (छुड़ा) दे।"

मिस्र से मदयन चले

मिस्र से निकलने के बाद सोचा कि कहाँ जायें। मिस्र बड़ा देश है और इस पूरे देश का शासन फ़िरऔन का है। उसकी पुलिस उनको तलाश कर रही है।

अल्लाह ने मदयन जाने का ख्याल उनके (मूसा) दिल में डाल दिया। यह देश फ़िरऔन के देश की सीमा से बाहर था जहाँ फ़िरऔन के आदमी नहीं आ सकते थे। मदयन उन्नतिशील देश नहीं था। यह तो देहात और गाँव थे जिस में मिस्र की सी चहल पहल नहीं थी और ना उस में मिस्र की तरह बाजार और महल थे। लेकिन वहाँ शान्ति थी और फ़िरऔन के आदेश नहीं चलते थे। मूसा को कितनी खुशी हुई उस देहात में आकर जिसमें आजादी है और न्याय है। कितनी बुरी है उन्नतिशील नागरिकता अपमानिता तथा दास्ताँ के साथ। यहाँ फ़िरऔन की पुलिस और उसकी बुराईयों तथा बच्चों के कत्ल होने का डर नहीं था। यहाँ के रहने वाले निडर होकर सोते और जागते थे।

मूसा अ० ने मदयन आने का फैसला कर लिया फ़िरऔन और उसकी पुलिस मूसा की तरफ से निराश हो गई। जब मदयन की तरफ मूसा अ० चले तो कहने लगे कि "मेरा परवरदिगार मुझे रास्ता दिखायेगा।"

मदयन आ गये

मूसा अ० मदयन आ गये। यहाँ वह किसी को जानते

पहचानते नहीं थे मदयन के बासी भी उनको जानते और पहचानते नहीं थे। सवाल उठा रात गुजारने का मूसा अ० थोड़े परेशान हुए लेकिन अल्लाह की मदद का उनको यकीन था और उस पर उनको भरोसा था। मदयन पहुँचे तो एक कुँए के पास रूके वहाँ लोग अपने जानवरों को पानी पिलाने लाते थे।

उसी जगह दो लड़कियाँ खड़ी थीं जो अपनी बकरियों को पानी पिलाने आई थीं। वह इस इन्तेजार में खड़ी थीं कि लोग अपने जानवरों को पानी पिलाकर जायें तो वह अपनी बकरियों को पानी पिलायें।

मूसा अ० की नज़र उनपर पड़ी तो दया आई और बड़े प्यार से उनसे पूछा कि तुम पानी क्यों नहीं पिला रही हो।

उन्होंने उत्तर दिया कि लोगों के जाने से पहले हमारा बकरियों को पानी पिलाना सम्भव नहीं है वह सब बलवान और शक्तिशाली हैं इसलिये कि वह मर्द हैं और हम कमजोर हैं इसलिये कि हम औरत हैं। लड़कियों से मूसा अ० ने पूछा कि क्या तुम्हारे घर मे कोई मर्द नहीं है जो यह कार्य कर सके। लड़कियों ने कहा कि हमारे पिता हैं मगर वह बहुत बूढ़े हैं। मूसा अ० को उन पर बड़ा तरस आया और उन्होंने उनकी बकरियों को पानी पिला दिया।

हज़रत मूसा चिंतित हुए कि अब कहाँ जायें और किसके यहाँ रात गुजारे। वह एक पेड़ के नीचे साये में

बैठ गये और कहा कि "ऐ अल्लाह मुझे तेरी ही सहायता की जरूरत है तू जो भी मुझे देगा उसमें भलाई होगी।"

बुलावा

यह दोनों लड़कियाँ सूर्यास्त से पहले घर पहुँच गई तो बाप को हैरत हुई और उन से जल्दी आने की वजह पूछी और कहा कि बेटियो तुम्हारे वक्त (समय) से पहले आने पर हैरत है। उन लड़कियों ने कहा कि अब्बाजान अल्लाह ने एक शरीफ आदमी को भेज दिया। उसी ने बकरियों को पानी पिलाया।

बुजुर्ग को आश्चर्य हुआ और वह समझ गये कि जरूर यह कोई परदेसी है अब तक तो किसी दिन किसी ने इन लड़कियों पर तरस नहीं खाया।

बुजुर्ग ने पूछा कि तुमने उसको कहाँ छोड़ा है। लड़कियों ने कहा कि हम उस को वहीं छोड़कर आये हैं वह तो परदेसी है उसका कोई ठिकाना नहीं है।

बुजुर्ग बोले : बेटियो तुमने यह अच्छा नहीं किया। वह परदेसी है और उसने तुम पर एहसान किया है और उस का शहर में कोई ठिकाना भी नहीं है। रात में कौन उसको पनाह देगा और वह बेचारा कहाँ रात गुजारेगा। उसकी मेहमानदारी हम पर है उस का हम पर एहसान है। तुम में से कोई एक उस को जाकर घर ले आओ।

उनमें की एक बड़ी शर्मो हया (लज्जा) के साथ मूसा अ० के पास आई और कहा कि बाबाजान ने आपको

बुलाया है ताकि उस एहसान का बदला चुका सकें जो आपने पानी पिलाकर हम पर किया है।

मूसा अ० समझ गये कि अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल कर ली और साधन कर दिया। इसलिये जाने से इन्कार नहीं किया। मूसा अ० आगे–आगे चल रहे थे मतानत से शराफत से ताकि उनकी नज़र उस लड़की पर न पड़े जो उनके पीछे चल रही थी।

बुजुर्ग के पास मूसा अ० पहुँचे तो उन्होंने हाल पूछा। मूसा अ० ने तफसील से अपनी कहानी उनको सुना दी। बुजुर्ग ने बड़े ध्यान से उनकी कहानी सुनी और कहा अब घबराने की कोई बात नहीं हैं तुम जालिम कौम से अब महफूज (सुरक्षित) हो।

शादी

मूसा अ० उनके पास इज़्ज़तदार मेहमान की तरह रहने लगे बल्कि उनको अज़ीज़ बेटे की तरह चाहा जाने लगा। एक दिन एक लड़की ने अपने बाप से कहा कि बाबाजान इनको आप मजदूरी पर क्यों नहीं रख लेते। यह शरीफ हैं और बलवान हैं। बुजुर्ग ने कहा कि बेटी उनकी शराफत अमानत और ताकत की जानकारी तुम्हें कैसे हुई? बेटी बोली उस की ताकत उस दिन देखी जब उसने अकेले कुएं का ढक्कन उठा लिया जबकि दूसरे सब मिलकर उसको उठाते हैं उसकी शराफत यह है कि वह मेरे आगे चल रहा था और पूरे रास्ते उसने मुड़कर नहीं

देखा। मजदूरी और नौकरी के लिये ताकत और अमानतदारी की आवश्यकता है जब ताकत नहीं होगी तो काम क्या करेगा और अगर अमानतदारी नहीं तो उसकी ताकत का क्या लाभ। वह तो फिर बेईमानी करेगा।

बाप ने बेटी की बात से इत्तेफाक (सहमति) किया लेकिन वह सोचने लगे और एक समझदार बाप की तरह हर बात को सोचा और दिल में कहा कि मेरी दामादी के लिए इससे अच्छा युवक और कौन हो सकता। कम से कम मदयन में तो इस तरह मुझे नहीं दिखता। शायद अल्लाह ने इस नवयुवक को मेरी दामादी के लिये ही भेजा है। इसके बाद बुजुर्ग ने मूसा अ0 से बड़ी दानाई और प्यार से कहा कि मैं चाहता हूँ अपनी इन दो बेटियों में से किसी एक से तुम्हारा विवाह कर दूं। इस शर्त पर कि तुम हमारे यहाँ आठ वर्ष मजदूरी करो। अगर तुम दस साल पूरे करना चाहो तो तुम्हें अधिकार है। मैं तुम्हें दस वर्ष पूरे करने के लिये मजबूर नहीं करूंगा। मुझको तुम इन्शाअल्लाह अच्छा पाओगे।

इस बुजुर्ग को यह चिन्ता सता रही थी कि शादी के बाद यह नवयुवक अपनी पत्नी को लेकर चला जायेगा और मैं बुढ़ापे में अकेला रह जाउंगा।

मूसा अ0 ने उनकी राय से सहमति दिखाई और यह सोच लिया कि शायद इसी में हमारे लिये भलाई है अल्लाह इसमें बरकत देगा। अल्लाह ने उनको मदयन

पहुँचाया शेख से मिलवाया और उनके दिल में मुहब्बत और प्यार डाला।

मिस्र वापसी

निर्धारित समय (दस साल के बाद) पूरा करने के बाद मूसा अ० ने मदयन छोड़ने का इरादा किया। बुजुर्ग की दुआयें लीं और पत्नी को लेकर उनसे चलने की इजाजत चाही बुजुर्ग ने अल्लाह के भरोसे बेटी और दामाद को रूखसत किया (विदा किया) मूसा अ० ने अंधेरी और ठंडी रात में अपना सफर शुरू (आरम्भ) किया। इस जंगल में ठंडक से बचने तथा तापने के लिये आग कहाँ थी। आग न मिली तो रात कैसे बीतेगी और रास्ते का पता कैसे चलेगा। मूसा अ० यही सोच रहे थे कि उनको आग नज़र आई। आग देखकर अपनी पत्नी से कहा कि तुम यहीं ठहरो मैं आग लेकर आता हूँ। शायद इससे हमारी परेशानी दूर हो जाये।

इसी शौक में मूसा अ० आग लेने गये जब उसके करीब पहुँचे तो आवाज आई 'ऐ मूसा! मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ। तुम अपने पैरों से अपने जूते (खड़ाव) उतार दो। तुम पवित्र भूमि पर हो।" वहीं अल्लाह ने मूसा अ० से बातें की और उनके दिल में डाला (वह्य की) वहाँ अल्लाह ने उनसे कहा कि "मैंने तुम्हें नुबूवत के लिये चुन लिया है। वह सुनो जो तुमसे कहा जा रहा है।"

"मैं अल्लाह हूँ– कोई मेरे सिवा बन्दगी के लायक़ नहीं है– तुम मेरी इबादत करो। मेरे लिये नमाज़ पढ़ो और पढ़ाओ– क़यामत आने वाली है।"

मूसा अ० के हाथ में एक डंडा था जिसको अपनी सहायता के लिये उठाये हुए थे। मूसा अ० को इस छड़ी के गुण (विशेषतायें) मालूम नहीं थे। अल्लाह ने मूसा अ० से पूछा कि "तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है?"

मूसा अ० बोले– कि "यह तो मेरी लाठी है। मूसा उसकी अच्छाइयां बताने लगे। मूसा अल्लाह से देर तक बातें करना चाहते थे कहने लगे कि मैं इससे टेक लगाता हूँ इससे मैं बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ। अल्लाह ने फरमाया "अच्छा मूसा इसे जमीन पर रख दो।" मूसा अ० ने उसको जमीन पर डाल दिया वह लाठी तो जिन्दा साँप हो गई। अल्लाह ने मूसा अ० से कहा कि "इसको पकड़ लो और डरो मत हम इसको पहली हालत में लौटा देंगे।" यानी फिर इसको लाठी बना देंगे।"

अल्लाह ने हज़रत मूसा को एक दूसरी निशानी भी दी। और वह थी चमकदार हाथ। अल्लाह ने फरमाया :–

अपना (दाहिना) हाथ अपने (बाईं) बगल में ले जा कर निकालो उस से रौशनी निकलेगी बिना किसी रोग के।"

"फ़िरऔन के पास जाओ वह बड़ा सरकश हो गया है।"

अल्लाह ने हज़रत मूसा को हुक्म (आदेश) दिया कि वह अब उन निशानियों के साथ वापस जायें और वह

काम करें जिस काम के लिये उनको निशानियाँ दी गई हैं। और जिस के लिये पैदा किया गया है। फ़िरऔन ने बड़ा फ़साद (दंगा) फैला रखा है। और बहुत जालिम हो गया है कौमे फ़िरऔन अल्लाह का इन्कार करती है और उसने अल्लाह की जमीन में बड़ी गड़बड़ी मचा रखी है। अल्लाह को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं कि उसकी जमीन में कोई गड़बड़ी करे।

अल्लाह ने फ़िरऔन और उसकी कौम (जाति) के पास मूसा को भेजने का इरादा फरमाया। वह कौम बड़ी बुरी हो गई थी मूसा अ0 सोचने लगे कि फ़िरऔन तक कैसे पहुँचा जाये और उस घमण्डी और जालिम का वह कैसे सामने करेंगे। वह जानते थे कि अभी कल ही तो उन के हाथों एक किबती की मौत हुई है। कल की बात वह अभी भूले न होंगे। उनको मिस्र से डरते हुए निकलना पुलिस का पीछा करना याद है। वह जानते थे कि उनको पुलिस और महल वाले खूब पहचानते हैं। अपना डर (भय) अल्लाह के सामने रखा और कहा कि "ऐ अल्लाह – मैंने उनके एक आदमी को मार डाला है मुझे डर है कि वह पहचान लेंगे और मुझे मार डालेंगे।

मूसा अ0 ने कहा कि मेरी जबान में लुकनत भी है। अल्लाह को इन सब बातों की खबर है अल्लाह चाहता है कि इसके बावजूद वह फ़िरऔन के पास जायें। जब अल्लाह ने मूसा अ0 से कहा कि जालिम कौम के पास

जाओ (फ़िरऔन की कौम) हम तुम्हारे साथ सुनने वाले है।

अल्लाह से मूसा अ० ने कहा कि "ऐ अल्लाह– वह मुझे झुठलायेंगे मेरी बड़ी दिल शिकनी करेंगे, मेरी जबान में लुकनत है वह मेरी बात सही तरह समझेंगे नहीं। आप मेरे साथ हारून को कर दीजिये। उन का एक पाप मेरे ऊपर है मुझे इस का डर है कि बदले में वह मुझे क़त्ल कर देंगे।

अल्लाह ने फ़रमाया– "कोई हरज नहीं तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ हम तुम्हारी बातों को सुनेंगे।"

वह दोनों फ़िरऔन के पास आये और उससे कहा कि हम दोनों अल्लाह के दूत हैं। तुम बनी इस्राइल को हमारे साथ जाने दो।

अल्लाह ने बड़ी नम्रता से फ़िरऔन से बात करने को मूसा और हारून से कहा अल्लाह एक हद तक दुश्मन से नम्रता से बात करने को पसंद करता है। अल्लाह ने उन दोनों से फ़िरऔन और उसकी कौम से प्रेम और नम्रता से बात करने को कहा। शायद वह उनकी बातों से प्रभावित हों और अल्लाह से डरने लगें।

फ़िरऔन के सामने

मूसा अ० फिरऔन को अल्लाह की दावत देने उसकी सभा में पहुँच गये उनकी इस हिम्मत पर फ़िरऔन को

बहुत गुस्सा आया और बड़े घमण्ड से बोला कि यह कौन नवयुवक आ गया है। क्या यह वही लड़का नहीं है जिस को समुद्र से निकाला गया था। फ़िरऔन ने लड़के (मूसा) से कहा कि हमने तुम्हें लड़के की तरह पाला और तुमने हमारे यहाँ कई वर्ष बिताये और हमने वह सब कुछ किया जो कर सकते थे लेकिन तुम ने किया जो कुछ किया अर्थात एक किबती को कत्ल किया तुम बड़े नाशुक्रे और नाफरमान हो (विद्रोही हो) मूसा अ0 उसकी बात पर गुस्सा नहीं हुए। उसने जो कुछ कहा उसको झुठलाया भी नहीं और न उस पर झगड़ा किया और न आपत्ति जताई बल्कि गंभीर और नम्रता से उस को उत्तर देते हुए उससे कहा कि मैंने जो कुछ किया वह अनजाने में हुआ मैं यहाँ से तो भागा केवल तुम्हारे डर से। अब मैं तुम्हारे पास आया हूँ अपने परवरदिगार के आदेश पर। उसने मुझे तुम्हारे पास रसूल (दूत) बनाकर भेजा है। मूसा अ0 ने फ़िरऔन से कहा कि तुमने मुझे पालकर बड़ा किया बड़ा एहसान किया लेकिन तुमने मुझे कैसे पाला? तुमने यदि बच्चों को कत्ल किये जाने के आदेश न दिये होते तो मेरी माता मुझे नील में न डालती और तुमने मेरी कौम को जानवर और गधा समझा और उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया। तुमने उनको बड़े कष्ट दिये और उनको कुत्तों की जन्जीरों से बाँध दिया।

तुमने इस क़ौम के एक आदमी का पालन पोषण किया क्या एहसान किया? यह तुम्हारी बड़ी भूल है।

हाँ तुम्हारा मुझ पर यह एहसान (उपकार) होगा अगर तुम बनी इस्राइल को छोड़ दो और उनको मेरे साथ जाने दो।

अल्लाह की ओर दावत

फ़िरऔन हज़रत मूसा की बातों का कोई जवाब (उत्तर) न दे सका और जब उनसे बचना चाहा तो सवाल कर बैठा कि "ऐ मूसा हमें बताओ तुम्हारा परवरदिगार कौन है? मूसा अ० ने उस को जवाब दिया कि "मेरा रब वह है जो धरती व आकाश और जो चीज़ें भी इनके बीच हैं उन सब का परवरदिगार है यदि तुम विश्वास करो तो।"

मूसा अ० का यह जवाब फ़िरऔन को बहुत खला और उसको बड़ा गुस्सा आया। उसने चाहा कि सभा वाले भी इस जवाब पर गुस्सा हों और आश्चर्य करें। उनसे कहने लगा कि तुम इस की बातों को सुन नहीं रहे हो कि यह क्या कहता है। मूसा अ० की बात अभी समाप्त नहीं हुई थीं। उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि "मेरा रब (परवरदिगार) तो तुम्हारा भी रब (खुदा) है और तुम्हारे बाप दादा का भी परवदिगार। इसके बाद तो फ़िरऔन का पारा चढ़ गया और गुस्से में अपने आदमियों से कहा जो रसूल तुम्हारी तरफ भेजा गया है वह पागल है।"

मूसा अ0 ने उससे फिर कहा "कि मेरा रब तो पूरब–पश्चिम का भी मालिक है और जो कुछ इसके बीच है उसका भी पैदा करने वाला है।"

फिरऔन ने मूसा को इस कड़वे विषय से हटने के लिये कहा कि अच्छा मूसा यह बताओ हमारे पूर्वज (वंशज) का क्या हाल है फिरऔन ने सोचा कि अगर मूसा कहेंगे कि वह सत्य पर थे तो कहूँगा कि वह तो पत्थर की पूजा करते थे और अगर मूसा कहेगे कि वह गुमराही और हिमाकत में थे तो यह बात सुनकर सभा सदस्यों को गुस्सा आ जाएगा और कहेंगे कि मूसा ने तो हमारे बाप दादा को गाली दी। मूसा अ0 फिरऔन से अधिक बुद्धिमान थे। उनको अल्लाह की तरफ से ज्ञान मिल रहा था। मूसा अ0 ने फिरऔन से कहा कि इसका ज्ञान और जानकारी तो मेरे परवरदिगार को है और मेरा अल्लाह किसी को न तो गुमराह (भटकाता) करता है और न भूलता है। मूसा अ0 समझ गये कि फिरऔन के पास अब कोई जवाब नहीं है। मूसा अ0 ने फिर उससे कहा कि मेरे पैदा करने वाले ने तुम्हारे लिये जमीन को बिस्तर बनाया और उसने तुम्हारे लिये जमीन में रास्ते (मार्ग) बनाये और उसने तुम्हारे लिये आकाश से पानी उतारा। मूसा अ0 की इन बातों से फिरऔन को बड़ी हैरत हुई और उसको बड़ा तअज्जुब (आश्चर्य) हुआ। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह मूसा की इन

बातो का क्या जवाब दे। बादशाहों की आदत है कि जब उनको कोई जवाब नहीं बन पड़ता है तो उनको गुस्सा आता है। फिरऔन को भी मूसा अ० की बातो पर गुस्सा आया और कहने लगा कि मूसा "तुमने मेरे सिवा किसी और को उपास्य माना तो मैं तुम्हें सजा दूंगा। और जेल में डलवा दूँगा।"

मूसा अ० के मोजेजात (निशानियाँ–पहचान)

जब फिरऔन ने जेल की धमकी दी तो मूसा अ० ने फिरऔन से कहा कि "अगर तुम्हारे सामने अपने मोज़ेजात (निशानियाँ) दिखालाऊं तो तुम उसको मानोगे (विश्वास करोगे)"? फिरऔन बोला कि "अच्छा दिखलाओ अगर तुम बडे सच्चे हो तो।" मूसा अ० ने अपनी लाठी जमीन पर डाली तो वह सचमुच का साँप हो गई। फिर मूसा ने अपना हाथ बगल में करके बाहर निकाला तो वह रोशन हो गया। यह देखकर फिरऔन ने अपने सभा सदस्यों से कहा कि "मुझे तो यह जादूगर मालूम पड़ता है" सब ने बादशाह की ताईद की और कहने लगे कि यह तो खुला (स्पष्ट) जादू है। मूसा अ० ने उससे कहा कि "कितनी बड़ी धाँधली करते हो। जब हमने सच्चाई बताई तो तुम उसको जादू कहते हो। तुम्हें पता है कि जादूगर कभी सफल नहीं होते। अंत में फिरऔन ने एक और चाल चली और कहने लगा कि "तुम चाहते हो कि हम अपने बाप दादा के धर्म को छोड़ दें और बाप दादा को जो करते

देखा उससे हट जायें। यह बात हम तुम्हारी नहीं मानेंगे।" फिर उसने अपने दरबारियों को मूसा का हव्वा खड़ा करके डराया और कहने लगा कि मूसा अपने जादू कि जोर पर तुमको तुम्हारी जमीन से निकालना चाहता है। तुम बताओ इस बारे में तुम्हारी क्या राय है क्या सुझाव है?

दरबारी कहने लगे कि आप अपने देश के बड़े–बड़े जादूगरों को बुलवाकर मूसा से मुकाबला करवा दीजिये। बादशाह ने उनकी राय से सहमति जाहिर की और एलान करा दिया कि जो भी जादू जानता है वह बादशाह के पास आ जाये। मिस्र के कोने–कोने से जादूगर बादशाह के पास आ गये और समय निर्धारित हो गया। लोंगो से कहा जाने लगा कि जादूगर सफल होंगे तो हम उनके साथ होंगे।

मैदान में

लोग सुबह ही मैदान जाने के लिये निकल पड़े और सब उस मैदान में जमा हो गये जहाँ यह मुकाबला होना था। मैदान में बच्चे, औरतें, मर्द बूढ़े और जवान सब आ गये। घर के घर खाली हो गये। घरों मे वही बचे रह गये जो बीमार थे या मजबूर थे।

मतरिया फिरऔन की जमीन में एक गाँव था उस गाँव में केवल चर्चा थी तो जादू और जादूगारों की। असवान, अकसर तथा जीजा शहरों के मशहूर जादूगर

भी आये। आपस में वह बातें करने लगे कि कौन सफल होगा? मिस्र के बड़े से बड़े जादूगर आ गये और सोचने लगे कि हम में एक से बढ़कर एक हैं। कोई तो सफल होगा ही। मूसा की हैसियत ही क्या है। उसने और उसके भाई ने जादू सीखा नहीं है। उनकी सफलता में शक (संदेह) है। उसका पालन–पोषण महल में हुआ है और फिर वह डर कर मिस्र से चला गया था। कुछ वर्ष मदयन में बिताये। उसने जादू कहाँ और किससे सीखा होगा? मिस्र में तो नहीं सीखा यह यकीन है। और मदयन में कोई सिखाने वाला नहीं है यह यकीन है। और मदयन में कोई सिखाने वाला नहीं है यह भी पता है। बनी इस्राईल भी आशा–निराशा के साथ आये। दिल में दुआ माँग रहे थे कि अल्लाह मूसा पर और बनी इस्राईल पर रहम फरमाये और उनकी सहायता करे।

बड़े गर्व और घमण्ड के साथ जादूगर मैदान में पहंचे। रंग बिरंगे कपड़े पहने और अपने लाठी डंडों और रस्सियों के साथ आये। बड़े खुश थे और इतरा कर कहते थे कि आज जौहर दिखाने का दिन है। आज बादशाह हमारा लोहा 'मानेगा आज लोग हमारी कीमत जानेंगे।

जादूगर जमा होने के बाद बादशाह से बोले कि हमारी कामयाबी (सफलता) पर हमको क्या इनाम मिलेगा। बादशाह (फिरऔन) ने कहा कि तुम मुझसे करीब (निकट) हो जाओगे यही तुम्हारा इनाम और पुरस्कार होगा। इस

बात से लोग धोखा खा गये और वह उसके लालच का शिकार हो गये।

झूठ और सच

मूसा अ0 ने उन जादूगरों से कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डालो। जादूगरों ने फिरऔन की इज़्ज़त की कसम खाते हुए अपनी सफलता की आशा लिये अपने डंडों और रस्सियों को जमीन में डाला। लोगों ने डंडे और रस्सियों को जिन्दा साँप देखा तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और डरे भी। उनसे बचने के लिये लोग पीछे हटे और शोर मचाने लगे साँप—साँप मूसा अ0 ने भी वह देखा जो लोग देख रहे थे। मूसा अ0 को भी हैरत हुई उनकी रस्सियों और लकडियों को जादू के जोर पर दौडते हुए साँप बन जाने पर। मूसा अ0 ने भी दिल में डर महसूस किया। उनका डरना स्वाभाविक था। आज परीक्षा का दिन था। आज ही की सफलता पर इज़्ज़त व जिल्लत (बेइज़्ज़ती) का दारोमदार था। अगर जादूगर सफल हो जाते हैं तो अल्लाह की (मंशा) मसलेहत और अगर मूसा सफल होते हैं तो अल्लाह की मरजी। मूसा की सफलता एक आदमी की सफलता नहीं है उनकी सफलता दीन की सफलता है।

बादशाह के सामने, उनकी सफलता सत्य की जीत असत्य के सामने। खुदा न करे जादूगर जीतें अल्लाह ने मूसा अ0 को हिम्मत दी और उनसे कहा कि डरने की कोई

बात नहीं। जीतोगे तुम्हीं। तुम्हारे हाथ में जो है उसको डाल दो। वह उन सबको खा जायेगा। जो कुछ उन्होंने जादू के जोर पर बनाया है। यह तो जादूगरों का धोखा है। जादूगरों ने जो पेश किया है उसमें सफल नहीं हो सकेंगे।

मूसा अ० ने जादूगरों से कहा कि जो कुछ तुमने बनाया है अल्लाह उसको समाप्त कर देगा। अल्लाह गड़बड करने वालों के कार्य को ठीक नहीं समझता सत्य—सत्य ही है। अपराधी चाहे या न चाहे अल्लाह अपनी बात सत्य साबित करके रहेगा। मूसा अ० ने अपना डंडा डाला। उन्होंने (जादूगरों ने) जो कुछ बनाया था उस को समाप्त कर दिया। सत्य की विजय हुई और जो कुछ उन्होंने किया वह बरबाद हो गया। इससे जादूगर परेशान हुए और दंग रह गये। और कहने लगे कि यह क्या हो गया। वास्तव में जादूगर तो हम हैं हम जादू की हर किस्म जानते हैं। हम तो इस फन के गुरू हैं जो कुछ मूसा ने दिखाया है वह जादू हो ही नहीं सकता। अगर वह जादू होता तो हम जादू से जादू का तोड़ करते हैं। हमारा फन (काम करतब) हमारा अभ्यास और हमारी उस्तादी सब खत्म कर दी। हमारा जादू इसके सामने ऐसा फीका पड़ गया और ऐसा गायब हुआ जैसे सूरज के सामने ओस गायब हो जाती है।

यह चमत्कार कहाँ से आ गया? अवश्य ही यह अल्लाह की ओर से है। जादूगरों को इतमिनान हो गया

कि मूसा नबी हैं और अल्लाह ने उन को मुअजिज़े (चमत्कार) से प्रतिष्ठित किया इस पर वह चीख पड़े और ऊंची आवाज़ बोले :– "हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए और यह कहते हुए सजदे में गिर गये : हम सारे जहानों के रब पर ईमान लाए जो मूसा व हारून का रब है।

फिरऔन की धमकी

जादूगरों के ईमान लाने से फिरऔन का पागलपन बढ़ गया गुस्से से उठता, बैठता गरजता और बरसता था। उसकी सब योजना असफल हो गई। उसने तो जादूगरों के जरिये से मूसा को शिकस्त देना चाहा था। उल्टे जादूगर मूसा के लश्कर में शामिल हो गये। उसने मूसा को आड़ बना कर उनका शिकार करना चाहा और वह सब ईमान ले आये। सब तदबीरें (उपाय) उलटी हो गई। फिरऔन तो समझता था कि वह लोगों की अकल पर वैसे ही शासन करता है जैसे उनके जिस्मों पर करता है लोगों के दिलों पर व उसी तरह हुकूमत करता है जैसे उनकी जबानों पर उसकी हुकूमत है। किसी को यह हक नही कि उससे पूछे बिना कोई किसी पर ईमान ले आये।

फिरऔन ने ईमान लाने वालों से कहा कि तुम मुझ से पूछे बिना कैसे ईमान ले आय। उसने उसी शाहाना घमण्ड में कहा कि वही तुम्हारा बड़ा है। जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। यह तुम्हारी साजिश है जो तुमने शहर

में रची है ताकि शहर के रहने वालों को शहर से निकाल दो। तुम्हें तो अब पता चलेगा। फिर फिरऔन ने एक तीर और छोड़ा और बोला कि मैं तुम्हारें हाथ पैर काट दूँगा और तुम सब को फाँसी पर लटका दूँगा।

ईमान लाने वालों ने उसकी हर बात सुनी। हर तीर सहा और कहा कि अब हमें कोई परवाह नहीं। हम तो अपने पैदा करने वाले की तरफ लौटकर आने वाले हैं। हम तो चाहते हैं कि अल्लाह हमारे पाप माफ कर दे और हम प्रथम ईमान लाने वालों में से हैं। उन्होंने ईमानी जोश और दिलेरी के साथकहा कि "हम अपने परवरदिगार पर ईमान ले आये हैं ताकि वह हमारे पापों को क्षमा कर दे और जो जबरन जादू करने पर तूने हमको विवश किया और अल्लाह ही बेहतर और बाकी रहने वाला है कुछ शक नहीं कि जो आदमी अपराधी होकर अपने परवरदिगार के सामने गया उसके लिये जहन्नम है जिसमे वह न तो मरेगा और न जिन्दा ही रहेगा। और जो ईमान वाला होकर उसके सामने हाजिर होगा और उसने नेक काम किये होंगे, यही लोग हैं जिनके बड़े दर्जे होंगे। हमेशा रहने के लिए बाग जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उसमें हमेशा रहेंगे। यह बदला है उस का जो कुफ्र से पाक हुआ।"

इस बात का फिरऔन पर बहुत असर पड़ा और उसकी रातों की नीदें उड़ गई। खाना–पीना अच्छा नहीं

लगता। दूसरों ने भी उसके गुस्से को उभारा, उन लोगो ने फिरऔन से कहा क्या मूसा और उन की कौम को इस लिये छोड़ोगे कि वह धरती पर उत्पात मचाए और तुझे तेरे उपास्यों को छोड़ रखे?

फिरऔन का गुस्सा बढ़ गया और कहने लगा कि "मैं इन सबके बच्चों को कत्ल करा दूँगा। इनकी महिलाओं को जिन्दा छोड़ दूँगा और मैं यह कर सकता हूँ।"

फिरऔन ने पूरी कोशिश की बनी इस्राईल और मिस्र वालों को मूसा से दूर रखने की। और कहने लगा कि ऐ मिस्र वालो यह मिस्र जिसमें नहरें बहती हैं क्या मेरी नहीं हैं क्या तुम देख नही रहे हो। अब बताओ मैं अच्छा हूँ या यह जलील।

उसने फिर लोगों को खिताब करते हुए कहा कि "ऐ लोगो मैं नहीं समझता कि मेरे अलावा कोई भगवान है।"

उसने अपनी बेवकूफी और घमण्ड से कहा कि ऐ हामान तुम आग जलाओ ईंट पकाओ और एक ऊंचा महल मेरे लिये बनाओ। मुझे तो मूसा झूठे दिखाई पड़ते हैं। हामान ने ईंटे पकाई और ऊंचा महल भी बनवा दिया लेकिन कहाँ तक बनवाता। हामान थक गया कारीगर थक गये और परेशान हुए। मिट्टी खत्म हो गई ईटें खत्म हो गई और वह बादलों तक भी नहीं पहुंच पाया चाँद तो दूर की बात है। वह चाँद तक न पहुँचा तो सूरज तक

क्या पहुँचते, सूरज तक नहीं पहुँचा तो उस से दूर कि सितारों और आकाश तक क्या पहुँचता। वह अपनी नाकामी पर बहुत शर्मिन्दा हुआ और बैठ गया। वह बेवकूफ नहीं जानता था कि अल्लाह ही ने यह धरती और आकाश पैदा किया और चीजों को पैदा किया है और वही आसमान और जमीन में जो भी है उसका पैदा करने वाला है।

फिरऔन की समझ में अब कुछ नहीं आ रहा था सिवाये इसके कि मूसा ही को मार डाला जाये। इससे उसकी शिक्षा और दावत समाप्त हो जायेगी। मूसा ने बड़ा परेशान कर रखा है और बड़ी गड़बड़ी मचा रखी है।

फिरऔन कहने लगा मुझे तो मूसा को कत्ल करना है वह अपनी मदद के लिये अपने रब को पुकारे। मुझे तो मूसा से डर है कि यह तुम्हारा दीन धर्म बदल देगा और जमीन में बड़ी गड़बड़ी पैदा कर देगा।

फिरऔन के परिवार का ईमान लाने वाला

फिरऔन ने मूसा अ० को कत्ल करने का जब इरादा किया तो एक व्यक्ति फिरऔन के परिवार का खड़ा हुआ जो उस समय तक अपना मुसलमान होना छुपाये हुए था। वह कहने लगा— कि तुम एक ऐसे आदमी को कत्ल करना चाहते हो जो केवल यह कहता है कि मेरा खुदा अल्लाह है और फिर उसने अपने नबी होने की निशानियाँ और प्रमाण दिये। तुम क्यों इसके रास्ते में रोड़ा बनते हो

और उसको कष्ट पहुँचाते हो। तुम अगर उसको उसके हाल पर छोड़ दो। अगर वह झूठ कहता है तो यह उसका कर्म है तुम क्यों चिंतित हो? अगर तुमने उसको कष्ट दिया वह नबी है तो तुम्हारी बरबादी यक़ीनी है।

उस मोमिन की बात का मफ़हूम कुर्आन में

जब फिरऔन ने इरादा किया कि मूसा को क़त्ल करे तो फिरऔन की कौम का एक मोमिन खड़ा हुआ जिसने अपना ईमान छुपा रखा था उस ने कहा :–

क्या तुम ऐसे आदमी को कत्ल करोगे जो कहता है अल्लाह मेरा रब है जब कि वह तुम्हारे रब की ओर से निशानियाँ लेकर आया है।

उस नेक आदमी ने कहा : क्यों मूसा के पीछे पड़ते हो और क्यों उन को कष्ट देते हो?

अगर तुम उस पर ईमान नहीं लाते तो उसे उस के हाल पर छोड़ दो, उस का रास्ता न रोको, यदि वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर आएगा और अगर उस को कष्ट दोगे और उसके लिये रुकावट डालोगे और वह तुम्हारा नबी होगा तो तुम्हारी तबाही है।

अगर वह सच्चा है तो तुम को उस में से कुछ पहुँच कर रहेगा जिस से वह डरा रहा है।

मेरे भाइयों अपने राज्य पर घमण्ड न करो न अपनी शक्ति तथा सेना पर गर्व करो।

ऐ मेरी कौम आज तुम्हारा राज है तुम इस धरती पर

सत्ता में हो अगर (मूसा के कत्ल के कारण) खुदा का अजाब व आया तो हमारी कौन सहायता करेगा?

फिरऔन ने जवाब दिया : मैं तो तुम को वही बता रहा हूँ जो मैं समझ रहा हूँ (अर्थात मूसा का कत्ल ही उचित है) और मैं तुम को ठीक बात ही बता रहा हूँ।

उस नेक आदमी ने चाहा कि अपनी कौम को बुरे अंजाम और अत्याचारियों के परिणाम से अवगत कराए, उस ने कहा :—

ऐ मेरी कौम मुझे भय है तुम पर पिछली कौमो की तरह अजाब का जैसे कौमे नूह, आद, समूद और वह जो उन के पीछे आए और अल्लाह अपने बन्दो पर किसी तरह का जुल्म नहीं करना चाहता और उस नेक आदमी ने उन को क़ियामत के अजाब से डराया और कहा जानते हो कियामत क्या है, कियामत का दिन वह दिन है जिसमें आदमी अपने भाई से दूर भागेगा इसी प्रकार अपनी माँ से अपने बाप से, अपनी बीवी से, अपनी सन्तान से, हर एक अपने अपने हाल में फंसा होगा।

उस दिन दोस्त बअज के बअज दुश्मन होंगे सिवाए संयमी लोगों के उस दिन रिश्ते नाते भूल जाएंगे। कोई किसी को न पूछेगा।

उस मलिकुल जब्बार अल्लाह पुकारेगा : आज किस का राज है? खुद ही उत्तर देगा एक कहहार (बलवान्न) अल्लाह का।

जिस दिन सब घबरा जाएंगे चीखेंगे एक दूसरे को पुकारेंगे।

जिस दिन पीठ फेर कर लोग भागेंगे और अल्लाह के मुकाबले में कहीं कोई बचाने वाला न होगा।

नेक आदमी ने कहा :

ऐ मेरी कौम मुझे भय है तुम्हारे लिये चीख पुकार के दिन का जिस दिन पीठ फेर कर (जहन्नम की ओर) लौटोगे उस वक्त तुम को कोई अल्लाह से बचाने वाला न होगा, और जिससे अल्लाह भटका दे उसे राह पर लाने वाला कोई नहीं। नेक आदमी ने कहा : अल्लाह ने तुम को एक नेअमत दी, लेकिन तुम ने उसे न पहचाना और उस की जैसी कद्र करना चाहिये थी तुम ने उस की कद्र न की यहाँ तक वह नेअमत तुमसे ले ली गयी तो तुम ने उस पर अफ्सोस किया वह नेअमत यूसुफ नबी की शक्ल में थी अल्लाह की रहमत हो उन पर सलामती जिसे तुम ने नहीं पहचाना न उसकी कद्र की जैसी कद्र चाहिये थी।

लेकिन जब वह वफात पा गये तो तुम ने कहा यूसुफ जैसा कोई नबी नहीं, यूसुफ जैसा कोई बादशाह नहीं यूसुफ जैसा कोई आदमी नहीं, कौन है? हमारे लिये नबी उन के पीछे, कौन है हमारे लिये उन जैसा?

और इससे पहले तुम लोगो के पास निशानियों के साथ यूसुफ आए, तो तुम लोग जो कुछ वह लाए थे उस में बराबर शक में रहे यहाँ तक जब वह वफात पा गये तो

तुम लोग कहने लगे, अल्लाह उन के पीछे कोई रसूल न भेजेगा। इसी तरह करोगे इस नबी के बाद भी और पछताओगे।

अगर वह सत्यवादी है तो तुम्हें वह सब चीजें मिलेंगी जिनका उसने तुमसे वादा किया है। भाईयों अपनी हुकूमत पर घमण्ड न करो। न अपनी शक्ति तथा सेना पर घमण्ड करो। उस नेक बंदे ने कहा कि "ऐ लोगो! आज तुम्हारी हुकूमत है धरती पर तुम को गल्बा है अगर तुम पर अल्लाह का अजाब आया तो हमारी कौन सहायता करेगा। फिरऔन ने कहा मैं तुमको वहीं बता रहा हूँ जो मैं देख रहा हूँ, मै तुम को केवल सत्यमार्ग दिखा रहा हूँ। उस नेक बन्दे ने कौम को बुरे और जुल्म करने वालों के अनजाम से डराते हुए कहा कि वही होगा जो नूह अ0 और समूद अ0 आदि की कौमों का हुआ। "अल्लाह अपने बन्दों पर कभी जुल्म नहीं करता।" उस नेक बन्दे ने कियामत के दिन से उनको डराया।

कियामत के दिन हर आदमी परेशान होगा। भाई–भाई से भागेगा बाप, माँ बेटा और दोस्त से भागेगा। हर एक को अपनी चिन्ता और फिक्र होगी। उस दिन बाज, बाज के दुश्मन होंगे। लेकिन अल्लाह से डरने वाले शान्तिपूर्वक होंगे उनको किसी बात का न तो गम होगा और न परेशानी होगी। उस दिन (कयामत के दिन) नाता व रिश्ता कुछ काम न आयेगा और न कोई किसी की

खैरियत लेगा। उस दिन बादशाहों के बादशाह की तरफ से एलान होगा कि आज किसकी बादशाहत है जवाब मिलेगा कि आज केवल अल्लाह की बादशाहत है जो जबरदस्त (सबसे बड़ा) है।

उस दिन सब चीख रहे होंगे दोहाई दे रहे होंगे लेकिन अल्लाह के सिवा किसी को कहीं सुरक्षा नहीं।

उसी नेक सिफत आदमी ने कहा कि "ऐ कौम! मैं उस दिन से तुम्हें डराता हूँ जिस दिन अल्लाह के अलावा कहीं कोई सुरक्षा नहीं पायेगा। और अल्लाह जब किसी को हिदायत देना न चाहे तो उसको कोई भी सीधा रास्ता नहीं दिखा सकता है।"

आदमी की नसीहत

आदमी ने अपनी कौम को नसीहत की और बड़े प्यार से। उस मोमिन बंदे ने कहा कि "ऐ कौम! मेरे पीछे चलो मैं तुम्हें सीधा रास्ता दिखाऊँगा।"

उस नेक आदमी ने जान लिया था कि कौम दुनिया की जिन्दगी में मस्त है और फिरऔन को अपने राज–पाट और ताकत का घमण्ड है। उनको पता होना चाहिये कि यह जीवन एक सपना है और यह संसार समाप्त हो जाने वाला साया है। वह आदमी जानता था कि मूसा की पैरवी से कौम को रोकने वाली चीज केवल दुनिया का नशा है। दुनिया के नशे की चाहत सोचने समझने की ताकत समाप्त कर देती है। इसीलिये वह मूसा की आवाज को

सुनी अनसुनी कर देते हैं। उस आदमी ने उनको सोते से जगाना चाहा। उसने कहा कि :–

"ऐ कौम! यह दुनिया (संसार) तो थोड़े दिन लाभ उठाने की जगह है असल जिन्दगी आखिरत की है।"

उस कौम के जाहिल–बेवकूफ लोग उसको कुफ्र व शिर्क की दावत देते थे और अपने बाप–दादा के धर्म की तरफ उसको बुलाते थे।

वह आदमी जब उनको अल्लाह की तरफ बुलाता तो वह उसको बाप–दादा के दीन धर्म की तरफ लौट आने को कहते। जब उन्होंने पूरी शक्ति से कुफ्र की ओर बुलाया तो उस नेक आदमी ने कहा :–

"ऐ कौम! तुमको क्या हो गया है। मैं तुमको नजात की तरफ बुलाता हूँ तो तुम मुझे आग की तरफ बुलाते हो। तुम मुझे कुफ्र (अल्लाह की नाफरमानी) और शिर्क (अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाना) की तरफ बुलाते हो जिसकी मुझे जानकारी नहीं। मैं तुमको अल्लाह की तरफ बुलाता हूँ जो ताकतवर है और क्षमा करने वाला है। वह नेक आदमी उनसे कहता कि बताओ कौन नबी है जो तुम्हारे भगवान की तरफ से आया है। और वह कौन सी तुम्हारी किताब लेकर आया है। तुमने और तुम्हारे बाप–दादा ने बस उनके नाम रख लिये हैं। अल्लाह ने उसकी कोई दलील (सबूत) नहीं उतारी।

जिन की ओर मैं बुला रहा हूँ वह लोग अल्लाह के

रसूल हैं। उन लोगों ने अल्लाह की ओर बुलाया यह इब्राहीम अलैहिस्सलाम है और यह यूसुफ और अल्लाह के नबी मूसा (यह अंबिया जो अल्लाह की ओर बुलाते रहे)।

तुम मुझे जिस की ओर दावत देते हो वह न दुन्या में पुकारे जाने के लाइक है न आखिरत में।

वह आदमी जब उनकी हिदायत (सीधे रास्ता चलने) से निराश हो गया और उन की मूर्खता से उकता गया तो उन को छोड़ दिया। और उनसे कहा कि जो कुछ मैंने कहा है वह याद करोगे। मैंने तो अपना मामला अल्लाह पर छोड़ दिया है अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है।

इन बातों से लोग क्रोधित हुए और फिरऔन के लोगो ने उसको कत्ल करने का इरादा कर लिया लेकिन अल्लाह ने उसकी हिफाजत (रक्षा) की और उसके दुश्मन को बरबाद कर दिया।

अल्लाह ने उनकी बुरी योजनाओं को विफल कर दिया और अल्लाह ने उनको बचाया और फिरऔन के परिवार को बुरे संकट में डाल दिया।

फिरऔन की बीवी (पत्नी)

फिरऔन यह समझता था कि जिस तरह वह लोगों के शरीर जिस्मों पर शासन करता है उसी प्रकार लोगों के दिमागों पर भी शासन कर सकता है। उसकी बादशाहत लोगों के दिलों पर और उनकी जबानों पर है।

उसकी नज़र में किसी (मिस्री) को उससे पूछे बिना किसी से अकीदत रखने और ईमान लाने का हक नहीं है।

उसके देश (मिस्र) में कहीं कोई मूसा पर ईमान ले आता तो वह गुस्से में पागल हो जाता। गुस्से में बैठता और खड़ा होता। चीखता–चिल्लाता और गरजता। वह यह बरदाश्त नहीं कर सकता था कि कोई भी उससे पूछे बिना ईमान ले आये। वह यह नहीं देख सकता था कि कोई भी उससे पूछे बिना ईमान ले आये। वह यह नहीं देख सकता था कि कोई उसके देश में रहे और उसकी बात न माने कोई उसका खाये और उसकी नाशुक्री करे, वह कहता मैं मिस्र में हर एक जान से अधिक प्रिय हूँ।

फिरऔन यह भूल गया कि वह अल्लाह की जमीन और उसकी बादशाहत में जीवन बिता रहा है। उसी का दिया हुआ खा रहा है और उसकी नाशुक्री कर रहा है।

अल्लाह ने उसके घर में अपनी निशानी दिखलाई उसकी पत्नी में अल्लाह ने उसको दिखलाया कि वह लोगों की अक्ल और जिस्मों पर हुकूमत करता है। लोगों के दिलों और जबानों पर उसकी हुकूमत है। वह यह नहीं जानता कि अल्लाह इन्सान और उसकी बीवी के बीच रुकावट बन जाता है। अल्लाह इन्सान और उसके दिल के बीच रोक बन जाता है। ईमान फिरऔन के घर में दाखिल हुआ और उसने न जाना। उसके इख्तियार में कुछ न रहा उसकी बीवी अल्लाह पर ईमान लाई। और

फिरऔन की बड़ाई से इन्कार किया। वह मिस्र के बादशाह जो उसका पति था उसके न चाहने पर भी मूसा पर ईमान लाई।

फिरऔन की पत्नी मूसा पर ईमान लाई कि वह फिरऔन को अल्लाह की मख्लूक में सबसे ज्यादा जानती थी। और वह फिरऔन को सबसे अधिक प्रिय थी। फिरऔन की पुलिस कुछ न कर सकी और इस बारे में कुछ न जान सकी। जब की वह च्यूटी की सूँघ और कौवे की आँख रखती थी फिरऔन को इसकी खबर भनक भी नहीं लगी। जब कि वह उसके करीब था। यदि उसको पत्नी के ईमान लाने की खबर हो भी जाती तो वह क्या कर सकता था। बेशक वह जिस्म का तो मालिक था। लेकिन अक्ल पर उसकी हुकूमत न थी वह जबानों पर तो बादशाहत कर रहा था लेकिन दिल पर उसका काबू नहीं था।

फिरऔन या दुनिया के किसी भी व्यक्ति के बस में नहीं था कि वह किसी आदमी और उसके दिल के बीच हायल (रुकावट) हो।

फिरऔन को अपनी पत्नी पर पूरा हक था लेकिन अल्लाह का हक सबसे बड़ा है। पत्नी के लिये अपने पति का आज्ञापालन अनिवार्य है। परन्तु अल्लाह के अवज्ञा सृष्टा का आज्ञापालन नहीं किया जा सकता। बेटे पर फर्ज है कि वह अपने माँ बाप के आज्ञाकारी रहें। उनके साथ भलाई करें परन्तु शिर्क करने में उनका आज्ञापालन

न करें। अल्लाह तआला ने फरमाया :-

अगर तेरे माँ बाप तुझे मजबूर करें की मेरे साथ किसी को शरीक करे जिसके बारे में तू अंजान है। (तू जान ले) तू उनका कहना न मान दुनिया में तू उनके साथ भलाई कर उनकी सेवा में रहे। इताअत (आज्ञापालन) उनका कर जो मेरी ओर झुकते हैं फिर तुमको सब को मेरी ओर लौटना है।

फिरऔन की पत्नी अपने ईमान पर डटी रही और अल्लाह के दुश्मन के घर में अल्लाह की इबादत (पूजा) करती रही। वह अल्लाह से डरती थी और फिरऔन के कुकर्मो से अल्लाह के हुजूर में अपनी बराअत पेश करती थी। अल्लाह फिरऔन की पत्नी से राजी और खुश हुआ और उसको फिरऔन और उसके कर्मों से नजात दी। अल्लाह ने उनके ईमान और बहादुरी को मुसलमानों के लिये बतौर मिसाल बयान किया जिस को कुर्आन में इस तरह बयान किया गया है :-

और मिसाल बयान की अल्लाह ने ईमान वालों के लिये फिरऔन की बीवी की जब उस ने कहा कि "ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे लिये बहिश्त (स्वर्ग) में अपने पास एक घर बना और मुझको फिरऔन और उसके बुरे कर्मों से नजात दे। और मुझको जालिम लोगों से बचा।"

बनी इस्राईल की आजमाईश (परीक्षा)

जब आम लोगों को बनी इस्राईल से फिरऔन की

दुश्मनी की जानकारी हुई तो वह भी बनी इस्राईल से दुश्मनी करने और उन को तकलीफ पहुँचाने में फिरऔन के साथी बन गये। (तो हाल यह हुआ कि) बच्चे भी बनी इस्राईल पर जरी थे (यहाँ तक कि) कुत्ते भी उन पर भौंकते थे।

मूसा अ० बनी इस्राईल को तसल्ली देते और सब्र की वसीयत करते। और उनसे कहते कि "बस अल्लाह से मदद (सहायता) माँगो और सब्र करते रहो। अल्लाह की जमीन है वह जिसको चाहे इसका वारिस बना दे। अच्छा अंजाम अल्लाह से डरने वालों के लिये है।"

बनी इस्राईल इन तकलीफों और आजमाईशों से तंग आ गये तो मूसा से कहने लगे कि :—

आप ने हमको कुछ भी लाभ नहीं पहुँचाया और किसी बात में हमारे काम न आये। उन्होंने कहा : आप के आने से पहले हमे कष्ट दिया जाता रहा और आप के आने के बाद भी हमको कष्ट दिया जा रहा है।

लेकिन मूसा अ० निराश नहीं थे और न घबराये थे। वह तो उनको समझाते और कहते कि घबराओ नहीं अल्लाह जल्द ही तुम्हारे दुश्मन को नष्ट कर देगा और तुम्हीं में से किसी को इस जमीन में जानशीन (बादशाह) बना देगा। फिर तुमको देखेगा कि क्या करते हो। मूसा अ० ने कौम को समझाते हुए कहा कि "अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो अल्लाह पर भरोसा भी करो यदि

तुम मुसलमान हो।"

कौम ने कहा कि हमने अल्लाह पर भरोसा किया है। "ऐ अल्लाह! हमें जालिम कौम के जुल्मों की आजमाईश में न डाल हमें तू अपनी रहमत से काफिर कौम से छुटकारा दिला दे।"

फिरऔन बनी इस्राईल को अल्लाह की इबादत से रोकता था। किसी को अल्लाह की इबादत करते और नमाज पढ़ते देखता तो बेहद क्रोध में आ जाता था। वह इससे भी रोकता था कि उसकी जमीन पर अल्लाह की मस्जिदें हों और उनमें अल्लाह की इबादत हो। मस्जिदों में नमाज और अल्लाह की इबादत उसके गुस्से को बढ़ाती थी। कितना जाहिल था। फिरऔन जमीन अल्लाह की है न कि फिरऔन की।

उससे बड़ा जालिम कौन होगा जो अल्लाह की जमीन पर अल्लाह की इबादत से रोके। फिरऔन में यह ताकत नहीं थी कि किसी को अपने घर में उसके पसन्द का कार्य करने से रोक सके। अल्लाह ने बनी इस्राईल से मूसा के जरिये कहा कि "अपने घरों को किबला बनाकर घरों में नमाज पढ़ो।" फिरऔन और उसकी पुलिस बनी इस्राईल को अल्लाह की इबादत से नहीं रोक सकी। बन्दा और उसके रब के बीच कौन रुकावट डाल सकता है? मुस्लिम और अल्लाह की इबादत के बीच कौन रुकावट बन सकता है?

कहतसाली

फिरऔन की सरकशी और अल्लाह से दुश्मनी बहुत बढ़ गई तो अल्लाह ने उसको सावधान (होशियार) किया और उससे कहा गया कि अल्लाह काफिरों को पसंद नहीं करता और वह यह भी नहीं चाहता कि उसकी जमीन में कोई गड़बड़ पैदा करे। फिरऔन बड़ा बेवकूफ था उसकी बुद्धिमानी जाती रही। गधे को जब तक मारा न जाये ठीक से नहीं चलता। अल्लाह ने भी फिरऔन को सचेत करने का इरादा फरमाया। मिस्र उपजाऊ देश है। धनवान देश है, फलों तथा अनाजो का देश है। तुम जानते हो कि यूसुफ अ0 के काल में मिस्र अपने दूर–दराज मुल्को की सूखा काल में कैसे मदद की थी। शाम और कनआन वालो की कैसे मदद की थी। मिस्र कितना जरखेज (उपजाऊ) क्षेत्र था जिसकी जमीन को नील दरया सीचता था दरयाए नील मिस्र की खुशी और दौलत का खजाना है। पर फिरऔन और मिस्र वालों ने नील को रिज़क़ (रोजी–रोटी) की कुन्जी समझ रखा था। वह यह समझने लगे कि नील की वजह से बारिश की भी जरूरत नहीं।

वह नहीं जानते थे कि रोजी की कुंजियाँ अल्लाह के पास है। अल्लाह इस पर कादिर (सामर्थ्य) है कि जिसे चाहे रोजी ज्यादा दे और जिसको चाहे कम कर दे। यह लाभदायक नील अल्लाह के आदेश पर ही बह रही है।

अल्लाह ने जब नील को आदेश दिया उसका पानी कम हो गया और जमीन में चला गया। खेतों की सिंचाई प्रभावित हुई। फलों में कमी आ गई गल्ला कम हो गया। और सूखे पर सूखा पड़ने लगा फिरऔन, हामान, और फिरऔन की पुलिस सब विवश थे कुछ न कर सके अब मिस्र वाले समझे कि फिरऔन उनका रब नहीं, रोजी तो अल्लाह के हाथ में है। फिर भी फिरऔन और अहले मिस्र न जागे, वाज व नसीहत और इबरत से मिस्रियों को शैतान ने दूर कर दिया। वह कहने लगे यह सूखा और यह तंगिया मूसा की नुहूसत से है।

आश्चर्य होता हैं उनकी इस सोच पर। मूसा पहले भी थे और बनी इस्राईल भी एक जमाने से हैं। यह हालत जो हुई वह मूसा के कारण नहीं बल्कि यह तो उनके कुफ्र के और बुरे कर्मों की सजा है। फिरऔन और उसकी कौम मूसा की दुश्मनी पर आमादा रही और कहती रही कि हम इन के जादू के आगे झुकने वाले नहीं हैं। और कहते हमें मरऊब (डराने) करने के लिये जो भी निशानियाँ लाओ उनका हम पर कोई असर (प्रभाव) नहीं होगा और हम तो तुम पर ईमान नहीं लायेंगे।

पाँच निशानियाँ

अल्लाह ने उनपर एक दूसरी निशानी उतारी बारिश खूब हुई नील में बाढ़ आ गई। खेत और खेती डूब गई

और फल बरबाद हो गये। यह बारिश उनके लिये वबाले जान बन गई।

पहले उनको पानी की कमी की शिकायत थी और अब उनको पानी की ज्यादती की शिकायत है। हमने उन पर टिड्डियाँ भेजीं। जिन्होंने उनकी खेती तथा पेड़ों को खा–पी कर बराबर कर दिया। अल्लाह के इस लश्कर के सामने फिरऔन और उसकी पुलिस और सैनिक बेबस थे। उनका मुकाबला वह कैसे कर सकते थे। उनको तलवार और तीर से मारा नहीं जा सकता था। तब फिर मिस्र वालों ने माना कि फिरऔन और हामान कितने बेबस और कमजोर है और उनकी पुलिस नाकारा। लेकिन फिर भी सचेत नहीं हुए और सबक नहीं लिया। इसके बाद अल्लाह दूसरी सेना भेजी और वह खटमल थे। हर जगह खटमल बिस्तरों में खटमल, कपड़ों में खटमल, सर में खटमल उनका जीना हराम कर दिया खटमलों ने। रात भर उनको गाली देकर सुबह करते थे। खटमलों से लड़ने की ताकत उनमें नहीं थी। न वहाँ तलवार चल सकती है और न वहाँ तीर काम आ सकते हैं। फिरऔन, उसकी पुलिस और सेना उन पर काबू नही पा सकती थी। उसके बाद अल्लाह ने उन पर मेंढक भेजे। खाने में मेंढक, पानी और पीने की चीजों में मेंढक, कपड़ों में मेंढक होते, मेंढकों ने उनका जीना हराम कर दिया। पूरे घर में मेंढक ही मेंढक फैल गये। वे एक को मारते दस आ

जाते, गोल के गोल आते गोया घर में पैदा हो रहे हैं। इन मेंढक से पुलिस और गार्ड आजिज आ गये थे।

अल्लाह की पाँचवी निशानी खून थी। उनकी नाको से खून बहता जिसने उनको निढाल कर दिया था। हकीम और डाक्टर आजिज़ और परेशान थे उसके इलाज से कोई दवा काम नहीं कर रही थी। जब भी कोई बला आती तो कहते "ऐ मूसा! यह बला दूर करने के लिये दुआ करो। हम तौबा करेंगे और हम ईमान लाएंगे और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ भेजने को भी तैयार हैं।" जब उनसे मुसीबत टल जाती तो फिर मुकर जाते जिस को पवित्र कुर्आन ने यूं बयान किया है : हमने उनपर तूफान, टिड्डी, मेंढक, खटमल और खून की शकल में अपनी निशानियाँ भेजी लेकिन उन्होने उस पर भी घमण्ड किया वह तो ढीट और फसादी कौम थी।

मिस्र से निकलना

मिस्र की जमीन अपनी फैलाव के बावजूद बनी इस्राईल पर तंग हो गई। मिस्र की उपज तथा हरयाली ले कर वह क्या करते, मिस्र तो उन के लिये जेल था। हर दिन उनको नित नये कष्ट और तकलीफें दी जाती रहीं लेकिन बरदाश्त की भी एक हद होती है। वह भी तो आदम की औलाद थे। उनको भी तकलीफ और कष्ट का एहसास होता था। अल्लाह ने मूसा अ० को वह्य की कि बनी इस्राईल को ले कर रात में मिस्र से निकल जाएं।

फिरऔन की पुलिस को इसका एहसास हो गया था। एहसास होना भी चाहिये था कि पुलिस कौओं की आँखे रखती थी। और चींटी की तरह सूंघती थी। सुन गुन मिलते ही फिरऔन को इस की सूचना दे दी।

मूसा अ० बनी इस्राईल को लेकर रात में मुकद्दस (पवित्र) जमीन की तरफ चल पड़े। यह सब 12 ग्रुपों में बटे थे और हर ग्रुप का एक अमीर (आगे चलने वाला) था। शाम का रास्ता मूसा अ० का जाना बूझा था। वह इस रास्ते पर दो बार सफर (यात्रा) कर चुके थे (एक बार वह इसी रास्ते मदयन गये और फिर इसी रास्ते मिस्र लौट आये)। मूसा ने कुछ और सोचा और अल्लाह ने कुछ और चाहा। हुआ वही जो अल्लाह ने चाहा था।

अल्लाह के इरादे से मूसा रास्ता भटक गये। मूसा समझ रह थे कि वह बनी इस्राईल को उत्तर की तरफ ले जा रहे हैं। हालंकि वह रात की तारीकी में उनको मशरिक (पूरब) की तरफ ले जा रहे थे। वहाँ उनको लाल समुद्र मौजें मारता मिला। देखते ही बोल पड़े कि ऐ अल्लाह हम कहाँ पहुँच गये। उनको (मूसा को) जवाब मिला कि हम तो समुद्र के सामने हैं।

मुड़कर देखा तो गर्द उड़ रही थी एक बड़ा लश्कर आ रहा था। उस को देख कर सब चीख पड़े और कहने लगे "ऐ इमरान के बेटे तुमने तो हमें धोखा दिया और हमको मरवाने का पूरा सामान कर दिया। तुम

हमको समुद्र के किनारे फिरऔन से मरवाने के लिये ले आये। वह तो हमें चूहे की मौत मारेगा। भागने और बचने का अब कोई रास्ता भी नहीं है।

हमने तो तुम्हारे साथ कोई बुराई नहीं की थी फिर तुम किस बात का बदला हमसे ले रहे हो। हमने तो तुम्हारी खातिर सब कष्ट और मुसीबत बरदाश्त की और तुम्हारे साथ यहाँ तक आये। अब समुद्र हमारे सामने है और दुश्मन हमारे पीछे है। अब तो मौत यकीनी है। बनी इस्राईल की आँखों के नीचे अंधेरा छा गया। दुनिया उनके लिये तारीक (अंधेरी) हो गई। डर से आवाज बैठ गई और जीवन से निराश (नाउम्मीद) हो गये।

ऐसी हालत में बड़े-बड़े अपने हवास खो बैठते हैं और उनकी हिम्मत जवाब दे देती है। लेकिन मूसा अ० को अपने रब (खुदा) पर पूरा भरोसा और विश्वास था। वह लोगों के शोरोगुल से नहीं घबराये और नबी की शान के मुताबिक कहा : मेरा अल्लाह मेरे साथ है वही मेरा मार्गदर्शन करेगा। अल्लाह ने मूसा को समुद्र में अपनी लकड़ी मारने का आदेश (हुकम) दिया। मूसा अ० ने लकड़ी मारी। समुद्र फट गया। पानी रुक गया। हर तरफ पहाड़ की तरह। उसमें 12 ग्रुपों के लिये 12 रास्ते बन गये। पूरी कौम शान्ति और सुकून से उससे पार हो कर खुश्की में पहुँच गये।

फ़िरऔन का डूबना

फ़िरऔन ने बनी इस्राईल को शान्तिपूर्वक समुद्र पार करते देख लिया तो सोच में पड़ गया। उनके पार करने पर फ़िरऔन ने अपने लश्कर (सेना) से कहा कि देखो तो समुद्र की तरफ, इसमें मेरे हुकम से रास्ते बन गये। ताकि भागने वालों को पकड़ लें। फ़िरऔन अपने लश्कर सहित आगे बढ़ा। बनी इस्राईल फिर घबरा गये और कहने लगे अरे दुश्मन तो आ गया। यह जालिम हम तक आ पहुँचा। उसने इरादा कर लिया कि रास्ता पार करे। अब कोई चीज इससे बचा नहीं सकती। हमको यह पकड़ लेगा और मिस्र ले जायेगा। हमें जेल में सख़्त तकलीफ देगा या फिर हमें यहीं मार डालेगा।

मूसा अ० ने अपनी लकड़ी को फिर समुद्र में मारना चाहा ताकि समुद्र अपनी हालत में आ जाये। अल्लाह ने मूसा को वह्य की समुद्र को खामोश रहने दो। पूरा लश्कर इसी में डूब जायेगा।

जब फ़िरऔन और उसका लश्कर समुद्र के बीच (जो उस समय सूखा था) पहुँचा तो समुद्र के रास्तों का रुका पानी मिल गया। फ़िरऔन ने जब पानी का मिलना देखा तो उसके घमण्ड का नशा उतर गया और उसने समझ लिया कि वह अब डूब जायेगा तो बोला कि "मैं अब ईमान लाता हूँ कि कोई उपास्य नहीं सिवाए उस के जिस पर इस्राईल ईमान लाये हैं। मैं अब मुसलमानों में से

हूँ।" लेकिन उसकी बदबखती (दुर्भाग्य) थी। उस समय उन लोगों की तौबा कुबूल नहीं होती जिन्होंने बुरे कर्म किये और मौत को देख लिया तो कहा अब ईमान लाये। जिस वक्त मौत से मुतअल्लिक अल्लाह की कुछ निशानियाँ आ जाएं तो उस वक्त का ईमान लाना कोई लाभ न देगा सिवाय इसके कि उस हालत से पहले ईमान न हो या ईमान के बाद कोई नेकी की हो, चुनाचि फिरऔन से कहा गया अब तुम ईमान ला रहे हो। इससे पहले तो विरोध ही करते रहे, आदेशों की अवहेलना की और तुम तो बड़ी गड़बड़ी मचाने वाले में थे। फिरऔन उसी समुद्र में डूब कर मर गया, वह शक्तिशाली और जालिम जिसने हजारो बच्चों व बूढ़ों को मारा था और गर्दनें उड़ा दी थी।

वह सरकश मारा गया जिसने हजारो मासूमों को कत्ल किया था। मिस्र का बादशाह अपने महल और तख्त (सिंहासन) से बहुत दूर मरा। ऐसी जगह मरा जहाँ कोई हकीम उसकी दवा के लिये नहीं था। और कोई उसका मित्र नहीं था जो उससे हमदर्दी (मदद) करता। वहाँ कोई ऐसा नहीं था जो उसके मरने पर रोता और सोग (ग़म) मनाता।

बनी इस्राईल को उसके मरने का यकीन ही नहीं आ रहा था वह तो समझते थे कि फिरऔन मर ही नहीं सकता। हमने उसको बगैर खाये पिये कई कई दिन

गुजारते देखा है। समुद्र ने उसका बदन फैंक दिया ताकि लोगों को उसकी मौत का विश्वास (यकीन) हो जाये। अल्लाह ने फिरऔन से कहा कि "हम तेरे बदन को बचाये रखेंगे ताकि तेरे बाद के आने वाले सबक लें और उनके लिये निशानी हो।" उस का बदन इबरत (नसीहत) और लोगों को देखने के लिये सुरक्षित है।"

फिरऔन का लश्कर भी आखिरकार डूब गया और उनमें से कोई जिन्दा नहीं बचा। और मिस्र उनसे छूट गया, वह उस विस्तृत मिस्र में अपने दफन के लिये एक गज जमीन भी न पा सके।

कितने बाग और चश्में छोड़े। कितने खेती और अच्छी जगह छोड़ी और नेयमतें जिनसे वह लाभ उठाते थे। हम इस प्रकार दूसरी कौम को मिस्र की जमीन का वारिस बना दिया उनके चले जाने पर न तो आसमान रोया न जमीन रोयी और उनको मोहलत नहीं दी गई।

खुश्की में

बनी इस्राईल अमनों सुकून (शान्ति) की जगह पहुँच गये और आजाद व शरीफों की तरह खुली फजा में साँस लीं वहाँ फिरऔन और उसकी पुलिस और हामान का कोई डर नहीं था। वह अब सुकून व इतमीनान से चल रहे थे अब उनको खुदा के सिवा किसी का खौफ न था। परन्तु वह शहर की जिन्दगी गुजार रहे थे यहाँ सहराई जंगल में धूप की तेजी में उनको तकलीफ थी। यह सब

अल्लाह के मेहमान थे। उनकी उसी तरह इज्जत और आदर हुआ जैसा बादशाहों का, क्या तुम ने नहीं देखा कि बादशाह अपने मेहमानो का किस तरह आदर करता है। उनके लिये धूप और गरमी से बचने के लिये खेमे लगवाता है। बेशक अल्लाह की दी हुई इज्जत सबसे बड़ी है। अल्लाह ने बादलों को उन पर साया करने का आदेश दिया। वह बादलों के साये में चलते फिरते थे। उनके साथ–साथ बादल चलते थे। जहाँ रूकते बादल रूक जाते थे। उस सेहरा (रेगिस्तान) में न कोई कुआँ था और न पानी का कोई और प्रबन्ध। प्यास लगी तो बनी इस्राईल मूसा अ0 से अपने प्यास की शिकायत करने लगे उसी अन्दाज से जैसे एक बच्चा अपनी माँ से पानी और दूध मांगता है। मूसा अ0 ने दुआ की तो अल्लाह ने मूसा अ0 से छड़ी को पत्थर पर मारने को कहा। मूसा अ0 ने पत्थर पर छड़ी मारी। 12 चश्में 12 गिरोह के लिये निकल आये। हर एक ने अपना चश्मा जान लिया। उसके बाद बनी इस्राईल ने भूख की शिकायत की और कहने लगे कि "ऐ मूसा तुम हमें मिस्र से ले आये वहाँ तो फल फ्रूट थे और खाने पीने की हर चीज उपलब्ध थी। तुमने यहाँ लाकर डाल दिया जहाँ खाने का कोई इन्तेजाम नहीं है।

मूसा अ0 ने अल्लाह से उनके खाने के लिये दुआ की। अल्लाह ने उनके खाने का इन्तेजाम फरमा दिया।

पेड़ों के पत्तों पर मिठाई की तरह एक चीज गिरती थी। उनके लिये चिड़ियाँ भेजी जो पेड़ों पर आकर बैठ जातीं और यह उनको आसानी से पकड़ लिया करते थे। यही मन और सलवा था जो उनकी मेहमानदारी में अल्लाह ने भेजा।

बनी इस्राईल की नाशुक्री

बनी इस्राईल के जौक को और उन के अखलाक (स्वभाव) को लम्बी गुलामी ने बदल दिया था। वह किसी एक बात पर रूकते ही नहीं थे। किसी चीज पर न रुक सकना उनकी आदत बन गई। वह बिल्कुल बच्चों की तरह हरकतें करने लगे थे। नेयमतों पर शुक्र करना कम हो गया और शिकायतें ज्यादा करने लगे। जिस चीज के करने से रोका जाता उसको करते ओर जिसके करने को कहा जाता उसको न करते थे। इस मन्न व सल्वा पर थोड़े ही दिन गुजरे थे कि कहने लगे "ऐ मूसा हम तो एक तरह की चीज खाते–खाते उकता गये हैं। हलवा और गोश्त खाते–खाते उब गये। अब तो हमारा जी सब्जी तरकारी खाने को कर रहा है। ऐ मूसा! हम एक तरह के खाने पर सब्र न कर सकेंगे तू अल्लाह से उन चीजों को देने के लिये कहो जो जमीन में पैदा होती हैं। जैसे :– सब्जी, प्याज, लहसुन और अरहर की दाल इत्यादि।" मूसा अ० को इन मूर्खों की बातों पर बड़ा आश्चर्य हुआ और इन की इस बेवकूफी पर चीख पड़े

और कहने लगे कि अरे बदबख्त अच्छी चीज के मुकाबले बुरी चीजों के लिये क्यों कहते हो। हलवे और चिड़ियों के गोश्त के मुकाबले सब्जी की हैसियत क्या है। कहाँ शाहाना खाना और कहाँ किसानों का। कितने बदजोक हो गये हो तुम और कितनी गलत इन्तिखाब है तुम्हारा। लेकिन वे सब्जी खाने पर जिद पकड़े हुए थे। मूसा अ० ने उनसे कहा कि जो तुम चाहते हो वह चीज तुम्हें हर गाँव और शहर में खूब मिलेगी। अब तुम कियामकरो किसी शहर में वहाँ तुम्हारे लिये वह सब है जो तुम मांग रहे हो।

बनी इस्राईल में बचपना आ गया था और बच्चों जैसी हरकतें करने लगे थे। जिस काम को करने को कहा जाता उसकी मुखालफत अवश्य करते और उसकी खिल्ली उड़ाते थे। उन्होंने यह तय कर लिया था कि जो कुछ उनसे कहा जायेगा उसका वह उल्टा ही करेंगे। जैसे उजड्डी बच्चा उस से बैठने को कहा जाता है तो वह खड़ा हो जाता है। खड़े होने का कहा जाए तो बैठ जाता है। उससे कहो चुप रहो तो बोलता उन में बच्चा की जिद, बुरों की खबासत, दुशमनों का इस्तिहजा (खिल्ली उड़ाना) आदत बनी इस्राईल में पैदा हो गई और पागलों की हिमाकत आ गई थी। बनी इस्राईल चाहते थे कि वह गाँव में रहें और सब्जी तरकारी खायें। लेकिन जब उनसे कहा गया : "इस गाँव में पड़ाव करो

जहाँ से चाहो जी भर खाओ लेकिन शहर के दरवाजा में झुक कर क्षमा क्षमा कहते हुए दाखिल हो, हम तुम्हारी खताओं को मुआफ कर देंगे और भलाई करने वालों की और बढ़ा कर देंगे।" यह इलाही आदेश सुन कर वह बिगड़ गये और उन में से कुछ शहर के दरवारजे में नामवारी के साथ खिल्ली उड़ाते हुए चूतड़ों के बल दाखिल हुए। और जो उन से (क्षमा क्षमा) कहते हुए दाखिल होने को कहा गया था उसको अपने अति से बदल डाला (गेहूं, गेहूं कहते दाखिल हुए) बस अल्लाह ने ऐसे लोगों पर बलाए और बलाएं भेज दी और वह चूहों की मौत मरे।

बनी इस्राईल को जब किसी काम को करने को कहा जाता तो वह नफरत से सवालों की बौछार कर देते। यह आदमी की आदत है कि जब उसको काम करना नहीं होता तो वह सवाल ज्यादा करने लगता है। बनी इस्राईल में किसी का कत्ल हो गया। बनी इस्राईल ने इसको बड़ी अहमियत (महत्त्व) दी। कातिल का पता नहीं चल पा रहा था। लोगों में उस कत्ल और कातिल पर बड़ी चेमीगोईयाँ (बातें) होने लगी। वह सब मूसा अ० के पास आये और कहने लगे "ऐ मूसा! इसमें आप हमारी सहायता करें। आप खुदा से दुआ करें कि वह कातिल को जाहिर कर दे।"

गायें

मूसा अ० ने दुआ की। अल्लाह ने "वह्य" की कि

वह बनी इस्राईल से एक गाय जबह करने को कहें। बस इस हुक्म पर एक मुसीबत आ गई। अब उन्होंने गाय के बारे में सवाल करना शुरू क्र दिये और उसका मजाक उडाने लगे।

मूसा अ० ने जब बनी इस्राईल से गाय जबह करने को कहा तो कहने लगे "ऐ मूसा! क्यों हमसे मजाक करते हो मूसा अ० ने कहा (अल्लाह की पनाह) कि मैं ऐसी जहालत करने वालों में हूँ।

अब उन्होंने सवाल करना शुरू (आरम्भ) कर दिये और कहने लगे कि अपने खुदा से पूछो कि गाय कैसी हो? उनसे कहा गया कि अल्लाह कहता है कि गाय न तो बूढ़ी हो और न बछिया। इन दोनों के बीच की हो। अब तुम वही करो जिसके करने का तुम्हें आदेश दिया जा रहा है। वह इस बात से संतुष्ट नहीं हुए और कहने लगे कि मूसा अपने खुदा से उस के रंग के बारे में पूछ लो कि किस रंग की हो? बनी इस्राईल से कहा गया कि गाय पीले और गहरे रंग की हो जो देखने में अच्छी और भली लगे। अब जवाब न बन पड़ा तो फिर पूछ बैठे और कहने लगे कि मूसा अपने खुदा से पूछो कि स्पष्ट बतायें कि गाय कैसी हो। हम तो गड़बड़ा गये। समझ में कुछ नहीं आ रहा है। खुदा ने चाहा तो अब समझ जाएंगे। मूसा अ० ने उनसे कहा कि अल्लाह कहता है कि ऐसी गाय जबह करो जो अच्छी किस्म की हो। वह हर तरह

से पूर्ण हो। उसमें किसी किस्म की कमी न हो कोई ऐब व अवगुण न हो। इस बार और सवाल नहीं किया इनशाअल्लाह कहा था इस लिये समझ गये लेकिन सवाल कर कर के तंगी पैदा कर दी। गया ढूंढ़ने में बड़ी मुश्किल पेश आई आखिर कार अल्लाह को रहम आया और ऐसी गाय का अल्लाह ने प्रबन्ध (इन्तेजाम) कर दिया। अब उनको वैसी गाये मिल गयी जैसी जबह करने को उनको आदेश था। उन्होंने उसको बहुत अधिक कीमत देकर खरीदा और उसको जबह कर दिया। मगर बड़ी बेदिली और मजबूरी में ऐसा किया। अल्लाह ने हुक्म दिया कि जबह हुई गाय के किसी हिस्से से मकतूल को मारा जाये तो वह जी उठेगा और कातिल का नाम बता देगा। और फिर ऐसा ही हुआ।

शरीअत (दस्तूर)

अब बनी इस्राईल का जानवरों की तरह से रहना—सहना समाप्त हुआ और आदमियों की तरह जीवन गुजारने लगे। शरीफों की तरह स्वतंत्रता से उस खुश्की में रहने लगे। अब उनको शरीयत की आवश्यकता पड़ी जिसकी रोशनी में सही और सीधे रास्ते पर चलें। इन्सान को सही रास्ते पर चलने के लिये अल्लाह की शरीअत (कानून) और उसकी रोशनी की आवश्यकता पड़ती है। अल्लाह के नूर (रोशनी) के बिना यह संसार अंधकार में है। यही नूर नबियों की शिक्षा है जिससे लोग हिदायत

पाते हैं और जिन्होंने इस नूर और उनकी शिक्षा को नहीं माना, मनमाने ढंग से अपना जीवन बिताया वह पथ भ्रष्टता के अंधकार में रहे।

उस नूर और हिदायत और नबियों की शिक्षा के बिना अकाइद (धार्मिक विकास) औहाम व खुराफात (भ्रम तथा व्यर्थ बाते) जिस पर बच्चे हंसे। क्या तुमने सुना और देखा है कि काफिरों मुशरिको यहूदियों नसारा के अकायद (श्रद्धा, विश्वास) जाहिलाना और मनगढंत शिक्षा, बिना नबियों की शिक्षा के जहालत, शक और अन्दाजो के सिवा कुछ भी नहीं। यह लोग अपने ख्यालों गुमानों और अन्दाजो पर चलते हैं और बेशक अन्दाजे से हक नहीं मिलता।

नबियों के प्रकाश के बिना आचार अशुद्ध जिस में या आवश्यक बातों की कमी या व्यर्थ बातों की भरमार होगी। क्या तुमने नहीं देखा कि जिसने नबियों की पैरवी नहीं की वह हर चीज में सीमा पार कर जाते हैं। और वह अपनी इच्छा पर अमल करते हैं और दूसरों के हक मार लेते हैं। हुकूमत व सियासत नबियों के नूर के बिना, अत्याचार पागलपन है, लोगो के मालों में उन के अधिकारों में और उन की जानों में माल व दौलत बरबाद होती है। लोगो का हक छीना जाता है। और लोगों का खून बहाना भी बुरा नहीं समझा जाता है।

क्या तुमने नहीं देखा कि जिनके दिल में अल्लाह का डर नहीं है और शरीअत पर नही चलते हैं वह कैसे दी

दादिलेरी (निडर होकर) से अमानत में खयानत करते हैं और कैसे अल्लाह के दिये धन पर ऐश करते हैं और लोगों का हक मारते हैं और खून खराबा करते हैं।

और कैसे लोगों को गुलाम बनाया। और उन को समूह में बाँट दिया। एक समूह के लड़के को कत्ल किया, औरतों को छोड़ दिया। क्या तुम जानते हो कि जंग–ए–अजीम (प्रथम और द्वितीय) में कितने लोग मारे गये।

अतः समस्त संसार अंधेरियों की अंधेरियों मे है उसे छोड़ कर जो विधाता के प्रकाश से प्रकाशित हुआ।

पवित्र कुर्आन ने सूचित किया

अन्धेरियाँ हैं एक के ऊपर एक (इन अंधेरियों का व्यक्ति) यदि अपना हाथ निकाले तो करीब है कि वह न दिखे जिस को अल्लाह रौशनी न दे उस के लिये कोई नूर नहीं।

नबी लोगों को अल्लाह की इबादत का तरीका सिखाते हैं और बाहमी मुआमलात की तालीम देते हैं।

नबी लोगों को दीन के आदाब के साथ जिन्दगी के आदाब सिखाते हैं, खाने, पीने के तरीके बताते हैं, सोने जागने के आदाब मजलिस के आदाब और हर चीज का अदब सिखाते हैं। नबी इस तरह अदब सिखाते हैं जैसे एक शफीक बाप अपने अजीज बच्चों को सिखाता है। लोग छोटे बच्चों की तरह हैं वह अपनी जवानी में अंबिया की तरबीयत के उस से जियादा

मुहताज हैं जितना वह अपने बचपन में अपने बापों की तराबीयत के मुहताज थे।

जिन लोगों ने यह नबवी तर्बीयत नहीं हासिल की और अंबिया अलैहिमिस्सलाम के लाए हुए आदाब नहीं सीखे वह सहरा के दरख्तों की तरह हैं जो खुद से उगे खुद से बढ़े कोई टेढ़ा कोई कांटेदार तो कोई खराब।

तौरात

अल्लाह यह नहीं चाहता था कि बनी इस्राईल का अन्जाम (अन्त वह हो जो किताब व हिदायत के बिना उनसे पहले कौमों का हुआ। और इरादा किया कि यह अंधी ऊंटनी की तरह न भटकते फिरें जिसे पहले की उम्मतें फिरीं। अल्लाह ने मूसा अ0 को हूक्म दिया कि वह पाकी हासिल करें और तीस रोजे रखें फिर तूरे सैना पर आएं ताकि अल्लाह तआला उन से बात करें और उन को एक किताब दें जो उनके लिये रहनुमा हो।

मूसा अ0 बनी इस्राईल की आदत से वाकिफ़ (जानकर) थे। इसलिये उन्होंने अपनी कौम के सत्तर आदमियों का चयन (चुनाव) किया कि यह गवाह रहें कि बनी इस्राईल बड़ी झगड़ालू कौम है। मूसा अ0 ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरी गैर हाजिरी (अनुपस्थिति) में मेरा काम देखना। बनी इस्राईल को समझाना और उनकी इसलाह (सुधार) करना। बनी इस्राईल कोई बेढंगी बातें तुम से करें तो उनकी बात न

मानना। मूसा अ0 ने ऐसा इस लिये किया कि जमाअत के लिये इमाम जरूरी होता है।

मूसा अ0 हारून को पूरे निर्देश देकर तूर चले गये और तीस रोजो के पश्चात निर्धारित स्थान पर पहुँच गये। अल्लाह से मिलने और उससे बात करने के शौक में आप ने जल्दी की और साथियों से आगे पर्वत पर पहुँच गये।

अल्लाह ने पूछा "ऐ मूसा! कौम से पहले जल्दी की आवश्यकता क्या थी?" मूसा अ0 बोले कि "वह लोग मेरे पीछे आ रहे हैं मैं आपकी रजा (खुशी) के शौक में जल्दी आ गया।"

अल्लाह ने मूसा से चालीस रातें गुजारने को कहा। चालीस रात पूरे करके मूसा अ0 तूरे सीना पर मुकर्ररह मकाम पर पहुँचे वहाँ उन्होंने अल्लाह से बात की और करीब हुए और करीब हुए तो दीदार का शौक बढ़ा अर्ज किया : मेरे रब अपना जलवा दिखाईये अल्लाह जानता था कि इनको मुझे देखने का शौक जरूर है लेकिन मुझे देखने का न इनमें साहस है और न शक्ति। अल्लाह को तो निगाहें नहीं देख सकतीं। वह निगाहों को देख रहा है वह तो सूक्ष्मदर्शी सर्वज्ञ है। पहाड़ अल्लाह के कलाम (बात) का बोझ नहीं उठा सकते हम जब उसके कलाम का भार नहीं उठा सकते तो नूर का भार उठाना तो और कठिन है। अल्लाह ने फरमाया कुरआन को पहाड़ पर उतारते तो वह अल्लाह के डर से रेजा–रेजा हो जाता।

अल्लाह ने मूसा अ० से कहा कि तुममें मुझे देखने का साहस नहीं है फिर भी तुम पहाड़ को देखो अगर पहाड़ अपनी जगह कायम रहा तो तो तुम मुझे देख लोगे। जब अल्लाह ने अपनी तजल्ली (नूर–रोशनी) पहाड़ पर डाली तो पहाड़ रेजा–रेजा हो गया और मूसा बे होश हो कर सजदे में गिर गये। जब होश आया तो बोले : "ऐ अल्लाह मुझे माफ (क्षमा) कर दे मैं तौबा करता हूँ। आप पाक हैं हर ऐब से मैं पहले ईमान लाने वालों में से हूँ।

अल्ला ने मूसा से कहा कि हमने तुम्हें अपना रसूल बनाया और हमने पैगाम पहुचाने और बात करने के लिये तुम्हें चुन लिया है। हम जो कुछ भी तुम्हें दे रहे हैं उसको ले लो और उस पर हमारा शुक्र (धन्यवाद) अदा करो।

मूसा अ० ने किताब की पाटयाँ ली उसमें वह सब बयान किया गया है। जिसकी बनी इस्राईल को जरूरत है। नसीहतें, और हर चीज की तफ्सील है। अल्लाह ने हुक्म दिया "ऐ मूसा! तुम इस को लेकर बनी इस्राईल के पास जाओ। और उन से कहो कि इसे अच्छे तौर पर अपनाएं।

मूसा अ० अपने उन सत्तर आदमियों के पास आये जिनका मूसा ने चयन (चुनाव) किया था और उन को अल्लाह के पुरस्कार (किताब) की सूचना दी तो उन लोगों ने इस का इंकार किया और बड़ी बेशर्मी और ढिटाई से कहने लगे "ऐ मूसा हम तुम्हारी बातों पर उस समय तक

यकीन (विश्वास) नहीं कर सकते हैं जब तक हम अपनी आँखों से खुदा को खुले तौर पर देख नहीं लेते। उनकी इस बेशर्मी और ढिटाई पर अल्लाह बड़ा नाराज हुआ और उन पर बिजली ऐसी गिरी कि वह देखते ही रह गये अर्थात बेजान हो गये। समझने की बात है जब वह अल्लाह की पैदा की हुई बिजली को नहीं बर्दाशत कर सकते थे तो अल्लाह के नूर को कहाँ बर्दाश्त कर सकते है? मूसा अ० ने दुआ की कि ऐ रब अगर आप को मेरी और कौम की हलाकत मंजूर होती तो पहले ही हलाक कर देते क्या अब कुछ बेवकूफों की बेवकूफी से हम को हलाक कर देगे? अल्लाह तआला ने मूसा अ० की दुआ सुन ली और उनको मरने के बाद फिर जिन्दा कर दिया।

मूसा अ० जब तूर पर गये और कुछ समय के लिये बनी इस्राईल से दूर हो गये। मूसा की अनुपस्थिति में शैतान ने अपना काम किया और उनको शिर्क के जाल में फाँस लिया। उन्हीं में से सामरी नाम का आदमी सामने आया और उनके सामने एक बछड़े का जिस्म ला खड़ा किया। उसने कुछ ऐसी तरकीब की जिसके कारण बछड़े के जिस्म से आवाज निकलती थी। उसको देख कर मूर्ख लोग कहने लगे। वास्तव में तुम्हारा खुदा यही बछड़ा है। और मूसा का भी उन से तो भूल हो गई।

बनी इस्राईल सामरी की बातों में आ गये और बछड़े को उपास्य मानने में अंधे बहरे की तरह मान

लिया। उसमें तो जवाब देने की शक्ति भी नहीं है। और न उसके इख्तियार में नफा पहुँचाना है न नुकसान। क्या उन्होंने नहीं देखा कि बछड़ा न बाते करता है न उन को सीधा रास्ता दिखाता है। हारून अ० ने उन को इस शिर्क से रोका और कहा : ऐ मेरी कौम तुम गुमराही में फंस गये हो तुम्हारा रब तो रहमान है। अतः मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। लेकिन बनी इस्राईल सामरी के जादू में फंस गये थे और उन के दिलों में बछड़े की मुहब्बत बैठ चुकी थी उन्होंने कहा हम बराबर यही करते रहेंगे यहाँ तक कि मूसा (तूर से) हमारे पास लौट कर आ जाएं।

बछड़ा

बहुत जमाने से बनी इस्राईल अपना जीवन मुश्रेकीन के साथ मिस्र में बिता रहे थे। वहाँ किबतियों को बहुतसी चीजों की इबादत (पूजा) करते देख रहे थे। अतः बनी इस्राईल के दिलों से शिर्क की बुराई जाती रही थी। उनके दिलों में शिर्क से लगाव बढ़ गया और उसकी मुहब्बत उनके दिलो में जड़ पकड़ गई थी। वह जब भी मौका पाते शिर्क की ओर दौड़ पड़ते ऐसे जैसे पानी ढाल की ओर दौड़ पड़ता है। उनके दिलों में कजी आ गई थी उन का जौक बिगड़ चुका था चुनाचि वह सीधा रास्ता देखते तो उस पर न चलते, गलत रास्ता देखते तो उसे अपना लेते।

बनी इस्राईल समुद्र पार कर के एक कौम के पास से गुजरे उसे बुतों (मूर्तियों) की इबादत (पूजा) करते पाया तो मूसा से कहने लगे कि "ऐ मूसा हमारे लिये इन्हीं की तरह पूजा के लिये एक उपास्य उपलब्ध कर दो। मूसा अ० नाराज हुए और कहा तुम लोग जाहिल कौम हो। कितने ताज्जुब की बात है और कितनी जियादती की बात हैं अल्लाह ने तुम पर ईनाम किया, और मेहरबानी की, तुम को वह दिया जो दुनिया में किसी को न दिया क्या तुम अल्लाह के सिवा कोई और उपास्य चाहते हो जब कि उस ने तुम को सारे आलमों पर बड़ाई दी।

सज़ा

अल्लाह ने "वह्य" के जरिये मूसा अ० को खबर दी कि बनी इस्राईल को सामिरा ने सही रास्ते से भटका दिया है। वह शीघ्र बनी इस्राईल के पास गुस्से और नाराजगी के साथ आए और अपनी कौम पर नाराज हुए। और अल्लाह वास्ते अपने भाई हारून पर नाराज हुए और कहा : "ऐ हारून! तुम ने बनी इस्राईल को गुमराह और बछड़े की पूजा करते देखा तो उनको ऐसा करने से रोका क्यों नहीं? तुम ने मेरी पैरवी न की तुम ने मेरी मुखालफत की। हारून अ० ने अपनी सफाई में मूसा अ० से कहा कि मैंने इनको बहुत समझाया। यह नहीं माने। मैं डरा कि कहीं आप कहें कि तुमने बनी इस्राईल में फूट डाल

दी और मेरी बात का लिहाज न किया। बेशक कौम ने मुझे कमजोर कर दिया और करीब था कि मुझे मार डालती। स्थिति जान लेने के बाद मूसा अ0 ने दुआ की :–

"ऐ अल्लाह मुझे और मेरे भाई को माफ (क्षमा) कर दीजिये और हमें अपनी रहमतों में दाखिल कर लीजिये, आप ही सब रहम करने वाले सब से ज्यादा रहम करने वाले हैं।

फिर सामरी को सम्बोधित करते हुए मूसा अ0 ने कहा कि तुझे ऐसा करने की क्या सूझी थी। सामरी ने अपना पाप स्वीकार करते हुए कहा कि यह चीज मुझे भली लगी और मेरे दिल ने उसको कुबूल किया और फिर मैंने इसकी शिक्षा दी। सामरी से मूसा अ0 ने कहा कि "जा परे हो जा। तेरी यही सजा है कि जब तक तू जिन्दा रहेगा तेरे करीब कोई नहीं आयेगा और तू सब से कहता फिरेगा कि मुझसे दूर रहो और मुझे मत छुओ। किसी को तुम से सहानुभूति न होगी तू (अकेला) अपना जीवन बितायेगा। इससे बड़ी और क्या सजा हो सकती है? जिसने हजारों को शिर्क से नापाक किया। उसकी यही सजा है कि लोग उसे नजिस समझें और फेंक दें। "जिसने अल्लाह और उसके बंदों के बीच दीवार खड़ी की है उसको आदमियों के बीच रहने का कोई हक नहीं है। जिस बदबख्त ने अल्लाह की जमीन पर शिर्क की

दावत दी वह ऐसा पापी है कि उस के लिये सारी दुनिया उसके लिये यह जमीन कैदखाना होना जरूरी है। मूसा अ० ने बछड़े के जिस्म को जलाने का हुक्म दिया वह जला दिया गया फिर उसको समुद्र में फेंक दिया।

फिर मूसा अ० ने अपनी कौम (बनी इस्राईल) से कहा "ऐ कौम तुमने बछड़े को पूज कर अपनी आत्मा पर बड़ा जुल्म (अत्याचार) किया है। अब तुम अपने अल्लाह से अपने पापों को माफ करने के लिये तौबा करो। अपनी आत्मा को मार डालो। यही तुम्हारे लिये (उचित) अच्छा होगा और इसी में अल्लाह के नजदीक तुम्हारी भलाई है।"

फिर बनी इस्राईल ने ऐसा किया। बछड़े की पूजा करने वालों को उन्होंने मार डाला। इस तरह उन्होंने तौबा की। अल्लाह ने उनसे कहा कि "जिन लोगों ने बछड़े को भगवान बना लिया उनको अल्लाह का गुस्सा और उसकी नाराजगी तो मिलेगी ही उनको दुनिया में भी जिल्लत व रूसवाई मिलेगी। ऐसे लोगों को ऐसी ही सजा मिलती है।" बछड़े की पूजा करने वालों और अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने वालों को भी कियामत तक यह रूस्वाई मिलती रहेगी।

बनी इस्राईल की बुजदिली

बनी इस्राईल का पालन पोषण गुलामी की हालत में मिस्र में हुआ था जहाँ जिल्लत थी रुसवाई थी। उसी

हाल में बच्चे जवान हुए और जवान बूढे हुए और उन की रगों में खून ठन्डा हो गया, वह सरदारी हासिल करने या जिहाद के बारे में कभी सोचते भी न थे। बनी इस्राईल हमेशा अपने दिन अजनबियों मुसाफिरों की तरह गुजारे, न उनका कोई वतन था न उन की कही हुकूमत थी।

मूसा अ0 ने अल्लाह की वह्य के अनुसार मुकददस सर जमीन (फिलिस्तीन) जो उनके बाप दादा की जमीन है उस में आजाद बादशाहो की तरह रहें। लेकिन मूसा अ0 बनी इस्राईल की बुजदिल तबीअत और कमजोरी से वाकिफ थे लिहाजा इरादा किया कि उन में शौक पैदा करे और इस काम को उन पर आसान जाहिर करें। इसलिये कि अरजे मुकददस (बैतुल मकदिस) पर हैसीयून और कनआनीयून का कबजा है और वह शक्तिशाली तथा बड़े लड़ाकू हैं और यह बनी इस्राईल उस मुक़ददस जमीन में उस वक्त तक न दाखिल होंगे जब तक यह शक्तिशाली लोग उस से बाहर न हो जाएं। चुनांचि उनको उभारने के लिये उन पर अल्लाह की निअ़मतों और उन को दुनिया वालों पर फजीलत देने के पुरस्कार को याद दिलाया ताकि उन मे जिहाद के लिये चुस्ती पैदा हो और वह इस जिल्लत की जिन्दगी से नफरत (घृणा) करें जो अंबिया और बादशाहों की औलाद के लिये अनुचित है।

मूसा अ० ने अपनी कौम से कहा : ऐ मेरी कौम अपने पर अल्लाह द्वारा की गई नेअमतों को याद करो कि तुम में नबी भेजे, बादशाह बनाए और तुम को वह दिया जो तमाम आलमों मे किसी को नहीं दिया।

फिर उन से कहा बेशक अल्लाह ने अर्जुल मुकददस तुम्हारे लिये लिख दी लिहाजा तुम्हारे लिये जरूरी है कि तुम उठो और अपने दुश्मनों से उस को ले लो। अल्लाह तआला जब किसी के लिये कोई चीज लिख देता है और उस के मुकद्दर में कर देता है तो उस के हासिल करने में आसानियाँ पैदा कर देता है पस अल्लाह के फैसले को कोई रद नहीं कर सकता।

ऐ मेरी कौम अर्जे मुकद्दस में दाखिल हो जाओ जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है।

और मूसा अलैहिस्सलाम को अंदेशा हुआ कि कहीं उन पर बुजदिली गालिब न आ जाए लिहाजा फरमाया। और देखो पीठ मत फेरो वरना बड़े घाटे में पड़ जाओगे।

मगर हुआ वही जिस को मूसा अ० डर रहे थे, उन का जवाब वही था जो मूसा अ० ने सोचा था कहने लगे : ऐ मूसा उस में तो बड़े शक्तिशाली लोग हैं, हम हरगिज उस में दाखिल न होंगे जब तक वह लोग उस से बाहर न हो जाएं। और बडे इतमीनान से कहा : "अगर वह बाहर हो जाएं तो हम लोग दाखिल हो जाएंगे।

दो आदमी जो अल्लाह से डरते थे अल्लाह ने उन पर इनआम कर रखा था उन्होंने कहा दरवाजे में दाखिल हो जाओ जब तुम दाखिल हो जाओगे तो गालिब आ जाओगे और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो। लेकिन उनपर इसका कोई असर नहीं हुआ और उन्होंने कहा : अगर दाखिल हुए बिना कोई चारा नहीं तो आप मुअजिजे (चमत्कार) की मदद से दाखिल हो जाएं जब हम सुनेगे कि आप दाखिल हो गये हैं तो हम भी आकर सलामती और अम्न के साथ दाखिल हो जाएं गे। कुर्आन मजीद ने इस को यूं बयान किया है :–

उन लोगों ने कहा ऐ मूसा जब तक वह (शक्तिशाली) लोग उस में हैं हम हरगिज, हरगिज उसमें दाखिंल न होंगे आप जाइये और आप का रब, पस दोनों लड़ो हम यहाँ बैठे हुए हैं।

मूसा अ० को गुस्सा आया और उन से निराश हो गये। अपने रब से मुखातब हुए।

अर्ज किया : मेरे रब! मैं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर इख्तियार नहीं रखता हूँ हमारे और इस फासिक कौम के बीच अलाहिदगी पैदा कर दे। अल्लाह तआला ने फरमाया यह अर्जे मुकद्दस इन पर चालीस वर्षों के लिये हराम (वर्जित) कर दी गई यह धरती पर मारे मारे फिरेंगे तुम इस फासिक कौम पर दुखी मत हो

उस चालीस साल के जमाने में यह नस्ल जो मिस्र में गुलामी और जिल्लत की हालत में पली थी इन्तिकाल

कर गई और दूसरी नस्ल तैयार हुई जो इस इलाके में तंगी व उसरत के साथ पली बढ़ी यह मुस्तक्बिल (भविष्य) की कौम हुई।

शिक्षा के रास्ते पर

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि – "मूसा अ० तकरीर (भाषण) के लिये खड़े हुए तो उनसे पूछा गया कौन सब से अधिक जानकार (ज्ञानी) है? मूसा अ० ने कहा कि मैं सबसे ज्यादा जानकार हूँ। मूसा अ० ने इल्म को अल्लाह की जानिब मनसूब नहीं किया उस पर उन को चेतानवी हुई। अल्लाह ने मूसा अ० को वह्य से बताया कि "मेरे बन्दों में से एक बन्दा दो समुद्रों के मिलने की जगह पर है वह तुम से अधिक जानकार है। मूसा अ० ने अल्लाह से कहा कि "ऐ अल्लाह उससे कैसे मिला जा सकता है। मूसा अ० से कहा गया कि तुम एक मछली अपने थैले में डाल लो। जहाँ तुम उसको खो दो वहीं वह तुम्हें मिलेंगे।"

मूसा अ० ने यूशअ बिन नून नवयुवक के साथ अपने थैले में मछली डालकर चल दिये यहाँ तक कि पहाड़ी के पास पहुँचे और सर रख कर सो गये। इसी बीच मछली जीवित हो कर समुद्र में चली गई जो मूसा और उस जवान के लिये आश्चर्य की बात थी। उन दोनों ने अपना सफर रात और दिन का पूरा किया। सुबह हुई तो मूसा अ० ने उस नौजवान से कहा कि भई खाना लाओ। इस सफर ने तो थका दिया। जिस जगह की

रहनुमाई हुई थी जब तक उससे आगे नहीं निकले मूसा अ० को थकावट बिल्कुल नहीं महसूस हुई थी।

नौजवान ने मूसा अ० से कहा कि आप को ख़्याल नहीं हम लोग जब चट्टान के पास रुके थे तो वहाँ मछली (के समुद्र में चली जाने) की बात तो भूल ही गया। मूसा अ० ने कहा कि हमको वही जगह चाहिये थी फिर दोनों उसी रास्ते चट्टान तक जाने के लिये लौट पड़े। वहाँ जब पहुँचे तो वहाँ एक आदमी को कपड़े में लिपटा देखा तो उसको सलाम किया।

ख़िज्र ने कहा : तुम्हारी इस जमीन पर सलाम कहाँ?

मूसा अ० ने उनसे कहा कि मैं मूसा हूँ।

ख़िजिर बोले बनी इस्राईल वाले मूसा हो?

मूसा अ० ने जवाब दिया हाँ।

मूसा अ० ने कहा कि क्या मैं आपके पीछे चलूं ताकि आप मुझे वह इल्म सिखादे जो आप को सिखाया गया है।

ख़िजिर ने मूसा से कहा कि तुम मेरे साथ रहोगे तो सब्र न कर सकोगे। ऐ मूसा मेरे पास जो भी शिक्षा है वह अल्लाह ने दी है। वह तुम नहीं जानते। और जो तुम्हारे पास शिक्षा और जानकारी अल्लाह की तरफ से मिली है वह मैं नहीं जानता। मूसा अ० ने ख़िजिर से कहा कि मैं इन्शाअल्लाह सब्र भी करूंगा और आपकी बात भी मानूंगा अब मूसा और ख़िजिर समुद्र के किनारे चलने लगे उनके पास कोई कश्ती नहीं थी। एक नाव

देखकर नाव वाले से उनको ले चलने को कहा नाव वाले ने ख़िजिर को पहचान लिया और दोनों को बग़ैर पैसा लिये बिठा लिया।

आगे चले तो नाव पर एक चिड़िया आ बैठी और उसने चोंच से समुद्र से एक चोच पानी पिया। इसको देखकर ख़िजिर ने मूसा से कहा कि :–

मूसा हमारा और तुम्हारा ज्ञान अल्लाह के ज्ञान से उतना ही मिला है जितना समुद्र से चिड़याँ की चोंच में पानी लग गया है।

ख़िजिर ने नाव का तख़्ता निकाल लिया। मूसा अ० बोल पड़े। आपने कितना ग़ज़ब किया नाव का तख़्ता लेकर आपने तो लोगों को डुबाने का इन्तेज़ाम कर दिया। नाव वाले ने तो हम से किराया भी नहीं लिया। ख़िजिर ने कहा कि ऐ मूसा मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था कि तुम सब्र न कर सकोगे। मूसा अ० ने ख़िजिर से कहा कि यह मेरी पहली भूल है इस भूल पर मेरी पकड़ न करें। फिर दोनों आगे बढ़े। रास्ते में एक लड़का खेलता हुआ मिला। ख़िजिर ने उस लड़के का सर गुद्दी से पकड़ कर अलग कर दिया तो मूसा अ० ने ख़िजिर से कहा कि :–

आपने एक मासूम निर्दोष का ख़ून कर दिया। ख़िजिर ने मूसा अ० से कहा कि :–

मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था कि तुमसे सब्र न हो सकेगा। और तुम मेरा साथ न दे सकोगे। फिर दोनों आगे बढ़े और एक बस्ती "गाँव" में गये। गाँव वालों से

खाने की इच्छा ज़ाहिर की। गाँव वालों ने उनको खाना खिलाने से इन्कार कर दिया। वहीं उन्होंने एक दीवार को गिरते देखा। ख़िजिर अ० ने दीवार को अपने हाथ से उठा दिया। मूसा अ० यह देखकर बोल पड़े। आप इस काम की मज़दूरी ले सकते थे। ख़िजिर अ० ने इसके बाद मूसा अ० से कहा कि तुम्हारी बेसब्री हम दोनों को अलग करने का सबब बनी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। हमारी इच्छा थी अगर मूसा ने सब्र कर लिया होता तो और बहुत सी बातों की जानकारी हो जाती।

तफ़सीर

ख़िजिर अ० ने मूसा को बताया कि नाव गरीब और मिस्कीन मज़दूरों की थी। वह उससे अपनी रोजी कमाते थे। आगे एक बादशाह था जो अच्छी कश्तियों पर क़ब्जा कर लेता था। मैंने उसमें ऐब (बुराई) पैदाकर दिया ताकि बादशाह उसको न ले सके। जहाँ तक लड़के की बात है। लड़के के माता पिता मोमिन थे। हमें डर हुआ कि कहीं यह सरकश लड़का उनको गलत न कर दे। हमने चाहा कि अल्लाह इन दोनों के लिये इस से अच्छा लड़का दे जो नेक और फरमाँ बरदार हो। जहाँ तक दीवार की बात है तो वह दीवार दो यतीम बच्चों की थी। उसके नीचे ख़ज़ाना (दफीना) था उनके बाप नेक और शरीफ थे। अल्लाह ने चाहा कि यह लड़के जब जवान हों तो वह अल्लाह की रहमत से इस ख़ज़ाने को निकालें और अपने काम में लाएं।

ख़िजिर ने कहा कि मैंने यह सब कुछ अपनी इच्छा और मन से नहीं किया। जो कुछ किया उसके लिये अल्लाह का हुक्म था। यह उसकी तफसील है जिस पर तुम सब्र नहीं कर सके।

मूसा अ0 के बाद बनी इस्राईल

मूसा अ0 का इन्तेकाल (निधन) हो गया और बनी इस्राईल अपने बुरे कामों के कारण मारे फिर रहे थे। अल्लाह ने उनके भाग्य में जिल्लत और रूसवाई (अपमान) लिख दी और वह अल्लाह के ग़ज़ब के शिकार हुए। उन्होंने अपने बुरे कर्मों से अल्लाह के ग़जब के शिकार हुए। उन्होंने अपने बुरे कर्मों से अल्लाह को नाराज किया जब कि अल्लाह ने उनमें नबी भेजे उनमें बादशाह भी हुए और अल्लाह ने उनको अपनी नियमतों से नवाजा जो उस जमाने में और किसी कौम को नहीं मिली। फिरऔनियों के जुल्म और (अत्याचार) से छुटकारा दिलाया जो उनके लड़को को कत्ल कर देते और औरतों को छोड़ देते थे। उनके लिये समुद्र फाड़कर रास्ते बनाये और यह उससे सही सालिम निकल गये। उनके सामने फिरऔन को डुबोया। उनपर अल्लाह ने बादल का साया किया उन पर मन और सलवा उतारा। जमीन से चश्में निकाले उनके खाने पीने में बरकत दी।

इन सब नेयमतों की बनी इस्राईल ने नाशुक्री की और अल्लाह की निशानियों का इन्कार किया। नाफरमानी की और हद से आगे बढ़ गये। मूसा अ0 को अपने

कामों से नाराज़ किया। वह मूसा जिन्होंने उनको माता–पिता का प्यार दिया वह अल्लाह की मख़लूक में सब से जियादा उन पर मेहरबान थे। वह उन पर इतनी शफ़कत करते जैसे दूध पिलाती माँ अपने बच्चे से ओर दयालू माता अपने दूध पीते अनाथ (यतीम) बच्चे से। वह मूसा जिन को बनी इस्राईल ने गाली दी तो उन्होंने दुआ दी उन की हंसी उड़ाई तो उन के लिये रोये, जुल्म किया तो आप ने उन के साथ हमदर्दी की।

वह मूसा जिन्होंने बनी इस्राईल को फिरऔन की कैद से छुटकारा दिलाया, मिस्र के कैद खाने से निकाल कर आजाद सहरा में लाये बदबख़्त गुलामों की जिन्दगी से आजाद शरीफों की जिन्दगी दिलाई।

बनी इस्राईल ने ऐसे मेहरबान का दिल दुखाया उसकी मुखालफत की और उसका मज़ाक उड़ाया और उसकी तौहीन की जो अल्लाह के नजदीक बड़ा महबूब बन्दा था। क्या ऐसी कौम का अंजाम ज़िल्लत, रूसवाई और बरबादी न होना चाहिये? यह कौम इसी की मुसतहिक थी बल्कि इससे मारा मारा फिरना बल्कि इससे जयादा सजा की मुस्तहक थी।

वास्तव में इन्होंने खुद अपने ऊपर जुल्म किया अल्लाह ने उनपर कोई जुल्म नहीं किया।

शुऐब अलैहिस्सलाम का क़िस्सा

तुमने इब्राहीम अ0 यूसुफ अ0 के किस्से पढ़े हैं। तुमने नूह अ0 और सालेह अ0 के किस्से भी पढ़े और तुमने हज़रत मूसा का किस्सा कुछ तफसील से पढ़ा है।

यह सब किस्से तुमने बडे शौक और लगन से पढ़े हैं। इन किस्सों ने तुम्हारे दिलों और आत्मा पर अच्छा असर (प्रभाव) डाला होगा। तुम्हारी जबान इससे मानूस हो गई। लोगो ने तुम को देखा कि तुम छोटे अपने भाईयों को यह किस्से सुनाते हो (इन किस्सों को) तुमने यह किस्से बार—बार अपने माता—पिता अपने बड़े भाईयों तथा अपने मित्रों को सुनाते हो और सुनाकर इनका मजा (आनन्द) लेते हो और इन कहानियों के सुनाने मे तुम जोश में आ जाते हो।

किस्सा हक़ व बातिल की जंग का

यह कोई हैरत की बात नहीं है यह किस्से शौक से पढ़ने और सुनने के हैं ही। यह किस्से हक और बातिल (झूठ व सच) के बीच जंग है। यह ज्ञान तथा अज्ञानता

के बीच संघर्ष की कहानियाँ हैं। यह जंग है रोशनी और अंधेरे (प्रकाश और अंधकार) के बीच। यह किस्से जंग है इन्सानियत और हैवानियत (मनुष्यता तथा बन चरता) के बीच। यह किस्से (संघर्ष) हैं अनुमान तखमीन और परिपक्वता के बीच।

यह विजय की कहानियाँ है सत्य की असत्य पर ज्ञान की अज्ञानता पर निर्बल की बलवान पर, अल्प की बहु पर। यह ऐसे किस्से है जिन में ज्ञान है। विज्ञान है। लोगों के लिये उपदेश है अल्लाह ने सच कहा है कि "इन कहानियों में अक्ल रखने वालों के लिये शिक्षा व उपदेश (सबक) है। यह गढी कहानियाँ नहीं है अपितु पुष्टि करने वाले हैं पहलों के यह कुर्आन जिस में वह किस्से हैं इसमें हर आवश्यक बात का विस्तार है। पथ प्रदर्शन है। कृपा है ईमान लाने वालों के लिये।

हज़रत शुऐब अ० मदयन में

हमने जो नबियों की कहानियाँ तुम्हें सुनाई हैं वह मनगढ़न्त नहीं है। यह कहानियाँ कुरआन से ली गई हैं। जिनको अल्लाह ने बयान किया है। कुरआन में इन किस्सों के अलावा (अतिरक्ति) और भी किस्से बयान किये गये हैं। उन में हज़रत शुऐब अ० का किस्सा है। जिनको अल्लाह ने मदयन में "एक कौम" में नबी बनाकर भेजा था। "कौमे ऐका" व्यापारी थी और व्यापारिक सामान वाली थी। व्यापार के लिये वह यमन, शाम, इराक, मिस्र

तथा लाल सागर की यात्रा किया करती थी। अपने पूर्वजों की तरह यह भी अल्लाह की इबादत तथा पूजा में दूसरों को शरीक करती थी। बल्कि यह उसमें कुछ अधिक (ज्यादा) थी। यह लोग कम तौलते और कम नापते भी थे। काफिलों को छेड़ते उन को धमकाते डराते। धरती पर गड़बड़ मचा रखी थी। बलवानों तथा धनवानों की भांति ऐसे रहते जैसे इनको किसी चीज का हिसाब नहीं देना है और न ही उनको अजाब का भय है और यह सदैव दुनिया में रहेंगे।

अल्लाह ने हज़रत शुऐब को उन में नबी बनाकर भेजा। वह उनको दीन की दावत देते थे उनको अल्लाह की पकड़ से डराते थे। उनसे कहते : ऐ मेरी कौम अल्लाह की इबादत करो। अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं है। उनसे कहते थे कि कम मत तौलो, कम मत नापो। मैं तुम को धनवान देख रहा हूँ परन्तु मुझे भय है तुम पर अल्लाह के व्यापक प्रकोप का। अल्लाह के अजाब से डराता हूँ। और वह कहते "ऐ मेरी कौम नाप–तौल में बराबर रखो। लोगों को उनकी चीज़ें बराबर दो और जमीन में गड़बड़ी मत करो।"

शुऐब अ0 की दावत

हज़रत शुएब ने कौम से विस्तृत बात की और जो विचार उन की मन इच्छा में छुपा था उसे खोल दिया और वह था धन तथा उस के वृद्धि का प्रेम और कहा :

कि पूरे नाप–तौल के बाद व्यापार में जो लाभ होगा वह तुम्हारो लिये ज्यादा लाभदायक है उस माल से जो जुल्म व ज्यादती (अत्याचार) से प्राप्त हो।

"तुम उन लोगों को देखो जिन्होंने अत्याचार व बेईमानी की तथा कम नाप–तौल कर लोगों का हक मार कर धन कमाया वह धन उनके काम नहीं आया। वह धन बरबाद हो गया खो गया चोरी चला गया ऐसा धन फसाद या मुसीबंत (परेशानी) का सबब बना या ऐसी जगह खर्च हुआ जहाँ अल्लाह नहीं चाहता। या फिर अल्लाह ने किसी ऐसे को मुसल्लत कर दिया जिस ने उस धन को खा–पी कर बरबाद कर दिया थोड़ी चीज जो लाभ पहुँचाये उससे अच्छी है जो अधिक है लेकिन लाभ हीन है। कुर्आन कहता है कि कह दीजिये कि अच्छा और बुरा बराबर नहीं हो सकता भले ही बुरे की अधिकता रोचक हो।" मैं तुम्हें हृदय से निष्ठा के साथ नसीहत करता हूँ कि तुम्हारा निगेहबान (रक्षक) एक अल्लाह ही है। हजरत शुऐब ने बड़ी दानाई दूर अन्देशी ज्ञान तथा सहानु भूति के मन से कहा कि अल्लाह के दिये हुए से जो बच रहे वही तुम्हारे लिये भला है अगर तुम ईमान वाले हो अगर तुम मेरी बाते नहीं मानते हो मैं तुम्हारा पहरेदार तो हूँ नहीं तुम आप भुगतोगे।

दयालू पिता तथा ज्ञानी शिक्षक

भिन्न–भिन्न तरीकों व अन्दाज़ों से हज़रत शुऐब कौम को समझाते थे और नसीहत करते थे। शफीक बाप, दादा अध्यापक की तरह उनको बताते थे अतएव उन्होंने कहा कि :–

"ऐ लोगो! उस अल्लाह की इबादत करो जिसका काई शरीक व साझेदार नहीं है। तुम्हारे लिये तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट आदेश आ चुका है। सही तरीके से पूरा नापो–तौलो, लोगों को चीजें कम मत दो। सुधार के पश्चात जमीन पर फसाद मत फैलाओ यह तुम्हारे लिये बहुत भला होगा यदि तुम ईमान रखते हो। हर रास्ते पर मत बैठो जो ईमान वाले है उन को धमकिया मत दो और उनको अल्लाह की राह से मत रोको, तुम सीधी राह में टेढा पन ढूढंते हो। याद करो तुम कितने कम थे अल्लाह ने तुम्हारी संख्या (तादाद) बढ़ाई। उनका अन्जाम देखो जिन्होने जमीन पर फसाद बरपा किया। वह बरबाद हो गये।"

कौम का जवाब (उत्तर)

कौम के बुद्धिमान लोग हज़रत शुऐब की दावत तथा उनकी शिक्षा का अर्थ निकालने में जुट गये जैसे उन्होंने कोई भेद खोल लिया हो या यह कहानी बूझ ली हो, घमण्ड तथा गर्व से बोले :–

"ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज हमको यह आदेश देती है कि हम उनकी पूजा करना छोड़ दें जिनकी पूजा हमारे बाप–दादा करते आये हैं और हम अपनी दौलत अपनी इच्छानुसार खर्च (व्यय) न करें। तुम तो बड़े समझदार और नेक हो। फिर तुम ऐसी बात क्यों करते हो?

शुऐब अ० ने अपनी दावत को स्पष्ट किया

कौम के जवाब पर शुऐब अ० ने न उन पर सख्ती की न ख़फा हुए बल्कि नर्मी व इन्किसारी से समझाया और उनकी गलत फहमी दूर करने की गरज से कहा कि शऊरी जिन्दगी की लम्बी खामोशी और उन के बुरे स्वभाव और अत्याचार पर सहन करने और कुछ न कहने ने उनको इस दअवत व नसीहत पर नहीं उभारा है। बल्कि इस का सबब अल्लाह का वह करम है जिस के तहत अल्लाह ने वह्य व नबुव्वत से नवाजा और आप का सीना खोल दिया और अपनी जानिब से एक नूर (नूरे नुबुव्वत) अता फरमाया।

नीज कौम की अच्छी माली हालत देख कर हसद व कीना ने भी इस दअवत पर नहीं उभारा है कि अल्लाह तआला ने हलाल व तय्यिब चीजों से आपको गनी कर रखा था जिस के सबब वह खुश नसीब थे आसूदा खतिर फ़ारिगुल बाल जबान व कल्ब से अल्लाह

का शुक्र करने वाले थे अर्थात परसन्ताप भी इस उपदेश का कारण नहीं।

ऐसा भी नहीं था कि शुऐब अ० किसी काम के करने से कौम को रोकते हो और खुद अपनाए हुए हों, वह उन लोगों में से नहीं थे कि कहते तो हों मगर करते न हो। इस दअवत व नसीहत से शुऐब अ० का मक्सद कौम की इस्लाह, उन की बेहतरी, अजाबे इलाही से छुटकारा जो उन के सरों पर मंडला रहा है, बेशक फज्ल व बड़ाई तो अल्लाह तआला की जानिब लौटती है उसी पर उन का भरोसा, कौम के जवाब पर उन से जिस तरह शुऐब अ० मुखातब हुए कुर्आन ने उस को यूं बयान किया है :–

"कहा ऐ मेरी कौम जरा ध्यान दो अगर मैं अल्लाह की दी हुई दलील अर्थात नुबुव्वत के पद पर हूँ जिस को मेरे रब ने मुझे अता कर रखा है जो बेहतरीन अता है। तो फिर मैं तुम को दअवत व नसीहत क्यों न करूं, मैं तुम को जिस का आदेश देता हूँ उस के विरोध का मैंने इरादा भी नहीं किया कि जिस पर तुम एअतिराज कर सको मैं तो अपनी शक्ति भर तुम्हारा सुधार चाहता हूँ मुझे जो दअवत व नसीहत की तौफीक मिली है वह अल्लाह ही की जानिब से है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी से रुजूअ करता हूँ अर्थात हर काम में उसी की ओर झुकता हूँ और उसी से सहयोग माँगता हूँ।

हज़रत शुऐब उनके सामने जो भी बात रखते वह (कौम) उससे ऐसे अनजान (अज्ञात) बन जाते जैसे हज़रत शुऐब किसी और भाषा में बात कर रहे हैं। जबकि वह उन्हीं के देश के सपूत तथा उनके भाई थे। मगर जैसे वह वाजेह बात न कर पाते हों अच्छी जबान न बोल पाते हों जब कि वह फसीह तर जबान बोलते थे और उनकी नसीहत की भाषा बहुत ही उचित तथा स्पष्ट होती थी।

हज़रत शुऐब अपनी कौम के इस रवय्ये से चकित थे वह लोग हज़रत शुऐब को कमजोर जानते और समझते कि वह अकेले पड़ गये हैं। वह हमारे उपास्यों का विरोध कर रहे है, वह कहते कि यदि शुऐब उन के करीबी और खानदान के न होते तो वह उन को पत्थरों से मार मार कर मार डालते। हज़रत शुऐब को जब इस बात की जानकारी हुई तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि जो अल्लाह अजीज है कादिर है कवी है काहिर है वह इनके नजदीक उनके खानदान वालों से भी गया गुजरा है। यही सोच सबब होगी उनकी बीमारी हलाकत तथा निर्बलता एवं विवशता को कौम की इस बात को कुर्आन ने इस तरह बयान किया है।

कौम ने कहा : ऐ शुऐब जो कुछ तुम कहते हो उसका अधिकांश हम नहीं समझते हम तुम को अपने बीच कमजोर पाते हैं। अगर तुम्हारे खान्दान का लिहाज न

होता तो हम तुम को पत्थरों से मार मार कर मार डालते और तुम हम पर सरदार नहीं।

शुऐब अ0 ने कहा : ऐ मेरी कौम क्या मेरा खान्दान तुम को अल्लाह से अधिक प्रिय है और अल्लाह को तुमने पीठ पीछे डाल रखा है, तुम्हारे कुकर्मों को मेरा रब घेरे में लिये हुए हैं।

अंतिम तीर (आखरी तीर)

जब कौम की दलील कट गई तो कौम ने अन्तिम तीर चलाया जो हर उम्मत के घमण्डी लोग नबियों और उनके मानने वालों पर चलाते हैं। कौम के घमण्डियों ने कहा कि ऐ शुऐब हम तुम को और जो ईमान लाये उनको अपनी बस्ती से निकाल देंगे या फिर तुम हमारे साथ हो जाओ और हमारी मिल्लत में आ जाओ।

कतई दलील (अकाट्य तर्क)

उनका उत्तर अपने दीन पर गर्व के साथ था। अपने अकीदे (विश्वास) और अपने जमीर (अंतरात्मा) पर हिकमत के साथ शुऐब अ0 ने जवाब दिया कहा चाहे हम तुम्हारे मिल्लत को नापसन्द करते हों तब भी हम उस की जानिब लौटे? अगर हम तुम्हारी मिल्लत में लौट आए तो हम अल्लाह पर झूठ बांधने वाले होंगे जब कि अल्लाह ने हमको उससे छुटकारा दे रखा है ऐसा नहीं हो सकता कि हम तुम्हारे बातिल मजहब की तरफ लौटें, सिवा इसके कि हमारा रब ही चाहे हमारा रब

अपने इल्म से हर चीज को घेरे हुए हैं। हम अल्लाह पर भरोसा करते हैं ऐ हमारे रब हमारे और इस कौम के बीच फैसला कर दीजिये। आप अच्छा फैसला करने वाले हैं।

उन्होंने भी वही कहा जो उनके पहलों ने कहा था

शुऐब की बातों ने उनको कोई लाभ नहीं पहुँचाया। इस कौम के लोगों ने बीती भटकी कौमों की तरह जवाब दिया। उन लोगों ने कहा : वह कहने लगे कि तुम तो जादूगर हो, तुम तो हमारी तरह आदमी हो। हमें तो तुम झूठे नज़र आ रहे हो। कहा कि अच्छा तुम बड़े सत्यवादी हो तो हम पर आकाश का एक टुकड़ा ही गिराओ।

उम्मत का अनजाम (परिणाम) जिसने अपने नबी को झुठलाया

उन सब कौमों का नतीजा एक ही सा रहा है जिन्होंने अपने नबी को झुठलाया, अल्लाह की नेयमतों को झुठलाया तथा उनका इन्कार किया। पस मदयन वालों को भूचाल ने आ पकड़ा और वह अपन घरों में औंधें पड़े हुए थे जिन्होंने हज़रत शुएब को झुठलाया। वह बड़े ख़सारे (घाटे) में रहे।

हज़रत शुऐब ने पैगाम (संदेश) पहुँचाया और अमानत अदा की

सभी नबियों की तरह हज़रत शुऐब भी थे। उन्होंने

कौम को अल्लाह का पैगाम पहुँचा दिया और अमानत अदा कर दी और अपना कर्तव्य पूरा कर के हुज्जत काइम कर दी। हज़रत शुऐब ने कौम से कहा कि "ऐ कौम! मैंने तुम तक अपने रब का सन्देश पहुँचा दिया तुम्हें नसीहत भी की। फिर मैं काफिर कौम पर क्या रंज करूं।"

कहानी हज़रत दाऊद व हज़रत सुलैलमान की

जिन कौमों में अल्लाह ने नबी और पैगम्बर (दूत) भेजे तथा उन कौमों ने उनकी खिल्ली उड़ाई उनको झुठलाया कत्ल किया उनका अपमान और उनको जलील किया। इसके बदले उनको जो अजाब आया हलाकत व बरबादी हुई इसका कुरआन ने बड़ी तफसील से बयान किया है।

कुर्आन अल्लाह की निशानियों व नेयमतों को बताता है

बड़ी तफसील से कुर्आन ने अल्लाह की नेयमतों व उसकी निशानियों को बतलाया है कहीं संक्षेप में तो कहीं तफसील से उन नेयमतों का उल्लेख किया है जो अल्लाह ने अपने नबियों पर किया है उनमें विशेषकर हज़रत दाऊद व सुलैमान हैं इन्हीं में हजरत अय्यूब व यूनुस, जकरिया और हज़रत यह्या हैं।

हज़रत दाऊद व सुलैमान को जमीन पर मजबूत सलतनत दी। उनके राज्य को विस्तृत किया। उन को विस्तृत ज्ञान दिया उनको वह ज्ञान दिया (जानकारी दी)

जिसको लोग नहीं जानते थे। बलवानों तथा उददण्डों (जंड़ पदार्थों) को भी उन का वंशीकृत किया। अल्लाह फरमाता है और हमने ही दाऊद और सुलैमान को इल्म (ज्ञान) दिया। और दोनों ने कहा कि अल्लाह का शुक्र है जिसने हमको अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर बुजुर्गी (श्रेष्टता) दी और सुलैमान दाऊद के वारिस हुए और कहा कि "ऐ लोगो! हमको (अल्लाह की तरफ से) उड़ते पखेरुओं की बोली सिखाई गई है और हमको हर प्रकार के सामान मिले बेशक (अल्लाह की) यह खुली कृपा है।"

अल्लाह की नेयमतें दाऊद पर

हज़रत दाऊद के काबू में पहाड़ों व चिड़ियों को किया जो उनके साथ दुआ व तसबीह में शरीक रहती हैं हमने उनको दिरअ कवच बनाने की कला बताई और लोहा उनके लिय नर्म किया। और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बड़ाई दी (हमने हुक्म दिया) ऐ पहाड़ो और परिन्दो दाऊद के साथ (अल्लाह के) गुण गाओ। और दाऊद के लिय हमने लोहे को मुलायम किया और हुक्म दिया कि ए दाऊद पूरी–पूरी जिरह बकतर बनाओ और कड़ियों के जोड़ने में सहीह अन्दाजा रखो। और तुम सब भले काम करो। जो कुछ तुम करते हो मैं सब देखता हूँ और अल्लाह कहता है कि हज़रत दाऊद के अधीन पहाड़ों को कर दिया कि उनके साथ अल्लाह की तसबीह करते थे और हम ही (यह सब) करने वाले थे।

और दाऊद को हमने तुम लोगों के लिये एक पहनावा (यानी बकतर) बनाना सिखा दिया ताकि लड़ाई में तुम को बचाये तो क्या तुम (इस पर) शुक्र करते हो?

इन नेयमतों पर उनका शुक्र

इस फैले हुए राज–पाट तथा शक्तिशाली होने एवं ज्ञान तथा कला में निपुण होने के बावजूद वह अल्लाह से डरने वाले और उसके फरमाबरदार (आज्ञाकारी) बंदे थे। सदैव अल्लाह का जिक्र करते थे। देर तक अल्लाह से दुआ करते और उसकी तसबीह करते थे। लोगों के बीच न्याय करने वाले थे और सही निर्णय (फैसला) करते थे। अल्लाह फरमाता है कि :–

"ऐ दाऊद हमने तुम्हें जमीनपर ख़लीफा (नायब) बनाया है तुम लोगों के साथ सच के साथ फैसला करो अपनी इच्छा की बात न मानो वह तुम्हे अल्लाह के रास्ते से हटा देगी। वह लोग जो अल्लाह के रास्ते से भटक गये उनके लिये सख्त अजाब है इस लिये कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला रखा है।

अल्लाह की नेयमतें हज़रत सुलैमान पर

अल्लाह ने हज़रत सुलैमान के काबू मे हवाओं को किया जो उनकी आज्ञा पर चलती थीं और उनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर बहुत कम वक्त में पहुँचा देती थीं। हमने अनुभवी तथा बलवान जिनों और सरकश शैतानों को उनके काबू में किया था। जो उनके आदेशों

का पालन करते थे तथा उनकी योजनाओं को पूरा करते चाहे वह निर्माण से सम्बन्धित हो या आबादकारी से। इसको कुर्आन ने इस तरह बयान किया है :– और हमने तेज हवा को सुलैमान के काबू में किया कि वह उनके हुक्म (आदेश) से उस जमीन की तरफ चलती थी जिसमें हमने तरह–तरह की बरकतें दे रखी थीं। और हम सब चीजों के जानकार हैं। और कितने शैतानों (की जमाअत) को उनके अधीन किया जो सुलैमान के लिये गोते लगाते (ताकि समुद्र से जवाहरात इत्यादि निकाल लायें) और दूसरे कार्य भी करते थे। और हम ही उनको (इस फर्ज पर) थामे रहते थे। हमने सुलैमान के अधीन हवाओं को किया जिनका सवेरे आना एक माह और शाम को जाना एक माह के बराबर था हमने उनके लिये पिघले तांबे के चश्मे जारी किये। और जिन, जो उनका कार्य करते (अल्लाह की आज्ञा पर) और जो भी हमारे आदेश का उल्लंघन करेगा वह हमारे अजाब को चखेगा। वह सब वह करेंगे जो सुलैमान चाहेंगे बड़े बड़े भवन तस्वीरें बड़े प्याले और एक जगह पर रहने वाली बड़ी देग। ऐ दाऊद के परिवार तुम इन नेअमतों पर शुक्र करो। हमारे बन्दों में से बहुत कम हैं जो शुक्र करते हैं।

गहरा ज्ञान और गहरी सूझबूझ

एक झगड़े में जो उन के वालिद दाऊद के सामने पेश हुआ था सुलैमान अ० की बुद्धिमानी तथा झगड़े के निर्णय पर निपुणता (महारत) जाहिर हुई।

एक कौम का अंगूर का बाग था उसमें अंगूर के खोशे आ गये थे कि उसमें एक शख्स की बकरियाँ आ गई और बाग को बरबाद कर दिया। हज़रत दाऊद ने बकरियाँ बाग वाले को देने का फैसला किया। हज़रत सूलेमान ने हज़रत दाऊद से कहा ऐ अल्लाह के नबी इसके अतिरिक्त फैसला होना चाहिए। हज़रत दाऊद ने पूछा वह क्या है? हज़रत सुलैमान ने कहा कि बाग बकरियों वाले को दिया जाये वह उसको सिचाई कर के जैसा था वैसा कर दे और बकरिया बाग वाले को दे दी जायें वह उनसे लाभ उठाए जब बाग अपनी असली हालत में आ जाये तो बाग वाले को बाग दे दिया जाये और बकरियों वाले को उसकी बकरियाँ लौटा दी जये।

बुद्धिमानी तथा ज्ञान में सुलैमान अ० को विशेषता दी थी चुनांचि अल्लाह ने फ़रमाया "और दाऊद व सुलैमान जब कि वह एक खेती के बारे में जिसमें लोगों की बकरियों ने चर लिया था (और खेती को नुकसान पहंचा दिया था) फैसला करने लगे और हम उनके फैसले को देख रहे थे। हमने सुलैमान को इसकी समझ दी ओर हमने ही हिकमत और ज्ञान दोनों को दिया।

सुलैमान चरिन्द–परिन्द की जबान जानते थे।

कुरआन ने हज़रत सुलैमान की दानाई का किस्सा बयान किया है कि किस प्रकार उन्होने अपनी सूझबूझ व बुद्धिमानी से अपना राज–पाट चलाया। और कैसे

दीन व दुनिया की सआदत एक साथ अल्लाह ने उनके लिये जमा की। और किस तरह राज–पाट का चलाना और उसके साथ नबूव्वत तथा रिसालत दीन जमा रही। वह चरिन्द–परिन्द की जबान समझते थे। उनके लश्कर में जिन इन्सान तथा चरिन्द सब शामिल थे। एक बार उन सब के साथ बड़ी शान व शौकत से रवाना हुए, फौज पूरे नज़्म व जब्त के साथ थी। वह सब अपने सरदारों की कयादत में थे। इसी हाल में हज़रत सुलैमान का चीटियों की वादी से गुजर हुआ। एक चींटी अपने कबीले के लिये डरीं कि कहीं सुलैमान के घोड़े अपने टापों से हमें कुचल न दें और सुलैमान तथा उनके लश्कर को इसकी खबर भी न हो। उसने अपनी जमाअत को बिलों में जाने को कहा हज़रत सुलैमान उसकी बात समझ गये। इस पर हज़रत सुलैमान को घमण्ड नहीं हुआ इसलिये कि वह नबी थे बल्कि उन्होंने अल्लाह से अच्छे कर्म करने और अच्छों की राह चलने की दुआ माँगी।

हुद हुद का किस्सा

हुद हुद सुलैमान अ0 राइद और ऐन (फौज के आगे चलने वाला फौजी था) पानी की जगह आगे उड़ कर बताता था, सुलैमान अ0 ने उसको मौजूद न पाया, नागवारी हुई, हाज़िर होने पर सजा की धमकी दी? थोडे समय गायब रहने के बाद हुद हुद आया तो हज़रत

सुलैमान से उसने कहा कि मैंने वह देखा जिसे न आप ने देखा न आप के लश्कर ने। हुद हुद ने कहा कि मैं आपके पास सबा तथा उसके राज्य की सही सूचना लेकर आया हूँ। मलका सबा का मुलक बड़ा है और उसका राज—पाट बड़ा और फैला हुआ है। इस बुद्धि तथा ज्ञान और राज—पाट के साथ उसकी प्रजा बड़ी कम अक्ल और मूर्ख है वह अल्लाह की पूजा को छोड़कर सूरज को सज्दा करती है। और इस मूर्खता को समझ नहीं पा रही है अल्लाह जो एक है उसकी इबादत का रास्ता नहीं पा रही है।

मलका सबा को हज़रत सुलैमान ने दीन की दावत दी

हजरत सुलैमान को इस बात से तकलीफ पहुँची कि उनका पड़ोसी मुल्क और उसके बासी उनकी दावत से महरूम हैं। वह अल्लाह की इबादत के बजाय सूर्य की पूजा करते हैं। उनकी दीनी गैरत जोश में आई और उन्होंने सबा को पत्र लिखने तथा इस्लाम की दावत देने का फैसला किया। इसके पूर्व कि उसपर अपने लश्कर के साथ हमला करते। उस पत्र में इस्लाम की तबलीग तथा आज्ञापालन स्वीकार करने का नबियों की जबान में दावत थी। पत्र—लेख करूणा, दृढ़ता, तथा नबियों की नम्रता और राजाओं के आत्म सम्मान से परिपूर्ण था। कि सुलैमान अ० बादशाह भी थे और अल्लाह के नबी भी।

मलिका का अपने सभासदों से परामर्श

मलिका को राजपाट चलाने का अनुभव था। वह बुद्धिमान थी। वह अपने फैसलों में जल्दबाजी नहीं करती थी। उसके सामने जंगों में सफल बादशाहों का इतिहास था लेकिन उसकी बुद्धिमानी ने अल्लाह को समझने तथा उसकी पूजा करने में उसका साथ नहीं दिया। उसने राजाओं बादशाहों की हमीयत व गैरत से काम नहीं लिया। उस ने अपनी राय को आगे नहीं रखा। सबा ने हज़रत सुलैमान के पत्र पर गौर (विचार) करने के लिये सभासदों को बुलाया। उसने उन लोगों से कहा कि यह पत्र साधारण नहीं है। यह पत्र अपने समय के एक बड़े बादशाह का है। यह पत्र अल्लाह की ओर बुलाने वाले अल्लाह के नबी की ओर से आया है।

जब सभासदों ने मलिका को खुश करते हुए अपनी शक्ति तथा सेना की अधिकता की बात कि वैसे ही जैसे बादशाहों तथा शासको के सभासद हर काल तथा हर राज्य में करते आए हैं तो मलिका ने उन की बातों को स्वीकार न किया उन की बातों से सहमत न हुई उसने टकराव के बुरे अन्जाम से डराया और विजयी राजाओं के स्वभाव से अवगत कराया और हारी कौम का अन्जाम बताया और कहा यही हाल होगा हमारे मुल्क की प्रजा का उसने अपने सभासदों से कहा कि मैं कुछ उपहार भेजूंगी ताकि उनकी परीक्षा ली जा सके। यदि वह उपहार स्वीकार कर लेते हैं तो वह बादशाह हैं

उनसे जंग की जायेगी और यदि उन्होंने उपहार अस्वीकार न किये तो फिर वह नबी हैं। उनकी बात मानो और उनकी पैरवी करो। (अनुसरणकर्ता बन जाओ)।

कीमती उपहार

एक अजीम व बड़ा शानदार जो राजाओं के लायक उपहार हो सकता था हज़रत सुलैमान को सबा ने भेजा। जब हज़रत सुलैमान को उपहार पहुँचा तो उन्होंने उससे मुंह फेर लिया और कहा कि उपहार भेजकर मुझसे भाव–ताव कर रही है कि मैं उसके देश (राष्ट्र) को शिर्क करने के लिये छोड़ दूं। अल्लाह ने मुझ दौलत, राष्ट्र तथा लश्कर उनसे अच्छा और अधिक दिया है। यह मामला संजीदा (गंभीर) है, हंसी मजाक नहीं है। बात इताअत और दावत की है। इसमें लेन–देन का कोई प्रश्न नहीं है न मानने पर उन पर आक्रमण की धमकी दी।

मलिका का ताबेदारी के साथ आना

जब यह पैगाम मलिका को पहुँचा और उसको स्थिति बताई गई तो उसने और उसकी कौम ने बात सुनी और अधीनता स्वीकार की। उसने अपने लश्कर के साथ फरमांबरदारी कबूल करते हुए सुलैमान की जानिब रवाना हुई। जब हज़रत सुलैमान को ख़बर हुई कि वह आ रही है तो प्रसन्न हुए इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा किया और चाहा कि अल्लाह की एक कोई निशानी

उसको दिखायें। ताकि वह अल्लाह की कुदरत व ताकत तथा उसकी बखशिशों का सुबूत (प्रमाण) हो जो उसने हज़रत सुलैमान पर किया। हज़रत सुलैमान ने उसका तख़्त (सिंहासन) मंगवाने का इरादा किया। यह ऐसा तख़्त था जिसकी बलवान तथा भरोसे के लोग सुरक्षा कर रहे थे। हज़रत सुलैमान ने अपनी जमाअत के सरदारों को बुलाया और उनको सबा के तख़्त को उसके और उसके लश्कर के पहुँचने से पहले लाने को कहा शीघ्र ही वह तख़्त आ गया और यह उनका मुअजिज़ा था। हज़रत सुलैमान ने तख़्त में कुछ तबदीली करा दी वह यह देखें कि सबा अपने तख़्त को आने के बाद पहचानती भी है कि नहीं। यदि वह उसको पहचान लेती है तो यह बात साबित करेगी कि उसकी नज़र मामलात में गहरी है वरना उसमें उससे अधिक मुशकिल मुआमलात में फैसला करने की क्षमता कम है।

शीशों का एक बड़ा महल

हज़रत सुलैमान ने आदमी तथा जिन्नात मेयमारों (राजगीरो) को एक शीशे का बड़ा महल निर्माण करने को कहा जिसके नीचे पानी बह रहा हो जब कि चलने की राह तथा पानी के बीच शीश था। मलिका को यह गुमान होगा कि यह पानी है और जब व उस पर चले तो कपड़े भीगने के डर से पिण्डलियों तक उठा ले। यही उसकी गलती होगी। और उसकी आँखों को धोखा होगा जाहिरी चीजों के देखने में वह और उसकी कौम

सूरज की पूजा केवल इसी लिये तो करती हैं कि सूरज नूर और हयात का बहुत बड़ा मजहर है। हालांकि यह अल्लाह की एक निशानी है। उस समय उसको सच्चाई का ज्ञान होगा और आँख से परदा उठेगा और वह जान लेगी कि शीशे और पानी के मामले में उससे कितनी बड़ी गलती हुई है और उसने कितना बड़ा धोखा खाया है। और ऐसा ही हुआ। उसने पानी समझकर पिण्डलियाँ खोली। उसने ऐसी ही गलती की है सूरज को खालिक बनाने में। इसीलिये वह अल्लाह की इबादत की जगह सूरज की पूजा करती थी। उसको यदि सौ बार समझाया जाता और हजार दलीले दी जाती तो शायद समझ में नहीं आता लेकिन इस तदबीर से वह आसानी से अपनी गलती को समझ गई।

सुलैमान के जरिये सबा का अल्लाह पर ईमान लाना

शीशे को उसने बहता पानी समझा और अपनी पिण्डलियों तक कपड़ों के भीगने के डर से कपड़े उठा लिये। और पानी समझ कर उसपर चलने लगी। सच्चाई के पता चलते ही उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। इस गलती ने उसकी जिहानत चेतुरता तथा बुद्धिमानी को चौपट कर दिया। हजरत सुलैमान ने सबा को उसकी गलती का एहसास दिलाया और उन्होंने सबा से कहा कि यह महल तो शीशे का है। इसको इसकी हक़ीक़त और अपनी मूर्खता का पता चला। और उसकी समझ में आया कि इसी तरह सूरज की उपासना में भी मैं गलती पर हूँ और बोल पड़ी "ऐ अल्लाह मैंने अपनी

आत्मा पर बड़ा जुल्म किया। मैं सुलैमान के साथ अर्थात उनके तरीके पर अल्लाह पर ईमान लाती हूँ जो तमाम जगत का पालनहार है।

कुरआन हज़रत सुलैमान का किस्सा बयान करता है।

इस दिलचस्प कहानी को कुर्आन में पढ़ो– अल्लाह फरमाता है कि "एक चिड़िया गायब हो गई। हज़रत सुलैमान ने कहा कि हुद हुद नज़र नहीं आ रहा है। वह कहाँ गायब हो गया उसके गायब होने पर मैं उसको सख्त सजा दूँगा या फिर मैं उसको जिबह कर दूँगा। या फिर वह अपने गायब होने का ठोस कारण बताये। थोड़ी देर बाद वह आ गया और बोला कि मैं सबा की सच्ची ठोस सूचना लेकर आया हूँ। मैंने उस औरत को राज करते पाया। उसका एक बड़ा शानदार तख्त है और उसके पास सब कुछ है। परन्तु मैंने उसको और उसकी कौम को सूरज की पूजा करते पाया है शैतान ने उनके गलत कामों को उनके सामने बड़ा अच्छा कर के रखा है। उनको सही रास्ते से हटा दिया है वह सही रास्ते पर नहीं हैं। वह अल्लाह की पूजा नहीं करते जो आकाश और धरती की छुपी हुई चीजों को जाहिर करता है। (आकाश से वर्षा का होना और धरती से चीजों का उगना) वह हर चीज का जानकार है जिसको तुम छिपाते और जाहिर करते हो। अल्लाह के अलावा कोई भगवान नहीं और वह मालिक है अर्शे अजीम का सुलैमान ने कहा कि मैं देखूंगा कि तुमने यह झूठ कहा है कि सच। अच्छा तुम मेरे पत्र को लेकर उसके पास जाओ और उसके सामने डाल दो

फिर जरा हट जाओ और देखो वह क्या मशवरा करती है। वह क्या जवाब देती है। पत्र पाकर सबा ने अपने दरबारियों से कहा "मुझे एक महत्त्वपूर्ण पत्र मिला है। वह सुलैमान की ओर से है। वह अल्लाह के नाम से शुरू है (उसमें है कि बहुत बड़ाई मत दिखाओ और मेरे पास आज्ञापालक होकर आ जाओ) ऐ दरबारियो मुझे इस मामले में परामर्श दो। मैंने अभी कोई कतअई फैसला नहीं किया है। तुम इस बारे में क्या कहते हो?" उन्होंने कहा हम बलवान हैं। फैसला तो आप को करना है। जैसा आप अच्छा समझें। सबा ने कहा कि देखो कोई बादशाह जब किसी बस्ती में विजयी हो कर आता है तो उसको बरबाद कर देता है। वहाँ के इज्ज़तदार लोगों का अपमान करता है। और यह भी ऐसा ही करेंगे। मैं उनको अपनी तरफ से उपहार भेजती हूँ देखें कि वह क्या जवाब देते हैं? जब दूत सुलैमान के पास उपहार लेकर आया तो हज़रत सुलैमान ने कहा कि क्या मेरे माल (धन) को बढ़ाना चाहती है। हालांकि अल्लाह ने जो मुझे दिया है वह उससे अच्छा है जो उन्होंने भेजा है। तुम अपने उपहार पर इतराते हो। इसे वापस ले जाओ, हम लश्कर सहित आयेंगे और उन को जिल्लत के साथ निकाल बाहर करेगे। हज़रत सुलैमान ने अपने दरबारियों से कहा कि उसके आज्ञापालक होकर आने से पहले उसका तख़्त कौन ला सकता है।" एक जबरदस्त जिन्न ने कहा कि मैं उस तख्त को आप के उठने से पहले ला सकता हूँ मैं इस पर पूरी कुदरत (ताकत) रखता हूँ और अमानतदार हूँ

एक दूसरे ने जिसको किताब की एक विशेष जानकारी थी बोला कि मैं उसको पलक झपकते ही ला सकता हूँ। पस जब सुलैमान ने तख्त अपने सामने रखा देखा तो हज़रत सुलैमान ने कहा कि यह अल्लाह की कृपा है। वह मुझे आजमाता है कि मैं इन कृपाओं पर शुक्र अदा करता हूँ या उसकी ना शुक्री करता हूँ। जो अल्लाह का शुक्र अदा करता है वह अपने लिये शुक्र करता है और जा नाशुक्री करता है तो मेरा मालिक गनी और करीम है।

हज़रत सुलैमान ने कहा कि इस तख्त में तबदीली कर दो हम देखेंगे कि वह इसको पहचानती है या नहीं। जब सबा आई तो उससे पूछा कि तुम्हारा तख्त ऐसा ही है? उसने कहा कि गोया ऐसा ही है हमें आप के हक पर होने की जानकारी पूर्व हो गई थी और हम आज्ञापालक हैं। वह अल्लाह के अलावा की पूजा जो कर रही थी। उसने उसको ईमान लाने से रोक रखा था क्योंकि वह काफिर की कौम में से थी। वह जब आई तो उससे महल में प्रवेश को कहा। जब उसने देखा तो उसको पानी का हौज समझा और अपनी पिण्डलियों को खोल दिया। हज़रत सुलैमान ने कहा कि यह तो महल है जिसमें शीशे जड़े हैं। सबा ने कहा कि मैंने अपनी आत्मा पर बड़ा जुल्म किया है। मैं सुलैमान के साथ होकर (उनके तरीके पर) अल्लाह पर इस्लाम लाई जो तमाम जगत का पालनहार है।

यह अल्लाह के नबी सुलैमान हैं जिनका दृढ़ नियम तुमने देखा अल्लाह की ओर दावत में और उसकी वहदानियत में और उनकी दानाई उनकी समझने की शक्ति तथा दीन व अकीदे के विषय में उन की गैरत।

हज़रत सुलैमान अ० ने नाशुक्री नहीं की लेकिन शैतानों ने नाशुक्री की

यहूद ने एकेश्वरवादी ईमान वालों के लिये, जिनके दिल अल्लाह ने ईमान के लिये खोल रखे थे। ना मुनासिब बातें उनकी तरफ मनसूब कर रखी हैं। यहाँ तक कि अल्लाह के भेजे हुए नबी जिनको अल्लाह ने दानाई दी, नबुव्वत से इज़्ज़त दी हुकूमत और नियाबत अता फरमाई उनको जादूगर कहा उनकी ओर कुफ्र मन्सूब किया शिर्क के मामले में आलस्य (मुदाहनत) का आरोप लगाया और तौहीद के विषय में उनकी बीवियों के कारण उनको खराबी पैदा करने वाला बताया। अल्लाह ने उनके इससे बरी (पाक) किया और कहा कि :–

"सुलैमान ने कुफ्र नहीं किया बल्कि शैतानों ने कुफ्र किया जो जादू लोगों को सिखाते थे।"

और अल्लाह ने कहा कि :–

"हमने दाऊद को सुलैमान जैसा बेटा दिया। वह बहुत अच्छा और तौबा करने वाला बन्दा है।"

अल्लाह ने फरमाया कि :–

"वह हमारे बहुत करीब है और उसका अन्जाम अच्छा है।"

हज़रत अय्यूब व हज़रत यूनुस की कहानी पहले हज़रत अय्यूब का किस्सा

हज़रत अय्यूब का किस्सा किस्सों में दूसरा ही रूप रखता है।

हज़रत अय्यूब का किस्सा कुर्आनी कहानियों में से एक अलग कहानी है यह कहानी अल्लाह की उन नेयमतों को बताती है जो अल्लाह ने अपने मोमनीन, सब्र करने वाले तथा शुक्र (धन्यवाद) करने वाले बन्दों और अपने प्रिय नबियों पर की है। उनके पास जानवर व चौपाए तथा खेती बाड़ी और बहुत सी चीजें (वस्तुएं) थीं और पसंदीदा संतान थी। उनकी आजमाईश (परीक्षा) हर चीज में हुई और हर चीज उन से ले ली गई, फिर अजमाइश हुई। उनके बदन में यहाँ तक कि उन के बदन का कोई अंग सुरक्षित न रहा सिवाए जबान और दिल के जो

अल्लाह के जिक्र (बयान) में मशगूल (व्यस्त) रहते थे। इस कारण उनके साथियों ने उनका साथ छोड़ दिया और वह शहर के एक किनारे बिल्कुल तनहा रह गये लोगों में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं था जो उनसे हमदर्दी करता। केवल उनकी पत्नी थी जो उनकी बात मानती थी। वह उनकी सेवा के खर्च के लिये लोगों की सेवा करती थी।

हज़रत अय्यूब का सब्र

वह इस सब के बावजूद सब्र व शुक्र करने वाले थे। उनकी जबान अल्लाह के शुक्र में मशगूल रहती थी। उन्होंने अपनी बीमारी पर न तो किसी से शिकायत की और न कभी झुंझलाये न कभी वह गुस्सा हुए उन्होंने इस हालत में एक लम्बा समय गुजार दिया। बनी इस्राईल के कूड़े पर पड़े रहने से उनके जिस्म में कीड़े पड़ गये।

इम्तिहान (परीक्षा) और इनाम

अल्लाह ने जब तक उनकी परीक्षा चाही ली और वह जब अपने इम्तिहान में सफल हो गये तो अल्लाह ने उनके दरजात बुलन्द (ऊँचे) किये और अल्लाह ने अपनी पसंदीदगी का फैसला उनके लिये फरमाया। उनके दिल में कुबूल होने वाली दुआ डाली जिसे आजिजी इनकिसारी (नम्रता, सच्ची लगन) टपकती है और जिससे यह एहसास हो कि अल्लाह के अलावा कहीं पनाह (सुरक्षा) नहीं है

और अल्लाह ही हर चीज पर कादिर (सामर्थ्य) है। अल्लाह ने उनको सेहत दी और उनके घर वालों को और उनकी हर चीज में बरकत दी और उसमें इजाफा (बढ़ोत्री) कर के कई गुना कर दिया। अल्लाह फरमाता है :–

"और अय्यूब ने जब अपने रब (भगवान) को पुकारा और कहा कि मुझे कष्ट पहुँचा है और तू बड़ा रहम करने वाला है। हमने उनकी दुआ स्वीकार की और उनको जो कष्ट पहुँचा दूर किया और हमने उनका परिवार लौटा दिया, और उन जैसे उनके साथ अपनी रहमत से और दिये उनको नवाजा। ताकि यादगार हो इबादत (पूजा) करने वालों के लिये।"

हज़रत यूनुस और उनकी दानाई

हजरत अय्यूब के किस्से से जुड़ा हज़रत युनूस का किस्सा है जो इस बात की ताईद (पुष्टि) करता है कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है वह अपने बन्दों पर बड़ा शफीक व मेहरबान है जब उम्मीद (आशा) टूट जाती है आशा निराशा में बदल जाती है हर दिशा अंधकार ही सब रास्ते बन्द न रौशनी न हवा न उम्मीद न तवक्कुअ और मौत की चक्की तेजी से चलती है जिसमें जिन्दगी का दाना पीसकर बारीक आटा बन जाता है वहाँ अल्लाह की कुदरत नज़र आती है तब अल्लाह की रहमत और उसकी दानाई का पता चलता है। उस समय यही कमजोर इन्सान (मनुष्य) खूंख्वार शेर के मूंह से और मौत

के चंगुल से ऐसा सही सलामत और सुरक्षित निकलता है जैसे वह अपने परिवार के साथ अपने घर के बिस्तर पर अपने घर वालों के बीच महफूज (सूरक्षित) था।

यूनुस अ० अपनी कौम के बीच में

यह हज़रत यूनुस की कहानी है। अल्लाह ने उन्हें नेनवा बस्ती में नबी बनाकर भेजा था। उन्होंने अपनी कौम को अल्लाह की तरफ बुलाया लेकिन कौम ने उनकी दावत को अस्वीकार किया और नाफरमानी (कुफ्र) पर डटी रही इस बात पर वह नाराज होकर उनके बीच से चले गये और तीन दिन बाद अजाब आने की उनको सूचना दी कौम ने जब यह जान लिया कि नबी झूठ नहीं बोलता वह जो बताता है वह सत्य होता है। तो कौम भी अपने बच्चो जानवरों सहित जंगल की तरफ निकल पड़े। अपने माता–पिता और अपने परिवार से अलग होकर अल्लाह से गिड़गिड़ा कर दुआ करने और फरयाद करने लगे। ऊँट अपने बच्चों के साथ बल ग्लाये, गायें अपने बछड़ों के साथ बम्बाई और बकरियाँ अपने बच्चों के साथ मिम्याई तो अल्लाह की रहमत जोश में आई और अजाब उनसे टल गया। अल्लाह फरमाता है :–'कोई बस्ती ऐसी नहीं गुजरी कि अजाब दिखाई देने पर ईमान लाती और उसका ईमान को लाभ देता केवल यूनुस अ० की कौम और बसती वाले ऐसे मौके पर ईमान लाये तो हमने बदतरीन अजाब उनसे हटा दिया और दुनिया की जिन्दगी

में एक समय तक लाभ उठाने के लिये उनको छोड़ दिया।"

यूनुस मछली के पेट में

जब यूनुस अ0 वहाँ से चले गये और एक कौम के साथ कश्ती में सवार हुए तो कश्ती किसी ऊँची जमीन से लग गई। कौम को अपने डूबने का डर लगा। उन्होंने अपने में से एक आदमी को समुद्र में डालने के लिये कुरा (परची) डाला। यह काम वह शीघ्र करना चाहते थे। कुरा यूनुस अ0 के नाम निकला लेकिन कौम ने उनको समुद्र में डालने से इन्कार किया। दोबारा फिर कुरा डाला। इस बार भी यूनुस के नाम ही का कुरा निकला। फिर उनको डालने से इन्कार किया। तीसरी बार जब कुरा डाला तो फिर उन्हीं का नाम निकला। अल्लाह फरमाता है :–

"उन्होंने कुरा डाला तो यूनुस अ0 के नाम कुरा निकला, यूनुस खड़े हुए और कपड़े उतार समुद्र में कूद गये अल्लाह ने एक मछली को भेजा जो समुद्र को चीरती फाड़ती उन तक पहुँची और उनको निगल गई अल्लाह ने मछली को उनका गोश्त न खाने उनकी हड्डियों को न तोड़ने के आदेश दिये।"

अल्लाह ने यूनुस की दुआ कुबूल की।

वह मछली के पेट की तारीकी में थे उस तारीकी के साथ समुद्र का अंधकार और रात की तारीकी थी। घटाटोप अंधेरा था। तारीकी और बढ़ती गई। अल्लाह ने जितने समय उनको मछली के पेट में रखना चाहा उनको

रखा। अल्लाह ने हज़रत यूनुस पर इलहाम किया ऐसा शब्द अदा करने को जिससे तारीकी घट जाये और कष्ट दूर हो जाये और सातों आकाश के ऊपर से रहमत (अल्लाह की कृपा) उन पर उतरे कुर्आन को सुनो जो इस अजीब व गरीब कहानी को बयान करता है जिसमें तसल्ली (इतमिनान) है हर निराशाजनक मजलूम (उत्पीड़ित) के लिये है। आशा है ना उम्मीद और परेशान हाल के लिये जिस पर जमीन (धरती) कुशादगी के बावजूद उस पर तंग हो और उस पर जिन्दगी तंग हो गई हो। उसने अपनी आँखों से देख लिया हो कि अल्लाह को छोड़कर कहीं पनाह नहीं मिल सकती। और मछली वाले जब वह गुस्से में चले गये और उनको यह गुमान (आशंका) हुआ कि हम उन पर कुदरत नहीं रखते (फिर वह मछली के पेट में पहुँच गये) तब उन्होंने अंधकार में मुझको पुकारा कि कोई माबूद (पूजा के योग्य) नहीं सिवा आप के आप पाक हैं। मैं तो जुल्म (अत्याचार) करने वाले में से हो गया। तो हमने उनकी दुआ कुबूल की और हमने उनको ग़म (दुःख) से नजात (छुटकारा) दी। हम इसी तरह ईमान वालों को छूटकारा देते हैं।"

हज़रत ज़करिया की कहानी

जकरिया अ० की दुआ नेक बेटे के लिये

अल्लाह ने अपने महबूब बन्दों पर जो निअमतें और

अपनी कुदरत की निशानियाँ दिखाईं इन सब में हज़रत जकरिया अ० पर ईनआम की अलग ही किस्म है। जकरीया अ० ने नेक, फरमांबरदार तकवे वाले बेटे की दुआ की जो उनका और आले आकूब का वारिस बने। जो दअवत इलल्लाहि का काम करे।

यह उस समय की बात है जब वह बहुत बूढ़े हो गये थे। हड्डियाँ कमजोर हो गई थीं जवानी ढल चुकी थी। और वह उस अवस्था को पहुँच गये थे जिसमें मनुष्य और स्त्री की संतान होने की आशा समाप्त हो जाती है इस हालत में अल्लाह ने उनकी दुआ स्वीकार की। उन सब लोगों का यह सोचना था कि इस अवस्था में संतान का होना असम्भव है। अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल करके सब के मुंह बन्द कर दिये और यह साबित किया कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है अल्लाह ने उनको एक नेक बेटा (पुत्र) दिया अल्लाह ने जल्दी की उनको बुद्धिमान, समझदार, तथा संजीदा बनाने में और उनको बचपन ही में किताब दी और उनको नर्म दिल नेक मुत्तकी, वालिदैन का फरमाबरदार मुतवाज़ि और मुनकसिरूल मिजाज (विनीत) बनाया। बचपन ही से नर्म दिल, सुलहों, शान्ति, अल्लाह से डरने वाला लोगों के साथ अच्छा व्यवहार उसकी विशेषता बन गई अल्लाह ने हज़रत जकरिया का दिल मजबूत किया और उनकी इस अवस्था और निराशा में उनको सन्तान देकर अपनी कुदरत और निशानी

दिखलाई। और बताया कि अल्लाह सब चीज पर कादिर है और वह जो चाहे कर सकता ह। मनुष्य के शरीर (जिस्म) उसके अंग–अंग पर उसका क़ब्जा है। वह जिस अंग को हरकत देना चाहे दे और जिसको रोकना चाहे रोक दे। यह वास्तविकता है। वह जिन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दों को जिन्दा से निकालता है।वही जिसको चाहे बे हिसाब रिजक देता। वही मारता है और जिलाता है और वही जगत का पालनहार है।

इमरान की औरत की मन्नत

इमरान की औरत ने यह मन्नत मानी (यह हज़रत जकरिया के परिवार में से थी नेक और इबादत गुजार थीं, उसको अल्लाह और उसके दीन से मुहब्बत थी) कि यदि उसने लड़का जना तो उस लड़के को अल्लाह और उसके दीन की सेवा के लिये वक्फ कर देगी। उसने अल्लाह से उसको स्वीकार करनेकी दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! "वह दीन का लाभ पहंचाने वाला हो अल्लाह के दीन की तरफ लोगों को बुलाये और उसका कार्य करे। और वह इमाम हो दीन की रहनुमाई करने वाले इमामों में से।

उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह मैं ने तो लड़की जनी

अल्लाह की उस नेक बन्दी ने क्या चाहा और अल्लाह ने कुछ और चाहा। अल्लाह अपने बन्दों की मसलेहत (मक़सद) अच्छी तरह जानता है। लड़की के जन्म पर उसको बड़ा रंज और अफसोस हुआ और दिल टूट गया।

हालांकि यह लड़की साधारण लडक्रियों की तरह नहीं थी। उस में अल्लाह की इबादत के लिये बड़ी ताकत थी और नेकी के कामों में बहुत से जवानो से जियादा हिम्मत वाली थी। अल्लाह ने यही मुकद्दर किया (जिसकी मसलहत से वह खुद वाकिफ थी) कि लड़की पैदा हो नुबुव्वत तो अपनी जिम्मेदारियों के लिहाज से केवल मर्दों को मिलती है, परन्तु अल्लाह ने यह मुकद्दर कर दिया था कि वह एक नबी की माँ बनें जिन की एक शान हो। कुर्आन मजीद बयान करता है :–

जब इमरान की औरत ने कहा कि "ऐ मेरे परवरदिगार मेरे पेट में जो बच्चा है उसको दुनिया के कामों से आजाद करके तेरी भेंट करती हूँ। तू उसको मेरी तरफ से स्वीकार कर ले। तू सब कुछ सुनने और जानने वाला है। फिर जब उन्होंने बेटी को जन्म दिया तो कहने लगी कि ऐ मेरे परवरदिगार मैंने तो लड़की को जन्म दिया है। अल्लाह जानता था कि उन्होंने बेटी को जन्म दिया है। और लड़की लड़के की तरह नहीं हो सकती। मैंने इस का नाम मरियम रखा है। मै इसको और इसकी औलाद को शैतान से दूर रखने के लिये इस को तेरी पनाह (शरण) में देती हूँ।

अल्लाह की मेहरबानी लड़की के साथ

वह हज़रत जकरिया की किफालत में थीं करीबी रिश्ते के सबब अल्लाह की हिफ़ाज़त तथा इन्तेजाम में

थीं। अल्लाह ने उनके लिये गैर मौसम में देश विदेश के फल उपलब्ध कराये। इससे उनका आदर किया और उनसे कहा कि इसमें से जितना चाहे खाये और जितना चाहे दूसरे को दे। कुर्आन कहता है :–

उनके परवरदिगार ने हज़रत मरियम को स्वीकार किया और उनकी अच्छी तन्दुरुस्ती दी और किफालत की हज़रत जकरिया ने वह जब मरियम के पास मेहराब में आते तो उनके पास खाना पाते। हज़रत जकरिया ने मरियम से पूछा कि यह खाना तुम्हारे पास कहाँ से आता है। हज़रत मरियम कहतीं कि यह खाना अल्लाह की तरफ से मिलता है। अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रिज्क देता है।

अल्लाह की तरफ से उनको इलहाम

अल्लाह ने जकरिया पर वह्य भेजी (हज़रत जकरिया नबियों में से एक बुद्धिमान और जहीन नबी थे) कि जब अल्लाह इस पर कादिर है कि वह एक लड़की को इज़्ज़त (आदर) और सम्मान दे। अल्लाह ने उनकी माता की मिन्नत तथा दुआ के लिये मरियम को चुन लिया। अल्लाह ने मरियम के लिये ऐसे फलों का इन्तेजाम किया जो समय से पहले या मौसम के बाद नहीं मिलते यह उसकी कुदरत औरनियंत्रण का प्रमाण है। वह अल्लाह इस पर भी कादिर है कि ऐसे बूढ़े को संतान दे दे जिसकी ताकत समाप्त हो चुकी हो। बुढ़ापे के कारण संतान होने की

आशा खत्म हो चुकी हो। उसकी पत्नी भी बच्चा पैदा करने की सलाहियत (ताकत) खो चुकी हो (यानी बांझ हो) और अल्लाह का नियम है कि इस अवस्था पर पहुँच जाने के बाद मर्दों की संतान पैदा करने की सलाहियत खत्म हो जाती है। लेकिन इस अवस्था में अल्लाह औलाद दे तो यह उसकी कुदरत तथा हर चीज पर उसके नियंत्रण का प्रमाण है।

उनकी आत्मा में जोश आया उनकी हिम्मत बढ़ी, उनकी आशा ने सर उठाया और अल्लाह पर आत्म विश्वास पैदा हुआ और अल्लाह से बड़ी गिड़गिड़ा कर व आजिजी से संतान के लिये दुआ मांगी और फरिशतें ने उस पर आमीन कही। जिससे अल्लाह की रहमत जोश में आई। यह सब कुछ अल्लाह की तरफ से हुआ अल्लाह ने उनके लिये मुकद्दर कर दिया था। अल्लाह बड़ा बलवान तथा हर चीज का जानकार है। कुर्आन कहता है :– "जकरिया ने दुआ की और कहा : मेरे रब अपनी रहमत से अच्छी औलाद दे आप दुआओं के सुनने वाले हैं।

पुत्र की खुशखबरी

अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल की और उनको निकट जिन्दगी में नेक लड़के के होने की खुशखबरी दी। इन्सान की पैदाइश मिट्टी से हुई। और वह बड़ा जल्दबाज है। जकरिया ने इस अदभुत घटना के घटने और बच्चे का पैदाइश का समय करीब होने की निशानी चाही। और

कहा "ऐ रब (परवरदिगार) मेरे लिये कोई निशानी बना दे।"

अल्लाह ने फरमाया :-

निशानी यह है कि तीन दिन तक तुम किसी से बात न कर सकोगे सिवाए इशारे के। और तुम अपने रब का रात दिन जिक्र करो और उसकी तसबीह बयान करो।"

जो अल्लाह इस पर कादिर है कि वह चीजों (वस्तुओं की खासियत समाप्त कर दे वह इस पर भी कादिर है बोलने वाली जबान को गूंगा कर दे कि एक शब्द जबान से कहने की उसमें क्षमता न हो वही अल्लाह इस पर भी कुदरत रखता है कि अपने बन्दों में से जिसको जो चाहे दे और जिससे जो चाहे ले ले।

अल्लाह की निशानियाँ और उसकी कुदरत (शक्ति)

अल्लाह की निशानियाँ और उसकी शक्ति उनके जिस्म में फिर उनके घर और फिर उनके परिवार में जाहिर (प्रकट) हुई। हज़रत यहया का जन्म हुआ। उनके जन्म से हज़रत जकरिया की आंखों को ठंडक पहुँची उनसे उनको शक्ति मिली, उनकी दावत में जान पड़ गई, कुर्आन को सुनो जो इस कहानी को कभी तफसील से तो कभी संक्षिप्त में बताता है कुर्आन कहता है कि :-

"और जकरिया जब उन्होंने अपने खुदा (भगवान) से दुआ की ऐ मेरे अल्लाह मुझे तन्हा न छोड़ना तू ही अच्छा वारिस है हमने उनकी दुआ कुबूल की और उनको (यहया) बेटा दिया और हमने उनके लिये उनकी पत्नी

को आलंद के लिये ठीक किया। वह भलाई के कामों (पुण्य इत्यादि) में बढ़ चढ़ कर भाग लेते और हमसे बड़ी लगन से दुआ करते। वह हमसे डरने वाले थे।"

हज़रत यहया में दावत देने की ताकत (शक्ति)

हज़रत यहया का जन्म हुआ और वह अपने माता–पिता की आंखों की ठंडक बने और अपने महान पिता के जानशीन बने। वह दअवत इलल्लाह की ताकत रखते थे। बचपन ही से उन में शराफत के आसार नुमायाँ थे, वह ज्ञान प्राप्त को ओर बढ़े जब क वह अभी बच्चे ही थे, उन में नेकी और तकवा पैदा हो चुका था जब कि अभी वह अपने हम उम्रों से आगे थे, इस विषय में उन की ओर इशारा किया जाता। अल्लाह उनको सम्बोधित करते हुए फरमाता है :–

"ऐ यहया किताब को खूब मजबूती से पकड़ लो (पालन करो)। और हमने उनको लड़कपन ही में (दीन की) समझ दी और अपनी तरफ से उनकी शफकत (अनुकम्पा) और पवित्रता दी और वह परहेजगार था और वह अपने माँ बाप के साथ नेकी करने वाला था वह सरकशी करने वाला नाफरमान (अवज्ञाकारी) न था। और सलाम है उस पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन वफात पायेगा और जिस दिन (दोबारा) जिन्दा उठाया जायेगा।

हज़रत ईसा बिन मरियम की कहानी

आदत व रीति के खिलाफ़ (विपरीत) कहानी है।

हज़रत ईसा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूर्व आख़री नबी हैं। इन की कहानी में अल्लाह की इच्छा तथा अल्लाह की कुदरत जाहिर हाती है। उनका जन्म इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है और हर चीज उस के क़ब्ज़े में है। हज़रत ईसा का पूर्ण मामला आदत तथा रीतियों के खिलाफ है। उनका जन्म तथा उनकी कहानी अचम्भे में डालती है और जो तबई (प्राकृतिक) नियम है उनको रद्द करती है। जिनको नियम व तबई आदतों पर यकीन व भरोसा है उनके विश्वास को हज़रत ईसा के जन्म तथा जिन्दगी को मान लेने में कठिनाई आती है। वह यह समझते हैं कि जो रीत चली आई है कि माता–पिता के बिना किसी का जन्म असम्भव है इस रीत में किसी प्रकार का परिवर्तन

नामुमकिन है। वह यह नहीं मानते कि हर चीज अल्लाह के नियंत्रण में हैं। और वह हर बात पर कादिर है।

अल्लाह जब किसी चीज के करने का इरादा कर ले तो उसके इरादे के पूरा होने में कोई चीज रूकावट नहीं बनती और कोई चीज उसके इरादे को पूरा करने में बाधा नहीं डालती वह जब किसी बात के करने का इरादा करता है तो कहता है कि हो जा तो वह चीज तुरन्त हो जाती है।

उस शख्स पर ईसा के जन्म पर विश्वास सरल हो जाता है जो यह जानते हैं कि अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखता है। उस में इरादे की सिफत है, वह है। वह जन्मदाता है, कुर्आन कहता है : "वह अल्लाह है, खालिक है, वह ठीक ठाक बनाने वाला है वह अच्छी सूरत का बनाने वाला है और उस के अच्छे–अच्छे नाम हैं। आकाश और धरती पर जो कुछ भी है उसकी माला जपती है। अल्लाह बड़ा शक्तिशाली और बलवान है।

उन पर भी ईसा के अदभुत जन्म को मान लेना सरल है। जो इस बात पर विश्वास रखते हैं। कि अल्लाह ने आदम को मिट्टी और पानी से तथा बिना माता–पिता के पैदा किया। उसके लिये यह केवल माँ बिना बाप के जन्म देना अधिक सरल है बिना माँ बिना बाप के जन्म देने से इसी लिये अल्लाह ने कहा कि ईसा की मिसाल अल्लाह के निकट आदम के समान है।

आदम को मिट्टी से बनाया और फिर कहा कि हो जा और वह जिन्दा इन्सान हो गया।

हज़रत ईसा कमाल आश्चर्यजनक है

हज़रत ईसा का जन्म तथा उनका जीवन अचम्भे की बात है हज़रत ईसा का जन्म ऐसे समय में हुआ जब यूनान में विद्या रियाजी (गणित) तथा बुद्धिमानी अपने अन्तिम चरण पर थी। उस समय जिस्मानी इलाज यूनानी तिब का जोर तथा चलन था।

जाहिरी दिखावे वाला उपकरण तथा असबाब पर यहूद का झुकाव

यहूद जिन में बहुत से नबी आयें हैं। वह यहूद अपने जमाने के विशेष विज्ञान के आगे झुक गये उनमें से रूह और इससे सम्बन्धित बातों का यकीन उठ चुका था। वह जिस बात को देखते उसकी तशरीह तथा व्याख्या भौतिक तथा मन्तिक के रूप में करते थे। उनके नजदीक किसी चीज का वजूद तथा नशवर का अस्तित्व कारण के बिना सम्भव नहीं। वह यह समझते थे कि हर चीज जो पायी जायेगी उसका कोई सबब (कारण) होगा। यह मुअजिजात की भौतिक बुद्धि का इलाज था।

यहूदियों का जाहिरी चीजों पर बड़ा यकीन और विश्वास था। वह गूदा छोड़ते और छिल्लका लेते। वह जाहिर से चिमटते हकीकत को न पाते। उनमें तत्त्व तथा

उनमें माल तथा माद्दे की बहुत बढ़ ख्याल बढ़ गयी थी। वह अपनी जिन्दगी में अत्यन्त व्यस्त हो गये वह सख्त दिल हो गये थे। उनके स्वभाव में अति आ गया। अतः वह निर्बल पर दया न करते, फकीरों पर तरस न खाते, और उस से ऐसा बरताव करते जिस में इस्राईली रक्त न हो उन निर्बलों के साथ पशुओं, कुत्तों बेजान पत्थरों जैसा मुआमला करते। शक्ति वालो तथा धनवानों के आगे झुकते और छोटो पर निर्धनो पर अत्याचार करते, बल होता तो सख्ती करते विवश हो तो तो नर्मी करते उन के अन्दर जिल्लत की जिन्दगी और गुलामी ने जन्म लिया जिस में उन्होंने रूमानी काल में गुजारा था जिन का राज्य शाम तथा फिलिस्तीन में एक लम्बे काल तक रहा। उनका शासन शाम और फिलिस्तीन तक पहुँच गया था उनमें नफरत, बहानेबाजी, लोगों के साथ चालबाजी, झगड़ा, षड़यंत्र छुप कर हानि पहुँचाने की आदतें पड़ गई थीं।

खिलवाड़

उनमें नबियों के साथ मजाक उनकी नाफरमानी तथा उनके साथ खिलवाड़ करने की आदत पड़ गई थी। उनको जलील समझते तथा उनपर झूठे इल्जाम लगाते थे यहाँ तक कि उनके कत्ल के भी मुरतकिब होते। वह सूदी कारोबार करने लगे थे। वह धार्मिक शिक्षा की खिल्ली उड़ाने लगे थे। उनसे अच्छे व्यवहार, मनुष्यता का व्यवहार तथा नम्रता की आशा समाप्त हो गई उनके

दिलों से अल्लाह की मोहब्बत जाती रही। उन्होंने मनुष्य का आदर करना छोड़ दिया था। इनमें बहुत से नबी आये। उन पर किताबें भी उतरीं। यह उन पर ईमान व यकीन भी रखते थे लेकिन उस समय किताबों के उस भाग को मानते तथा स्वीकार करते थे जो उनके मुआफिक (अनुकूल) होता और जो उनके स्वभाव की पुष्टि करता। लेकिन जो उनपर आलोचना करता, उनको सही रास्ते पर चलने की दावत देता तथा उनसे अपने कर्मों को सुधारने के लिये कहता, तो उसके वह दुश्मन हो जाते थे। तथा उससे झगड़ते और लड़ते थें। उन में झूठा इल्जाम लगाने, झूठ गढ़ने हक छुपाने और झूठी गवाही देने की आदतें पैदा हो गई थी।

बनी इस्राईल पर अल्लाह की नेयमतें और बख़शिशे

बनी इस्राईल हर जमाने में अपने जमाने की कौमों में श्रेष्ठ रहे, तौहीद के अकीदे के सबब अकीदे मुमताज और मान्यवर रही है। इसी लिये इन को दूसरी कौमों पर फ़ज़ीलत प्रधानता दी गई थी। अल्लाह फरमाता है कि :—

"ऐ बनी इस्राईल हमारी नेअमतों को याद करो जो हमने तुम पर की और हमने तुम्हें सारे जहानों में फ़ज़ीलत दी है।"

एहसानात की नाशुक्री

लेकिन दूसरी कौमों की तरह इनमें भी बुत परस्ती

तथा मुशरिकाना बातें आ गई थीं और नबियों की शिक्षा को अधिक समय बीत जाने के कारण तौहीद का अकीदा कमजोर पड़ गया था। जाहिलियत की आदतें उन में पड़ गई थीं और वह मिस्र में बछड़े की पूजा करने लगे हज़रत उजैर की तकदीस (पवित्रता) और मान में इस हद तक आगे बढ़ गये कि उनको मनुष्य से ऊपर स्थान दे दिया। शिर्क, बुत परस्ती तथा जादू और बुरे कार्य कुछ नबियों के नाम से सम्बन्धित करने लगे और इस पर न तो उनको लज्जा आई और न ही इसको बुरा समझते और न इस बात पर अल्लाह से डरते थे।

घमण्ड और गर्व

ख़्याली बातों व यकीन तथा वंश घमण्ड बहुत बढ़ गया था वह कहते थे कि हम तो अल्लाह की संतान हैं। उसके महबूब हैं हमको आग नहीं पकड़ेगी यदि आग पकड़ेगी भी तो चन्द दिनों के लिये।

हज़रत ईसा का जन्म

हज़रत ईसा का जन्म, उन का जीवन उनकी दावत तथा उनका जीवन यापन चुनौती थी माददीयत और जाहिर परस्ती को चुनौती थी। रस्मो–रिवाज तथा सामाजिक नियमों अर्थात उर्फ को, चुनौती थी मानवी विधान को और उस आदर्श को जिस पर यहूद को ईमान था, चैलेंज था उन रस्मीयात को जिन में एक दूसरे से आगे बढ़ाने की

कोशिश करते थे और परस्पर लड़ पड़ते थे। ईसा का जन्म हुआ साधारण विधि से हट कर। उन्होंने गोद ही में लोगों से बात की। निर्धन माँ की गोद में सबसे अलग थलग उनका पालन–पोषण हुआ और वह परवान चढ़े। तअ व तशनीअ (निन्ध) के वातावरण (माहौल) में धन दौलत से बहुत दूर रह कर उनकी परवरिश हुई। गरीबों और मिस्कीनों के साथ उनकी बैठक होती वह उनके साथ खाते पीते और उनके साथ सहानुभूति दिखाते थे। फकीरों और कमजोरों से हमदर्दी करते। उनकी नज़र में धनवान और निर्धन में कोई फर्क नहीं था। उनकी निगाह में उच्चधिकारी तथा सज्जन तथा नीचे के लोगों के बीच कोई अन्तर नहीं था।

हज़रत ईसा के मोजिज़ात (चमत्कार) (कुदरत का करिश्मा)

अल्लाह ने हज़रत ईसा को नबुव्वत दी और उनका मान बढ़ाया। उनको इन्जील (किताब) दी और बैतुलकुद्दूस से ताईद की उनको खुले हुऐ चमत्कार दिये। अल्लाह ने उनके द्वारा ऐसे रोगियों की निरोग किया जिन के इलाज से तबीब लोग आजिज आ चुके थे। वह बर्स (सफेद दाग) पैदाइशी अन्धें ठीक करते थे और अल्लाह के आदेश से वह मरे हुए लोगों को जिन्दा करते थे। लोगों के लिये मिट्टी से परिन्दे बनाते फिर उसमें फूक मारते तो वह जीवित परिन्दे हो जाते। लोग जो कुछ खाते थे और जो

घरों में जमा करते थे, उसको वह बता देते थे।

अपने मुअजिजात से तौरात में बयान मुअजिजात की तस्दीक की और खुदाई कुदरत की खबरो की पुष्टि का और इस सब पर ईमान का नवीकरण किया। पस जो लोग अल्लाह की कुदरत और उस के इरादे की कुव्वत के मुन्किर थे वह मुकाबले पर खड़े हुए और तय किया कि जो कुछ वह जानते हैं जिस का उनको तजरबा बमुशाहदा है उस से जियादा कुछ नहीं और कोई नई बात सही नहीं।

हज़रत ईसा का दीन की तरफ बुलावा और यहूदियों को झुठलाना

यहूदियों ने अपने ख़्यालों से जो फलसफा बना रखा था और उस में बड़ा गुलू कर रखा था, अल्लाह की हलाल की हुई चीजों को हराम और अल्लाह की हराम की हुई चीजों को हलाल कर रखा था हज़रत ईसा अ0 ने उस सब की तकजीब की उस को गलत करार दिया। हज़रत ईसा ने उनको सही दीन की दावत दी उसकी सत्यता तथा वास्तविकता की ओर बुलाया उन्होंने अल्लाह की उस मुहब्बत का पाठ दिया जो मुहब्बत सब पर गालिब हो उन्होंने इन्सानियत पर दया तथा गरीबों के साथ हमदर्दी की दावत दी। और उनको तौहीदे खालिस की दअवत दी और जो बातें अंबिया के दीन में खिलाफ हो गई जैसे जाहिली आदतें और गलत अकाइद उन सब

से इन्कार की दअवत दी।

यहूद का हज़रत ईसा से लड़ना

हज़रत ईसा की शिक्षा उनकी दावत तथा उनकी बातें यहूद को बहुत बुरी लगती थी। अतः उन्होंने ने हज़रत ईसा के खिलाफ लड़ाई छेड़ दी वह एक ही कमान से मुखतलिफ तीर फेकते थे वह उन पर इल्जाम लगाते उन को बदकार बताते, और बहुत बुरा कहते बहुत ही घटिया बातें कहते उन की माँ पर बदकारी का इल्जाम लगाते, उन की मुखालफत करते उन पर हमला करते, औबाशों को उनके पीछे लगाते और उन का रास्ता रोकते।

हज़रत ईसा की कहानी कुरआन में

यहूदियों ने हज़रत ईसा से पीछा छुड़ाने के लिये उनको कत्ल करने की योजना बनाई अल्लाह ने उनकी योजना को असफल कर दिया और हज़रत ईसा को आसमान पर उठा कर उनका आदर बढ़ाया और उनको मान दिया। कुरआन में उनकी कहानी पढ़ो कुरआन कहता है कि :–

"जब फरिश्तों ने हज़रत मरियम से कहा कि अल्लाह अपने कलमें से तुमको खुशखबरी देता है कि उसका नाम ईसा बिन मरियम होगा वह खुश–रू (सुन्दर) तथा रोब दाब वाला होगा और वह हमारे करीब वालों में से होगा। वह माता की गोद में ही लोगों से बात करेगा। और वह

अच्छे लोगों में से होगा। हज़रत मरियम ने कहा कि :—

" ऐ अल्लाह मेरे औलाद कैसे हो सकती है मुझे तो किसी आदमी ने छुआ तक नहीं है। तो उनसे कहा गया कि :—

"अल्लाह चाहे तो ऐसे भी पैदा कर सकता है। वह जब किसी बात को करने का इरादा करता है तो कहता है "हो जा" और वह चीज हो जाती है। हज़रत ईसा को दानाई दी, तौरात व इन्जील का ज्ञान दिया तथा शिक्षा दी। और बनी इस्राईल में उनको रसूल बनाकर भेजा। उन्होंने बनी इस्राईल से कहा कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से निशानी लेकर आया हूँ मैं तुम्हारे लिये मिट्टी के परिन्दे से जीवित परिन्दा बना देने की निशानी लेकर आया हूँ मैं उसमें फूंकता हूँ। तो वह अल्लाह के हुक्म से जानदार परिन्दा हो जाता हैं। मैं बर्स (सफेद दाग़) तथा, पैदाइशी अन्धे को ठीक कर देता हूँ। मैं अल्लाह के आदेश से मुर्दों में जान डाल देता हूँ जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ तुम जमा करते हो उसकी खबर दे देता हूँ। इस सब में तुम्हारे लिये निशानी है (मेरी नुबुव्वत की) यदि ईमान लाना चाहो। और तौरात जो मेरे समय से पहले उतरी उसकी तसदीक करता हूँ और मैं इस गरज़ से भी आया हूँ कि कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम हैं, तुम्हारे लिये उनमें से कुछ हलाल कर दूं। मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (नुबुव्वत की) निशानी लेकर

तुम्हारे पास आया हूँ। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। बेशक अल्लाह मेरा परवरदिगार है और तुम्हारा भी परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो, बस यही सीधी राह है। फिर ईसा ने उन यहूदी लोगों का कुफ़्र (अपने कत्ल करने की उनकी नियत) देखा तो पुकार उठे कि कोई है जो अल्लाह वास्ते मेरी मदद (सहायता) करे। हवारी बोले कि हम हैं अल्लाह के दीन के मददगार । हम अल्लाह पर ईमान लाये और आप गवाह रहिये कि हम मुस्लिम (फरमांबरदार) हैं। "ऐ परवरदिगार इन्जील जो तूने उतारी है, हम उस पर ईमान लाये और हमने पैगम्बर यानी ईसा अ0 की पैरवी कर ली सो तू हमको गवाही देने वालों में लिख ले। और इन यहूद ने ईसा अ0 के कत्ल के लिये साजिश की और अल्लाह ने भी यहूद से ईसा अ0 को बचाने के लिये चाल की, अल्लाह चाल करने वालों में सबसे अच्छा चाल करने वाला है।

(वह भी याद करो) जब अल्लाह ने कहा कि :–

"ऐ ईसा दुनिया में तुम्हारे रहने की मुद्दत पूरी करके मैं तुमको अपनी ओर बुला लूंगा। और (इस वक्त) तुम को अपनी ओर उठा लूंगा। और काफिरों की सोहबत से तुम को पाक कर दूँगा। और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की है उनको कियामत के दिन तक काफिरों पर गालिब (प्रबल) रखूंगा। फिर तुम सब को मेरी तरफ लौटकर

आना हैं फिर जिन बातों में तुहारे बीच मतभेद है उसके बारे में तुम्हारे बीच उस दिन फैसला कर दूँगा। और जिन्होंने तुम्हारी पैगम्बरी से इन्कार किया तो उनको दुनिया व आखिरत में बड़ी सख़्त मार दूँगा और कोई उनका मद्दगार न होगा। और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये तो अल्लाह उनको पूरा–पूरा बदला देगा। अल्लाह जालिमों को पसन्द नहीं करता।"

यह आयतें और हिकमत (ज्ञान) भरी नसीहतें हम तुमको सुना रहे हैं बेशक अल्लाह के नजदीक इंसान की मिसाल आदम की सी है कि अल्लाह ने मिट्टी से आदम के शरीर को बनाकर फिर उसको हुक्म दिया कि "हो" और वह हो गया। यह तो (जो बताया गया है) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से यह सत्य प्रकट है तो कहीं तुम भी शक करने वालों में से न हो जाना।

हज़रत ईसा का चरित्र और उनकी दावत (कुर्आन) में

उनका गुण उनके चरित्र और दावत से सम्बन्धित अल्लाह ने जो बताया है उनको तुम पढ़ो अल्लाह फरमाता है :–

"बच्चा बोल पड़ा कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने (अल्लाह) मुझको किताब (इन्जील) दी है और मुझको नबी बनाया है और मुझ को आदेश दिया कि जब तक मैं जिन्दा रहूँ नमाज पढ़ू और जकात दूं। और मुझे माँ के साथ नेक सुलूक करने वाला बनाया है और मुझको

सरकश और अभागा नहीं बनाया। और मुझ पर सलाम है, जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा। जिस दिन दोबारा जिलाकर उठाया जाऊँगा।

पुरानी लड़ाई

हज़रत ईसा के साथ भी उनकी कौम ने वही किया जो पिछली कौमों ने अपने नबियों के साथ किया था। ईसा अ० से सरदार और हुक्काम दूर हो गये और उनको धनवानों और ताकतवर लोगों ने छोड़ दिया। उनको उन पर ईमान लाने और उनकी पैरवी करने वालों में जिल्लत नज़र आई। और उसमें बुराई नज़र आई। और उन के लिये यह कठिन हुआ कि वह अपनी रियासत, सरदारी, लीडरी और दुनियावी बुलन्दी जिस पर वह थे नीचे आएं। अल्लाह ने सत्य कहा है कि :—

"हमने जब भी किसी बस्ती में डराने वाला भेजा तो उस बस्ती के खुशहाल लोगों ने उन पैगम्बर से कहा तुम जिस के साथ भेजे गये हो। हम उस का इन्कार करते हें। कि हम तो धनवान हैं हमारा परिवार है हमारा परिवार बड़ा और हमारी संतान अधिक है हमें अजाब नहीं हो सकता।

आम लोगों का ईमान और उनके गरीब लोग

जब ईसा अ० धनवानो आदि से ना उम्मीद (निराश) हो गये और उनमें कुफ्र और सरकशी व दुश्मीन देखी और उन्होंने देखा कि जिस चीज को वह लेकर आये हैं

उसके वह खिलाफ करते हैं। उन खुली निशानियों, आयतों मोजिज़ात जिस को उन्होंने देखा और विश्वास भरोसा किया उसका इन्कार कर रहे हैं और उस को घटिया बता रहे हें इस लिये कि वह धन पद वालों में नहीं है तो वह आम लोगों की तरफ बढ़े, गरीबो क तरफ बढ़े तो उनके दिल नर्म हो गये उन के दिल साफ हो गये। इस लिये कि वह अपनी मेहनत से कमाते और खाते थे। वह अपने वंश (नसल) पर गर्व नहीं करते थे न अपने जाह व मंसब पर घमण्ड करते थे। उन्हीं में से एक गिरोह ईमान लाया। उनमें शिकारी और मछली पकड़ने वाले थे। उनमें मेहनत व मजदूरी करने वाले कारीगर लोग थे।

हम अल्लाह के मद्दगार (सहयोगी) हैं

यह लोग हज़रत ईसा पर ईमान लाये वही उनके इर्द–गिर्द रहे और उन्होंने उनके हाथ में हाथ दिया। और उन्होंने कहा कि हम अल्लाह के सहयोगी हैं अल्लाह कहता है कि :–

"जब हज़रत ईसा ने उनकी नाफरमानी को महसूस किया तो कहा कि अल्लाह के लिये मेरी कौन मदद करेगा। उन साथियों ने कहा कि हम मदद करेंगे, हम अल्लाह के दीन के सहयोगी है। हम अल्लाह पर ईमान लाये। और गवाह (साक्षी) रहिये कि हम मुसलमान हैं "ऐ परवरदिगार हम ईमान लाये उस सब पर जो तूने

उतारा और हम ने रसूल की पैरवी की । पस हमको तस्दीक करने वालो में लिख लीजिये।"

इबादत तथा दावत के लिये शहरों में चलना फिरना

हज़रत ईसा अपना अधिक समय शहरों–शहरों घूम कर बनी इस्राईल को अल्लाह की तरफ बुलाते थे। और अपने रब से भटके हुओं को उन के रब से मिलाते थे। एक स्थान से दूसरे स्थान जाते थे। उसमें उनको तकलीफ भी होती कभी तंगी कभी आसानी लेकिन यह सब बातें बड़े सब्र से बरदाश्त करते। रास्ते में भूख व प्यास का कष्ट सहन करते थे और उतना ही खाते जिस से जिन्दगी बाकी रहे।
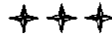
हज़रत ईसा के हवारी (अन्सार)

आकाश से खाना उतरने का मुतालबा करने लगे।

हज़रत ईसा के हवारी सब्र, हिल्म, तकश्शुफ, जुह्द और कष्ट सहने में हज़रत ईसा अ0 के बराबर के न थे। इन सिफात से कुछ हिस्सा मिला था। उन्होंने हज़रत ईसा अ0 से मांग की कि वह अल्लाह से हमारे लिये आसमानसे खाना उतरने की दुआ करें। हम उस को खाकर अपनी भूख मिटायेंगे और तकलीफ के बाद उस नअमत से राहत पाएं।

उनकी बद्तमीज़ी

वह (यहूद) अपनी इस मांग में संजीदा नहीं थे। वह कहने लगे कि ऐ मूसा क्या तुम्हारा परवरदिगार हमारे लिये आसमान से खाना भेजने पर कादिर है? उनकी इस बेअदबी से मांग पर हज़रत ईसा को बुरा लगा उनके मांगने का ढंग उनको पसन्द नहीं आया। सब नबी अपनी कौम से ईमान, बिलगैब की मांग करते हैं और

उस का मुकल्लफ बनाते हैं। मुअजिजात खिलोने तो नहीं जिनसे बच्चों को बहलाया जाए और न तजरिबेकार लोग उस से खेलें। यह तो अल्लाह की निशानियाँ है। जिस को वह जब चाहता है अपने नबियों के हाथों जाहिर करता है। और वह निशानी बन्दों पर हुज्जत होती है। निशानी जाहिर हो ने के बाद इन्कार करने वालों को ढील नहीं मिलती अर्थात अजाब आ जाता है।

कौम को उनके बुरे अन्जाम से डराना

हज़रत ईसा उनके प्रति बहुत डरे और उनको उनके बुरे परिणाम (अंजाम) से उनको डराया। और उनको अल्लाह की परीक्षा से रोका और मना किया। अल्लाह बहुत बुजुर्ग है उत्तम है उससे जो उन्होंने समझा है।

यहूद का इसरार (ज़िद)

हज़रत ईसा के सहयोगियों ने अपने सवाल व मुतालबे पर जमे रहे। वह कहने लगे कि हम परीक्षा नहीं चाहते हैं। हम तो केवल दिल का इत्मिनान चाहते हैं ताकि वह अगली पीढ़ी के लिये यादगार हो। कहानी होगी जो बरसों सुनाई जाती रहेगी और यह दीन के सत्य होने का प्रमाण हो और ईमान वालों और सत्यवादी व सहयोगियों का स्थान बताएगी।

कुर्आन इस कहानी को बताता है

कुर्आन यह किस्सा बयान करता है। जब सहयोगियों ने कहा कि ऐ ईसा मरियम के बेटे क्या तुम्हारे परवरदिगार में यह क्षमता (ताकत) है कि वह हमारे लिये आसमान से खाना उतारे। हज़रत ईसा ने कहा कि यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह से डरो। वह कहने लगे, हम तो चाहते है कि उस में से खाएं और हमारे दिल संतुष्ट हों और जान लें कि तुम जो कुछ कह रहे हो सत्य कह रहे हो, और हम उस पर गवाह हों। हज़रत ईसा ने दुआ की "ऐ मेरे परवरदिगार तू हमारे लिये आकाश से खाना उतार वह हमारे अगले पिछलों के लिये खुशी की बात होगी। और वह तेरी निशानी होगी। हमें रिज़क़ दे। तू तो सबसे अच्छा रिज़क़ देने वाला है। अल्लाह ने कहा कि :--

"मैं तुम पर खाना उतारता हूँ। इसके बाद तुममें से जिस ने कुफ्र किया तो मैं उसको ऐसा अजाब दूँगा कि दोनों जहान में किसी को नहीं मिला होगा।

यहूद हज़रत ईसा से छुटकारा पाने का इरादा करने लगे।

यहूद के सब्र का पैमाना लबरेज हो गया, और उन की दुश्मनी का प्याला बह पड़ा। उन्होंने हज़रत ईसा से छुटकारा पाने का इरादा कर लिया। उन्होंने रोम के हाकिम के सामने अपना मामला रखा। उन्होंने उससे कहा कि यह (ईसा) गुमराह आदमी है, हमारे दीन से

निकल चुका है, खून खराबा करने वाला हंगामा करने वाला आदमी है, हमारे जवानों को बहकाता है, वह इस के फ़ित्ने में मुबतला हो गये हैं। हमारे बीच मतभेद (फ़र्क़) डालता है। हमारे बुद्धिमानों को बेवकूफ बताता है और हमारे दिलो को मशगूल कर रखा है।

बदला लेने वालों और सयासी लोगों का अन्दाज

वह (यहूद) कहते कि हज़रत ईसा राष्ट्र के लिये खतरा है। यह किसी कानून को मानने वाले नहीं हैं। किसी शासन के आगे झुकने वाले नहीं हैं। किसी बड़े का सम्मान और पुरानों का आदर करना उसके यहाँ नहीं है। यह बागी है। इस को यदि इस की हरकतों से रोका नहीं गया तो यह हमारे सर चढ़ जायेगा और यह सैलाब फिर काबू में नहीं आयेगा। और बड़ी मुसीबत पैदा कर देगी। चिंगारी चाहे जितनी छोटी हो उस का छोटा न समझना चाहिये।

यहूद का मकरो फरेब (दगाबाजी)

उनकी सारी बातें छल कपट, दगाबाजी व मक्कारी की थीं। और उन पर राजनिति की पालिश होती थी। वह खूब जानते थे कि दीनी बातें उच्चाधिकारियों को प्रभावित नहीं कर सकेंगी और उनको जोश न दिलायेगी। शासन की राजनीत यह थी कि यहूद के दीनी कार्यों में रूकावट न डालें। इसी कारण उन्होने अपनी बातो में राजनीति को दाखिला कर लिया।

कठिनाई

मुशरिकीन की तरफ के उच्चाधिकारियों के लिये वास्तविकता (सच्चाई) जानना तथा उसकी सही जानकारी प्राप्त करना बड़ा कठिन प्रश्न था। वह यहूद के उद्देश्य न जानते थें वह उनकी दुश्मनी का कारण नहीं जानते थे। वह संस्थाओं के कार्यों में व्यस्त थे लेकिन यहूद की जिद थी हज़रत ईसा की दुश्मनी पर और हर हाल में हज़रत ईसा से पीछा छुडाना चाहते थे।

हज़रत ईसा न्यायालय (अदालत) में

जुमा (शुक्रवार) का दिन असर के बाद का समय तथा शनिवार की रात थी। शनिवार को यहूद कोई कार्य नहीं करते थे। वह दिन काम से अवकाश का दिन होता था वह चाहते थे और इन्तिहाई कोशिश में थे कि जुमे के दिन सूरज गुरूब (सूर्यअस्त) होने के पूर्व आदेश पारित हो जाये तो वह शनिवार को हज़रत ईसा के मामले में निश्चित हो जाएं और वह बेफिक्र होकर सोएं और इस हाल में सुबह करे कि उनके दिल पर कोई असर न हो और कोई बात उनको परेशान न करे। उच्चाधिकारियों ने इसका निर्णय करने में कोई रूचि नहीं ली और न ही उनके नजदीक कौम की इस में भलाई थी। उस दिन यहूद फैसला सुनने के लिये जमा हुए। समय बहुत थोड़ा था, यहूद वह हंगामा कर रहे थे, आवाजे कस रहे थे,

खिल्ली उड़ा रहे थे उच्च अधिकारी फ़ैसला सुनाने में मुशकिल महसूस कर रहा था, वक्त तंग था सूरज गुरूब होने के करीब था कि उसने हज़रत ईसा को सूली पर लटकाने का फैसला सुना दिया।

उस समय के फौजदारी (अपराधी) कानून

उस समय के क्रिमिनल कानून में था कि जिस को फांसी की सजा सुनाई जाये वह फांसी की सलीब लेकर फांसी घर तक ले जाए, और फांसी घर दूरथा जैसा कि उस वक्त के तरक्की याफ्ता मुल्कों का तरीका था। फैसला सुनाने के बाद भीड़ जमा हो गई और वह एक दूसरे पर गिर रहे थे। पुलिस के अधिक कार्यकर्ता विदेशी थे। जो केवल ड्युटी कर रहे थे। उनको इस फैसले से कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह एक दूसरे से सूरत शक्ल में मिलते थे उनको इस बात ने परेशानी में डाल दिया था, वह आपस में फर्क नहीं कर पा रहे थे। शाम का समय हो गया, अंधियारा फैल गया और कुछ बेवकूफ यहूदी जवानी के जोश में हज़रत ईसा को गाली दे रहे थे। उनकी बेइज़्ज़ती कर रहे थे और उनको कष्ट पहुँचाने का इरादा कर रहे थे।

ईसा ने हर कष्ट बरदाश्त (सहन) किया

ईसा अ० न्यायालय में देर तक खड़े रहने से बेहद थक गये थे और कष्ट सहन करने से कमजोर हो गये

थे। सलीब (सूली) वजनी थी उसको उठाने पर उनको बाध्य होना पड़ा उनमें तेज चलने की ताकत नहीं थी।

अल्लाह की तरफ से उसका उपाय

इस कार्य के लिये पुलिस ने जल्दी के लिये एक इस्राईली युवक को लकड़ी उठाकर लाने को कहा। वह अपने साथियों ने सब से अधिक जोशीला था और मुर्खता में सब से आगे था और वह हज़रत ईसा को कष्ट पहुँचाने में सब से बढ़ा हुआ था उस को सलीब ले चलने को इसलिये कहा ताकि मामला शीघ्र समाप्त हो जाये। और इस फांसी के कार्य से जल्दी छुट्टी मिल जाये।

लेकिन वह शक में पड़ गये उनके पहचानने में

जब यह भीड़ फांसी घर के दरवाजे पर पहुँची तो जल्लाद आगे बढ़ा और उसने शहरी पुलिस से आदेश प्राप्त किया उन्होंने नवयुवक को सलीब उठाये हुये देखा मुआमला गडमड हो गया शोर बढ़ गया था फांसी देने वालो ने सलीब उठाने वाले का हाथ पकड़ लिया । यह देखकर उसको इस में शक नहीं रहा कि फांसी का आदेश उस के लिये हुआ है। मगर वह चीख रहा था चिल्ला रहा था और अपनी बेगुनाही का एअलान कर रहा था और कह रहा था के फैसलेऔर फांसी से उस का कोई तअल्लुक नहीं उससे तो सलीब बेगार में जुल्मन उठवाई गई थी लेकिन फांसी के सिपाहियों ने

कोई तवज्जुह न की उन की ज़बान समझ नहीं रहे थे इस लिये कि वह रोम व यूनान के रहने वाले थे हुकूमत वालों की कौम से थे।

आदेश का पारित होना

हर अपराधी अपने जुल्म से इन्कार करता है और अपने को बेगुनाह समझता है। हर अपराधी अपने बचाव के लिये चीखता चिल्लाता है लेकिन उसको पकड़ लिया जाता है और उस पर आदेश पारित होता है। यहूद बहुत दूर खड़े यह तमाशा देख रहे थे और रात के अंधेरे में यह समझ रहे थे कि जिसको सूली पर लटकाया गया है वह ईसा ही है।

हज़रत ईसा अ० को अल्लाह ने ऊपर उठा लिया

रही बात ईसा अ० की तो उनको यहूद के मक्र छल कपट से अल्लाह ने इज़्ज़त, आदर और मान के साथ पाक व साफ ऊपर उठा लिया काफिरो के बीच से।

इस कहानी को कुर्आन बयान करता है। अल्लाह तआला यहूद के विषय में बताता हैं :–

"उन्होंने (यहूद) ने हज़रत मरियम पर आरोप लगाया उनको कुसूरवार ठहराया और कहते हैं कि हमने तो ईसा बिन मरियम को कत्ल कर दिया हालांकि न तो हज़रत ईसा को कत्ल किया और न ही उनको सूली पर लटकाया उन्होंने तो उनको पहचानने मे ही गलती की इसलिये

कि वहां सबकी सूरतें मिलती जुलती थीं। और जिन लोगों हज़रत ईसा अ0 के बारे में इख़्तिलाफ किया वह शक में पड़ गये उनको सही बात की जानकारी नहीं। वह तो अपने अनुमान के पीछे चल रहे हैं। सत्य यह है कि उन्होंने हज़रत ईसा को कत्ल नहीं किया लेकिन अल्लाह ने उनको अपने पास बुला लिया अल्लाह बड़ा बलवान और बुद्धिमान है।

हज़रत ईसा आसमान पर हैं। जैसा कि अल्लाह ने उनके साथ चाहा। अल्लाह हर चीज पर कादिर है। हज़रत ईसा का जन्म, उनका जीवन प्रारम्भ से अन्त तक आश्चर्यजनक है और नियमों के विपरीत है और यह सब बातें प्रमाण हैं अल्लाह के शक्तिशाली होने पर और इस बात पर कि उसको इख़्तियार है हर चीज पर।

कयामत के करीब हज़रत ईसा का आसमान से उतरना

जब अल्लाह हज़रत ईसा को उतारना चाहेगा आसमना से उतार देगा यह सुबूत होगा यहूद व नसारा के खिलाफ जो हज़रत ईसा से सम्बन्धित उल्टी सीधी घटा बढ़ा कर बातें करते हैं। वह हक की हिमायत करेगे। और गलत बाते करने वालों को जलील करेंगे जैसा कि हमारे नबी ने हमको बताया और आप की अहादीस से हमें इसकी जानकारी हुई और सभी मुसलमानों को हर जमाने में इस बात पर यकीन रहा है। अल्लाह ने सच फरमाया:—

अहले किताब उनके मरने से पूर्व ईमान लायेंगे। वह उस पर कियामत में गवाह होंगे।

हज़रत ईसा अ0 की शुभ सूचना सय्यिदुना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बिअसत के विषय में

हज़रत मसीह अ0 अपनी दअवत का अभियान पूरा न कर सके जिस का कारण यहूद का विरोध उनका बल तथा स्वयं उनकी निर्बलता व सहयोगियों कि कमी थी अतः उन्होंने लोगों को विदा कही और रब के आदेश का पालन किया और लोगों को शुभ सूचना दी कि उन के पीछे एक रसूल का आगमन होगा वह उसे पूरा करेंगे जो कुछ उन्होंने (ईसा अ0) ने आरम्भ किया है और उसे व्यापक करेगे (आम करेगे) जिसे उन्हें विशिष्ट (खास) रखा है, और उन के द्वारा अल्लाह का विशेष पुरस्कार (निअमत) उसके बन्दों पर पूरा होगा तथा वह सृष्टि (मख्लूक) पर हज़रत (तर्क) होगी। कुर्आन बयान करता है :—

"उस समय को याद करो जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा ऐ इस्राईल की सन्तानो! मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का रसूल हुं पुष्टि करने वाला अपने से पहले उतारी गई तौरात की तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ इस बात की किमेरे पीछे एक रसूल आएंगे जिनका शुभ नाम अहमद होगा।"

शुद्ध एकेश्वरवाद से अंधविश्वास की ओर

धर्म (अदयान) के इतिहास की आश्चर्य जनक बातों में जिस पर नेत्र आंसू बहाएं तथा हृदय पानी हो जाएं हज़रत मसीह अ0 के शुद्ध एकेश्वरवाद के आवाहन (तौहीद खालिस की दअवत) का तथा उलझाव रहित सरल शुद्ध धर्म (गुमूज व रुमूज से पाक आसान और सहीह दीन) का बदल जाना तथा दूर का अर्थ लेना। तथा एक अल्लाह की उपासना वंश आवाहन (दअवत) और उसी से मांगना, उसी से विनय् करना, उससे शुद्ध प्रेम रखना इन सब स्पष्ट तत्वों को छोड़कर अस्पष्ट विश्वास (गामिज अकीदा) धारण करना। फिर इन अशुद्ध विश्वासों पर चलने वाले इतना बढ़े कि कुछ अल्लाह के बन्दों को मानव स्तर से उठा कर उपास्य के स्तर पर पहुँचा दिया और उन्होंने कहा : मसीह अल्लाह के बेटे हैं।" और कहा "उन लोगों ने कि अल्लाह तआला सन्तान रखता है।" और कहा : निःसन्देह अल्लाह तो यही मरियम के बेटे मसीह हैं" और एक कामना रहित उपास्य जिस को न किसी ने जना न उसने किसी को जना उस को तो दीन पर आधारित परिवार वाला बना लिया और कहा स्वामी (रब) उस का बेटा, तथा पवित्र आत्मा (रुहुलकुदस) इन तीनों को उपास्य माना, और मरियम को मसीह की माँ माना और उनके साथ वह व्यवहार किया कि

श्रद्धा तथा उपासना के स्तर पर पहुँचा दिया उन को (अल्लाह की शरण) अल्लाह की माता कहा तथा उन की मूर्तियाँ और चित्र कनीसो में रखी और लटकाई गई, जिन के सामने मसीही झुकते तथा उन से प्रार्थना करते हैं उन के सामक्ष नतमस्तक होते हैं। अल्लाह तआला ने उनके इस कर्म को अप्रिय बताते हुए तथा उस को बुरा बताते हुए कहा मरियम के बेटे केवल रसूल हैं उससे पहले बहुत से रसूल जा चुके हैं। तथा उनकी माँ सत्यवती (सिद्दीक) है दोनों आहार खाते हैं देखो हम किस प्रकार उनके समझने के लिये खोल कर बयान करते हैं फिर देखो वह कहाँ जा रहे हैं। आप कह दीजिये क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी को पूजते हो जो तुम को न हानि पहुँचा सकता है न लाभ और अल्लाह (जिसे तुम छोड़ रहे हो वह तो) तो सब कुछ सुनने तथा जानने वाला है।

ईसा अ० की दावत

अल्लाह की इबादत के लिये जिस प्रकार दूसरे अन्य नबियों ने "अल्लाह की इबादत की" अपनी कौम को दावत दी वैसे ही हज़रत ईसा ने अल्लाह की इबादत के लिये अपनी कौम को बुलाया इंजील में स्पष्ट लिखा है कि "अल्लाह तुम्हारा रब है उसी को सजदा करो वह एक है उसी की पूजा करो।"

अल्लाह ने कुर्आन में फरमाया कि :–

"किसी मनुष्य को यह शोभा नहीं देता अपितु उस को अधिकार नहीं है कि अल्लाह उसको किताब और हिकमत और पैगम्बरी दे, फिर वह लोगों से कहने लगे कि अल्लाह को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ।" बल्कि (यह तो कहेगा कि "ऐ किताब वालो) तुम अल्लाह वाले बन जाओ इस लिये कि तुम लोग दूसरों को किताब पढ़ाते हो। और तुम खुद भी पढ़ते हो। और वह तुम से यह भी नहीं कहेगा कि तुम फरिश्तों और पैगम्बारों को पालनहार मानो। न तुम्हें कुफ्र करने को कहेगा। जब कि तुम उसके आज्ञाकारी हो।

हज़रत ईसा की दावत को कुर्आन जाहिर करता है

अपने से पहले की किताब की पुष्टि करता है और उनका संरक्षन है उसने हज़रत ईसा के इस ऐलान को नकल किया है। जो उन्होंने खुले और साफ–साफ उस्लूब में शुद्ध तौहीद और दीन की दावत दी है। कुरआन कहता है कि उन लोगों न कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह मरियम के बेटे मसही है। अल्लाह मानते थे। हज़रत ईसा ने कहा कि "ऐ बनी इस्राईल तुम उस रब की पूजा करो जो तुम्हारा और मेरा परवरदिगार है जिसने अल्लाह के साथ किसी को उसकी इबादत में शरीक किया अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी उसका ठिकाना जहन्नम है। और जालिमों की कोई सहायता नहीं करता।

हज़रत ईसा की दावत में तौहीद का मुकाम (स्थान)

हज़रत ईसा ने जिस सुन्दर सरल तथा बलीग अन्दाज में दावत दी। उससे वह सभी लोग आनन्दित होते है जिन्हों तौहीद को पहचाना नबियों और पैगम्बरों की सीरत (चरित्र) को भली प्रकार जाना और अल्लाह को पहचाना और उस पर अमल भी किया। उसी के आगे झुके उससे भयभीत रहे। हज़रत ईसा ने अपने अल्लाह के बन्दे होना को बुरा न माना और न मुकरब।

फिरिश्तो ने बन्दे होने को बुरा माना और जो अल्लाह की बन्दगी को अपने लिये बुरा समझेगा और करेगा उन सबको अल्लाह जहन्नम में डाल देगा। लेकिन जो लोग ईमान लाये अच्छे कार्य किये हम उनको पूरा पूरा बदला देगे और अपने फज्ल से और अधिक बदला देंगे। और जिन्होने इबादत को बुरा जाना और घमण्ड किया उनको हम बड़ा कष्ट वाला अजाब देंगे। और वह अल्लाह के अलावा किसी को अपना न सहायेगी व हमदर्द नहीं पायेंगे।

कियामत का मंजर

कुर्आन ने अपनी बलागत, फसाहत और अपने अन्दाजे ब्यान में कयामत की मन्जरकशी की है जिसमें हज़रत ईसा अपनी बराअत (बचाव) करेंगे। उन सब गलत बातो से जो लोग उन के बारे में कहते रहे हें और उन गलत बातों पर अमल करते रहे है। हज़रत ईसा अपनी दावत

को बड़े खुले शब्दों में खोलकर रख देंगे। अपनी स्थिति स्पष्ट करेंगे। उस मुआमले में जो उन की कौम शिर्कया कौम इख्तियार किये कि यह शिक्षा मैंने नहीं दी, इस उत्तरादायी वह स्वयं है। कुर्आन को पढ़ो और कुरआन विरामथल और कयामत की उपस्थितिकी मंजरकशी को देखों और महसूस करो। कुर्आन बताता है :–

"ऐ ईसा बिन मरियम क्या तुमने लोगों से कहा था, कि मुझे और मेरी माता को अल्लाह की जगह उपास्य मानना हज़रत ईसा कहेंगे कि "ऐ अल्लाह तेरी ही बड़ाई है। ऐसी बात मैं कैसे कह सकता हूँ जिस का मुझे अधिकार नहीं है। यदि मैंने ऐसी बात कही होती तो वह तेरी जानकारी में होती मेरे दिल में जो भी है। उसकी तुझे खबर है। लेकिन तेरे मन की जानकारी मुझे नहीं तू तो छुपी चीजों का भी जानकार है मैंने तो वही बात कही जिसका तूने मुझे आदेश दिया कहा कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा परवरदिगार हैं। और जब तक मैं उन की खबर रखता रहा। और जब मुझे उठा लिया तो मेरे बाद उनका तू ही निगराँ था। तू हर चीज का गवाह है। यदि तू उनको सजा देना चाहे तो वह तेरे बन्दे हैं और यदि तू उनको माफ कर दे तो तू बड़ा प्रभुत्व शाली तत्वदर्शी है" अल्लाह कहेगा आज के दिन सच्चों को उनकी सच्चाई का लाभ मिलेगा उनको

जन्नत मिलेगी। जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें वे सदैव रहेगे। अल्लाह उनसे राजी हुआ और वह अल्लाह से राजी हुए। वह बड़ी सफलता होगी यह धरती और यह आकाश तथा इसमें जो भी चीजें हैं वह अल्लाह के लिये है और वह हर चीज पर कादिर है।"

विश्वास से स्पष्ट मूर्ति पूजा की ओर कदम

मसीही प्रचारको ने अपने सोच विचार के मुताबिक और अपने हज़रत ईसा की तालीम, उनकी दावत को यूरोप में मुन्तकिल किया। एक जमाने वहा बुतपरस्ती फैली हुई थी यूरोप बुत परस्ती में डूब हुआ था। यूनान के लोग भी बुत परस्त थे उन्होंने अल्लाह के गुणों को अलग अलग उपास्य कल्पित कर रखा था और उनके बुत गढ़ रखे थे और उनके लिये कलीसा और गिरिजा घर बनाए और अल्लाह की सिफात पर बुतों के अलग–अलग नाम रख लिये कोई रिजक का कोई रहमत का और कोई कहर का बुतपरस्ती रोमियों के खून में रच–बस गई थी। और वह इसमें डूब गये थे। और खुराफात अर्थात बेकार की बातों में पड़ गये थे दीन की असल रूह उनके दिलों से निकल चुकी थी। रूमी बहुत से मअबूदों की इबादत व पूजा करते थे जब उन में नसरानीयत पहुँची और जब फिलिस्तीन पर कुस्तुनतीनिया वाले 306 ई0 में मसीही बने और नया दीन इख्तियार किया और उसको सरकारी धर्म

बना दिया तो नसरानीयत ने यूनानियों से बुत परस्ती और उनके फलसफ से बहुत कुछ लेना आरंभ किया और धीरे धीरे बुत परस्ती से करीब होने लगे जिस से मसीही दीन की असलियत तथा उसकी रूह समाप्त हो गई। और पूरब की सादगी जाती रही वहदानियत का तसव्वुर (कल्पना) ख़त्म हो गया। कुछ ऐसे मुनफ़िक इस धर्म में आ गये जो पुराने विचारों तथा बुतपरस्ती को हवा देने लगे और एक नये धर्म की बुनियाद डाल दी। इस तरह बुत परस्ती और मसीहीयत एक साथ चलने लगी। नसरानियत धीरे–धीरे उस मार्ग को छोड़ बैठी जो हज़रत ईसा ने दिखाया था उस शिक्षा और तालीम को भुला दिया जो हज़रत ईसा ने दी थी। वह सही रास्ते से भटक गये उस राही की भांति जो अपने रास्ते से भटक गया हो अपने इरादे से था बिना इरादे के रात की अंधेरी में तो उस की यात्रा उस को अन्त में पहले रास्ते से न मिला सकेगे।

इस हिकमत और बारीकी को वही समझ सकता है जिसने इन धर्मों के इतिहास का अध्ययन किया हो। अल्लाह ने इन को गुमराह बताया और यहूद को प्रकोप भागी बताया है। चुनांच मुसलमानों की जबान से कहा :—

"ऐ अल्लाह हमे सीधे रास्ते पर चलने की तौफीक दे उनके रास्तों पर हमको चला जिस पर चलने वालों

पर तेरी तौफीक दे उनके रास्तों पर हमको चला जिन पर तेरी रहमत और इनआम रहा है हमको उनके रास्तों पर न चलाना जो तेरी रहमत से महरूम रहे और गुमराही के कारण तेरे गजब के हकदार बने। मसीहीयत का अपनी अस्ल से हट जाना एक दुखद घटना है। यूरोप के लिये और सारी मानवता के लिये जिस का नेतृत्व यूरोप ने एक लम्बे काल तक किया और अब तक उसकी प्रधानता बाकी है।

अल्लाह के सब कुछ पहले भी रहा है और बाद में अल्लाह ही के इख्तियार में सब कुछ है पहले भी और बाद में भी उसी का सब कुछ होगा।

समाप्त

अन्तिम नबी

हज़रत मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

नबियों के क़िस्से

भाग 2

लेखक

सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह.)

(मौलाना अली मियाँ)

अनुवादक

सय्यद अहमद अली नदवी

प्रकाशक :

सत्यमार्ग प्रकाशन

(हिंदी अकादमी)

अल–आफ़िया

504/45/2D, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ

पुस्तक : नबियों के क़िस्से (भाग–2)

लेखक : सय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह.)

अनुवादक : सय्यद अहमद अली नदवी

पृष्ठ : 176

मूल्य : Rs.60/-

पुनः मुद्रित : जुलाई सन् 2011

प्रकाशक : सत्यमार्ग प्रकाशन

यूनिट : अल–आफ़िया *(रजिस्टर्ड ट्रस्ट)*

(हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह॰) की स्मृति में स्थापित)

504/45/2D, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ

Phone: 0522-2741230 E-mail: al_aafiya@yahoo.com

मिलने का पता :

- अल–आफ़िया, 504/45/2D, टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ
- नदवी बुक डिपो, दारूल उलूम नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
- एकाडमी आफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन, दारूल उलूम नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
- मकतब–ए–इस्लाम, गोइन रोड, लखनऊ

विषय सूची

प्राचीन काल

हज़रत ईसा बिन मरयम के बाद

हज़रत ईसा के बाद आपके प्रेषण का काल (बिअ़सत का ज़माना) अधिक लम्बा हो गया था। दुनिया में तारीकी (अंधकार) बढ़ गई थी। और नबियों की शिक्षा की रोशनी (प्रकाश) समाप्त हो गयी थी। नबियों ने जो शिक्षा दी थी तौहीद (एक ईश्वर) का जो पैगाम (संदेश) दिया था और नबियों नें जो आवाज उठाई थी वह दब गयी थी लोग उसको भूल बैठे थे। जो चिराग नबियों ने जलाया था लोगों ने उसको बुझा दिया था।

पुराने दीन

बड़े बड़े दीन और अन्त में ईसाईयत जिसको लोगों ने खिलवाड़ बना लिया था दीन में हर प्रकार की तब्दीली परिवर्तन करने वालों ने उसकी रूह (प्राण) निकाल दी और उसकी असल शक्ल समाप्त कर दी और यह बिगाड़ इस हद तक हो गया कि यदि वह नबी जिन पर वह दीन आया था। दोबारा दुनिया में आते तो वह अपने इस दीन को पहचानने से इनकार कर देते ला इल्मी (अनभिज्ञता) का इजहार करते। य़हूदियत चूं चूं का मुरब्बा हो गयी जिसमें न तो जिन्दगी थी और न रूह। उसके पास न दीन का पैगाम था और न दावत देने का कोई कार्यक्रम तथा योजना। दीन लोगों के लिए दर्दे सर बन गया था।

ईसाइयत अपने प्रथम काल में ही कौम के कट्टर पंथियों के जरिये तहरीफ़ (तबदीली) का शिकार हो गयी। उसका परिणाम यह निकला कि हजरत ईसा की शिक्षा और उनके दीन का प्रकाश मंद पड़ गया। अल्लाह की इबादत (पूजा) भूल बैठे। मजुस जो आग (अग्नि) की पूजा करते थे। उसके लिए पूजा स्थान और पूजा घर बनाते थे पूजा

घर के बाहर वह बिल्कुल स्वतंत्र थे। अपनी इच्छानुसार अपना जीवन बिताते थे उनका न कोई धर्म था और न कोई कर्म। उनके कर्म और धर्म में बड़ा अन्तर था।

बौद्ध धर्म से जो मध्य एशिया और भारत में फैला हुआ था वह बुतों की पूजा में बदल गया। बोफ की (बुद्ध की) मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करने लगे और ब्राह्मण – जो भारत का असली धर्म कहा जाता था अपनी पूजा तथा मूर्तियों की संख्या में विशेषता रखता था भगवानों की संख्या करोड़ों में होने के कारण इस धर्म ने अपनी विशेषता खो दी और इन्सानियत समाप्त हो गयी।

जहाँ तक अरबों का प्रश्न है वह अन्तिम दौर में हजरत इब्राहिम की शिक्षा को भुलाकर ऐसी बुतों की पूजा करने लगे जिसकी मिसाल भारत के सिवा कहीं न थी। वह शिर्क (अल्लाह के साथ पूजा में किसी को शामिल करना) में पड़ गये। और अल्लाह को छोड़कर बहुत से भगवानों की पूजा करने लगे। पूरी कौम बुतों की पूजा करने लगी हर क़बीले, शहर हर घर का एक अलग बुत और भगवान था। हजरत इब्राहिम ने काबे का निर्माण केवल अल्लाह की पूजा के लिए किया था, कौम ने उसमें 360 बुत रखकर उसको बुत खाना बना डाला था।

जजीरतुल अरब (अरब खाड़ी)

अरबों का चरित्र और कर्म बिगड़ चुका था उनमें शराब और जुए की आदत पड़ चुकी थी। उनके दिल (हृदय) सख़्त हो गये थे। उससे मनुष्यता नम्रता निकल चुकी थी वह अपनी लड़कियों को जिन्दा गाड़ने लगे थे। काफिलों को लूटना, स्त्रियों की लज्जा से खेलना उनकी आदत हो गयी थी। उनकी इज्जत को जानवरों के समान समझते थे किसी के मरने पर उसकी पत्नियां माल और सवारी की तरह उसके वारिसों में बटती थीं। बच्चों को मार डालने का चलन पड़ गया था। केवल इस

भय (डर) से कि उनका खर्च उनको सहन करना होगा। एक दूसरे का कत्ल करना और लड़ते रहना उनकी आदत बन गयी थी। कभी–कभी यह लड़ाइयाँ चालीस वर्षों तक चलती रहती और यह उनके लिए गर्व और खेल व तफरीह की बात थी। इस आपसी लड़ाई में हजारों आदमियों का मर जाना कोई महत्व नहीं रखता था।

जल तथा स्थल में उत्पात

आपके जन्म से पूर्व लोग अपने पैदा करने वाले (स्वामी) को भूल गये थे। पिछले नबी जो शिक्षा दे गये थे उसको भुला दिया था। अपनी इच्छा और ख्वाहिश को भगवान समझ लिया था। उनके दिल से अच्छाई और बुराई का फर्क (अन्तर) जाता रहा ऐसा जान पड़ता था कि जैसे उस जमाने में कोई ऐसा नहीं था जिसको अपने दीन की चिन्ता और फिक्र हो जो अपने पैदा करने वाले की वास्तव में पूजा करे और उसकी पूजा में किसी को शरीक न करे (शामिल न करे)।

नबी को अरब खाड़ी में क्यों भेजा गया

अल्लाह ने इस्लाम की दावत के लिए अरब का चयन किया ताकि इस्लाम की शिक्षा पूरे संसार में फैले। अरबो का दिल साफ स्लेट की तरह था जिस पर अभी तक कोई लिपि (लिखावट) नहीं लिखी गयी थी जिसका मिटाना असंभव होता है। इसके अतिरिक्त उस जमाने में ईरानी, रूसी और भारत वालों को अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा उन्नति पर गर्व था और अरब जिनके दिल साफ व छल–कपट से दूर थे केवल उनके दिलों में जिहालत थी।

वह अशिक्षित थे उनमें देहाती पन था जो आसानी से दूर किया जा सकता था और इसकी जगह (स्थान) नई शिक्षा दी जाती तो उसको स्वीकार करना उनके लिए सहल और आसान था। यह अरब दीने

फ़ित्रत (प्रकृति) पर उस समय तक कायम थे। यदि कोई हक़ की सच्ची बात उनके समझ में न आती तो वह जंग करते थे लड़ते थे। जब सत्यता उनको मालूम हो जाती, आँखों से अंधकार का परदा हट जाता तो वह फिर सत्यवादियों से प्रेम करते, उनका आदर करते, सत्य को गले लगाते और उसके लिए यदि आवश्यकता पड़ती तो अपनी जान भी देते थे। यह बलवान थे। घुड़ सवार थे अमानतदार थे।

अरब खाड़ी व मक्का में काबा था यह काबा जिसका निर्माण हज़रत इब्राहिम और उनके सुपुत्र हज़रत इस्माईल ने किया था ताकि लोग अल्लाह की बग़ैर किसी को शरीक् किये इबादत (पूजा) करें और यह काबा तमाम दुनिया के लिए दावत (प्रचार) और अल्लाह की इबादत के लिए कियामत तक (केन्द्र) मरकज बना रहे।

"बेशक यह पहला घर है जो लोगों के लिए अल्लाह की पूजा हेतु बनाया गया जो मक्का में है। जो हिदायत और बरकत के लिए है।"

(सूरह आल इमरान)

बेसत के पूर्व (मक्का और कुरैश)

हज़रत इब्राहिम ने मक्का का इरादा किया। यह मक्का पहाड़ों से घिरा एक चटयल मैदान था। उसमें ऐसी कोई चीज नहीं थी जिस पर मनुष्य के जीने का सामान हो, न वहाँ खाने की कोई चीज थी और न पीने के लिए पानी था। हज़रत इब्राहिम के साथ उनकी पत्नी हाजरा और उनके सुपुत्र इस्माईल थे। बुत परस्ती से भाग कर यहाँ आये थे जो संसार में फैली हुई थी। यहाँ आने का कारण केवल यह था कि वह एक खुदा की पूजा की जगह का निर्माण करें जिसको (केन्द्र) मरकजियत प्राप्त हो जिसमें केवल एक अल्लाह की इबादत (पूजा) हो और जो लोगों के लिए हिदायत का (स्तंभ) मीनार और पनाहगाह हो।

अल्लाह ने आप के इस कार्य को स्वीकार किया और अल्लाह ने इस काम में बरकत दी अल्लाह ने इस छोटे से परिवार जो एक पुत्र और माता पर शामिल था और जिनको इब्राहिम ने एक बंजर जमीन पर छोड़ दिया था। जो संसार से कटा था अल्लाह ने उनके पीने के लिए ज़मज़म का कुँआ निकाला और उसमें बरकत दी कि संसार के लोग उसका पानी पीते हैं। और अपने साथ ले जाते हैं। हज़रत इस्माईल पल बढ़ कर थोड़े बड़े हुए। हज़रत इब्राहीम ने उनको ज़बह करने का इरादा किया उस समय हज़रत इस्माईल लड़कपन की अवस्था में थे। हज़रत इब्राहिम ने जो स्वप्न देखा उसको वह हकीकत (वास्तविकता) बनाना चाहते थे। वह अपनी प्रिय वस्तु (बेटा) अल्लाह की मुहब्बत पर कुरबान करने वाले थे हज़रत इब्राहिम ने स्वप्न में पाये आदेश को स्वीकार किया और उसका पालन करने की अपनी इच्छा प्रकट की। और बेटे के ज़ब्ह पर तैयार हो छूरी चला दी। परन्तु अल्लाह ने महान ज़बीहे से उसका फिदया दिया और हज़रत इस्माईल को सुरक्षित रखा ताकि अल्लाह की दावत में वह हज़रत इब्राहिम का हाथ बटायें और उनको रसूलुल्लाह के जद्दे अमजद (पुरखा) होने का शरफ (गर्व) प्राप्त हो।

हजरत इब्राहिम मक्का लौट कर आये और बाप बेटे ने मिलकर काबा का निर्माण किया। इन दोनों ने इसको स्वीकार करने और इसमें बरकत पैदा करने की अल्लाह से दुआ की कि वे दोनों इस्लाम के लिए जिये और इस्लाम के लिए मरें और अल्लाह उनकी औलाद में एक नबी भेजे जो हज़रत इब्राहिम की दावत का नवीनीकरण करे और उस कार्य को पूरा करे जिसको उन्होंने प्रारम्भ किया है। हज़रत इब्राहीम और इस्माईल दोनों काबा की दीवारे उठा रहे थे और यह दुआ करते जाते कि "हमारे मालिक हमें अपना फरमाबरदार (आज्ञाकारी) बना। हमारी औलाद में से एक गिरोह को अपना फरमाबरदार सेवक बना। ऐ

अल्लाह हमको इबादत (पूजा) का तरीका बता और हम पर दया दृष्टि कर। तू वास्तव में दया करने वाला है। ऐ हमारे परवरदिगार (पालनहार) उन लोगों में से ही एक पैगम्बर भेज जो उनको तेरी आयते पढ़ पढ़ कर सुनाये और किताब व दानाई सिखाये और उनके दिलों (हृदय) को पाक साफ करे बेशक तू हिकमत वाला है और ग़ालिब (बलवान) है।"

(सूरह बक़रह)

अल्लाह ने उनकी संतान में बड़ी बरकत दी और यह परिवार खूब फला और फूला। अदनान की खूब संतान हुई। यह हजरत इस्माईल के पोते थे इन्ही की संतान में फहर बिन मालिक थे। इनकी औलाद में कुसई बिन कुलाब थे जो बैतुल्लाह (काबा) के मुहाफिज और निगरां थे। उन्हीं के पास काबा की चाबियाँ (कुन्जी) थीं। ज़म ज़म के पिलाने का प्रबंध इनके पास था। हज के मौसम में लोगों की मेहमानदारी इन्हीं के सुपुर्द थी मजलिसे नदवा में परामर्श तथा महत्वपूर्ण कार्य हेतु सभाओं का प्रबन्ध इनके पास था। मक्का का हर प्रकार का आदर इनको प्राप्त था। जंग तथा लड़ाई के समय झन्डा इनके पास होता था।

इनकी संतान में यह शरफ तथा आदर अब्दे मुनाफ को प्राप्त हुआ। हाशिम, अबदे मुनाफ के बड़े पुत्र थे। वह अपनी क़ौम के बड़े थे। उन्हीं के पास ज़म ज़म के पिलाने तथा हज के मौसम में मेहमांनदारी (जियाफ़त) का प्रबंध इन्हीं के पास था और यह रसूलुल्लाह के दादा अब्दुल मुत्तलिब के पिता थे। अब्दुल मुत्तलिब को मेहमान नवाजी और सिकाया का पद अपने चाचा मुत्तलिब बिन अब्दे मुनाफ से प्राप्त हुआ। इनको जो आदर, शोहरत और नेक नामी प्राप्त हुई वह इनके बाप दादा में किसी अन्य को प्राप्त नहीं हुई। फहर बिन मालिक की औलाद का नाम कुरैश पड़ा इसी नाम से इस क़बीले की शोहरत

हुई। यही नाम सब नामों पर ग़ालिब रहा। अरब के लोगों में कुरैश नाम बड़े आदर और ताज़ीम से लिया जाता था सब कबीलों में इज्जत थी, मान था इस कबीले में अच्छी और बलीग़ व फसीह जबान (भाषा) बोली जाती थी। व्यवहार में, बहादुरी में उनका कोई मुकाबिल नहीं था और यह कबीला लड़ाई झगड़ा से सदैव दूर रहता और झगड़ों को ना पसन्द करता था कुरैश हज़रत इब्राहिम और उनके सुपुत्र हज़रत इस्माईल के दीन धर्म पर कायम थे। तौहीद और अल्लाह की वहदानियत पर विश्वास था इन में अम्र बिन लही पहला व्यक्ति है जिसने इस दीन में तबदीली पैदा की और बुत परस्ती (पूजा पाठ) की नींव रखी। जानवरों का आदर (ताजीम) करवाया और भगवान के नाम पर साडों को छोड़ने की परम्परा चलाई। हराम व हलाल की नित नये ढंग निकाले जो हजरत इब्राहिम की शरिअ़त के विपरीत थे। अम्र शाम़ गया उसने वहा बुतों की पूजा करते लोगों को देखा। यह पूजा पाठ उसको भला लगा उसने वहाँ से कुछ मूर्तियां लीं और उनको लेकर मक्का आ गया। और उन मूर्तियों को काबा में रखवा दिया और लोगों को उनकी पूजा और उनका आदर करने को कहा कुछ लोगों का कहना है कि बुत परस्ती की (नींव) बुनियाद धीरे धीरे इसी प्रकार पड़ी। प्रारम्भ (शुरू) में जो लोग मक्का से बाहर सफर (यात्रा) पर जाते वह अपने साथ अरब के कुछ पत्थर तबररूक (प्रसाद) के तौर पर ले जाते थे। उसके बाद जो पत्थर उनको पसन्द आ जाता उसको वह पूजा के लिए रख लेते थे।

फील की घटना

यह घटना इस बात की प्रमाण थी कि कोई बड़ी घटना होने वाली है। और अल्लाह् (भगवान) अरब वालों के साथ भलाई का मामला करने वाले हैं। और अल्लाह ताला काबा को जो श्रेणी शान व आदर देने वाले हैं वह दुनिया व संसार में किसी घर को नहीं मिलेगा।

इस घटना का सारांश (खुलासा) यह है कि अबरहा अल अशरम जो नज्जाशी की ओर से सनआ में राज्यपाल था उसने सनआ में एक बड़े गिरजे का निर्माण कराया और उसका नाम कुल्लैस रखा उद्देश्य केवल यह था कि अरबों के हज का रूख़ उस तरफ हो जाये उसके लिये यह दुख और कष्ट की बात थी कि काबा की यह हैसियत बाकी रहे कि हर ओर (दिशा) से लोग काबा आएं हज करें। यह स्थान गिरजा को मिलना चाहिए यही उसका उद्देश्य था।

अरब यह पसंद नहीं करते थे कि काबा के बराबर कोई दूसरा घर काबा का स्थान ले। काबा की मुहब्बत उसका आदर अरबों के खमीर (घुट्टी) में पड़ा था। वह किसी प्रकार किसी दशा में काबा का स्थान किसी को देने के लिए तैयार नहीं थे। इसका बड़ा चर्चा हुआ और हर जगह इसकी बात होने लगी। चुनांचि एक कनानी कुल्लेस जाकर उसे नापाक कर दिया। अबरहा को यह बात बहुत बुरी लगी। और उसने गुस्से में कसम खाई कि वह काबा को अवश्य नष्ट करेगा। अबरहा इस कार्य के लिए लश्कर लेकर निकल पड़ा उसके साथ हाथियों की एक बड़ी संख्या थी। जब अरबों ने यह बात सुनी तो उन पर बिजली गिर पड़ी। वह बहुत डरे और इसका प्रयत्न करने लगे कि किसी प्रकार इस लश्कर को रोका जाये। उनको यह एहसास हुआ कि वह लश्कर रोक न सकेंगे। अन्त में उन्होंने यह मामला अल्लाह पर यह सोचकर छोड़ दिया कि यह घर अल्लाह का है वही इसकी रक्षा करेगा।

अबरहा और अब्दुल मुत्तालिब के बीच हुई बात चीत से यह बात सिद्ध होती है। अबरहा ने उनके दो सौ ऊँट पकड़ लिये थे उनको लेने के लिए जब वह अबरहा के पास गये तो उसने उनका आदर किया उनके लिए पलंग से नीचे उतर आया और उनको अपने पास बिठाया और उनसे उनके आने का कारण जानना चाहा। उन्होंने अबरहा से कहा कि मैं अपने दो सौ ऊँट जो तुमने पकड़ लिए हैं वापस लेने आया हूँ।

जब वह अपनी बात कह चुके तो अबरहा ने उनको लज्जित करते हुए कहा कि तुम मुझसे दो सौ ऊँटों के लेने की बात कर रहे हो और उस घर की बात नहीं करते जो तुम्हारे और तुम्हारे बाप दादा का दीन व धर्म है। मैं तो उसको (ढाने) गिराने आया हूँ। अब्दुल मुत्तालिब ने उसको उत्तर दिया कि मेरा मामला ऊँटों से सम्बन्धित है। घर का मामला अल्लाह का है। यह घर अल्लाह का है। वही इसकी रक्षा करेगा। अबरहा बोला सम्भव नहीं कि मुझे कोई रोक सके। उन्होंने उत्तर दिया तुम जानो और वह जाने।

कुरैश अबरहा के लश्कर और उस अत्याचार (जुल्म) व ज़ियादती से बचने के लिए पहाड़ों पर चढ़ गये। देख रहे थे कि अल्लाह अपने घर की सुरक्षा कैसे करता है। अब्दुल मुत्तल्लिब और उनके साथ कुरैश के कुछ लोग काबे के दरवाजे का कुन्डा पकड़कर अल्लाह से अबरहा और उसके लश्कर से सुरक्षित रहने की दुआ कर रहे थे अबरहा अपने लश्कर के साथ काबा को गिराने को बढ़ा उसके हाथी का नाम महमूद था। वह हाथी मक्का के रास्ते (मार्ग) में बैठ गया उसको उठाने के लिए उसे बहुत मारा लेकिन मार खाने के बाद भी वह जमीन से नहीं उठा। उसका रूख जब यमन की ओर किया तो वह उठकर भागने लगा। उसी समय अल्लाह ने समुद्र के रास्ते चिड़ियाँ भेजी हर चिड़िया कंकरियां उठाये हुए थी। यह कंकरियां (पत्थर) जिसको लग जाता वह मर जाता यह देख कर हबशा वाले जिस रास्ते से आये थे उसी रास्ते से भागने लगे। चिड़ियों के पत्थरों से वह गिरते रहे और मरते रहे। अबरहा का जिस्म भी छलनी हो गया उसके साथी उसको अपने साथ वापस ले जाने लगे तो उसका एक एक पोर गिरने लगा। उसको लेकर जब सनआ आये तो वह बहुत बुरी मौत मरा। इसका कुर्आन ने इस तरह वर्णन (ब्यान) किया है कि

"तर्जुमा"-"क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों

के साथ क्या किया। क्या उनका दांव गलत नहीं किया और उन पर झुण्ड के झुण्ड चिड़ियां नहीं भेजी जो उन पर कंकरीले पत्थरों को फैंकती थी और उनको ऐसा कर दिया गोया खाया हुआ भूसा।"

(सूरह फील 1.5)

जब अल्लाह ने हबशा वालों को असफल लौटाया और अल्लाह ने उन्हें अजाब (पाप) पहुंचाया तो उससे अरबों में कुरैश का आदर बढ़ गया और वह कहने लगे कि वह तो अल्लाह वाले हैं। अल्लाह ने उनकी तरफ से लड़ाई लड़ी और दुश्मन को शिकस्त दी। इस घटना की विशेषता बढ़ी। कहा जाने लगा कि यह घटना फील वर्ष में हुई, उस लड़के का जन्म फील वर्ष में हुआ। यह बात या घटना फील वर्ष के पूर्व या बाद में हुई। अस्हाबुल फील की घटना स0 570 ई0 में घटी।

अब्दुल्लाह व आमना

कुरैश के सरदार अब्दुल मुत्तलिब के 10 पुत्र थे। अब्दुल्लाह उनके बीच के बेटे थे। अब्दुल्लाह का विवाह उन्होंने बनी जहरा क़बीले के सरदार वहब की बेटी (पुत्री) आमिना से किया। आमिना उस समय कुरैश में अपनी फज़ीलत (श्रेष्ठता) व रूतबे में खातूने अव्वल (प्रथम महिला) थीं। जब आमिना गर्भवती (हामिला) थीं तो अब्दुल्लाह का देहान्त हो गया। हज़रत आमिना को ऐसे प्रमाण मिल रहे थे कि उनका लाल (सुपुत्र) बड़ी शान वाला होगा।

आपका जन्म (पैदाइश)

रसूलुल्लाह की पैदाइशे मुबारक (शुभ जन्म) रबीउल अव्वल की 12 तारीख सोमवार को हुई। हजरत ईसा के 570 वर्ष के बाद अतः संसार में यह दिन सबसे जियादा मुबारक और सबसे पवित्र तिथि थी। आपका शजरा (जन्म कुण्डली) निम्न प्रकार है। मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह

बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम, बिन अब्दे मुनाफ, बिन कुसई, बिन किलाब, बिन मुर्रा बिन काब, बिन लुई, बिन ग़ालिब, बिन फ़हर, बिन मालिक, बिन नजर, बिन कनाना, बिन खुजैमा, बिन मदरका, बिन इलयास, बिन मुजेर, बिन मआद, बिन अदनान- अदनान का नसब हज़रत इसमाईल बिन इब्राहिम पर समाप्त होता है। आपका जन्म हो जाने पर आपकी माता ने आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब को यह कहला कर बुला भेजा कि आपके पोते का जन्म हुआ है। सूचना पाते ही दादा आये आपको देखा आप को गोद में लिया और उनको लेकर काबे में दाखिल हुए और अल्लाह से दुआ की, अल्लाह की प्रशंसा की और आपका नाम मुहम्मद रखा। यह नाम अरबों के लिए बिल्कुल नया था इसलिए अरबों को इस नाम पर आश्चर्य हुआ।

रज़ाअत दूध पिलाने के दिन

अब्दुल मुत्तलिब को अपने यतीम पोते के लिए जो उनकी औलाद में सबसे जियादा अजीज़ थे अरबों के रिवाज के अनुसार आया (दूध पिलाने- खिलाने वाली) की तलाश हुई जो अरब देहात की हो। यह सआदत हज़रत हलीमा सादिया के भाग में आई। वह बच्चे की तलाश में शहर आयी थीं। वह (काल) सूखे का जमाना और बड़े कठिन दिन थे। हर दाई चाहती थी कि उसको किसी मशहूर धनवान का बच्चा मिले। इसी कारण दाइयों ने आपको स्वीकार नहीं किया केवल यह सोचकर कि एक यतीम के दादा से उनको क्या प्राप्त होगा। पहली बार दाई हलीमा ने भी यह सोचकर रसूलुल्लाह को स्वीकार करने में हिचकिचाहट महसूस की। लेकिन फिर उनका इरादा आपको लेने के लिए बदला। अल्लाह ने उनके दिल में आपकी मोहब्बत पैदा की और उन्होंने हुज़ूर को स्वीकार किया। उनको कोई दूसरा बच्चा नहीं मिला था। वह आपको लेकर क़ाफ़िले में आई तो उन्होंने आपकी बरकत

अपनी आखों से देखी। हर चीज़ एक नई शान और हर चीज में बरकत नजर आई। दूध में दूध वाले जानवरों में, बूढ़ी ऊँटनी में तथा गधी में। उनके साथ जो भी दूध पिलाने वालियां साथ आयी थी कहने लगी कि हलीमा तुमको बड़ा मुबारक (भाग्यशाली) लड़का मिला है। इसी कारण उनको दाई हलीमा से जलन होने लगी। अल्लाह की तरफ से खैरो बरकत का मामला बराबर रहा यहाँ तक कि बनी सअ़द में आपकी आयु मुबारक के 2 वर्ष पूरे हो गये। और बीबी हलीमा ने आपका दूध छुड़ा दिया। आपकी परवरिश दूसरे बच्चों के मुकाबले भिन्न थी इसी अवधि में बीबी हलीमा आपको लेकर आपकी मां की खिदमत में उपस्थित हुई साथ ही यह इच्छा भी प्रकट की, कि कुछ समय के लिए आप को उनके पास और रहने दिया जाये। हज़रत आमिना ने हज़रत हलीमा को इसकी अनुमति दे दी और वे आपको लेकर फिर लौट आई, वापसी के बाद एक दिन बनीसअ़द (जंगल में बकरियां चराने के दौरान) दो फरिश्ते आपके पास आये और आपका सीनए मुबारक खोला और आपके हृदय से गोश्त के टुकड़े के समान एक काली चीज़ निकाली और फैंक दी, आपके दिल को खूब साफ किया, धोया फिर उसको वापस रखा और सीने को उसी हालत में कर दिया जैसे पहले था।

रसूलुल्लाह ने अपने दूध शरीक भाइयों के साथ बकरियां चरायीं और आपकी परवरिश प्राकृतिक सरल वातावरण तथा सुरक्षित ग्रामीण जीवन एवं बनू सअ़द की प्रसिद्ध स्वच्छ भाषा में हुई। बनू सअ़द की वाक्य सरलता (फसाहत) ख्याति थी। आप हर एक के प्रिय थे आपके (दूध सम्मिलित) भाई आपको बहुत चाहते थे आप भी उनसे मुहब्बत करते थे। कुछ दिनों के बाद आप अपनी माता तथा दादा के पास लौट आये और अल्लाह ने आपकी अच्छी तरबीयत की।

आमिना व अब्दुल मुत्तलिब का देहांत

जब आप 6 वर्ष के हुए तो आमिना का देहांत (इन्तकाल) अबवा (जो मक्का और मदीना के बीच में है) में हो गया। फिर आप अपने दादा के पास रहने लगे, वह उनका बड़ा ख्याल रखते कअ्बे की छांव में अपने बिछौने पर बिठाते और बड़ी शफ़्कत फरमाते। जब आपकी आयु 8 वर्ष की हुई तो दादा अब्दुल मुत्तलिब का देहांत हो गया।

अपने चाचा अबूतालिब के साथ

आपने दादा अब्दुल मुत्तलिब के देहांत के बाद अपने चाचा अबूतालिब के साथ रहने लगे यह अब्दुल्लाह के सगे भाई थे (एक मां-बाप से) अब्दुल मुत्तलिब, अबूतालिब को इसके लिए वसीयत भी किया करते थे अतः आप उनके साथ में रहने लगे। अबूतालिब अपने बेटों से भी अधिक आपको चाहते और प्यार करते थे।

आसमानी प्रशिक्षण

अल्लाह की हिफ़ाजत (रक्षा) में आप पले व बढ़े और जवान हुए हर बुराई व जाहलियत की आदतों से दूर रहे आप अपनी कौम में सबसे अधिक मनुष्यत्व वाले आदरणीय, उत्तम स्वभाव वाले उच्चता और लज्जा वाले सबसे अधिक सच्ची बात कहने वाले अत्यधिक अमानतदार और हर प्रकार की बुराई और बेहयाई से दूर रहने वाले थे। आप की कौम आपका आदर करती और आपको अमीन कहती थी। आप रिश्तों के मिलाने वाले थे लोगों का बोझ हलका करने वाला मेहमानों का इक्राम करने वाले थे। अपनी मेहनत की रोटी खाते थे। आवश्यकतानुसार गिजा पर किनाअत करते।

जब आप 14.15 वर्ष के हुए उस समय अलफुज्जार की लड़ाई कैस और कुरैश के बीच छिड़ चुकी थी। कुछ दिन आपने उस लड़ाई को बहुत करीब से देखा और आप तीरों को कुरैश तक पहुचाते थे। इस प्रकार आप को जंग का अभ्यास तथा अनुभव हुआ और शहसवारी और सिपाहगरी की जानकारी हुई।

हजरत खदीजा से आपका विवाह

जब आप 25 वर्ष के हुए तो आपका विवाह हज़रत खदीजा से हुआ जो कुरैश की श्रेष्ठ महिलाओं में से थीं तथा तमाम महिलाओं में बुद्धिमान, स्वभाववान तथा धनवान थीं। उनके पति अबूहाला का देहांत हो गया था, वह बेवा थी उस समय उनकी आयु चालीस वर्ष थी और आप सलल्लाहू अलैहि वसल्लम की आयु 25 वर्ष थी।

हज़रत ख़दीजा ताजिर महिला थीं उनके माल धन से लोग व्यापार किया करते थे। माल उनका मेहनत दूसरों की, लाभ हानि युक्ति नियम से विभाजित होता कुरैश क़ौम ताजिर (व्यापारी) क़ौम थी। जब आप सल्लाहुअलैहि व सल्लम उनका माल लेकर शाम गये तो हज़रत खदीजा को आपकी सच्चाई आपके व्यवहार तथा आपके स्वभाव की जानकारी हुई। शाम के सफर में उनकी जो श्रेष्ठता प्रकट हुई उसकी भी जानकारी उनको हुई। उन्होंने उनसे शादी करने की प्रार्थना की इसके पूर्व बड़े-बड़े सरदारों की मांगों को वह अस्वीकार कर चुकी थीं। हज़रत हमजह ने शादी का जवाबी पैगाम हजरत खदीजा तक पहुंचाया और अबुतालिब ने आपके निकाह का खुत्बा पढ़ा और विवाह हो गया। यह प्रथम खातून थी जिनसे रसूलुल्लाह ने विवाह किया। आपकी समस्त संतान इन्हीं से हुई। सिवाये इब्राहीम के।

काबा का नव निर्माण और एक बड़े झगड़े की समाप्ति

जब आप 35 वर्ष के हुए तो कुरैश ने काबा के नव निर्माण का इरादा किया और उस पर छत डालने का परामर्श हुआ। इसके पूर्व काबा मिट्टी और गारे से जोड़े बिना एक दूसरे पर पत्थर रख दिये गये थे जिसकी ऊंचाई आदमी के कद तक थी। इसको गिराकर ही नव निर्माण संभव हो सकता था।

निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ और दीवारें हजरे असवद तक पहुंची तो हजरे असवद के मामले में ज़बरदस्त मतभेद हुआ। हर कबीला चाहता था कि पत्थर के रखने का गर्व उसको प्राप्त हो। यह मतभेद बढ़कर जंग तक आ पहुँचा जाहिलियत के जमाने में तो जरा-जरा सी बात पर लड़ना झगड़ना साधारण बात थी।

वह सब जंग के लिए तैयार हो गये। बनू अबदुद दार ने खून से भरा एक बड़ा प्याला तैयार किया उन्होंने और बनू अदी ने मरते दम तक लड़ने की शपथ ली। खून के प्याले में हाथ डालकर इस शपथ की पुष्टि की। यह गोया झगड़े और लड़ाई का संकेत था इसी परेशानी और उलझन में कुरैश ने कई दिन गुजारे अन्त में इस बात पर सब सहमत हुए कि मस्जिद के दरवाजे से जो पहले प्रवेश करेगा वही हमारे बीच फैसला करेगा। जिस व्यक्ति ने पहले मस्जिद के दरवाजे से प्रवेश किया वह हुजूर की जात थी। जब उन सबने आपको देखा तो चैन की सांस ली और कहा कि यह मोहम्मद हैं, अमीन हैं, हमें इनका फैसला स्वीकार है। रसूलुल्लाह ने एक कपड़ा मंगवाया और पत्थर को अपने हाथ से उस चादर में रखा और फरमाया कि प्रत्येक कबीला इस चादर के कोनों को पकड़े और उसको उठायें। सबने मिलकर उस स्थान तक उसको उठाया जहाँ उसको रखना है। जब वहाँ तक पहुँच गया तो फिर

आपने उसको अपने हाथों से उठाकर उस स्थान पर रख दिया फिर निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। इस सूझ बूझ समझदारी व हिकमते अमली से आप ने सबको लड़ाई से बचा लिया। इससे बढ़कर इस मुआमले में और कोई तदबीर न थी।

फुजूल की शपथ

रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम फुजूल की शपथी संधि में सम्मिलित हुए जो श्रेष्ठ शपथों में सुनी गयी है। उसका कारण यह हुआ कि जुबैद क़बीले से एक शख़्स बिक्री का सामान लेकर मक्के आया जिसे आसबिन वाइल मक्का के एक सज्जन ने खरीदा लेकिन उसका हक (कीमत) रोक लिया तो जुबैदी ने मक्के शरीफ लोगों से मदद मांगी तो सब वाइल के मुकाबले में मदद से इन्कार कर दिया तो कुछ मरूव्वत वाले लोगों ने जरूरत महसूस की और अब्दुल्लाह बिन जुदआन के घर में लोग (जमा) इकट्ठा हुए। उन सबके लिए खाना तैयार किया गया और अल्लाह की कसम खाकर यह अहद लिया (शपथ ली गयी) कि वह सब यकजा होकर जालिम के मुकाबले मजलूम की हर तरह सहायता और मदद उस समय तक करते रहेंगे जब तक उसको उसका हक न मिल जाये। इस हलफ नामे का नाम फुजूल की शपथ रखा। उन्होंने कहा कि यह काम हमने अपने कर्तव्य के अलावा किया है। उसके बाद वह सब आस बिन वाइल के पास आये और जुबेदी का सामान वापस दिलवाया।

आप इस मुआहिदे से बड़े प्रसन्न थे और इस मोआहिदे की पाबन्दी की और नबी बनने के बाद फरमाया कि मैं अब्दुल्लाह बिन जुदआन के घर पर एक ऐसे मोआहिदे में शरीक था जिसमें अगर इस्लाम की दावत के साथ भी मुझे बुलाया जाये तो मैं उसे स्वीकार करूंगा। उन्होंने इस पर शपथ ली थी कि वह हकदार का हक़ दिलाएगें।

जालिम को मजलूम पर जुल्म होने से रोकेंगे। अत्याचार न करने देंगे।

यह बात अल्लाह की हिकमत और अल्लाह की तरफ से आपकी तरबियत की थी। रसुलुल्लाह उम्मी थे इसी हालत में पले और बढ़े। न वह पढ़ते थे न लिखते थे। और दुश्मनों की इलजाम तराशी से दूर रहे। कुर्आन ने कहा कि "ऐ पैगम्बर आप इस किताब से (कुर्आन) से पहले न कोई किताब पढ़े हुए थे और न कोई किताब अपने हाथ से लिख सकते थे ऐसा होता तो बातिल परस्त ज़रूर शुबहे में पड़ते। और कुर्आन ने आपको उम्मी का लकब दिया है, अतः कहा वह जो मुहम्मद रसुलुल्लाह जो नबीए उम्मी हैं, जो लोग उनकी पैरवी करते हैं। जिनके अवसाफ (गुण) को वह अपने यहां तौरात और इनजील में लिखा हुआ पाते हैं।

बिअ़सत के बाद

मनुष्यता की प्रातः तथा उसके सौभाग्य का उदय

रसूलुल्लाह सल्लूल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उमर (आयु) के 40 वर्ष पूरे फरमाये तो इनसानियत की सुबह नमूंदार हुई और सआदत तुलूअ़ हुई। अल्लाह का यह नियम रहा है कि जब पथभ्रष्टता का अंधेरा छा जाए, दुर्भाग्य का काल लम्बा हो जाए अत्याचार बढ़ जाये, नेकी और बदी का फर्क समाप्त हो जाये, इनसानियत दम तोड़ने लगे तो अल्लाह इस संसार को बचाने हेतु नबी भेजता रहा है।

जो कुछ आपने अपनी बलन्दी से देखा उससे दिल को ऐसी चोट लगी जैसे आप अकेले हों और आपको कोई उभार रहा हो, सो आपको एकान्त प्रिय होने लगा, अतः आप मक्का से इतनी दूर जाने लगे कि मक्का के घर छुप जाते और आप मक्का की घाटियों और वादियों में

घिर जाते और आप जिस पेड़ या पत्थर के पास से गुजरते उससे आवाज़ आती अस्सलमु अलेक या रसूलल्लाह। आप अपने दाये बाये और इर्द गिर्द देखते तो पेड़ों और पत्थरों के सिवा कुछ नजर न आता था।

जो बात सबसे पहले प्रकट हुई वह थी आपके सच्चे स्वप्न जो आप देखते। आप जो स्वप्न देखते वह सुबह के प्रकाश (रौशनी) के समान प्रकट होते।

गारे हिरा में

आप अधिकतर ग़ारे हिरा में एकान्त लेते, कभी-कभी लगातार कई रातें उस ग़ार में आप गुजारते। आप कुछ खाने का प्रबंध फरमा लेते आप इब्राहीमी तरीके पर अल्लाह की इबादत में व्यस्त रहते जो सीधे अल्लाह से जोड़ने वाला प्राकृतिक धर्म था।

आप सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की बिअसत

इसी प्रकार आप गारे हिरा में तशरीफ ले जाते रहे, एक बार वह घड़ी आ गई जिसमें आपको नबुव्वत मिलनी थी आपके जन्म के इकतालिसवे वर्ष रमजान की 16 तारीख थी और अगस्त की 6 तारीख वर्ष 610 ई0 था आप गारे हिरा में थे कि फरिश्ता आंया और कहा कि पढ़ो (इकरा) आपने उत्तर दिया कि मुझे पढ़ना नहीं आता। आपने फरमाया कि उस फरिश्ते ने मुझे पकड़ा और दबोचा मैंने उसकी तकलीफ (कष्ट) को महसूस किया फिर मुझे छोड़ दिया और कहा कि पढ़ो (इकरा) मैंने उत्तर दिया कि मैं पढ़ा नहीं हूँ उसने फिर मुझे पकड़ा और जोर से दबोचा कि मैने उसका दबाव महसूस किया। फिर मुझे छोड़ दिया और तीसरी बार कहा कि पढ़ो (इकरा) फिर मैंने उत्तर

दिया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। कहा कि : इक़्रअ बिस्मि रब्बिकल्लजी ख़लक, ख़लक़ल् इन्सान मिन् अलकिन, इक़्रअ् व रब्बुकल अक् रम् अल्लजी अ़ल्लम बिल् क़लमि अल्लमल् इन्सान मालम यअ़्लम्- अनुवाद " ऐ मोहम्मद अपने पैदा करने वाले का नाम लेकर पढ़ जिसने संसार को पैदा किया है। जिसने मनुष्य को खून की फुटकी से पैदा किया। पढ़ो तुम्हारा पैदा करने वाला बड़ा करीम है। जिसने कलम के जरिये शिक्षा दी और मनुष्य को वह बताया जिसकी उससे पहले जानकारी और ज्ञान नहीं था।"

(सूरह अलक 1.5)

यह नुबुवव्त का प्रथम दिन था और यह पहली वही कुरान की आयात थीं।

हजरत खदीजा के घर में

इस बात से आप डर गये इसलिए की ऐसी घटना न तो आपके साथ पहले घटी और न आपने ऐसी बात सुनी कि नुबुवव्त और नबियों का वकफा अरब में बड़ा लम्बा हो गया था। इसलिए आपको खतरा महसूस हुआ। आप इस हालत में घर तश्रीफ लाये कि आपके पहलू भय से कंपकंपा रहे थे और आप फरमा रहे थे मुझे उठाओ। मैं खतरा महसूस कर रहा हूँ।

हज़रत खदीजा ने इसका कारण पूछा तो आपने सारा किस्सा सुना दिया। हजरत खदीजा समझदार और बुद्धिमान थीं। उन्होंने पहले ही से नुबुव्वत, नबियों और फ़रिश्तों के बारे में सुन रखा था। वह अपने चाचा के लड़के वरक़ाबिन नोफल की जियारत किया करती थीं जो इसाई हो गये थे और जिन्होंने आसमानी किताबों का पूरा अध्ययन किया था। इन्जील और तौरात वालों के साथ उनका उठना बैठना था। वह प्राकृतिक शुद्ध स्वभाव वालों की भांति मक्का वालों की बुराइयों

को पसन्द नहीं करती थीं।

रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के अखलाक व्यवहार (आदत) जो जाहिर और पोशीदा थे उन लोगों से अधिक जानती थी इसलिए कि आपकी पत्नी थीं। उन्होंने आपके अखलाक, आदत, व्यवहार को देखा तो यह यकीन हो गया कि आप अल्लाह के चुने हुए बन्दे हैं। आपकी सीरत पसन्दीदा सीरत है। और जो भी आपके ऐसे अखलाक व सीरत का मालिक होगा उस पर शैतान, जिन या जादू का प्रभाव का डर नहीं और यह बात अल्लाह के कानून उसकी दया, हिकमत, मुहब्बत के विरूद्ध है। उन्होंने बड़े विश्वास के साथ यह कहा कि–

"हरगिज नहीं खुदा की कसम अल्लाह आपको कभी ज़लील और अनादर नहीं करेगा। आप रिश्ते जोड़ते हैं। और दूसरों का बोझ उठाते हैं। मोहताज (दीन दुखी) के काम आते हैं। मेहमान की मेहमानदारी करते हैं। और आपत्ति आने पर दूसरों की सहायता करते हैं।

वरका बिन नौफ़ल के सामने

उन्होंने विचार किया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने चचा ज़ाद भाई वरका बिन नौफल के पास ले जायें जो उस समय के बड़े विद्वान थे।

आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने वरका को आप पूरा वाकिआ सुनाया जो आपने देखा था वरका ने उत्तर दिया कि बाखुदा आप इस कौम के नबी हैं। आपके पास वही नामुसे अकबर आया था जो हजरत मूसा के पास आया था और आपकी कौम आपको झुटलायेगी आपको कष्ट देगी। आपको बेघर करेगी और आपसे जंग करेगी।

जब आपने यह बातें सुनी तो आपको आश्चर्य हुआ और कहा

कि क्या यह लोग मुझे निकाल देंगे इस हालत में कि वो मेरी हैसियत जो कुरैश में है जानते हैं। मुझे अमीन की हैसियत से जानते हैं। मुझे सादिक (सच्चा) के लकब से याद करते हैं। आपने हैरत से पूछा क्या वह मुझे निकाल देंगे?

वरका बिन नौफल ने कहा कि हाँ जो बात तुम कह रहे हो और जो तुम लाये हो ऐसी बातें लेकर जो भी आया उसको लोगों ने स्वीकार नहीं किया उससे दुश्मनी की उससे लड़े जिस दिन आपकी कौम आपका विरोध करेगी अगर मैं उस दिन तक जिन्दा रहा तो आपकी भरपूर मदद करूंगा।

एक वक्त तक वह्य नहीं आयी फिर आप पर निरंतर कुरान आना आरम्भ हुआ।

हजरत खदीजा (रजि0) का इस्लाम लाना

हजरत खदीजा (रजि0) औरतों (महिलाओं) में सबसे पहली मुसलमान होने वाली महिला (स्त्री) हैं हजरत खदीजा ने आपकी हर जगह हिमायत की और सहायता की। आपको जो कष्ट पहुँचता था वह उसको कम करने का प्रयत्न करती और वह आपको ढारस् बंधाती।

हजरत अली व जैद बिन हारिसा का इस्लाम लाना

उसके बाद हजरत अली इस्लाम लाये उस समय उनकी आयु 10 वर्ष की थी। इस्लाम लाने से पूर्व वह रसूलुल्लाह के पास पले थे। अकाल में आपने उनको अबू तालिब से मांग लिया था और अपने घराने में शामिल कर लिया था। उसके बाद हजरत ज़ैद बिन हारिसा जो आपके गुलाम थे और आपने उनको मुतबन्ना (मुंहबोला) बेटा बनाया था, मुसलमान हुए। इन लोगों का मुसलमान होना वास्तव में ऐसे लोगों

की शहादत (गवाही) थी जो आपसे सबसे अधिक करीब सबसे अधिक परिचित थे। और जो आपके चरित्र, व्यवहार आपकी सत्यता के वे सबसे अधिक वाकिफ़ और जानकार थे। और घर के लोग जो कुछ वह थे उसको जियादा जानते थे।

हजरत अबू बकर का इस्लाम और इसके प्रचार में उनकी श्रेष्ठता

हज़रत अबूबकर इस्लाम लाये। वह अपनी बुद्धिमानी, समझदारी, हिम्मत मियाना रवी के कारण कुरैश में प्रसिद्ध थे और उनका एक स्थान था। उन्होंने अपने मुसलमान होने का एलान (प्रचार) किया वह कुरैश में प्रिय व्यक्ति थे उनको नसब (वंशावली) का ज्ञान था। वह प्रभावशाली थे और लोग उनसे प्यार करते थे। वह अच्छे किरदार वाले व्यापारी थे। इन्होंने अपने साथ उठने बैठने वालों में इस्लाम की दावत आरंभ कर दी। हजरत अबू बकर बालिग मर्दों में पहले इस्लाम लाने वाले थे।

कुरैश के शरीफ लोगों का मुसलमान होना

उनकी दावत से कुरैश के बहुत से नामी गिरामी (प्रसिद्ध) लोग मुसलमान हुए उन्हीं में हजरत उसमान बिन अफ्फान व जुबैर बिन अव्वाम, अब्दुर रहमान बिन औफ, सअ्द बिन वक्कास, तलहा बिन उबैदुल्लाह यह सब हुजूर की खिदमत में हजरत अबू बकर के साथ आये और मुसलमान हो गये। इसके बाद कुरैश के और लोग इस्लाम लाये जिनमें अबू उबैदा बिन जर्राह, अरक़म बिन अबी अरकम, उसमान बिन मज़ऊन व उबेदा बिन हारिस बिन मुत्तलिब, सईद बिन ज़ैद खब्बाब बिन अरत, अब्दुल्लाह बिन मसूद, अम्मार बिन यासिर, सुहेब उनके अतिरिक्त और दूसरे लोग इसके बाद लोग- औरतें और

मर्द इस्लाम लाने लगे और इस्लाम की चर्चा मक्का में होने लगी।

सफा पर खुलकर हक़(सत्य) का एलान किया

शुरू में हुजूर ने तबलीग़ छुपकर की इसमें तीन वर्ष बीत गये। फिर अल्लाह ने (खुलकर) तबलीग का आदेश दिया और कहा आपको अल्लाह की तरफ से जो हुक्म मिला है उसे लोगों को सुना दीजिये और मुशरेकीन की चिन्ता न करें। और अल्लाह ने फरमाया कि अपने करीबी रिश्तेदारों को डराइये और जो इस्लाम ले आयें और आपकी पैरवी करते हैं उनसे नम्रता से पेश आइये और फरमाया कि कह दो कि मैं तो अब खुले आम डराने वाला हूँ।

आप निकल पड़े और सफ़ा पहाड़ पर चढ़कर आपने यह जोर से पुकारा "या सबाहाह" है यह नारा अरबों के लिए जाना पहचाना था दुश्मन से जब भी कोई खतरा महसूस होता ग़फलत में शहर पर या कबीले पर हमले का तो उस समय "या सबाहाह है।" की आवाज लगाई जाती थी इस आवाज पर कुरैश के सभी लोग जमा हो गये और जो नहीं आ सकते थे उन्होंने अपना नुमाइन्दा भेजा।

आपने सबको सम्बोधित करते हुए फरमाया कि ऐ बनी अब्दुल मुत्तलिब, ऐ बनी फहर, ऐ बनी काब क्या तुम मेरी बात पर विश्वास करोगे यदि मैं यह कहूँ कि इस पहाड़ के पीछे एक फौज खड़ी है और तुम पर हमला करना चाहती है?

अरब सत्यवादी थे, अमल करने वाले थे उन्होंने आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम को ईमानदारी, अमानतदारी, सच्चाई दूसरों की भलाई चाहने वाला पाया था। वह पहाड़ पर खड़े होकर आगे पीछे देख रहे हैं जबकि हम सिर्फ अपने आगे देख रहे हैं। तो उनकी अक्ल ने उनके

इन्साफ ने यही कहलाया कि क्यों नहीं। तब आपने फरमाया कि तुमको आने वाले सख्त अजाब से डराने वाला बन कर आया हूँ।

पस कौम खामोश हो गयी लेकिन अबू लहब ने कहा कि तुम्हारा सत्यानाश हो सारा दिन, क्या केवल यही बात कहने के लिए तुमने हमें बुलाया था?

आपकी कौम का दुश्मनी पर उतर आना और अबू तालिब की आप पर शफ्कत व महब्बत

जब रसूलुल्लाहु सल्ललाह अलैहि व सल्लम ने इस्लाम की दावत खुलकर लोगों को दी और हक की बात, अल्लाह के आदेशानुसार लोगों को सुना दी तो अभी कौम आपसे दूर नहीं हुई थी न कोई जवाब दिया था यहाँ तक कि आपने उनके बुतों की आलोचना की। जब आपने उनके बुतों के बारे में कहा तो सब तिलमिला गये और आपकी दुश्मनी और मुखालिफत पर सब एक हो गये।

इस परिस्थिति में आपके चचा अबु तालिब आपके लिए ढाल बन गये। और आपके साथ बड़ी महब्बत व नम्रता का व्यवहार किया और आपका बचाव किया। अब आप इस्लाम की दावत व तबलीग में पूरी तरह जुट गये और कोई चीज उनको इससे रोक न सकी। अबूतालिब की शफकतें आप पर जारी रही और वह आपका बचाव करते रहे। जब आपकी दावत का काम जियादा दिनों तक चलता रहा तो कुरैश के लोग अबूतालिब के पास आये और कहने लगे कि ऐ अबूतालिब तुम्हारे भतीजे ने हमारे उपास्यों को गालियां दी है। और हमारे धर्म को बुरा कहा है और उसमें कीड़े निकालता है यह हमारे बाप दादा को अधर्मी (गुमराह) तथा अक्लमन्दों को बेवकूफ कहता है। पानी अब सर से

ऊँचा हो गया है। (सहन) बर्दाश्त की भी एक सीमा होती है। आप इसको समझा दें या हमारे और उनके बीच से आप अलग हो जाएं। आप तो हमारे दीन व अकीदे पर हैं। अबूतालिब ने बड़ी सूझ बूझ और नम्रता से उनसे बात की और उचित उत्तर दिया। वह सब वहाँ से वापस लौट गये।

रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम अबू तालिब के सामने

अब कुरैश में रसूलुल्लाह की चर्चा अधिक होने लगी और हर व्यक्ति ने एक दूसरे को आप सल्ललाहु अलैहि व सल्लम की मुखालफत पर उभारा और विरोध का वातावरण तैयार किया और दूसरी बार कुरैश के लोग अबूतालिब के पास आये और कहा ऐ अबूतालिब आप बुजुर्ग हैं, शरीफ हैं और आपका हमारे ह्रदय में बड़ा स्थान और आदर है। हम आपके पास बड़ी आशा लेकर आये थे कि आप अपने भतीजे को उससे रोकें जो वह कर रहा है मगर आपने कुछ न किया हमने बहुत बर्दाश्त किया अब हम बर्दाश्त (सहन) नहीं करेंगे। अब हम अपने बाप दादा की अवहेलना (जिल्लत) और अधिक सहन नहीं करेंगे। अब हम अपने देवताओं को बुरा भला कहना नहीं सुनेंगे। अतः या तो आप उनको रोकें या फिर हम उनसे लड़ेंगे आप उनसे दूर रहें यहां तक कि एक फरीक़ हलाक हो जाए। अबूतालिब पर अपनी कौम की जुदाई और उनकी दुश्मनी की बात भारी हुई और अपने भतीजे को असुरक्षित छोड़ना नहीं चाहते थे। वह नहीं चाहते थे कि वह अपने भतीजे को कौम के हवाले कर दें इसलिए उन्होंने हुजूर को बुलाया और उनसे कहा कि–

ऐ मेरे भतीजे तुम्हारी कौम के लोग मेरे पास आये थे और मुझसे ऐसा कहा तुम मुझ पर रहम खाओ और अपने पर रहम खाओ

और इतना बोझ मुझपर न लादो कि मैं उसको सहन न कर सकूं।

आपके हृदय में यह ख्याल आया कि चाचा शायद मेरे मामले में चिंतित हैं। और शायद भविष्य में सहायता अब न कर सकें तो आपने उनसे फरमाया कि,

ऐ चचा अल्लाह की क़सम यह सब मुझे इस कार्य से रोकने के लिए यदि वह सूरज मेरे दाहिने हाथ में तथा चाँद बायें हाथ में रखदें तो भी मैं इस कार्य को नहीं छोड़ सकता। या तो अल्लाह इस कार्य में मुझे सफलता दे या मुझे हलाक कर दे। इस बात को कहने के बाद आपकी आखों में आसूँ आ गये और आप रो दिये। यह कहने के पश्चात आप वापस होने लगे। अबूतालिब ने आपको बुलाया और कहा करीब आओ मेरे भतीजे। आप उनके करीब आये, अबूतालिब ने आपसे कहा कि जाओ और जो तुम्हारा जी चाहे कहो जैसे चाहो दावत का कार्य करो मेरी तरफ से कोई आपत्ति नहीं है। अपने जीतेजी तुम्हें किसी को नहीं सौपूँगा।

कुरैश का मुसलमानों पर अत्याचार

जब आपकी दावत का कार्य जोर शोर से बढ़ने लगा और कुरैश अबूतालिब से मायूस हो गये तो उन्होंने हर उस व्यक्ति पर जुल्म करना आरम्भ कर दिया जो मुसलमान हो गया। उनके कबीले में से इस जुल्म को रोकने वाला कोई नहीं था। पस हर कबीला अपने बीच उस व्यक्ति पर टूट पड़ा जो इस्लाम लाया। वह मुसलमानों को कैद में डालते थे, उनको मारते पीटते थे उनको भूखा प्यासा रखते और मक्का की सख़्त गर्मी की चिलचिलाती रेत पर उनको तकलीफ देते थे।

हज़रत बिलाल हबशी मुसलमान हुए तो उनके मालिक उमैय्या बिन ख़लफ उनको ठीक दोपहर में तपतपाती रेत पर पीठ के बल

उनको लिटाते और उनके सीने पर एक बड़ा सा पत्थर रखते और कहते कि तुम इसी शर्त पर मुक्ति पा सकते हो कि तुम मुहम्मद का दीन व धर्म छोड़ दो और लात उज्जा की पूजा करने लगो। वह (हज़रत बिलाल) इस कष्ट को सहन करते और कहते कि अल्लाह एक है। एक दिन हज़रत अबूबकर का गुजर उधर से हुआ तो उन्होंने एक मजबूत काला गुलाम उमैय्या को देकर हजरत बिलाल को छुड़ा कर आजाद कर दिया।

बनी मखजूम अम्मार बिन यासिर को उनके माता पिता के मुसलमान होने पर उनको दोपहर की गर्मी में बाहर लाते और उनको तरह तरह का कष्ट देते, गरम रेत पर उनको लिटाते। जब आप का उधर से गुजर होता तो आप कष्ट सहन करने को फरमाते और जन्नत की बशारत देते। उनकी माता को उन्होंने इसलिए कत्ल कर दिया कि वह इस्लाम छोड़ने को तैयार नहीं थीं।

मुसअब बिन उमैर मक्का के शौकीन मिज़ाज खूबसूरत जवान थे उनकी माता धनवान थीं। वह अपने बेटे को अच्छा से अच्छा पहनाती और खिलाती थीं। जब मुसअब को रसूलुल्लाह की दावत व तबलीग की सूचना मिली कि आप अरकम बिन अबी अरकम के घर में इस्लाम की दावत देते हैं तो आप वहां पहुंचे और मुसलमान हो गये और रसूलुल्लाह की सत्यता को स्वीकार किया और चले गये परन्तु अपने मुसलमान होने को अपनी माता और अपनी कौम के डर से छुपाया। वह रसूलुल्लाह के पास छुप कर आते एक बार उसमान बिन तलहा ने मुसअब को नमाज पढ़ते देख लिया तो उनकी माँ और कौम को उसकी सूचना दी। उन्होंने उनको कैद में डाल दिया हबशे की हिजरत के समय तक वह कैद में रहे फिर मुसलमानों के साथ हबशा हिजरत कर गये और मुसलमानों के साथ ही वह हबशा से लौटे तो उनमें इस्लाम के प्रति और शिद्दत आ गयी। इस हालत को देखकर उनकी माता ने

उनको बुरा भला कहना छोड़ दिया।

कुछ मुसलमान मुश्रेकीन की रक्षा में आ गये यह मुशरेकीन कुरैश के इज्जतदार और सरदार थे। वह उनकी पूरी रक्षा करते थे उसमान बिन मज़ऊन, वलीद बिन मुगीरा की रक्षा में आये लेकिन उसमान की गैरत व हमियत ने यह सहन नहीं किया। इसलिए उन्होंने वलीद की रक्षा में रहने से इनकार कर दिया यह कहकर कि अल्लाह को छोड़कर मैं किसी अन्य की रक्षा में जाना और रहना पसंद नहीं करता। किसी बात पर, उनकी एक मुशरिक से तू तू -मैं मैं हो गयी उस पर उस मुशरिक ने ऐसे जबरदस्त तमाचा (थप्पड़) मारा कि उनकी एक आँख जाती रही। मुगीरा बिन वलीद खड़ा यह दृश्य (मंजर) देख रहा था। वह बोला कि ऐ मेरे भतीजे तुम्हारी आँख सुरक्षित थी जब तक तुम एक मजबूत सुरक्षा में थे। इब्ने मज़ऊन ने उत्तर दिया कि अल्लाह की कसम मेरी अच्छी आँख की यह इच्छा है कि उसके साथ भी वही घटना घटे जो पहली आँख को हादसा पेश आया। मैं उसकी पनाह व रक्षा में हूँ जो बहुत अधिक बलवान और इज्जत वाला (आदरणीय) है।

हुजूर सल्ललाहु व सल्लम से कुरैश की मुखालफत और आपको तरह-तरह से सताना

जब नवयुवकों को इस्लाम से रोकने के समस्त प्रयास असफल हो गये और रसूलुल्लाह में भी न कोई नरमी आई, न उनको मुहब्बत हुई तो कुरैश पर यह सख्त गुजरा वह क्रोध में आ गये और कुछ बेवकूफों को आपके पीछे लगा दिया। उन्होंने आपको झुठलाया, आपको कष्ट दिये, आपको शायर तथा जादूगर कहा, काहिल और मजनून कहा। आप पर नित नये ढ़ंग से कष्ट देते और इस कार्य में हर तरीका इख्तियार किया।

एक दिन इज्जतदार (आदर वाले) लोग हिज्र में हतीम के अन्दर इकट्ठा थे कि अचानक रसूलुल्लाह वहां पहुँच गये और तवाफ करते हुए उनके करीब से गुजरे। उन्होंने आप पर फिकरा कसा और तीन बार ऐसा किया। तीसरी बार आप रूक गये और फरमाया कि ऐ कुरैश के लोगो सुन लो जिसके इख्तियार में मेरी जान है उसकी कसम मैं तुम्हारे लिए विनाश लेकर आया हूँ। पस कौम को बिल्कुल खामोश कर दिया बिल्कुल चुप बेहरकत हो गये जैसे उनमें कोई जान नहीं है। इसके बाद वह आपके साथ नम्रता से बात करने लगे।

दूसरे दिन वह सब उसी स्थान पर जमा हुए आपका फिर उधर से गुजर हुआ और जब उनके पास आये तो वह सब आप पर टूट पड़े और आपको घेर लिया। उसमें से एक व्यक्ति ने आपकी चादर घसीट ली हज़रत अबू बकर खड़े हुए और रोते हुए कहा कि तुम ऐसे आदमी को मार डालना चाहते हो जो यह कहता है कि मेरा मालिक मेरा परमेश्वर अल्लाह है। इस बात पर उन्होंने आपको छोड़ दिया लेकिन हज़रत अबू बकर की दाढ़ी पकड़कर खींचा और उनका सर खोल दिया।

एक दिन आप सल्ललाह अलैहि व सल्लम निकले रास्ते में आपको जो भी मिला उसने आपको झुठलाया और कष्ट दिये चाहे वह आजाद मनुष्य रहा हो या गुलाम। आपको जो कष्ट व तकलीफ पहुँचाई उससे दुखी होकर घर लौट गये और चादर ओढ़ कर लेट गये। इसी अवसर (मौके) पर अल्लाह ने यह सूरत उतारी या अय्युहल मुद्दस्सिर कुम फ अनज़िर।

अबू बकर के साथ कुरैश ने क्या किया

एक दिन हज़रत अबू बक्र इस्लाम के प्रचार हेतु मजमे (भीड़) में खड़े हुए तो वह सब गुस्से व क्रोध में आकर आप पर टूट पड़े और

उनको बहुत मारा, उक़बा बिन रबीआ ने तो अपने जूते जिसमें नाल लगी थी उतार कर उससे इतना मारा कि नाक और चेहरा लहू लहा हो गया पहचानना मुश्किल हो गया।

बनू तमीम के लोग हजरत अबू बक्र को इस दशा में उठाकर ले गये कि उनके मर जाने में उनको कोई संदेह नहीं था। फिर जब हज़रत अबू बक्र को होश आया तो सबसे पहले हुजूर की कुशलता पूछी। इस पर लोगों ने अबू बक्र को बुरा भला भी कहा (और कहा कि कुशलता जानना चाहते हो) उसी समय उम्मे जमील जो इस्लाम ला चुकी थी हज़रत अबू बकर के करीब आयी तो उनसे हज़रत अबू बक्र ने हुजूर की कुशलता जानी तो उन्होंने कहा तुम्हारी माँ सुन रही हैं तो आपने कहा उनकी परवाह न करो तो उन्होंने बताया कि आप सकुशल और सुरक्षित हैं। हजरत अबू बकर ने कहा कि मैंने नज़र मानी है। जब तक मैं हुजूर की सेवा में उपस्थित न हो जाऊंगा कुछ खाऊंगा पियुँगा नहीं वे दोनों वही रूक गयीं। जब सन्नाटा हुआ लोग चले गये तो हजरत अबु बक्र को सहारा देकर (पकड़ा कर) आपकी सेवा में लाई हुजूर पर हजरत अबुबक्र की हालत देखकर बड़ा असर (प्रभाव) पड़ा। आपने उनकी माता को बहुत दुआऐं दीं तथा आशीर्वाद दिया। और उनको मुसलमान होने के लिए उभारा और वह मुसलमान हो गयी।

रसूलुल्लाह के मामले में कुरैश की चिन्ता

रसूलुल्लाह के मामले में कुरैश बड़े चिन्तित थे कि वे क्या उपाय करें जिससे आप का चरित्र, आपकी अच्छाइयां, आपका व्यवहार जो लोगों को प्रभावित कर रहा था। लोगों के सामने ऐसा पेश करें कि लोग आपके प्रति बुरे ख्यालात खराब भावना उत्पन्न कर सकें और वह लोग जो दूर से आये थे आपसे प्रभावित न हो सकें और आपसे दूर रहें भेंट न कर सकें। यह सब वलीद बिन मुगीरा जो उन सब से अधिक बुजुर्ग

थे के पास इकट्ठा हुए। वह जमाना हज का था। वलीद ने उनसे कहा कि ऐ- कुरैश के लोगो हज का जमाना आ गया है। इस मौसम में अरब के वफुद (काफ़िले) आने लगेंगे। उनके कान में हुजूर की बात पड़ चुकी है। अब सब एक राय होकर निर्णय लो कि आपसी मतभेद समाप्त हो कोई एक दूसरे को झुठलायेगा नहीं। इस पर बड़ी देर तक बात चीत हुई लेकिन कोई इस बात पर सहमत न हो सका। वलीद किसी बात पर संतुष्ट नहीं हुआ और उनकी हर राय और परामर्श को अस्वीकार कर दिया। तब उन सबने वलीद से पूछा कि आखिर आप क्या चाहते हैं। और आप की क्या राय है। वलीद ने कहा कि मेरी तो राय और परामर्श यह है कि सब मिलकर एक जबान होकर उसको जादूगर कहें कि यह अपना जादू दिखाने आया है। यह अपने जादू से सब परिवार में फूट डाल देगा, बाप को बेटे से, माँ को अपनी संतान से, भाई बहन, पति पत्नी में फूट डालकर सबको अलग-अलग कर देगा। इस बात को लेकर सब वहाँ से चले गये। जब हज का मौसम आया तो यह सब भिन्न मार्गों पर बैठ गये, जो गुजरता उसको डराते, धमकाते और वह बातें कहते जिन पर सब का इत्तिफाक हुआ था।

कुरैश की बेरहमी आपको कष्ट देने में

नित नये ढ़ंग से कुरैश ने आपको कष्ट और तकलीफ देना आरम्भ किया कष्ट देने में रिश्ते नाते का कोई लिहाज नहीं था और मनुष्यता को उन्होंने परे डाल दिया था।

एक दिन हुजूर मस्जिद में सजदे में थे आपको कुरैश के लोग घेरे हुए थे कि उकबा बिन अबी मुईत एक ऊंट की ओझड़ी उठा लाया और उसको आपकी पीठ पर रख दिया। उसी हालत में आप सजदे में पड़े रहे। आपकी सुपुत्री हजरत फ़ातमा आई और उस ओझड़ी को आपकी पीठ से फेंका और जिसने यह कार्य किया उसको बद-दुआ दी।

एक मरतबा आप काबा में नमाज पढ़ रहे थे कि उक़बा बिन मुईत आया और अपना कपड़ा आप की गरदन में डालकर खीचने लगा जिससे आपको कष्ट व तकलीफ होने लगी। हज़रत अबू बक्र ने आपको इससे छुड़ाया और उनसे कहा कि क्या तुम एक ऐसे आदमी को मार डालना चाहते हो जो केवल यह कहता है कि मेरा स्वामी अल्लाह है।

हजरत हमजा बिन अब्दुल मुत्तलिब का इस्लाम लाना

एक दिन अबु जहल सफ़ा के करीब रसूलुल्लाह के पास से गुजरा तो आपको गाली दी और कष्ट भी दिया। आपने उससे कोई बात नहीं की तो वह चला गया हज़रत हमजा तीर कमान लटकाये शिकार से लौट रहे थे उस समय हजरत हमजा कुरैश के बाइज्जत निडर और बलवान युवक थे।

आपको अब्दुल्लाह बिन जदआन की बान्दी ने वह सब कुछ बता दिया जो आप पर बीती। यह सुनकर हजरत हमजा को गुस्सा आ गया और मस्जिद में दाखिल हुए तो अबू जहल को अपने साथियों के साथ बैठे देखा। उसके करीब गये और बिल्कुल उसके सर पर पहुँच गये। और अपनी कमान उसके सर पर मार दी और उसको जख्मी कर दिया और उससे कहा कि तुम्हारी यह हिम्मत कि तुमने उसको गालियां दीं जिसके दीन पर मैं हूँ। जो वह कहते है वह मैं कहता हूँ। अबू जहल चुप रहा और हमजा मुसलमान हो गये। कुरैश में उनका बड़ा आदर और उनमें उनका एक स्थान था। अतः कुरैश को बड़ी तक्लीफ पहुँची।

उतबा और रसूलुल्लाह के बीच बातचीत

जब कुरैश ने देखा कि मुसलमानों की संख्या दिन प्रति दिन

बढ़ती ही जा रही है तो उतबा ने कुरैश से इस बात की आज्ञा चाही कि वह रसूलुल्लाह से बात-चीत करेगा और उनके सामने कुछ बातें कुछ सुझाव प्रस्तुत करेगा। सम्भव है कि यह (सुझाव) तजवीज दोनों को स्वीकार हो। और रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) तबलीग का कार्य और इस्लाम का प्रचार करना छोड़ दें। कुरैश ने उतबा को बात-चीत की आज्ञा दे दी और अपना नुमाइन्दा (प्रतिनिधि) उनको मनोनीत कर दिया। उतबा आपके पास आया और बैठ गया और कहा कि ऐ मेरे भतीजे तुम भली प्रकार जानते हो कि तुम्हारी हैसियत क्या है। तुमने बेकार का झगड़ा अपनी कौम में खड़ा कर रखा है। हम सब एक थे। तुमने सबको अलग-अलग कर दिया। तुमने हमें जाहिल और मूर्ख कहा, हमारे बुतों को बुरा भला कहा, हमारे देवताओं में कीड़े निकाले, हमारे पूर्वज (बाप दादा) जो करते आये उसको तुमने अस्वीकार किया। मैं तुम्हारे सामने कुछ सुझाव रखता हूँ। सम्भवतः तुम उसको स्वीकार कर लोगे। आपने फरमाया अच्छा ऐ अबू वलीद कहो जो तुम्हें कहना है। मैं सुन रहा हूँ। अबू वलीद ने कहा कि ऐ मेरे भतीजे जो दीन व धर्म तुम लेकर आये हो यदि उससे तुम दौलत व माल चाहते हो तो हम तुम्हारे सामने दौलत के ढेर लगा देंगे तुम पूरे अरब में सबसे अधिक धनी पूंजीपति कहलाओगे। यदि तुम इससे इज्जत व आदर चाहते हो तो हम तुम्हें अपना नेता व सरदार बनाने को तैयार हैं। और यदि तुम सम्राट (राजा) बनना चाहते हो तो उसके लिए भी हम तैयार हैं। कि हम तुम्हें अपना राजा बना लें। यदि तुम यह बातें जादू के असर से कर रहे हो तो हम हर प्रकार का इलाज करने को तैयार हैं। उस पर जो भी व्यय आयेगा उसको हम सहन करेंगे जब तक तुम स्वस्थ न हो जाओ। जब उतबा ने अपनी बात पूरी कर ली तो आपने फरमाया कि तुमको जो कहना था कह चुके। अब तुम मेरी बात सुनो उतबा ने कहा कि कहो।

आपने सूरह फुस्सिलत आयते सजदह तक पढ़ी। उतबा ने अब यह कलाम सुना तो वह खामोश हो गया और मौनधारण किया और ध्यान पूर्वक उन आयतों को सुनता रहा और अपने दोनों हाथों को अपनी पुश्त पर टेक लिया। जब आप सजदा पर पहुँचे और आपने सजदा किया और जब आपने वलीद से फरमाया कि वलीद तुम्हें जो कुछ सुनना था सुन चुके। अब तुम जैसा समझो और जो चाहो करो। उतबा जब अपने साथियों के बीच खड़ा हुआ तो वह सब उसकी सूरत देखने लगे और कहने लगे अबू वलीद का चेहरा बदला हुआ है। जैसे वह गया था वैसा लौटा नहीं है। जब अबू वलीद बैठा तो लोगों ने उससे पूछा कि क्या सोच रहे हो। वह बोला सोचना यह है कि जैसा कलाम मैंने आज सुना है। अल्लाह की कसम (ईश्वर की सौगंध) खाकर कहता हूँ कि वह कलाम न तो जादू है, न तो कविता है। ऐ कुरैश के लोग मेरी बात मान लो। उसको उसके हाल पर छोड़ दो। इस पर कुरैश ने अबू वलीद को बुरा भला कहा और कहने लगे कि जान पड़ता है (मालूम होता है) तुम पर भी उसका जादू चल गया। वलीद ने कहा कि जो भी समझो। यह मेरी राय है। आगे तुम्हारी इच्छा जो चाहो करो।

मुसलमानों की हबशा हिजरत

जब आपने देखा कि आपके साथियों को अधिक कष्ट सहन करना पड़ रहा है। और परेशानियां अधिक उठानी पड़ रही हैं और आप उनकी रक्षा का प्रबंध भली प्रकार नहीं कर पा रहे हैं। जैसा होना चाहिए तो आपने उन सबसे फरमाया कि यदि तुम लोग हबशा की ओर चले जाओ तो यह उचित होगा। वहाँ का सम्राट (राजा) किसी पर अत्याचार (जुल्म) नहीं करता। वह धरती भी अच्छी है। वहाँ उस समय तक रहो जब तक अल्लाह कोई सूरत (उपाय) न निकाल दे। मुसलमानों की

एक जमात (टोली) ने हबशा की हिजरत की। यह इस्लाम व मुसलमानों की पहली हिजरत थी। हिजरत करने वालों की तादाद (संख्या) 10 थी इन्होंने अपना अमीर (नेता) उसमान बिन मजऊन को बनाया। इसके बाद हजरत जाफर ने हिजरत की फिर वहाँ मुसलमान एक एक करके पहुँचे। वहाँ सब जमा हुए। इनमें से कुछ तो परिवार सहित गये और कुछ तनहा। हिजरत करने वालों की तादाद (संख्या) 83 थी।

कुरैश का पीछा करना

कुरैश ने जब यह देखा कि मुसलमान हबशा पहुँच गये और शान्तिपूर्वक अपने दिन बिता रहे हैं तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन रबीआ और अम्र बिन आस बिन वाएल को हबशा भेजा। उनके साथ वहाँ के बादशाह नजाशी, सरदारों और सेनापति को बहुत से उपहार उनको देने के लिए साथ किये ताकि वह कुरैश के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाए। बादशाह के दरबार में दोनों पक्षों के नुमाइन्दों (प्रतिनिधियों) ने निम्न प्रकार अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि आपके देश मे हमारे यहाँ के कुछ बेवकूफ व पागल युवकों ने शरण ली है। उन लड़कों ने अपना दीन धर्म छोड़ दिया है। और उन्होंने आप का दीन भी स्वीकार नहीं किया बल्कि उन्होंने अपना एक अलग दीन धर्म बना लिया है। जिसे न आप जानते हैं और न हम। हमारे सम्मानित लोगों ने हमें आपके पास भेजा है कि आप उन लड़कों को हमें वापस कर दें यह बात उनके लिए उचित होगी। जो सरदार उनके करीब थे वह बोले कि ऐ बादशाह! यह बात सत्य कह रहे हैं। इनकी बात स्वीकार करें। नज्जाशी को इस बात पर क्रोध (गुस्सा) आया। उसने उनकी बात अस्वीकार की और इसको उचित नहीं समझा कि कोई आदमी उसकी शरण में आ जाये और उसकी किसी प्रकार की सहायता न की जाये। उसने मुसलमानों को बुलाया अपने आदमियों तथा मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए

मुसलमानों से कहा कि यह कौन सा धर्म है? जिसके लिए तुमने अपनी कौम को छोड़ दिया। उनको छोड़ने के बाद न तो तुमने मेरा दीन स्वीकार किया और न कोई अन्य प्रसिद्ध दीन को तुमने स्वीकार किया।

जाहिलीयत का नक्शा और इस्लाम का परिचय

आपके चाचाजाद भाई जाफ़र बिन अबू तालिब खड़े हुए और कहा कि:-

ऐ बादशाह - हम एक जाहिलीयत वाली कौम थे बुतों की पूजा करते थे, मुरदार खाते थे, हर तरह के पाप में व्यस्त थे। हममें जो बलवान होता वह निर्बल (कमजोर) पर अत्याचार करता था। हम रिश्ते नाते को भूल गये थे। हम इसी हालत में अपना जीवन बिता रहे थे कि अल्लाह ने हमही में से एक रसूल भेजा हम उसके खानदान, परिवार, जाति, नसब उसकी सत्यवादिता, उसकी अमानतदारी, उसका व्यवहार और उसके चरित्र से परिचित थे। उन्होंने हमें यह दावत, (निमंत्रण) दी कि हम केवल एक अल्लाह (ईश्वर) कि पूजा करें। हमारे माता पिता जिन देवताओं की पूजा करते थे उसको बिल्कुल छोड़ देने को कहा। उन्होंने हमें सत्य बोलने, अमानत अदा करने, रिश्तेदारों का ख्याल रखने, पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करने, बुरी बातों से बचने और अच्छे कर्म करने की शिक्षा दी। चरित्रहीन कार्य, झूठ, कपट, धोखा, छल, कपट, यतीम के माल खाने से, पवित्र स्त्रियों पर लांछन (इलजाम) लगाने से रोका और मना किया। उन्होंने हमको आदेश दिये कि हम केवल एक अल्लाह (ईश्वर) की पूजा करें और उसकी पूजा में किसी को साझेदार न बनायें। उन्होंने हमें नमाज पढ़ने, रोजा रखने तथा ज़कात देने का निर्देश दिया। हमने उसको सत्य माना और उस पर ईमान लाये। हम एक अल्लाह की पूजा करते हैं। उसके साथ किसी को

शरीक नहीं करते। जिन कार्यों के करने से उन्होंने रोका और मना किया है। हम उसको नहीं करते अर्थात उनके बताये हराम को हराम जाना और जिन कार्यों के करने के लिए उन्होंने आदेश दिये हैं उसको अनिवार्य रूप से करते हैं। हमारे लोग हमसे केवल इस कारण नाराज (असंतुष्ट) हैं कि हमने उनका धर्म स्वीकार नहीं किया। यह चाहते हैं कि हम एक अल्लाह की पूजा छोड़कर इनके देवताओं की पूजा करने लगें। जिन पापों को हमने करना छोड़ दिया यह चाहते हैं कि वही पाप हम फिर करने लगें। जब इन्होंने हमको अधिक कष्ट दिये, हमारा जीना दूभर कर दिया तो आपके देश में शरण हेतु आ गये। ऐ बादशाह हम आपसे आशा करते हैं कि हम पर किसी प्रकार का अत्याचार न किया जायेगा।

नज्जाशी ने पूरा व्याख्यान (तकरीर) शान्तिपूर्वक सुना और यह सवाल (प्रश्न) किया कि तुम्हारे पास उदाहरण (नमूने) के लिए कोई चीज़ है। जो तुम्हारे नबी के पास अल्लाह की तरफ से आई हो? हज़रत जाफ़र ने कहा कि हाँ क्यों नहीं। नज्जाशी ने कहा कि अच्छा पढ़कर सुनाओ। हजरत जाफर ने सुरह मरयम की शुरू की आयतें पढ़ी, नज्जाशी उनको सुनकर रो दिया। आसुओं से उसकी दाढ़ी भीग गई। उसके दरबार के पदाधिकारियों पर भी उसका अधिक प्रभाव पड़ा, वह लोग भी रो दिये। यहां तक कि उनकी पवित्र पुस्तकें आंसुओं से भीग गई।

कुरैश के वफ्द (प्रतिनिधि मण्डल) की असफलता

नज्जाशी ने कहा कि यह और हजरत मसीह जो शिक्षा लेकर आये वह एक ही है। फिर वह कुरैश के आने वालों से सम्बोधित हुआ और कहा कि अल्लाह की कसम मैं इन लोगों को तुम्हें नहीं दे सकता।

इस मौके पर (अवसर) पर हज़रत अम्र बिन आस ने एक महत्त्वपूर्ण बात कही कि ऐ बादशाह यह तो हज़रत ईसा अ0 के बारे में पता नहीं क्या क्या कहते हैं? नज्जाशी ने हज़रत जाफ़र से पूछा कि तुम हज़रत ईसा अ0 के बारे में क्या कहते हो। हज़रत जाफ़र ने कहा कि हम उनके बारे में वही कहते हैं जिसकी हमारे नबी ने शिक्षा दी कि वह अल्लाह के बन्दे हैं, उसके दूत (पैगम्बर) हैं। उस की रूह और कलमा हैं। जो उसने कुमारी मरयम पर डाला यह सुनकर नज्जाशी ने अपना हाथ जमीन पर मारा और एक तिनका उठाकर कहा कि अल्लाह की कसम जो तुमने ईसा के बारे में बताया वह इस तिनके से अधिक नहीं है। उसने मुसलमानों को आदर दिया, सम्मान दिया और उनकी रक्षा का वादा (प्रण) किया। कुरैश के वे दोनों आने वाले अपमानित (जलील) हो कर निकले। मुसलमानों ने अच्छे पड़ोस में आदर व सम्मान पाया।

उमर बिन खत्ताब का मुसलमान होना

हजरत उमर का इस्लाम लाना मुसलमानों के लिए (ताईदे ग़ैबी) ईश्वर का समर्थन था हज़रत उमर बिन खत्ताब कुरैश कबीले के सम्मानित व्यक्ति थे। उनका रोब, दब दबा सब पर था वह बलवान थे, बहादुर थे उनकी शक्ति और बहादुरी का सब लोहा मानते थे। हुजूर की इच्छा (ख्वाहिश) थी कि यदि हज़रत उमर मुसलमान हो जायें तो इनसे इस्लाम को बल मिलेगा। इनके मुसलमान होने के लिए हुजूर ने दुआ फरमाई। उनके मुसलमान होने का वाकिआ (घटना) इस प्रकार है। उनकी बहन फ़ातिमा मुसलमान हो गयी थीं। उनके बाद उनके पति भी इस्लाम ले आये। हज़रत उमर की सख्ती और उनके डर (भय) से इन दोनों ने अपना मुसलमान होना इनसे छिपाये रखा। खब्बाब बिन अरत फातिमा को कुर्आन पढ़ाते थे। एक दिन हज़रत उमर तलवार लटकाये रसूलुल्लाह और उनके साथियों की तलाश (खोज) में निकले। उनको

यह सूचना मिल गयी थी कि रसूलुल्लाह अपने साथियों सहित सफ़ा (पहाड़) के निकट (करीब) किसी घर में जमा हैं। रास्ते में उनकी मुलाकात नुऐम बिन अब्दुल्लाह जो उन्ही के कबीले बनी अदी से उनका सम्पर्क था और वह मुसलमान हो गये थे। उन्होंने पूछा कि ऐ उमर किधर जा रहे हो वे बोले (नऊज़ोबिल्ला) मुहम्मद को (कत्ल) करने जा रहा हूँ जो बेदीन (अधर्म) है। जिसने कुरैश की एकता को भंग किया, कुरैश को अशिक्षित कहा उसने हमारे देवताओं को गालियां दीं। आज हिसाब समाप्त हो जायेगा। नुऐम ने उनसे कहा कि तुम कहाँ हो। जाओ पहले अपने घर की खबर लो। पहले जाकर उनको ठीक करो। हज़रत उमर ने पूछा कि मेरे घर में कौन? उन्होंने कहा कि तुम्हारे बहनोई और चचाजाद भाई सईद बिन ज़ैद और तुम्हारी बहन फ़ातिमा यह सब मुसलमान हो चुके हैं। इन सबने मुहम्मद के दीन को स्वीकार कर लिया है। जाओ पहले इनको देखो। हज़रत उमर उल्टे पाँव अपनी बहन व बहनोई के घर की ओर चल दिये। उस समय उनके पास ख़ब्बाब बिन अरत थे। उनके पास एक पुस्तक थी जिसमें सूरे ताहा लिखी थी। वह उन दोनों को पढ़ा रहे थे। जब उनको हज़रत उमर की सूचना मिली तो ख़ब्बाब छिप गये। फातिमा ने उस पुस्तक को रान के नीचे छिपा लिया। लेकिन हज़रत उमर ने उनका पढ़ना सुन लिया था। जब वे घर में आये (प्रवेश किया) तो पूछा कि तुम लोग क्या खसुर फुसर कर रहे थे। उन्होंने पूछा कि आपने क्या सुना। उमर ने कहा कि मुझे यह सूचना मिली है कि तुमने मुहम्मद का दीन स्वीकार कर लिया है। फिर उमर अपने बहनोई को मारने दौड़े। उनकी बहन फ़ातिमा अपने पति को बचाने खड़ी हो गयीं। हज़रत उमर ने उनको मारा और जख़्मी कर दिया। जब वह मार चुके तो उनकी बहन ने कहा कि हां यह सत्य है कि हम मुसलमान हो गये हैं। अब तुम्हें जो करना हो करो। हज़रत उमर ने जब अपनी बहन के शरीर पर खून देखा तो गुस्सा ठंडा पड़ गया और अपने

किये पर नादिम (लज्जित) हुए थोड़ी देर रूककर अपनी बहन से बोले कि अच्छा वह पुस्तक तो दिखाओ जिसे मैंने तुम लोगों को पढ़ते सुना है। उनकी बहन बोली कि हमें डर है (भय) कि पता नहीं तुम उसके साथ क्या करो। उमर बोले अब डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्होंने अपने देवताओं की कसम खाकर विश्वास दिलाया तब उनकी बहन ने बड़ी नम्रता से कहा कि आप नापाक (अपवित्र) हैं। कुर्आन पवित्रता की ही हालत में छुआ जा सकता है। हज़रत उमर खड़े हुए, नहाये। उसके बाद उनकी बहन ने पुस्तक उनको पढ़ने को दी। उसमें सूरह ताहा लिखी थी। उसको जब पढ़ा तो उनका दिल (हृदय) खुल गया और कहने लगे कि कितना पाक (पवित्र) और भला कलाम है। जब खब्बाब ने यह बात सुनी तो उनके पास आये और बोले ऐ उमर मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि अल्लाह ने नबी की दावत के लिए तुम्हारा चयन कर लिया है। मैंने कल ही अल्लाह के रसुल को यह दुआ करते सुनी है कि ऐ अल्लाह इस्लाम को अबू जहल या उमर के जरिये (माध्यम) मदद (सहायता) फरमा। अब तो तुम अल्लाह का लिहाज करो।

हजरत उमर ने कहा कि मुझे मुहम्मद के पास ले चलो। मैं उनके हाथ पर इस्लाम लाना चाहता हूँ। हज़रत ख़ब्बाब ने बताया कि इस समय हुजूर सफा के पास एक घर में हैं और आपके साथ आपके सहाबा भी है। हजरत उमर ने तलवार लटकाई और हुजूर के वहाँ पहुँच कर दरवाजा खट खटाया। हज़रत उमर की आवाज सुनी तो एक आदमी ने खड़े होकर दरवाजे से झाँका। उन्होंने देखा कि हज़रत उमर तलवार लटकाये हैं। वह घबराये और हुजूर के पास आये और कहा कि या रसूलल्लाह वह उमर हैं और तलवार लटकाये आये हैं। हज़रत हमज़ा बोले आने दो यदि वह सद्भावना से आये हैं तो हम उनका स्वागत करते हैं और यदि उनकी भावना ठीक नहीं है तो उसी की तलवार से

उसको मार डालेंगे। फिर हुज़ूर ने फरमाया कि आने दो उन सहाबा ने हज़रत उमर को अन्दर आने की इजाज़त (अनुमति) दे दी। जब हज़रत उमर आने लगे तो आप आगे बढ़कर उनसे कमरे में मिले और उनका दामन मज़बूती से पकड़ कर खींचा और फरमाया कि इबने ख़त्ताब किस इरादे से आना हुआ। खुदा की कसम मुझको ऐसा लगता है कि अंत से पूर्व तुमको किसी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। हज़रत उमर ने कहा कि मैं तो आपके पास मुसलमान होने आया हूँ। मैं आया हूँ अल्लाह पर ईमान लाने, उसके रसूल पर और उस पर जिसको अल्लाह का रसूल लेकर आया। आपने तक्बीर कही (अल्लाहु अकबर) इससे लोगों ने अनुमान लगाया कि हज़रत उमर मुसलमान हो गये। हज़रत उमर के मुसलमान होने से मुसलमानों का मनोबल बढ़ गया। इनके पूर्व हज़रत हमजा ईमान ला चुके थे। हज़रत उमर ने अपने मुसलमान होने का खुलकर एलान किया। कुरैश में यह खबर आग की तरह फैल गयी। वे हज़रत उमर से लड़ने व मरने को तैयार हो गये अन्त में वह हज़रत उमर से निराश हो गये।

बनी हाशिम का बहिष्कार

अरब कबीलों में इस्लाम तेजी से फैलने लगा तो कुरैश को चिन्ता हुई। उन्होंने परामर्श के लिए एक बैठक बुलाई और उसमें यह निर्णय लिया कि एक लिखित समझौता बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब के लिए हो। उन्होंने यह पाबन्दी लगा दी कि वह न किसी और के यहाँ शादी कर सकते और न दूसरे उनके यहाँ शादी विवाह कर सकेंगे और कोई इनके साथ किसी प्रकार की तिजारत (व्यापार) न करे, पूरा मुआहदा धारा वार लिखकर पारित किया गया और उसको स्वीकृति दी गयी और उसका पालन अनिवार्य किया गया। उसकी पुष्टि के लिए उस समझौते को काबा के अन्दर लटका दिया गया।

घाटी अबू तालिब में

कुरैश की इस पाबंदी के बाद बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब अबूतालिब के साथ हो गये और घाटी में नजर बन्द हो गये। यह घटना नुबुव्वत के सातवें वर्ष घटी। अबू लहब बिन अब्दुल मुत्तलिब ने बनी हाशिम को छोड़ दिया और वह कुरैश के साथ हो लिये। बनी हाशिम काफी दिनों तक इस घाटी में रहे। इस बीच उन्होंने बबूल की पत्तियां खा कर अपना काम चलाया उनके बच्चे भूख व प्यास से रोते और बिलबिलाते थे। उनके रोने की आवाज दूर से सुनी जाती थी। वह व्यापारियों को भड़काते और वह चीज़ों के मूल्य इतना बढ़ा देते कि चीजें क्रय करने की क्षमता उनमें न रहे। शअ़बे अबू तालिब में इन लोगों ने इस प्रकार तीन वर्ष बिता दिये इस अवधि में उन तक कुछ चीजें (वस्तुएं) छुपाकर पहुँचायी जाती रहीं। यह कार्य कुरैश के हमदर्द उनसे सहानुभूति रखने वाले करते थे। इस इम्तेहान (परीक्षा) की घड़ी में भी रसूलुल्लाह अपनी दावत का कार्य कभी छुपकर और कभी खुलकर करते रहे और बनी हाशिम उन कष्टों को बड़े साहस से सहन करते रहे।

समझौता टूटा

कुरैश में से वह लोग जिनमें हमदर्दी थी नम्रता थी। इस समझौते के खिलाफ खड़े हो गये और उसमें आगे आगे हिशाम बिन अम्र बिन रबीआ था। उसकी अपनी कौम में इज्जत थी, मान था और आदर था। उसने कुरैश के ऐसे लोगों से सम्पर्क स्थापित किया जिनमें मनुष्यता थी, हमदर्दी थी। उसने उन लोगों को गै़रत दिलाई और ऐसे अत्याचार समझौते को समाप्त करने का परामर्श दिया। यह 5 व्यक्ति थे जो समझौते को तोड़ने पर सहमत हुए। दूसरे दिन कुरैश की बैठक में अबू उमय्या खड़े हुए और कहा कि ऐ मक्का वालो क्या यह तुम्हें अच्छा

लगता है कि हम खायें पीये और पहने और बनी हाशिम उससे महरूम (वंचित) रहें। वह कोई चीज़ न खरीद सकते हैं और न कोई चीज़ बेच सकते हैं। खुदा की कसम मैं उस समय तक चैन (शान्ति) से नहीं बैठूंगा जब तक यह समझौता समाप्त न हो जाये। उस समय अबू जहल ने आपत्ति उठाई और उसको इसमें सफलता नहीं मिली। मुतइम बिन अदी खड़े हुए उस समझौते को फाड़ने के लिए तो उन्होंने देखा कि पूरे कागज को दीमक खा चुकी है। केवल बिस्मिकल्लाहुम्म बच रहा। इसकी सूचना हुजूर ने अबूतालिब को दी और समझौते को फाडकर फैंक दिया। उसमें जो लिखा था समाप्त हुआ।

अबू तालिब और हजरत खदीजा का इन्तकाल (निधन)

नुबुव्वत के दसवें वर्ष एक ही वर्ष के अन्दर हजरत ख़दीजा और अबूतालिब की वफ़ात हुई (निधन हुआ) यह दोनों अल्लाह के रसूल के अच्छे सहयोगी और शुभचिंतक थे। इनकी वफ़ात (निधन) पर रसूलुल्लाह को बड़ा दुख हुआ। इसके बाद आपको लगातार कई कष्टों का सामना करना पड़ा।

कुर्आन का चमत्कारिक प्रभाव

तुफैल बिन अम्र अद दोसी मक्का आये। यह शोला ब्यान शायर थे, शरीफ थे। कुरैश ने इनको हुजूर से मिलने से रोका। उनको डराया और धमकाया और आप की बात सुनने से रोका। उनसे कहा कि हमें डर है कि तुम्हारे साथ भी वैसा ही न हो जैसा हमारी कौम के साथ हुआ। इसलिए तुम न तो उनकी कोई बात सुनना और न उनसे कोई बात करना। तुफैल कहते हैं कि अल्लाह की कसम वो (कुरैश) तो मेरे पीछे ही पड़ गये आखिर मैंने उनको यकीन (विश्वास) दिलाया बात

न करने और उनकी बात न सुनने का। मैंने अपने कान में रूई ठूँस ली और मस्जिद की तरफ चला। काबा के पास हुजूर नमाज पढ़ रहे थे। मैं उनके पास जाकर खड़ा हो गया। अल्लाह ने अपना कलाम मुझे सुनवा ही दिया। कहने लगे कि मैंने बेहतरीन कलाम सुना। उस समय मेरे दिल ने कहा, कि मैं शायर (कवि) हूँ। रचना को समझने और उसको परखने की मुझमें लियाकत (क्षमता) है। मुझे कौन इससे रोक सकता है कि वह कलाम न सुनूं जो अच्छा है। मुझे जो चीज़ अच्छी लगेगी उसको स्वीकार करूंगा और जो मुझे बुरी लगेगी उसको स्वीकार करने के लिए कोई मुझे मजबूर नहीं कर सकता। तुफैल आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से घर पर मिले और सारी बात आपको बता दी और उनके सामने कुर्आन पढ़ा फिर वे इस्लाम ले आये। और फिर वह अपनी कौम में मुबल्लिग (दावत देने वाला) बन कर लौटे। लौटने पर परिवार के साथ रहने से इनकार कर दिया और स्पष्ट रूप से कह दिया कि परिवार के साथ तब ही रहूँगा जब वह मुसलमान हो जायें। वह सब इस्लाम ले आये। फिर उन्होंने अपने क़बीले में इस्लाम की दावत दी उनमें इस्लाम खूब फैला।

तायफ की यात्रा और उसके कष्ट

अबूतालिब के निधन के बाद कुरैश आपको तकलीफ और कष्ट ज्यादा ही देने लगे। और वह कष्ट देने लगे जिसका कुरैश ने अबूतालिब की जिन्दगी में सोचा भी नहीं था। इन मूर्ख और अभागियों ने आपके सर पर मिट्टी डाल दी।

कुरैश का कष्ट देना जब बढ़ गया तो आपने तायफ प्रस्थान करने का निश्चय किया। आपने सोचा कि बनू सक़ीफ़ को इस्लाम की दावत देंगे कि वे सब मुसलमान हो जायें। आप तायफ जब तशरीफ लाये तो आपने बनू सक़ीफ के सम्मानित लोगों तथा सरदारों से भेंट करने का

फैसला फरमाया। आप उनके बीच बैठे और इस्लाम की दावत दी। सकीफ के लोगों ने इसकी सख़्त मुखालिफ़त की और आपका मजाक उड़ाया। आपको गालियां दीं और आपको पत्थर मारे। आप एक खजूर के दरख़्त के साये में बैठ गये। आप बहुत दुखी थे आपको तायफ के लोगों से ऐसी आशा नहीं थी कि तकलीफ़ देने में मक्का वालों को पीछे छोड़ देंगे।

तायफ वाले दो-दो (पंक्तियों में) मार्ग में बैठ जाते और जब आप का उधर से गुजर होता तो आप जब पैर उठाते तो वह उस पर पत्थर मारते और जख़्मी कर देते और लहुलहान कर देते तो आप दिल व ज़बान से दुआ में अपनी कमज़ोरी और बेसरो सामानी की शिकायत फरमाते। और अल्लाह से मदद और सहायता चाहते हुए फ़रमाते।

ऐ अल्लाह मैं अपनी कमजोरी व बे सरों समानी तथा लोगों में अपने अपमानित होने की शिकायत (फ़रयाद) करता हूँ। ऐ दया करने वाले तू ही कमजोरों और दुखयारों का खुदा है। तू मेरा खुदा है मुझे किसके हवाले किया जाता है। क्या ऐसे दुश्मन के जो हम पर कुदरत रखता है। तेरा गुस्सा व ग़जब मुझ पर नहीं तो मुझे किसी की परवाह नहीं। तेरी दया दृष्टि मेरे लिए अधिक महत्वपूर्ण है। मैं तेरी जात के प्रकाश (नूर) से पनाह मांगता हूँ जिससे सारी अंधेरियां प्रकाश में बदल गई और संसार के सब कार्य ठीक व दुरूस्त हो गये और पनाह चाहता हूँ इस कि तेरा गजब मुझ पर उतरे या तेरी नाराजगी। मुझे केवल तेरी रजा चाहिये और अच्छाई करने व बुराई से बचने की ताकत (शक्ति) केवल तुझी से प्राप्त हो सकती है।

इस अवसर पर अल्लाह ने पहाड़ के फिरिश्ते को भेजा कि यदि आप चाहें और अनुमति दें तो दोनों पहाड़ जिसके बीच तायफ वाले रहते हैं मिला दें। आपने फ़रमाया नहीं मुझे आशा है कि इनकी औलाद

में से तो कोई होगा जो अल्लाह की पूजा करेगा और उसकी पूजा में किसी अन्य को शामिल नहीं करेगा।

जब उतबा बिन रबीआ और शेबा बिन रबिआ ने आपकी यह हालत देखी तो उनके दिल में नम्रता और दया आ गई और दोनों ने अपने गुलाम को बुलाया जो नसरानी था और उसका नाम अद्दास था। उससे कहा कि यह अंगूर का गुच्छा लेकर उस आदमी के पास जाओ और उससे इसको खाने को कहो। अद्दास ने ऐसा ही किया और वह आपके व्यवहार से प्रभावित होकर मुसलमान हो गया। आप तायफ से मक्का लौट आये तो आपकी कौम आपकी मुख़ालिफ़त अधिक करने लगी और आपका मजाक और खिल्ली उड़ाने लगी।

मेअराज और नमाज़ की फ़र्ज़ीयत

आपको मेराज हुई। आपने रातो रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा की यात्रा की। उसके बाद विशेष स्थानों, सातों आसमानों की सैर की, अल्लाह की निशानियों को देखा और सभी नबियों से वहाँ भेंट हुई।

अल्लाह ने इसी बात को कहा कि :

उनकी आँख न तो और तरफ, मायल हुई और न हद से आगे बढ़ी उन्होंने अपने परवर दिगार (पालनहार) की कुदरत की कितनी ही बड़ी बड़ी निशानियां देखी।

यह अल्लाह की तरफ से मेहमान नवाजी थी। आपको तसल्ली देना थी उसके प्रति जो आपको तायफ के लोगों से तकलीफ पहुंची और उन्होंने आपका दिल दुखाया, आपका अपमान किया।

दूसरे दिन आपने मेअ़राज की बात कुरैश से बताई तो उन्होंने उसको झुठलाया और इस पर विश्वास नहीं किया और इसका मजाक

उड़ाया। लेकिन हजरत अबू बकर ने कहा कि यदि यह बात नबी कह रहे हैं तो वह शत प्रतिशत सत्य है। तुमको इस पर आश्चर्य क्या है? खुदा की कसम यदि आप मुझे यह सूचना देते हैं कि वह्य दिन और रात के किसी हिस्से में आकाश से जमीन पर आती है तो मैं उसको सत्य मानता हूँ जो उससे भी ज्यादा आश्चर्य जनक बात है।

अल्लाह ने हर दिन 50 नमाजें अनिवार्य कीं और आप बराबर इसमें कमी कराते रहे यहाँ तक कि अल्लाह ने उम्मत पर दिन रात में पाँच वक्त की नमाजें अनिवार्य कर दी गयीं। और यह घोषणा कर दी गयी कि जो भी ईमान और एहतिसाब (पाबन्दी) के साथ यह नमाज़े पढ़ेगा उसको पचास नमाज़ों ही का सवाब (पुण्य) मिलेगा।

अरब के कबीलों में इस्लाम की दावत

रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने हज के मौसम में अरब कबीलों में इस्लाम की दावत देना प्रारम्भ कर दिया। उनसे सहयोग मांगा। आपने उनको सम्बोधित करते हुए फरमाया कि-

ऐ बनी फुला मैं तुममें रसूल व नबी बनाकर भेजा गया हूँ मैं तुमको अल्लाह का हुक्म सुनाता हूँ वह तुमको अल्लाह की इबादत का हुक्म देता है, और इसका हुक्म देता है कि तुम उसके साथ किसी और को साझी न बनाओ। और तुम सब उन सबकी पूजा व इबादत से रिश्ता नाता तोड़ लो जिनकी तुम अल्लाह के अलावा पूजा करते हो मैं जो कह रहा हूँ इसी को सत्य मानो उस पर ईमान ले आओ मेरी उस समय तक रक्षा करो जब तक वह पैगाम जिसको लेकर मुझे भेजा गया है आम न हो जाये।

जब आप अपनी बात कह चुके तो अबू लहब खड़ा हुआ और कहा कि ऐ बनी फुला यह तुमको लात व उज़्ज़ा की पूजा तथा उससे

वफ़ादारी का तौक़ गरदन से उतारने को कहता है। और कहता है कि अपने सहयोगीजनों से भी रिश्ता तोड़ लो और वह स्वीकार कर लो जो यह लेकर आये हैं। तुम सब इनकी बात न तो मानो और न सुनो।

अंसार के इस्लाम लाने की शुरूआत

नबी सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम हज के मौसम में इस्लाम की दावत देने के लिए निकले। उक़बा के पास आपको अंसार के कबीले खज़रज के कुछ व्यक्ति मिले। आपने उनको इस्लाम क़बूल करने की दावत दी और उनके सामने कुरान शरीफ की तिलावत की। यह सब मदीने में यहुदियों के पड़ोसी थे उनसे वह सुना करते थे कि भविष्य में एक नबी आने वाला है। यह लोग आपस में कहते कि कहीं यही तो वह नबी नहीं है जिसकी बातें यहूद किया करते थे। देखो कोई और अन्य तुमसे इस मामले में आगे न बढ़ जाये। उन्होंने आपके पैग़ाम को सुना और उसको सत्य जाना और फिर आपसे कहा कि हम अपनी कौम को छोड़कर आए हैं। कोई अन्य क़ौम इसके अतिरिक्त नहीं है। जिसमें इतनी बुराई बगावत, अनारकी हो। सम्भवतः अल्लाह आपके माध्यम से इनमें इत्तिफ़ाक व इत्तेहाद (ऐकता) पैदा कर दे। हम वहाँ पहुंच कर आपका पैगाम उन तक पहुँचाएंगे और दीन की उनमें तबलीग करेंगे। जिसको हमने स्वीकार किया है। यदि अल्लाह ने आपके माध्यम से हमको एक कर दिया तो फिर आपसे अधिक मान व इज़्ज़त वाला कोई नहीं है। वह सब ईमान लाने के बाद अपने शहर लौट आये। जब वे मदीने पहुंचे उन्होंने अपने भाइयों से रसूलुल्लाह का जिक्र किया और इस्लाम की दावत दी। यहाँ तक कि यह बात खूब फैल गयी। अंसार का कोई घर नहीं बचा जिसमें आप की चर्चा न हो।

उकबा की बैअत (प्रथम)

अगले वर्ष जब हज का मौसम आया तो अंसार के 12 आदमी आपसे मिले प्रथम उक़बा की बैअत की। इस बात पर कि वह अब चोरी न करेंगे। ज़िना (हराम कारी) न करेंगे, अपने बच्चों को क़त्ल नहीं करेंगे, पुण्य के कार्य सदैव करेंगे, अल्लाह की वहदानियत पर विश्वास और यकीन होगा। जब इन लोगों ने वापसी का इरादा किया तो आपने मुसअ़ब बिन उमैर को उनके साथ कर दिया और उनको इस्लाम की शिक्षा देने के निर्देश दिये। उनसे कहा कि वह उन्हें दीन सिखायें और कुर्आन पढ़ाएं इसी कारण वह मुक़री के नाम से मशहूर हो गयें (पढ़ाने वाला) वह असअ़द बिन ज़ुरारह के मेहमान बनें और वहा वह सब की इमामत करते थे (नमाज पढ़ाते थे)

मदीने में इस्लाम का फैलना

अब अंसार (बनी औस व खजरज) के घरों में इस्लाम फैलना आरम्भ हुआ। सअ़द बिन मुआज व उसैद बिन हुजेर इसलाम लाये। यह दोनों अपनी कौम के सरदार थे। इसमें मुसअब बिन उमैर की सूझ-बूझ, हिकमत और अच्छे ढ़ंग से दावत का बड़ा दखल था। जो यह इस्लाम ले आये।

दूसरी बेअत उकबा

दूसरे वर्ष मुसअब बिन उमैर मक्का वापस आये मुशरेकीन की एक जमाअत के साथ अनसार के कुछ मुसलमान हज के लिए मक्का पहुँचे और रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से उकबा में बैअत का वादा किया। जब हज से छुट्टी मिली और एक तिहाई रात गुजर गयी तो सब उकबा के करीब एक घाटी में जमा हुए इनकी कुल संख्या 73 थी। इसमें 2 औरतें भी थीं रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि

व सल्लम) भी तशरीफ़ लाये। आपके साथ आपके चाचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब थे जो उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे।

आपने लोगों से बात की उनके सामने कुरान पढ़ा और अल्लाह से दुआ की और इस्लाम लाने को कहा। फिर आपने फ़रमाया कि मैं तुमसे इस बात पर बैअ़त लेता हूँ कि तुम मेरी सुरक्षा के लिए वही मामला करोगे जो तुम अपने परिवार के साथ करते हो। उन्होंने आपसे बैअत की फिर उन्होंने आपसे यह वादा लिया कि आप उनको तन्हा नहीं छोड़ेंगे। न अपनी क़ौम में वापस लौटेंगे। आपने उनसे वादा किया फिर आपने फरमाया कि मैं तुममें से हूँ और तुम मुझमें से हो जिससे तुम जंग करोगे उससे मैं भी जंग करूंगा और जिससे तुम सुलह करोगे मैं सुलह (समझौता) करूंगा। आपने उनमें से 12 सरदारों का चयन किया। इसमें से 9 खजरज के और 3 औस कबीले के थे।

मदीने हिजरत की अनुमति

जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अंसार के इस कबीले से इस्लाम और उसके मानने वालों की सहायता पर बैअत ली तो बहुत से मुसलमान उनकी सुरक्षा में आ गये। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने उन सभी को जो आपके साथ मक्का में थे, मदीने हिजरत करने के निर्देश दिये और मदीने आकर अपने अनसार भाइयों से मिल जाने के आदेश दिये और फरमाया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये भाइयों तथा घर का प्रबन्ध कर दिया है। जहाँ तुम सुकून (शांति) के साथ रह सकोगे। इस आदेश के बाद लोग जमाअतों की शक्ल में मक्का से मदीना हिजरत के लिए निकल पड़े और आप इस अवधि में मदीना हिजरत के लिए अल्लाह के हुक्म (आदेश) का इन्तजार करने लगें।

मुसलमानों की हिजरत मक्का से मदीना इतनी सरल न थी कि वह आसानी से सहन कर लेते। मुशरेकीन ने हर प्रकार की रूकावटे मुसलमानों के लिए खड़ी कर दीं और हर तरह की परीक्षा में उनको डाल दिया। लेकिन मुहाजिरीन अपनी बात के धनी थे। और जो इरादा कर लिया था उससे पीछे हटने वाले नहीं थे। वह पूरी तरह मक्का को छोड़ने को तैयार थे। उनमें से जो कुछ ऐसे भी थे जिनको अपने परिवार को छोड़कर मक्का से जाना पड़ा जैसे कि अबू सालिमा के साथ पेश आया। कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने वह सब कुछ मक्का में ही छोड़ दिया था जो वहाँ रहकर अपनी जिन्दगी में कमाया जैसे सुहैब ने किया।

हज़रत उमर बिन खत्ताब, तलहा, हमजा, यजीद बिन हारिस, अब्दुर्रमान बिन औफ, जुबैर बिन अव्वाम, अबू हुज़ेफा, उसमान बिन अफ़्फान और दूसरे सहाबा ने मदीना हिजरत की। हज़रत अबूबकर और हज़रत अली को छोड़कर सबने हिजरत के लिए मदीने की यात्रा की। वह रह गये जो किसी परेशानी या परीक्षा में पड़ गये थे।

रसूलुल्लाह के विरुद्ध कुरैश की साजिश और असफलता

जब कुरैश को यह सूचना मिली कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के बहुत से हमदर्द व सहयोगी मदीने में पैदा हो गये हैं और वहाँ उनका कोई जोर नहीं चल सकता तो कुरैश को आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की हिजरत का भय हुआ। वह यह भली प्रकार जान गये कि यदि रसूलुल्लाह यहाँ से तशरीफ़ ले गये तो फिर उन पर उनका कोई जोर नहीं चलेगा। यह सोचकर वह सब दारे नदवा में जमा हो गये जो वास्तव में कुसई बिन किलाब का घर था। कुरैश अपने महत्वपूर्ण मामले और कार्यों को यहीं निपटाते और निर्णय लेते और आगे क्या करना है इसकी योजना बनाते थे। इसमें कुरैश के

सब सरदार शरीक होते। दारून्नदवा में सबने मिलकर यह तय कर लिया कि प्रत्येक कबीले से एक युवक का चयन हो। सब मिलकर एक साथ आप पर हमला कर दें। इस प्रकार इस जुर्म में सब बराबर के शरीक होंगे। बनी अबदे मुनाफ सारी कौम से जंग का खतरा मोल न लेंगे। कौम आप पर हमला करने की योजना बनाकर अलग हो गयी।

इसकी योजना की सूचना अल्लाह ने हुजूर को दे दी। आपने हज़रत अली को अपनी चादर ओढ़ा कर अपने स्थान पर सो जाने को कहा और हज़रत अली से फरमाया कि तुम्हें कोई कष्ट न होगा। इधर पूरी टोली आपके दरवाजे पर आपके इन्तेज़ार में खड़ी थी और हमला करने की तैयारी में थी कि आप बाहर तशरीफ़ लाये और थोड़ी सी मिट्टी हाथ में ले ली। उस समय अल्लाह ने उनकी बीनाई (रोशनी) समाप्त कर दी कि वह किसी को देख नहीं सकते थे। आप उनके सरों पर यह मिट्टी फैकते और सूरह यासीन शुरूअ् की आयात से "फ़अग्शैनाहुम फ़हुम् ला युबसिरून" तक पढ़ते हुए उनके सामने से निकल और उनको आपके जाने की खबर भी नहीं हुई। इसी बीच किसी आने वाले ने उनसे पूछा कि तुम किस का इन्तेजार कर रहे हो उन्होंने उत्तर दिया कि मुहम्मद का उस आदमी ने कहा कि अरे बदबख्तो मुहम्मद तो निकल चुके उन्होंने देखा कि वह तो बिस्तर पर सो रहे हैं। आपके न होने पर उनको शक भी न हुआ। लेकिन सुबह हुई तो हज़रत अली को बिस्तर से उठते देखा तो वह बड़े शर्मिन्दा हुए और खिसयाकर लौट गये।

रसूलुल्लाह की मदीने हिजरत

आप हज़रत अबुबकर के पास तशरीफ लाये और फरमाया कि अल्लाह ने मुझे मक्का से निकलने और मदीना हिजरत करने की इजाजत (आज्ञा) दे दी है।

हजरत अबूबकर ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल मैं आपके साथ रहना चाहँता हूँ। आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने साथ में रहने की अनुमति दे दी। इजाजत पाकर हजरत अबूबकर खुशी से रो दिये। फिर हज़रत अबूबक़र ने 2 सवारियों का प्रबंध किया। हजरत अबूबकर ने इस सफ़र के लिए पहले से प्रबंध कर लिया था। अब्दुल्लाह बिन उरैकित को रास्ता बताने के लिए मुआविज़े पर रख लिया था। हुज़ूर ने हज़रत अली को मक्का में ही रहने को फरमाया ताकि वह उनकी अमानतें लौटा दें जो लोग आपके पास अमानतें रखवाते थे। आपके सच्चे अमानतदार होने के कारण।

ग़ारे सौर

हुज़ूर और हज़रत अबूबकर छिपते छिपाते मक्का से निकले। हज़रत अबूबकर ने अपने सुपुत्र अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र को यह आदेश दिया कि वह सभी खबरें (समाचार) उन तक पहुचाया करें जो मक्का वाले उनके बारे में कहें। अपने गुलाम आमिर बिन फुहेरा को निर्देशित किया कि वह दिन में बकरियां चराये और शाम को उनका दूध उन तक पहुंचाये। हज़रत असमा को खाना पहुँचाने का कार्य सौंपा। जब दोनों गारे सौर तक पहुंचे तो हज़रत अबूबकर ग़ार में गये। यह देखने के लिए कि उसमें कोई कीड़ा न हो जो आपको तकलीफ़ पहुँचाये और वह आपके आने के पूर्व साफ हो। जब दोनों गारे सौर में दाखिल हुए तो अल्लाह ने मकड़ी को भेजा जिसने ग़ार से उस पेड़ तक जाला तान दिया जो ग़ारे के मुँह पर था। और रसूलुल्लाह और हज़रत अबूबक्र को छिपा दिया। उसके बाद अल्लाह ने 2 जंगली कबूतरियों को आदेश दिया वह फड़ फड़ाती रहें। फिर मकड़ी और दरख्त के बीच आकर बैठ गयीं। "व लिल्लाहे जुनदुस् समावाति वल अर्ज़ि।"

और अल्लाह ही के हैं आकाश और धरती के लश्कर। इधर

मुशरेकीन ने आप का पीछा किया और पहाड़ तक पहुँच गये पहाड़ पर चढ़े और ग़ार के मुँह तक आ गये। ग़ार के मुँह पर मकड़ी का जाला तना मिला वह कहने लगे कि यदि वह ग़ार में होते तो ग़ार के मुँह पर मकड़ी का जाला तना न मिलता।

ला तहज़न इन्नल लाह मअ़ना

जब वह दोनों ग़ार में थे कि हज़रत अबूबकर ने मुशरेकीन के निशान दिखे वह कहने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल इनमें से एक भी यदि अपने कदमों को आगे बढ़ाये तो हम लोगों को देख लेगा। आपने फरमाया कि तुम्हारा क्या खयाल है? उन दो के बारे में जिनका तीसरा खुदा है। इसी मौके पर यह आयत उतरी।

अनुवाद– "उस समय दो ही व्यक्ति थे जिनमें एक अबूबक्र थे दूसरे स्वयं रसूलुल्लाह। जब दोनों ग़ार (सौर) में थे उस समय आप अपने रफीक को तसल्ली देते थे कि ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है"

आपका सुराका ने पीछा किया

क़ुरैश ने जब रसूलुल्लाह को नहीं पाया तो यह एलान कर दिया कि जो भी रसूल (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को लायेगा उसको 100 ऊँट पुरस्कार के तौर पर दिये जायेंगे।

आप दोनों ने गारे सौर में तीन राते बिताई फिर वहाँ से निकले। साथ में उनके आमिर बिन फुहेरा थे जो मार्ग दिखाने के लिए उनको मुलाजिम रखा था। वह साहिल के किनारे किनारे चल पड़े।

सुराका बिन मालिक बिन जुअ़शाम ने आपको पकड़ने और आपको क़ुरैश के हवाले करने का बीड़ा उठाया ताकि 100 ऊँट प्राप्त कर सकें। अपने घोड़े पर सवार होकर आपके कदमों के निशान की

सहायता से आपका पीछा किया लेकिन उसके घोड़े को ठोकर लगी और वह उससे गिर गया लेकिन पीछा करने से बाज वापस नहीं आया। वह फिर घोड़े पर सवार हुआ और निशानों की मदद से पीछा करने लगा। उसके घोड़े को फिर ठोकर लगी और वह फिर गिर पड़ा। वह सवार हुआ फिर पीछा करने लगा कि ये लोग उसको नजर आ गये। उसी समय उसके घोड़े ने तीसरी मरतबा ठोकर खाई। उसके दोनों अगले पांव जमीन में धंस गये। सुराका गिर पड़ा उसके साथ बगोले के समान धुआ भी उठा।

सुराका ने जब यह कैफीयत देखी तो समझ गया कि रसूल (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को इस समय अल्लाह की मदद व सहायता मिल रही है। यह हर प्रकार सफल होंगे तो उसने जोर से पुकारा और कहा कि मैं सुराक बिन जअ़शम हूँ। मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ खुदा की कसम मुझसे आपको कोई हानि नहीं पहुँचेगी। तब आपने अबू बक्र से फरमाया कि उससे पूछो कि वह चाहता क्या है? सुराका ने उत्तर दिया कि आप हमें एक तहरीर दे दें (निशानी के तौर पर) जो हमारे और आपके बीच यादगार हो। आमिर बिन फुहेरा ने हड्डी पर एक तहरीर लिख कर दे दी।

किसरा के कंगन सुराका के हाथ में

आपने सुराका से फरमाया कि तुम्हारी कैफीयत उस समय क्या होगी जब तुम्हें किसरा के कंगन पहना दिये जायेंगे। हज़रत उमर की खिलाफत (समय) में आपकी यह भविष्यवाणी सत्य हुई जब हज़रत उमर ने सुराका को बुलाया और कंगन उनको पहनाये।

रसूलुल्लाह को सुराका ने रास्ते में खाने पीने का समान देने को कहा। आपने यह स्वीकार नहीं किया और इससे जियादा कुछ नहीं कहा कि इस बात को राज रखना।

पवित्र व्यक्ति

उम्मे मअ़ब्द अल खुज़ाईया के पास से रसूलुल्लाह व हज़रत अबूबक्र गुजरे। उसके पास एक बकरी थी जिसका दूध चारा व पानी के अभाव के कारण सूख गया था। रसूलुल्लाह ने उसके थनों पर हाथ फेरा और अल्लाह का नाम लेकर दुआ फरमाई। उसी समय दूध जारी हो गया। आपने यह दूध उम्मे माबद और अपने साथियों को पिलाया। सबने खूब जी भर के पिया। अंत में आपने पिया। दूध दूसरी बार दूहा तो बर्तन भर गया। जब अबू माबद लौटे तो उनसे पूरा किस्सा बताया और उम्मे माबद ने कहा कि एक पवित्र व्यक्ति हमारे पास से गुजरा और अच्छी अच्छी बातें की। फिर उन्होंने अच्छे शब्दों में आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की तारीफ (प्रशंसा) की। यह सुनकर अबू माबद बोले कि खुदा की कसम मुझे यह कुरैश का वही व्यक्ति जान पड़ते हैं जिनकी कुरैश को तलाश है।

गाइड के साथ उन दोनों ने अपनी यात्रा जारी रखी और कुबा पहुँच गये जो मदीने के क्षेत्र में हैं। यह घटना 12 रबीउल अव्वल सोमवार की है। इस्लामी तारीख (कलेन्डर) की शुरूआत (प्रारम्भिकता) होती है।

मदीने में आपका प्रवेश और भव्य स्वागत

अंसार को आपके मक्का छोड़ने की सूचना मिल गयी थी। आपकी प्रतीक्षा (इंतजार) बेचैनी से करने लगे जैसे रोजेदार ईद के चाँद का इन्तजार करता है। प्रतिदिन सुबह की नमाज पढ़कर मदीने से बाहर आकर आपके तशरीफ़ लाने का इन्तेज़ार करते और उस समय तक वापस नहीं लौटते जब तक धूप तेज नहीं हो जाती। वह जमाना गर्मी का था और तपिश भी अधिक थी।

जिस समय आपने मदीने में प्रवेश किया उस समय अंसार आपका इन्तेजार करके अपने घर को वापस आ चुके थे। यहूदी, अंसार का आना, इन्तजार करना और फिर घर लौटना देखते थे। सबसे पहले आप पर नजर यहूदी की पड़ी। उसने शोर मचाकर आपके आने (आगमन) की सूचना सबको दे दी। सूचना पाते ही अंसार अपने घरों से निकल पड़े। उन्होंने देखा कि आप एक खजूर के दरख़्त के नीचे तशरीफ़ रखते हैं। आपके साथ हज़रत अबूबकर थे जो आपकी उम्र (आयु) के जान पड़ते थे अंसार में से अधिक ऐसे भी लोग थे जिन्होने हुजूर के दर्शन नहीं किये थे। भीड़ इकट्ठी हो गयी। आप दोनों को लोगों ने घेर लिया कि उनके लिए दोनों में से रसूलुल्लाह का पहचानना मुश्किल हो गया। हज़रत अबूबक्र को यह महसूस (अनुमान) हुआ कि अंसार आपको पहचानने में परेशान है तो हजरत अबूबक्र खड़े हुए और एक चादर आप पर डाल दी। उसके बाद लोगों का शक दूर हो गया और लोगों ने आपको पहचान लिया। आपके आने की खुशी जो लोगों को हुई जीवनभर ऐसी खुशी (प्रसन्नता) कभी प्राप्त नहीं हुई। और हर मुसलमान खुशी से झूम उठा। हर व्यक्ति औरत हो कि मर्द (स्त्री हो या पुरूष) बच्चा हो या बूढ़ा खुशी से एक दूसरे से कहता कि यह हमारे रसूल हैं। हमारे रसूल आ गये। ऐसा मालूम पड़ता कि पूरा मदीना हर्ष व उल्लास से झूम रहा है। हर एक के चेहरे में हर्ष टपक रहा था। अंसार की बच्चियाँ खुशी से झूम झूम कर यह (कविता) पढ़ रही थी।

1. पहाड़ के उस मोड़ से जहाँ से काफिले विदा किये जाते हैं। आज वहाँ से चौदहवीं का चाँद निकल आया।

2. जब तक दुनिया (संसार) में अल्लाह का नाम लेने वाला रहेगा।

हम पर उसका शुक्र (धन्यवाद) अदा करना अनिवार्य है।

3. ऐसी पवित्र ज़ात जिसको हमारे बीच भेजा गया है वाजिबुल इताअत आदेश लेकर आये हैं।

अनस बिन मालिक अन्सारी जो उस समय कम आयु के थे (लड़के थे) कहते हैं, कि मैंने देखा उस दिन से अधिक रोशन प्रकाशित दिन नहीं देखा जिस दिन रसूल्ललाह ने मदीने में प्रवेश किया।

मस्जिदे कुबा और मदीने का पहला जुमा

आपने कुबा में चार दिन कियाम फरमाया और मस्जिद के निर्माण की बुनियाद रखी। जुमे को मदीने के लिए रवाना हो गये रास्ते में बनी सालिम बिन औफ कबीले की मस्जिद में जुमे की नमाज़ अदा की।

अबू अय्यूब अन्सारी के घर में

जब आप शहर में दाखिल होने लगे तो लोग रास्ते (मार्ग) पर ग्रुप बनाकर आपसे प्रार्थना करने लगे कि आप उनके घर कियाम फरमायें कुछ तो आपकी ऊँटनी की नकेल (रस्सी) पकड़ लेते। आप उनसे फरमाते कि ऊँटनी का रास्ता न रोको यह अल्लाह की ओर से निर्देशित है। यह सिलसिला चल रहा था कि आपकी ऊँटनी बनी मालिक बिन नज्जार के घर तक पहुँच गई। और वहाँ बैठ गई जहाँ आज मस्जिदे नबवी का दरवाजा है। उस समय वहाँ खजूर का एक खलयान था जिसके मालिक बनी नज्जार के यतीम बेटे थे। वह आपके रिश्तेदार भी थे। आप ऊँटनी से नीचे उतर आये अबू अय्यूब (खालिद बिन जैद) ने शीघ्र आपका सामान उतारा और उठाकर अपने घर ले गये। आपने यहीं कियाम फरमाया अबू अय्यूब ने आपकी मेहमानदारी आपका आदर और सम्मान में किसी प्रकार की कमी नहीं की। उनकी

तबियत (आत्मा) ने यह पसन्द नहीं किया कि वह ऊपर रहें और आप नीचे के हिस्से में। इस कारण वह ऊपर से नीचे आ गये और हुजूर से कहने लगे कि आप ऊपर तशरीफ़ ले चलें घर वाले नीचे रहेंगे। आपने उत्तर दिया कि ऐ अबू अय्यूब हमको और हमारे मिलने वालों को नीचे रहने में सुविधा होगी।

मस्जिदे नबवी और घरों का निर्माण

रसूलुल्लाह ने उन दोनों यतीम लड़कों को बुलाया जो इस खलयान के मालिक (स्वामी) थे। आपने मस्जिद के निर्माण के लिए उस जगह को खरीदना चाहा। उन दोनों ने आपसे कहा कि या रसूलल्लाह यह हमारी ओर से हदया है (भेट) है आपने हदिये को स्वीकार करने से इन्कार फरमा दिया। आपने उन दोनों से वह जमीन क्रय की और वहाँ मस्जिद का निर्माण हुआ। और मस्जिद के निर्माण में स्वयं भाग लिया। आप ईंट पहुँचाते और लोग आपको देखकर यह कार्य करते। इस मौके (अवसर) पर आप फरमाते थे कि–

अनुवाद– ऐ अल्लाह वास्तव में बदला तो आखिरत का बदला है तू अंसार व मुहाजिरीन पर रहम फरमा। मुस्लमान उस समय बहुत खुश थे। खुशी में कविता पढ़ते और अल्लाह की तारीफ व प्रसंशा करते।

रसूलुल्लाह ने अबू अय्यूब के घर 7 माह क़ियाम किया। जब मस्जिद और मकानों का निर्माण हो गया तो आप घरों में मुन्तकिल हो गये। मक्का में दो ही प्रकार के मुसलमान बच रहे एक वह जो किसी आजमाइश परीक्षा में पड़े थे या जो दुश्मन के कैद में थे शेष सब मदीने हिजरत करने आपकी सेवा में उपस्थित हुए। अंसार का कोई घर नहीं बचा जिसके लोग इस्लाम नहीं ले आये।

मुहाजिरीन व अनसार में भाई चारगी

आपने मुहाजिरीन और अंसार के बीच प्रेम, भाई चारगी, हमदर्द और सहयोग का एक समझौता कराया। अंसार मुहाजिरीन के साथ भाई चारगी और हमदर्दी (सहानुभूति) में इतना बढ़ चढ़ कर भाग लेते कि कभी कभी कुराअनदाजी करनी पड़ती। वह अपने घर, मकान, जमीन और सामान में मुहाजिरीन को बराबर का साझेदार बनाते और उसको प्राथमिकता देते। एक अन्सारी मुहाजिर से कहता कि मेरे धन दौलत को देखो जितना उसका आधा होता हो वह तुम ले लो। मुहाजिर कहता कि अल्लाह तुम्हारे माल व दौलत व परिवार में बरकत अता फरमाये। बस तुम हमें बाजार का रास्ता (मार्ग) बतलाओ। अंसार का त्याग और मुहाजिरीन का आत्म सम्मान था।

मुहाजिरीन व अनसार के बीच रसूलुल्लाह की तहरीर और यहूद से अम्न समझौता

रसूलुल्लाह ने मुहाजिरीन और अंसार के बीच एक तहरीर तैयार की जिसमें यहूद से अमनो अमान (सुलहो शान्ती) का समझौता था। और उनको उनके दीन पर कायम रहने और माल व जायदाद की सुरक्षा की जिम्मेदारी ली गयी थी। उससे उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों और उनकी जिम्मेदारी का उल्लेख था।

अजान का हुक्म (आदेश)

जब रसूलुल्लाह को मदीने में शान्ति और इस्लाम को मजबूती मिली तो अजान का आदेश हुआ। इसके पूर्व सब लोग नमाज समय से पढ़ने जमा होते बगैर अजान के। यहूद व नसारा की इबादत का नाकुस शंख व घन्टा बजाने का तरीका आपको ना पसन्द था। अल्लाह ने

अजान का तरीका बताकर मुसलमानों को आदेश दिया। कुछ मुसलमानों ने इसको स्वप्न (ख्वाब) में भी देखा। अल्लाह के रसूल ने इसको अनिवार्य किया। शरइ तौर पर इसका इकरार नामा फरमाया। आपने यह सेवा हज़रत बिलाल के जिम्मे की हज़रत बिलाल को रसूलुल्लाह के मुअज्जिन होने का लकब (उपाधि) मिला। वह क़्यामत तक के लिए मुअज्जिनों के इमाम घोषित हुए।

मदीने में मुनाफेकीन खुलकर सामने आ गये

मदीने में इस्लाम ने फैलना आरम्भ किया और यहूद के कुछ विद्वान और पादरी मुसलमान हो गये जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, और हसद पैदा हुआ यहूद में और उनमें जो रियासत का सपना देख रहे थे। और यह समझ रहे थे कि उनको ताज पहनाया जायेगा तथा हर एक उनकी बात मानेगा जिसका वह आदेश देंगे। लोग उसी को स्वीकार करेंगे और जिस बात को वह रोकेंगे लोग वह न करेंगे। इससे किसी प्रकार का मतभेद न होगा। जैसे अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल जब इस्लाम फैलने लगा और अधिक संख्या में लोग मुसलमान होने लगे तो उनके सपने टूट गये। लेकिन यह देखकर कि कौम इस्लाम में दाखिल होने से रूकने वाली नहीं तो वह भी ऊपर के मन से इस्लाम में आ गया परन्तु उसका भीतर भीतर बाकी रहा इसी तरह दूसरे लोग भी जिनके मन में इस्लाम के विरोध का रोग रहा निफाक के साथ इस्लाम में दाखिल हो गये।

किबले की तबदीली (परिवर्तन)

16 वर्ष तक मुसलमानों ने और आपने बैतुल मक़दिस की तरफ मुँह करके नमाज पढ़ी। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की

इच्छा थी कि मुसलमान काबा की तरफ मुँह करके नमाज पढ़े। उस समय जो मुसलमान हो रहे थे वह अरब थे और अरबों को काबा से बेपनाह महब्बत थी। काबा की इज्जत उसका मान उनके खून में बसा था। वह बिल्कुल नहीं चाहते थे कि कोई और घर (स्थान) इब्राहिम व इस्माईल के काबा की जगह किबला हो उन्होने बैतुल मकदिस को किबला इसलिए माना कि उन्होंने कहा था कि हमने सुना और इताअत (आज्ञा पालन) की वह कहते थे हम हर उस चीज़ पर ईमान लाये जिस पर हमारे रब की तरफ से आदेश है। वह अल्लाह और उसके रसूल के आदेश का पालन करना जानते थे वह अपनी ख़्वाहिशों (इच्छाओं) को अल्लाह और उसके रसूल के आदेश के ताबे रखते थे उल्लंघन व नाफरमानी नहीं। जब अल्लाह ने उनके दिलों की परीक्षा ली और देखा कि उनके दिल अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों का पालन करते हैं। और वह अपनी परीक्षा में पूरे उतरे और सफल हुए तो अल्लाह ने काबा को किबला बना दिया। कुरान कहता है-

इस प्रकार हमने तुमको मोतदिल (संतुलित) उम्मत (कौम) बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह हो। जिस किबले पर पहले तुम थे उसको हमने इसलिए निश्चित किया था कि हम यह जान लें कि कौन नबी की बात मानता और स्वीकार करता है और उसके आदेश का पालन करता है। और कौन उसका उल्लंघन करता है। यह बात लोगों पर गरां (भारी) मालूम हुई। परन्तु अल्लाह ने जिनको हिदायत दी

(सुरह बकरा 43)

मुसलमानों ने अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए अपना किबला बदल दिया फिर वह किबला क्यामत तक के लिए मुसलमानों का हो गया जहाँ कही भी होंगे काबा की तरफ रूख़ करके नमाज पढ़ना पड़ेगी।

मदीने के मुसलमानों से कुरैश की छेड़ छाड़

जब कुरैश ने यह जान लिया कि इस्लाम ने मदीने में अपने कदम पूरी तरह जमा लिये हैं और दिन प्रतिदिन उन्नति के मार्ग पर हैं। उसकी ताकत शक्ति में हर रोज बढ़ोत्तरी हो रही है तो उनकी दुश्मनी मुसलमानों के खिलाफ़ और बढ़ गई। उन्होंने अपनी चौधराहट व नेतागीरी हाथ से जाते देखी तो बहुत शोर मचाया और वावेला किया। अल्लाह ने उस समय सब्र (सहन) करने क्षमा और शांत रहने की शिक्षा दी और मुसलमानों से अल्लाह ने फरमाया कि-

"अपने हाथ रोको नमाज से गफ़लत न करना" - (नमाज बराबर पढ़ते रहो)

जंग की अनुमति

जब मुसलमानों की ताकत और शक्ति बढ़ गयी और उनके हाथ मजबूत हुए तो अल्लाह ने उनको जंग करने की अनुमति प्रदान की। लेकिन उसको अनिवार्य नहीं किया। आपने फरमाया कि "अल्लाह ने उनको जंग करने की आज्ञा दे दी है (जिनमें बेमतलब) लड़ाई की जाती है। ताकि जो अत्याचार उन पर हो रहा है वह बंद हो। बेशक अल्लाह उनकी मदद और सहायता पर कुदरत रखता है।

सराया और गजव-ए-अबवा

हुजूर ने भिन्न भिन्न कबीलों और इलाकों (क्षेत्रों) में सराया भेजना प्रारम्भ किया। इसकी रूप रेखा वास्तव में जंग की नहीं होती थी। इसको बल प्रदर्शन या छोटी मोटी छेड़ छाड़ कह सकते हैं। इसका अर्थ केवल यह था कि मुशरिकीन के दिलों में डर (भय) बढ़ जाये

और मुसलमानों की शान शौकत का सिक्का उन पर जम जाये। रसूलुल्लाह व्यक्तिगत रूप से गजवा अबवा में शरीक हुए यह पहला गजवा था जिसमें आप शरीक हुए।

रमजान के रोजों की अनिवार्यता (फरजीयत)

वर्ष 2 हिज़्री में मुसलमानों पर रोजे फर्ज (अनिवार्य) हुए। और अल्लाह ने फरमाया कि–

अनुवाद– ऐ ईमान वालो अल्लाह ने तुम पर रोजे फर्ज किये। जिस तरह तुमसे पूर्व लोगों पर फर्ज (अनिवार्य) किये गये थे। ताकि तुम परहेजगार (बचने वाले) बनों'। (सूरह बकरह 183) दूसरे स्थान पर फरमाया।

अनुवाद– ''रमजान का महीना जिसमें कुरान नाजिल (उतरा) हुआ जो लोगों का रहनुमा (मार्ग प्रदर्शक) है जिसमें हिदायत की खुली निशानियां (लक्षण) है और हक बातिल को अलग अलग करने वाला है। तुम में से जो भी इस महींने में मौजूद हो उसको चाहिए कि वह पूरे माह के रोजे रखें''।

(सूरह बकरह 185)

बद्र की फैसलाकुन जंग (निर्णायक युद्ध)

हिजरी के दूसरे वर्ष रमजान के महीने में बद्र की जंग (युद्ध) हुई। इसको अल्लाह ने यौमुल फुरकान (निर्णायक दिन) कहा। अल्लाह फरमाता है।

"यदि तुम अल्लाह पर और उस पर (जो मदद के तौर पर) हमने हक व बातिल के फैसले और दो फरीको के मुठभेड़ के दिन बद्र की जंग के दिन अपने बन्दे (मुहम्मद) पर उतारा, ईमान रखते हो"।

(अनफाल : 41)

जब रसूलुल्लाह को यह सूचना प्राप्त हुई कि अबू सुफियान एक बड़े तिजारती काफिले (व्यापार मण्डलों) को शाम से मक्का ले जा रहे हैं। जिसमें बड़ा माल व असबाब (सामान) है। यह वह समय था जब मुसलमान और मुशरिकीन के बीच लड़ाई आरम्भ हो चुकी थी। मुशरेकीन ने सारा जोर (शक्ति) मुसलमानों से लड़ने पर लगा रखा था और उनके दस्ते (टुकड़ियाँ) मदीनें की सीमा पर चरागाह तक पहुँचने लगे। उस समय तक अबू सुफियान मुसलमानों का सख्त मुखालिफ और दुश्मन था। आपको यह सूचना मिलने पर कि अबू सुफियान काफिले के साथ है। आपने उस काफिले को आगे बढ़कर रोकने के आदेश दिये किन्तु उसके लिए आपने कोई विशेष प्रबन्ध नहीं किया केवल इस कारण कि यह एक व्यापारिक काफ़िला है। उधर अबू सुफियान को यह सूचना मिली कि रसूलुल्लाह उससे लड़ने के लिए मदीने से रवाना हो चुके हैं उसने तुरन्त अपना एक आदमी मक्का भेजा कि वह मुसलमानों के खिलाफ उसकी सहायता करें। जब यह सूचना मक्का पहुँची तो वह शीघ्र जंग के लिए तैयार हो गये। इस जंग में अबु लहब के अलावा (अतिरिक्त) सभी सरदार शरीक हुए। उसने भी अपना बदल भेजा कोई व्यक्ति इस जंग में शरीक होने से नहीं बचा जब रसूलुल्लाह को यह जानकारी हो गयी कि कुरैश का एक लशकर मक्का से रवाना हुआ तो आपने अपने असहाब (साथियों) से परामर्श किया। जिसमें अंसार की ओर से संकेत था इसलिए उन्होंने आपसे इस बात पर बैअत की थी कि वह मदीने में आपका हर प्रकार का सहयोग तथा सहायता करेंगे और आपकी रक्षा करेंगे। जब आपने मदीने से

निकलने का इरादा फरमा लिया तो आपने यह जानना चाहा कि अंसार अब क्या सोच विचार कर रहे हैं। सबसे पहले मुहाजिरीन ने अपनी बात रखी तथा अपनी शिरकत अपना सहयोग तथा मदद का आपको विश्वास दिलाया। फिर आपने दोबारा परामर्श किया तो अंसार को यह एहसास हुआ कि हुज़ूर उनकी राय (परामर्श) जानना चाहते हैं। तो सअद बिनमआज ने तुरन्त उत्तर दिया कि ए अल्लाह के रसूल आप हमसे हमारी राय जानना चाहते हैं कि अंसार ने आपकी मदद (सहायता) का वादा आपसे वतन तथा भूमि पर किया है। मैं अंसार की ओर से आपको विश्वास दिलाता हूँ और निवेदन करता हूँ कि आप जहाँ चाहें प्रस्थान करें। जिससे चाहे सम्पर्क स्थापित करें या तोड़े, हमारा धन व दौलत में से जितना आप धन लेना चाहें आप ले लें। जो आप हमें देना चाहे दे दें। आप हमसे जो लेंगे वह हमें अधिक पसन्दीदा होगा। उसके मुकाबले जो आप हमारे लिये छोड़ेंगे। आप जो आदेश देंगे उनका पालन हमारा कर्तव्य होगा। खुदा की कसम आप यदि हमें गमदान से बरक तक पहुँचने के लिए कहेंगे तो हम आपके साथ होंगे। खुदा की कसम यदि आप समुद्र में दाखिल होंगे तो हम आपके साथ समुद्र में कूद पड़ेंगे। मिकदाद ने आपसे कहा कि हम आपसे वह न कहेंगे जो मूसा अलैहिस्सलाम से उनकी कौम ने कहा था कि तुम और तुम्हारे खुदा जाकर लड़ो हम तो यहाँ बैठे हैं। लेकिन हम आपके साथ आपके शाना बशाना, आपके आगे और आपके पीछे, आपके दाये और बाये जंग करेंगे। जब आपने यह बात सुनी तो आपका चेहरा हर्ष (खुशी) से दमक उठा और आपकी अपने साथियों की राय जानने से बड़ी प्रसन्नता हुई और फरमाया चलो और खुशखबरी प्राप्त करो।

लड़कों में जिहाद का शौक

जब मुसलमानों ने बद्र का रूख किया (बद्र की ओर प्रस्थान किया) एक लड़का निकला। जिसका नाम उमैर बिन अबी वक्कास

था। उसकी आयु 16 वर्ष थी। उनको यह भय था कि अपनी कम आयु के कारण कहीं रसूलुल्लाह उनको अस्वीकार न कर दें। यह इस प्रयास में रहे कि उनको कोई देख न सके। इस कारण वह छिपते फिर रहे थे। उनके बड़े भाई सअद बिन अबी वक्कास ने इसका कारण जानना चाहा तो उनको बताया कि मेरी इच्छा इस जंग में निकलने की है। लेकिन डरता हूँ कि कहीं रसूलुल्लाह मुझे लौटा न दें। शायद अल्लाह ने मेरे नाम शहादत लिख दी हो। वही हुआ जिसका डर (भय) था। रसूलुल्लाह ने इरादा फरमाया कि उनको लश्कर में शरीक होने से रोक दें क्योंकि वह अभी पूरे जवान नहीं थे। उमैर रोने लगे तो आप को दया आ गयी और आपने उनको अनुमति प्रदान कर दी वह जंग में लड़े और शहीद हुए।

काफ़िरों और मुसलमानों की संख्या का अन्तर

आप तेजी से मैदाने जंग की तरफ बढ़े। मुसलमानों की तादात (संख्या) 313 थी। आपके पास केवल दो घोड़े, 60 ऊँट थे। एक एक पर दो दो तीन तीन आदमी सवार होते थे। एक साधारण सिपाही तथा अधिकारी में कोई अन्तर नहीं था। उनमें आप हज़रत अबू बक्र व उमर और दूसरे सहाबा भी शामिल थे।

आपने झण्डा मुसअब बिन उमैर तथा मुहजिरीन का झण्डा हज़रत अली को दिया और अंसार का झण्डा सअद बिन मुआज के हाथ में दिया। जिहाद में मुसलमानों के निकलने की जब अबू सुफियान को सूचना मिली तो वह साहिल समुन्द्र के नीचे की ओर आ गया और वह संतुष्ट था कि वह अब ख़तरे से बाहर है। और काफिला भी सुरक्षित है। उसने कुरैश को लिखा कि तुम काफ़िले की रक्षा के लिए निकले थे अब उसकी आवश्यकता नहीं है। इसलिए तुम अब वापस

लौट जाओ अबू जहल ने वापस जाने से इनकार किया और जंग करने पर इसरार किया। कुरैश की संख्या हजार से ऊपर थी। उसमें कौम के बड़े बड़े सरदार, जंगजू, युवक और माने हुए (अनुभवी) घुड़सवार तथा सिपाही शामिल थे। उनको देखकर हुजूर ने फरमाया कि आज मक्का ने अपने जिगर के टुकड़ों को तुम्हारे सामने डाल दिया।

रात तक आप और आपके साथी पानी तक पहुँच गये। पहुँचने के बाद वहां पानी का जखीरा करने के लिए हौज बनाये और उनसे पानी पीने से आपने कुफ़्फार को भी नहीं रोका। अल्लाह ने उस रात वर्षा की। यह वर्षा मुशरिकीन के लिए कठिनाई का सामना बन गई। उनका आगे बढ़ना रूक गया। वह वर्षा मुसलमानों के लिए रहमत थी। वर्षा से रेत जम गयी और मौसम सुहाना हो गया। अल्लाह ने मुसलमानों के दिलों को इतमीनान बख्शा (संतुष्ट किया) अल्लाह ने फरमाया-

"अल्लाह ने वर्षा की ताकि तुम उस पानी से नहाकर पवित्र हो जाओ और तुमसे शैतानी गंदगी दूर कर दे। तुम्हारे दिलों को मजबूत कर दे और तुम्हारे पैरों को जमा दे।

(सूरह- अन्फाल 11)

जंग की तैयारी

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए मैदाने जंग के सामने एक स्थान पर एक छप्पर डाल दिया गया। उसके पश्चात आप मैदान में तशरीफ़ लाये और इशारे से बताया कि फुला आदमी यहाँ और फुला आदमी वहाँ इन्शाअल्लाह मारा जायेगा। कोई बात इसके विपरीत (खिलाफ) नहीं हुई सुबह दोनों लश्कर आमने सामने आ गये तो आपने इरशाद फरमाया कि-

"ऐ अल्लाह आज कुरैश के लोग बड़े गर्व और घमन्ड के साथ आए कि तुझसे लड़ें और तेरे रसूल को झुठलाएं।

वह रात जुमा (शुक्रवार) की रात और रमजान की 17 तारीख थी। सुबह हुई तो दोनों फौज आमने सामने थी।

अल्लाह के हुजूर आपकी दुआ (प्रार्थना)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सफ़ो को ठीक किया और आप अपने छप्पर में आ गये। आपके साथ हज़रत अबूबक्र ने भी प्रवेश किया। आपने दुआ (प्रार्थना) में किसी प्रकार की कमी नहीं की। आप जानते थे कि सहायता में मदद अल्लाह की तरफ से आयेगी। आपने फरमाया कि ऐ अल्लाह यदि आज यह जमाअत हलाक हो गयी तो फिर इसके बाद तेरी पूजा करने वाला कोई नहीं होगा। आप अपने पैदा करने वाले से कह रहे थे कि ऐ अल्लाह जिस चीज़ का तूने मुझसे वादा किया है। वह तो आज पूरा कर दे। ऐ अल्लाह आपकी मदद और सहायता की अधिक आवश्यकता है। आप अपने हाथ आसमान की ओर उठाते थे और दुआ करते थे। इस हालत में आपकी चादर आपके कंधों से गिर गयी। हज़रत अबू बक्र आपको तसल्ली देते। और आपको संतोष दिलाते। हजरत अबू बक्र से आपकी गिरया वजारी देखी नहीं जाती थी। इसके पश्चात आप लश्कर (सेना) के सामने आये। उनमें जिहाद और शहादत का शौक पैदा किया। सबसे पहले उतबा बिन रबीआ, उसका भाई शेबा और उसका पुत्र वलीद निकले। उनके मुकाबले के लिए अंसार के तीन युवक निकले। तो वे बोले कि तुम कौन हो। उन्होंने उत्तर दिया कि हम अंसार में से हैं। फिर वे बोले शरीफ लोग हो- जाओ, तुम हमारे जोड़ के नहीं हो। तब आपने फरमाया कि खड़े हो जाओ उबैदा बिन हारिस बिन मुत्तलिबबिन अब्दे मनाफ खड़े हो जाओ ए हमजा और ए अली वह लोग बोले हाँ अब यह हमारे जोड़ के हैं। हजरत उबैदा ने उतबा, हजरत हमजा ने शैबा को तथा हजरत अली ने वलीद को मुकाबले की दावत (निमंत्रण) दी।

हजरत हमजा और अली ने अपने दोनों दुश्मनों को क़त्ल कर दिया। लेकिन हजरत उबैदा और उतबा का सख्त मुकाबला हुआ। निर्णय नहीं हो पा रहा था कि हजरत हमजा और अली ने उतबा को मार डाला। हजरत उबैदा को जख्मी हालत में उठा ले गये। बाद में वह शहीद हुए।

जंग की शुरूआत और सेनाओं का आमना सामना

उस समय दोनों लश्कर जंग कर रहे थे और एक दूसरे के करीब हो गये थे तो रसूलुल्लाह ने फरमाया कि बढ़ो जन्नत (स्वर्ग) की तरफ की चौड़ाई आसमान और जमीन के बराबर है।

प्रथम शहीद

उमैर बिन हम्माम खड़े हुए और कहा कि या रसूलल्लाह जन्नत जिसकी चौड़ाई आसमान जमीन के बराबर है। आपने फरमाया वह कहने लगे वाह वाह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूछा कि इसका क्या अर्थ है उन्होंने कहा कुछ नहीं। बस या रसूलल्लाह मुझे ख्याल आया कि जन्नत शायद मेरी किस्मत (भाग) में है। आपने फरमाया हां तुम्हारे भाग में वह जन्नत है। फिर उन्होंने अपने थैले से कुछ खजुरें निकालीं। और उसमें से खाने लगे। फिर स्वयं बोले कि यदि मैंने अपना समय खजूर खाने में बिता दिया तो बहुत देर हो जाएगी। बची हुई खजुरों को फैका और मैदाने जंग में कूद पड़े और (शहीद) हुए यह प्रथम शहीद थे। दूसरी ओर मुसलमान सफ बांधे सब्र शुक्र के साथ अल्लाह के ध्यान के साथ तैयार पक्तिबद्ध खड़े थे। आपने पूरी तरह जंग में भाग लिया आप दुश्मन के अधिक करीब थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दुश्मन के मुकाबले में सबसे जियादा सख़्त लड़ने वाले थे। अल्लाह ने मुसलमानों की मदद (सहायता) के

लिए फरिश्ते भेजे उन्होंने मुशरिकीन से जंग की।

जिहाद व शहादत के शौक में 2 युवकों की प्रतियोगिता

युवकों में शहादत (कल्याण) को प्राप्त करने की प्रतियोगिता थी। अल्लाह के दीन को ऊँचा दिखाने के लिए उनमें जिहाद व शहादत की उमंग व शौक (इच्छा) पैदा हुई और एक भाई दूसरे भाई के मुकाबले एक मित्र दूसरे मित्र तथा परिवार के अन्य सदस्यों से इस कार्य में बढ़ जाना चाहता था। हजरत अब्दुल्लाह बिन औफ कहते हैं कि मैं बद्र के मैदान में अपनी सफ में था कि मेरी नजर 2 युवकों पर पड़ी जो मेरे दाहिने और बाँए तरफ थे। मैं अभी सोच ही रहा था कि जैसे उनके बीच में महफूज नहीं हूँ कि उनमें से एक ने आकर चुपके से मेरे कान में कहा कि ऐ चचाजान मुझे जरा अबू जहल को दिखा दीजिये मैंने उस बच्चे से पूछा कि ऐ भतीजे उससे तुम्हें क्या काम? वह बोला कि मैंने अल्लाह से अहद (प्रतिज्ञा) किया है कि मैं जहाँ कही अबू जहल को देखूँगा उसको अवश्य मारूँगा। या अपनी जान दे दूंगा। दूसरे बच्चे युवक ने भी मुझसे यही बात की। मैंने अबु जहल की ओर इशारा (संकेत) किया ही था कि वह उकाब की तरह उस पर टूट पड़े और मार डाला। जब उन्होंने अबु जहल को कत्ल कर दिया तो हुजूर ने फरमाया कि यह अबु जहल है जो इस उम्मत का फ़िरऔन था।

स्पष्ट विजय

जब बद्र की जंग मुसलमानों की सफलता तथा विजय और मुशरिकीन की पराजय पर समाप्त हुई तो आप(सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अल्लाह बड़ा है अल्लाह ही के लिए प्रशंसा है जिसने अपने वादे वचन को सत्य कर दिखाया और जिसने अपने

बन्दों की सहायता की और जिसने तनहा दुश्मन को पराजित किया और अल्लाह तआला ने सच फरमाया-

अल्लाह ने तुम्हारी बद्र की जंग में उस समय सहायता की जब तुम बड़ी बेसरो सामानी में थे। अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्र गुज़ार (कृतज्ञ) हो।

(सूरह आल इमरान 123)

आपने आदेश दिया कि कुफ़्फ़ार के सब मारे जाने वाले (शव) एक कुएं में डाल दिये जायें। उनको कुंए में डाल दिया गया। आपने खड़े होकर फरमाया कि ऐ कुलैब वालो तुमने वह पाया जिसका अल्लाह ने तुमसे वादा (वचन) किया था और हमने वह पा लिया जिसका उसने हमसे वादा किया था।

इस जंग में कुफ़फार (मुशरेकीन) के 70 नामी गिरामी सरदार मारे गये और 70 ही बन्दी बनाये गये। कुरैश के 6 और अंसार के 8 व्यक्ति शहीद हुए। बंदियों को आपने अपने असहाबा (साथियों) में बांट दिया कि वह उनके साथ अच्छा (मुआमला) मामला करें।

जंगे बद्र के पश्चात लोगों पर उसका प्रभाव

रसूलुल्लाह बद्र की जंग में सफल तथा विजय होकर मदीने लौटे। मदीना और उसके आस पास के इस्लाम दुश्मन खौफज़दा हो गये उस समय मदीने तथा उसके आस पास के क्षेत्रों के बहुत से लोग मुसलमान हो गये। और मक्का के मुशरिकीन के घरों में शोक मनाया गया। सरदारों के कत्ल होने पर रोना पीटना मच गया और अल्लाह ने मुशरिकीन के दिलों में रोब, डर (भय) डाल दिया।

मुसलमान बच्चों की शिक्षा के बदले बन्दियों की रिहाई

रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने बन्दियों के साथ नम्रता व क्षमा का मामला फरमाया। उनका फिदया स्वीकार किया और जो फिदया देने के योग्य नहीं थे उनको आपने बिना फिदया लिए आजाद कर दिया। कुछ ऐसे भी बंदी थे जिनका फिदया कुरैश ने भेजकर उनको आज़ाद कर लिया।

कुछ ऐसे भी थे जिनका फिदया यह था कि वह अनसार के बच्चों को शिक्षा दे। हर आदमी 10 मुसलमानों को लिखना पढ़ना सिखलायेगा। उन्हीं में जैद बिन साबित हैं। जिन्होंने इस प्रकार शिक्षा प्राप्त की।

बनू कैन काअ़ वह पहले यहूदी हैं जिन्होंने समझौते को तोड़ा और मुसलमानों को कष्ट और तकलीफ पहुँचाई। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने उनका 15 दिन तक मुहासरा (नाकाबंदी) किया यहाँ तक कि उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। अब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफिको का सरदार) ने उनकी सिफारिश (प्रार्थना, अनुशंसा) की। उसका लेहाज करते हुए आपने नाकाबंदी समाप्त कर दी। सात सौ लड़ने वाले जवान थे जो सुनारी का काम करने वाले तथा व्यापारी थे।

मूर्खता का स्वाभिमान तथा प्रतिकार की भावना

उहुद की जंग

जाहिली हमिय्यत और बदले की भावना

जब कुरैश के बड़े बड़े सरदार बद्र में कत्ल हो गये और कुछ

आज़ाद होकर मक्का में पहुँचे तो उन पर कठिनाइयों और कष्टों के पहाड़ टूट पड़े। वह सब जिनके बाप, भाई, बेटे तथा परिवार लोग बद्र में मारे गये, उन्होंने अबू सुफियान से बात की और उस तिजारती माल में जिनका हिस्सा था उन सभी से बात की कि वह अपना माल तिजारती मुसलमानों के विरूद्ध जंग के लिए सहायता में दें और उन्होंने ऐसा ही किया। कुरैश आपके विरूद्ध लड़ने के लिए जमा हुए। कवियों ने अपनी कविताओं से उनको लड़ने पर उकसाया और उनको लज्जा और गैरत दिलाई।

हिजरत के तीसरे वर्ष शव्वाल के माह में कुरैश अपने सपूतों और सहयोगी कबीलों के साथ आपसे जंग करने के लिए निकल पड़े। सरदारों ने अपने साथ अपनी पत्नियों को भी लिया और मदीने के सामने पड़ाव डाल दिया।

हुज़ूर की राय थी कि मुसलमान मदीने में ही रहें और मुशरिकीन से किसी प्रकार की छेड़-छाड़ न करें। लेकिन यदि वह स्वयं हमला करें तो फिर उनसे बाकाएदा जंग की जाये। हुज़ूर को यह बात पसन्द नहीं थी कि मुसलमान मदीना छोड़कर, बाहर निकल कर उनसे जंग करें। अब्दुल्लाह बिन उबई की भी यही राय थी जो आप की थी। लेकिन मुसलमानों में से कुछ लोग जो बद्र में शरीक नहीं हुए थे वह कहते थे कि अल्लाह के नबी आप मदीने से बाहर निकल कर उनसे लड़िये ताकि वह यह न समझें कि मुसलमान बुज़दिल और कायर हो गये हैं। वह लोग इस पर इसरार करने लगे तो आप घर तशरीफ़ ले गये और ज़िरह पहन कर बाहर तशरीफ़ लाये। आपको ज़िरह पहने देख कर उन लोगों को बड़ी लज्जा आयी और शरमिन्दा हुए जो मदीने से बाहर लड़ने का मशवरा (परामर्श) दे रहे थे। उन्होंने आपसे कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल हमने आपकी (मर्ज़ी) इच्छा के विरूद्ध बात की। हमें ऐसी बात नहीं करनी चाहिए थी। आप तशरीफ़ रखें। आपने उनसे

फ़रमाया कि नबी की यह शान नहीं कि वह जब ज़िरह पहन ले तो उसको बिना जंग किये उतार दे। हुज़ूर अपने एक हज़ार साथियों के साथ जंग के लिए मदीने से बाहर तशरीफ लाये। आप मदीने और उहुद के बीच में थे कि अब्दुल्लाह बिन उबई अपने एक तिहाई आदमियों के साथ वापस लौट गया। और कहने लगा कि हुज़ूर ने मेरी बात ठुकरा दी और नव युवकों की बात स्वीकार कर ली।

उहुद के मैदान में

मदीने से तीन किलो मीटर दूर पहाड़ों के दामन में पहुँच कर आपने पड़ाव डाला। आपने अपनी पीठ उहुद की ओर की और उसी शक्ल (सूरत) में लशकर को भी तैयार किया फिर आपने फरमाया कि मैं जब तक जंग के लिए न कहूं कोई जंग न छेड़े। फिर आपने जंग की तैयारी की। आपके साथ 700 (सात सौ) लोग थे। आपने अब्दुल्लाह बिन जुबैर को तीरंदाजी के लिए आदेश दिये। वह सब 50 आदमी थे। आपने उनसे फरमाया कि तीरंदाजी से घोड़ों को आगे बढ़ना रोकें। पीछे से कोई भी किसी प्रकार न आने पाये चाहे जंग हमारे हक में हो या हमारे खिलाफ़ जिसको जिस कार्य के लिए नियुक्त किया है वह उस पर जमा रहे चाहे वह अपनी आँखों से देख रहा हो कि लश्कर को चिड़िया उठाये लिये जा रही हैं। आपने इस जंग में दोहरी जिरह पहनी और परचम (झण्डा) मुसअब बिन उमैर को दिया।

हम उम्र (युवकों) में प्रतियोगिता

नव युवकों की एक जमाअत उहुद की जंग में उपस्थित हुई उनमें समुरा बिन जुनदुब, राफे बिन खुदैज (यह दोनों 15 वर्ष के थे) अबू राफ़े ने अपने पुत्र की हुज़ूर से सिफ़ारिश की उनका पुत्र बड़ा तीरंदाज है। आपने उनको अनुमति प्रदान की। फिर समुरा बिन जुनदुब आपकी

सेवा में उपस्थित हुए यह राफ़े के आयु (उम्र) के थे। आपने उनको कम आयु होने के कारण वापस कर दिया। समुरा ने आपसे अनुरोध किया कि आपने राफ़े को अनुमति प्रदान की है और मुझे आपने वापस कर दिया। हम दोनों में यदि कुश्ती हो तो मैं जीत जाऊंगा। दोनों के बीच कुश्ती हुई समुरा ने राफ़े को हरा दिया। फिर आपने समुरा को भी आज्ञा प्रदान कर दी वह निकले और जंग में शरीक हुए।

जंग (लड़ाई) युद्ध

जंग प्रारम्भ हुई। एक दूसरे से गुतथम गुतथा हो गये। महिलाओं में हिन्दा बिंत उतबा खड़ी दफ़ बजा रही थी और जंग के लिए लोगों को तैयार कर रही थी। जब घमासान की लड़ाई लड़ी जाने लगी तो अबू दुजाना ने आपसे तलवार ली और मैदाने जंग में कूद पड़े और आपसे कहा कि मैं इस तलवार का हक अदा करूंगा। उनकी तलवार के सामने जो कोई आता वह जिन्दा बचकर नहीं जा पाता।

हज़रत हमजा ने अपनी बहादुरी (वीरता) का जबरदस्त प्रदर्शन किया और कितने सुरमाओं को उन्होंने मौत के घाट उतार दिया। उनके सामने कोई टिक न सका। लेकिन जुबैर बिन मतअम का वहशी गुलाम उनकी ताक में था वह भाला चलाने का माहिर (विशेषज्ञ) था। जुबैर ने उसको विश्वास दिलाया था कि यदि वह हमजा को शहीद कर देगा तो वह उसे आज़ाद कर देंगे। वह बदला लेना चाहता था। बद्र में हजरत हमज़ा ने जुबैर के चाचा को कत्ल किया था। इसी प्रकार हिन्दा अबू सुफयान की पत्नी जो हजरत हमजा के कत्ल पर उकसा रही थी उनकी शहादत से अपना कलेजा ठन्डा करना चाहती थी। वहशी ने हजरत हमजा पर भाले से हमला किया वह उनकी नाफ से बाहर निकल गया और हजरत हमजा शहीद हो गये। मुसअब बिन उमैर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बचाव में जम कर लड़ते रहे और

आप पर कुरबान हो गये। मुसलमान हर आज़माइश (परीक्षा) में पूरे उतरे। और अल्लाह ने उन पर मदद उतारी और अपना वचन पूरा किया। मुशरिकीन को सख्त हानि हुई। वह महिलायें जो मर्दों को गैरत दिलाने (उत्तेजित करने) आई थी मैदान से भाग खड़ी हुईं।

मुसलमानों के खिलाफ जंग का पांसा कैसे पलटा

मुशरिकीन पराजय के बाद भागने लगे, महिलाओं ने भी भागना शुरू किया तो तीरंदाजों ने अपना स्थान छोड़ दिया और लशकर से आकर मिल गये। उनको अपनी (मुसलमानों की) सफलता का पूर्ण विश्वास था और वह कहते थे ऐ कौम माले गनीमत! माले गनीमत! उनके सरदार ने उनको रसूलुल्लाह से किया वादा याद दिलाया पर उस पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया और वह यह समझते रहे कि मुशरिकीन अब वापस नहीं लौट सकते। इसलिए उन्होंने महाज (युद्ध स्थल मोर्चा) खाली छोड़ दिया। मुशरिकीन के झण्डे को जो लिये थे वह मारे गये थे। झण्डे के करीब आने का साहस नहीं था। उसी समय मुशरिकीन ने पीछे से आकर आवाज लगाई कि मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद कर दिये गये। यह सुनकर मुसलमानों का लशकर पीछे मुड़ा। इस मौके से उन्होंने पूर्ण लाभ उठाया यह मुसलमानों के लिए बड़ी आजमाइश व परीक्षा थी। इस बीच दुश्मन हुजूर के करीब पहुँच गये। एक पत्थर आपके लगा आप दाये पहलू एक गार में गिर पड़े सामने का एक दांत जख्मी हो गया सरे मुबारक पर जख्म आया। लबे मुबारक खून आलूद हो गया और खून चेहरे मुबारक पर बह रहा था। उसको पोछते थे और फरमाते थे कि वह कौम कैसे सफल हो सकती है। जो अपने नबी के चेहरे को केवल इसलिए खून से तर कर दे कि वह उनको अल्लाह की तरफ बुलाता है। मुसलमानों को

आपके बारे में जानकारी नहीं थी कि आप कहां हैं। हज़रत अ़ली ने आपको सहारा दिया और हज़रत तलहा ने आपको उठाया। आप खड़े हो गये। मालिक बिन सिनान ने आपके चेहरे अक़्दस से खून साफ किया और उसको नोश कर लिया। वास्तव में यह फ़रार (भागना) ना था बल्कि यह जंगी हिकमते अ़मली (रणनीति) थी जो आवश्यकतानुसार सेना प्रयोग करती है। और संभलकर दोबारा हमला (आक्रमण करती है।) मुसलमानों को आजमाईश की जिस तलखी का मजा चखना पड़ा और जिसमें इन्सानी मूल्यवान जानों की हानि हुई और जो शहीद हुए वह इस्लाम और मुसलमानों की ताकत थे। अल्लाह उनके रसूल और उसके दीन की मदद करने वाले थे। यह केवल तीरंदाजों का रसूल (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) के आदेश का उल्लंघन का परिणाम था कि उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया जिसको न छोड़ने का हुजूर ने आदेश दिया था। अल्लाह फरमाता है: और खुदा ने अपना वअ़दा सच्चा कर दिया यअ़नी उस वक्त जब कि तुम काफिरों को उस हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि जो तुम चाहते थे खुदा ने तुमको दिखा दिया उसके बअ़द तुमने हिम्मत हार दी और (पैगम्बर के) हुक्म में झगड़ा करने लगे और उसकी नाफरमानी की, कुछ तो तुममे दुनिया चाहते थे कुछ आख़िरत चाहते थे। उस वक्त खुदा ने तुमको उनके मुक़ाबले से फेर दिया ताकि तुम्हारी जाँच करे और उसने तुम्हारा कुसूर मुआफ कर दिया और खुदा मोमिनों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है।

(आलि इम्रान : 152)

महब्बत (प्रेम और जान निसारी का नया नमूना

अबू उबेदा बिन जराह ने खौद (फ़ौलादी टोपी) की एक कड़ी को अपने दांत से पकड़ कर निकाला तो उसी के साथ उनका दांत भी

गिर गया। इसी तरह दूसरी कड़ी निकालने में दूसरा दांत गिर गया अबू दुजाना आप पर ढाल बनकर खड़े हो गये। और आप पर झुके रहे यहाँ तक कि उनकी पीठ तीरों से छलनी हो गयी। सऊद बिन वक्कास हुजूर के दिफा (रक्षा) में तीर चला रहे थे। आप अपने दस्ते मुबारक के तीर देते और फरमाते कि मेरे मां बाप तुझ पर फिदा तीर चलाते रहो कतादा बिन नोमान की आंखों पर ऐसी चोट लगी कि आंख निकल कर उनके गाल पर आ गई। आपने उनकी आंख को उसी जगह (स्थान) रख दिया तो वह आँख पहली आँख से भी अधिक तेज हो गयी।

मुशरेकीन आपकी तलाश में थे और अल्लाह का बुरा इरादा था कि दस आदमी आपके सामने आ गये और सब एक एक कर कुरबान हो गये। आखिर में हजरत तलहा ने अपना हाथ सामने कर दिया और तीरों को रोकना आरम्भ कर दिया। आपकी अंगुलियां जख्मी हो गई और हाथ बेकार हो गया। वहीं आप एक चट्टान पर चढ़ना चाहते थे। लेकिन आप उस पर कादिर (समर्थ) नहीं थे। हजरत तलहा नीचे बैठ गये आप उनके सहारे चट्टान पर चढ़ गये। नमाज का समय हो गया आपने बैठ कर नमाज पढ़ी। उस समय लोग हार थक कर बिखर रहे थे। लेकिन अनस बिन मालिक जो आपके ख़ादिम थे, आगे बढ़ते रहे। सअ़द बिन मआज़ उनसे रास्ते में मिले तो पूछा कि किधर का इरादा है। अनस ने उत्तर दिया कि सअ़द मुझे तो जन्नत की खुशबू आ रही है। अनस मुहाजिरीन व अंसार के पास से गुजरे और देखा कि वह हाथ पर हाथ रखे बैठे थे। अनस ने उनसे कहा कि तुम लोग यहाँ बैठे क्या कर रहे हो उन लोगों ने उत्तर दिया कि रसूलुल्लाह शहीद कर दिये गये। अब आपके बाद जीवन में रखा ही क्या है। उठो और जान दे दो जिस पर आपने जान दे दी। यह कहकर आगे बढ़े और जान दे दी। अनस कहते हैं कि हमने उनके जिस्म (शव) पर 70 जख्म देखे। उनका पहचानना असम्भव था यदि उनकी बहन ने उनकी अंगुलियों के पोरों

से उनको पहचान न लिया होता।

जियाद बिन सकन 5 अंसारियों के साथ आपकी रक्षा के लिए लड़ रहे थे और एक एक कर शहीद हो रहे थे। जियाद जखमों से चूर हो गये थे। तो आपने फरमाया कि इनको मेरे करीब ले आओ उनको आपके करीब लाया गया तो आपने उनके सर को कदम मुबारक पर रख लिया इस हालत में उनका इनतिकाल हुआ। उनके गाल आपके कदमों पर थे।

अम्र बिन जमूह जिनके पैर में लंग था (लंगड़े थे)। उनके चार जवान पुत्र थे और आपके साथ जंग में शरीक रहते थे। जब आपने उहुद के लिए इरादा फरमाया तो अम्र बिन जमूह ने भी आपके साथ चलने का इरादा किया उनके बेटों ने अपने बाप से कहा कि अल्लाह ने आपको इज्जत (आदर) दी है। आप शरीक न हों। आप आराम (विश्राम) करें। हम लोग जिहाद में शरीक होने जाते हैं। अल्लाह ने आप पर जिहाद फर्ज (अनिवार्य) नहीं किया। अम्र आपकी सेवा में उपस्थित हुए और कहा मेरे बेटे आपके साथ जिहाद में शरीक होने से रोकते हैं। और बाखुदा मुझे शहादत की आरजू (मनोकामना) है। मेरी इच्छा है कि मैं जन्नत में लंगड़े पैर चलूं। आपने उनसे फरमाया कि जहाँ तक तुम्हारा प्रश्न है अल्लाह ने तुमको जिहाद से मुआफ कर दिया है। फिर आपने उनके बेटों से फरमाया हरज ही क्या है। इनको जिहाद में जाने दो हो सकता है अल्लाह शहादत नसीब करे वह आपके साथ जिहाद उहुद में शरीक हुए और शहीद हो गये।

जैद बिन साबित ब्यान करते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने सऊद बिन रबीअ की खोज में भेजा और मुझसे फरमाया कि जब तुम उनको देखो तो मेरा सलाम कहना और उनसे कहना कि रसूलुल्लाह ने पूछा है कि इस समय तुम्हें क्या महसूस हो रहा है। वह कहते हैं कि मैंने उनको पहले मरने वालों में तलाश किया।

जब मैं उनके पास पहुँचा तो उनका अंतिम समय था उन पर नेजे और तलवार के 70 जख्म थे। मैंने कहा कि सअद रसूलुल्लाह ने तुमको सलाम कहा है और कहा कि मुझे बतलाओ कि इस समय तुम क्या महसूस कर रहे हो वह बोले कि रसूलुल्लाह को मेरा सलाम कहना और कहना कि मैं जन्नत की खुशबू पा रहा हूँ। और मेरी कौम अंसार से कहना कि यदि दुश्मन रसूलुल्लाह तक पहुँच गये और तुममें दम रहा तो अल्लाह के पास कोई उज्र न होगा। उसके बाद आपका इन्तिकाल हो गया।

अब्दुल्लाह बिन जहश ने दुआ की कि ऐ अल्लाह कल मैं दुश्मन का मुकाबला करूं वह मुझे कत्ल कर दे फिर मेरा पेट चाक करें और मेरे नाक कान काट डालें फिर आप मुझसे पूछें कि यह सब किसके लिए है। और मैं उत्तर दूँ कि केवल तेरे लिये है।

मुसलमानों का दोबारा जमाव

जब मुसलमानों ने आपको देख लिया और पहचान लिया तो मुसलमानों को नया जीवन मिला एक बार फिर सब खड़े हो गये। आप उनको लेकर वादी की तरफ बढ़े रास्ते में उबई बिन ख़लफ मिला तो कहने लगा कि ऐ मुहम्मद यदि तुम बच गये तो मेरी खैर नहीं। आपने फरमाया कि इसको जाने दो लेकिन जब वह करीब आया तो आपने एक सहाबी से उसका नेजा लेकर उसकी गरदन पर मारा। वह घोड़े से गिरा और कई कलाबाजियां खाई।

उस समय हजरत अली अपनी मशक से आपके चेहरे मुबारक से खून साफ कर रहे थे हजरत फातमा भी उनके साथ धो रही थीं हजरत अली ढाल में पानी लेकर डालते थे। हजरत फातिमा ने देखा कि पानी से खून बन्द नहीं हो रहा है। तो उन्होंने चटाई का एक टुकड़ा जलाकर जख्म पर भर दिया था तो खून रूक गया।

आयशा बिन्त अबूबक्र व उम्मे सुलैम इस गजवे में अपने मशकीजों में पानी लाद कर लातीं और जखमियों को पिलातीं। जब मशकीजे में पानी समाप्त हो जाता तो फिर जातीं और भरकर लातीं और जखमियों को पानी पिलातीं। उम्मे सुलैम उनके मशकीजे में भरतीं।

बिन्ते उतबा ने कुछ महिलाओं के साथ शहीदों के जिस्म (शव) की बेहुरमती करना उनकी नाक, कान काटना आरम्भ कर दिया। हजरत हमजा का जिगर निकाल कर चबाने लगी लेकिन वह उसे निगल न सकी इसलिए उसको उगल दिया।

जब अबू सुफियान वापस होने लगे तो पहाड़ पर चढ़कर जोर से चिल्लाये (चीखे) जंग का मामला डांवा डोल है। आज इसकी जीत है तो कल उसकी, हबुल का नाम ऊँचा रहे। रसूलुल्लाह ने फरमाया उमर खड़े हो जवाब (उत्तर) में कहा कि अल्लाह सबसे बड़ा और सबसे बुलन्द है हमारे मकतूलीन (शहीद) जन्नत में हैं। और तुम्हारे मुर्दे दोज़ख में है। अबू सुफियान ने कहा कि हमारे पास उज़्ज़ा है। तुम्हारे पास उज्जा नहीं। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया इनको जवाब दो सहाबा ने कहा कि रसूलुल्लाह क्या कहें। आपने फरमाया कहो कि अल्लाह हमारा सरपरस्त (संरक्षक) है तुम्हारा कोई संरक्षक नहीं है।

जब दोनों अलग अलग हुए तो बोले कि अगले वर्ष तुम्हारा मुकाबला फिर बद्र में होगा आपने अपने एक सहाबी से फरमाया कि कहो ठीक है यह हमारे तुम्हारे बीच तय (निश्चित) है।

लोगों को अपने मक़तूलीन का गम था वह उनको कफनाने दफनाने में व्यस्त रहे। हुजूर सलल्लाह अलैहि व सल्लम पर हजरते हम्ज़ा की शहादत का बड़ा असर था जो आपके चचा और रजाई भाई थे और हमेशा आप पर कुर्बान होने को तैयार रहे।

एक मोमिना का सब्र

हजरत सफ़या बिन्त अब्दुल मुत्तलिब हजरते हमजा की हकीक बहन थीं जब आप उनको देखने आयीं तो उनके बेटे जुबैर बिन अव्वाम से हुजूर (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि उनको वापस लौटाओ। उनके भाई की लाश की जो बेहुरमती हुई वह उनको न देख सकेंगी, जो उन्होंने जाकर कहा कि ऐ माँ हुजूर का आदेश है कि आप लौट जायें। वह बोलीं क्यों मुझे पता है। कि मेरे आई की लाश के साथ बेहुरमती की गई है। यह सब अल्लाह की राह में है। सब्र करूंगी फिर वह भाई उनको देखा, उनके लिए दुआए मग़फिरत पढ़ी और लौट गई।

हजरत मुसअब के हाथ में अलमे रसूल (परचम) था। यह युवक इस्लाम लाने के पूर्व बड़े लाड प्यार से पला और बढ़ा था, एक चादर में दफ़नाया गया। उस चादर में जब पैर ढक जाते तो सर खुल जाता, सर ढाका जाता तो पैर खुल जाते रसुलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि सर ढक दो और पैरों पर घास डाल दो।

रसुलुल्लाह(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उहुद के मौके पर दो दो शहीदों को एक चादर में कफनाने का आदेश दिया और हाफिजे कुरान को कब्र में उतारने में तरजीह (प्राथमिकता) दी जाती और आप फरमाते इन सब के लिए मैं गवाह हूँ।

शुहदा को उनके ज़ख़्मों के साथ ही दफ़नाया गया। न तो उनको नहलाया गया और न उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई।

आप पर सहाबियात महिलाओं की जानिसारी (निछावर होना)

मुसलमान मदीने लौटे तो रास्ते में बनी दीनार की एक महिला

मिली उस ख़ातून महिला के पति, भाई और बाप सब जंग के काम आ गये थे जब मुसलमानों ने उसको समाचार दिया तो उसने पूछा कि रसुलुल्लाह का क्या हाल है। उसको बताया गया कि आप खैरियत कुशल से हैं। उसने कहा कि मुझे दिखलाओ मैं स्वयं देखना चाहती हूँ। लोगों ने आपकी ओर इशारा (संकेत) किया। जब उसने आकर आपको देख लिया तो कहा कि बस आप सलामत (कुशल) हैं तो हर मुसीबत हेच है अर्थात हर कष्ट छुद्र है।

जांनिसारी, फरमांबरदारी का एक उदाहरण

उधर इस्लाम के दुश्मनों ने एक दूसरे को बुरा भला कहना शुरूअ़ किया और कहते कि तुमने कुछ करके नहीं दिखाया। तुमने उनकी ताकत तो तोड़ दी परन्तु उनको पूरी तरह नहीं तोड़ा। इधर रसूलुल्लाह ने इनका पीछा करने का आदेश दिया। यह वह समय था जब मुसलमान जखमों से चूर थे। दूसरे दिन आपने एलान फरमाया कि दुश्मनों का पीछा करने के लिए निकल पड़ो। इसमें वही लोग शामिल होंगे जो कल उहुद में शरीक थे। मुसलमान उस समय जखमी थे फिर भी आपके साथ निकले कोई आदमी ऐसा नहीं था जिसने आपकी आज्ञा का उल्लंघन किया हो, आपकी बात न मानी हो, जब यह लोग हुमरा असद जगह तक पहुँचे यह स्थान मदीने से 8 मील दूर है। रसुलुल्लाह वहाँ तीन दिन पीर मंगल तथा बुध तक रहे फिर मदीने लौटे।

इस लड़ाई में सत्तर सहाबा शहीद हुए उनमें अक्सरीयत अंसार की थी और बाइस मुशरिकीन मारे गये।

जान से अधिक प्रिय

हिजरत के तीसरे वर्ष बनी अज़ल और क़ारा कबीले ने आपसे

ऐसे शिक्षित मुसलमानों की मांग की ताकि वह कबीले के लोगों को इस्लाम की शिक्षा दें। रसुलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके साथ 6 सहाबा को भेजा जिनमें आसिम बिन साबित, खुबेब बिन अदी व ज़ैद बिन दसना शामिल थे इनमें से अधिकतर को उन्होंने शहीद कर दिया।

जैद को हरम से बाहर शहीद करने के लिए कुरैश के सभी आदमी इकट्ठा (जमा) थे। उनमें अबू सुफियान भी थे। उन्हीं ने हजरत जैद से पूछा मैं तुमसे कसम लेकर पूछता हूँ कि क्या तुम यह चाहोगे कि तुम्हारी जगह मुहम्मद हों और तुम अपने परिवार में हो। उन्होंने उत्तर दिया कि मैं तो यह भी नहीं चाहूँगा कि आप घर पर हों और आपके पैर मुबारक में कांटा चुभे और मैं घर पर अपने परिवार सहित सुखी हूँ तो-अबू सुफियान बोले कि मैंने किसी को किसी से इतनी मुहब्बत करते नहीं देखा जितनी मुहम्मद से उनके मानने वाले करते है। फिर उसके बाद उनको शहीद कर दिया गया।

जब हज़रत खुबैब को फांसी पर लटकाने लाये तो उनसे कहा कि तुम मुझे इतनी देर से छूट दे दो कि मैं दो रकअत नमाज पढ़ लूँ उन्होंने इसकी इजाजत दे दी। हज़रत खुबैब ने बड़े खुशुअ़ खुजुअ़ (लगन तथा ध्यान) से नमाज़ पढ़ी फिर लोगों से कहा कि मुझे ख्याल न होता कि तुम मेरी नमाज़ को डर समझोगे तो मैं अभी और नमाज़ पढ़ता। उसके बाद उन्होंने यह शेर पढ़े-

1. कि जब मैं इस्लाम के लिए कत्ल किया जा रहा हूँ तो मुझको इसकी चिन्ता नहीं कि अल्लाह की राह में किस पहलू पर गिर कर जान दूँगा।

2. यह जो कुछ है केवल अल्लाह के लिए है यदि वह चाहेगा तो इस पारा पारा (टुकड़े-टुकड़े) जिस्म पर बरकत नाजिल फरमायेगा।

यह अशआर पढ़ते हुए शहीद हो गये।

बिअरे मऊना

आमिर बिन मालिक की प्रार्थना पर दीन की शिक्षा और तबलीग़ का कार्य करने कुछ असहाब को (साथियों को) आपने भेजा। यह 70 चुने हुए लोग थे यह लोग रवाना हुए और जब बिअरे मऊना पहुँचे तो कबीले बनी सुलैम उसय्या रअल और ज़कवान ने मुसलमानों को घेर लिया। जब उन्होंने यह स्थिति देखी तो अपनी तलवारें निकाल लीं और लड़कर शहीद हो गये। उनमें केवल का़ब बिन ज़ैद बच रहे जो खनदक़ में शहीद हुए।

मकतूल का अंतिम शब्द कातिल के इस्लाम का कारण बना

इसी सरिय्या बिअरे मऊना में हराम बिन मलहान शहीद हुए उनको जब्बार बिन सलमा ने शहीद किया इसके इस्लाम का कारण वह शब्द था जो हराम ने शहीद होते समय कहा। यह बात जब्बार स्वयं बताते हैं कि मुझको इस्लाम की तरफ जिस चीज़ ने उभारा वह यह है कि मैंने एक आदमी के दाहिने शाने के बीच नेज़ा (भाला) मारा। मैंने देखा कि वह सीने के पार हो गया। उस समय उसके मुँह से यह शब्द निकले कि काबा के रब की कसम मैं सफल हो गया, मैंने अपने दिल में कहा कि इसमें क्या सफलता है। मैंने तो उसको कत्ल कर दिया। मैंने इस शब्द की तहकीक व जानकारी चाही तो पता चला कि सफलता का अर्थ शहादत है। खुदा की कसम वह सफल रहे। यही बात मेरे मुसलमान होने का कारण बनी।

बनी नज़ीर की जिला वतनी

बनी नजीर की तरफ आप तशरीफ ले गये। यह यहूद का सबसे बड़ा कबीला था। वहाँ आकर आपने बनी आमिर की दियत चाही। बनू नजीर और बनू आमिर के बीच एक समझौता था। उस समय तो उन्होंने आपसे ठीक से बात की और भलाई का वादा किया लेकिन भीतर भीतर आपके खिलाफ़ साज़िश करते रहे। रसूलुल्लाह उनके घर की दीवार के नीचे तशरीफ फरमा थे। उनमें से कुछने एक दूसरे से कहा कि इससे अच्छी पोजीशन (मौका) नहीं मिलेगी। तुममें से कौन है जो इस घर पर चढ़ जाये और एक बड़ा पत्थर गिरा दे। फिर हम सब चैन की बंसी बजायेंगे। रसूलुल्लाह के साथ कुछ सहाबा भी थे जिनमें हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर और हज़रत अली भी थे। जब उन्होंने यह साज़िश (षड़यंत्र) की। अल्लाह ने इसकी सूचना आपको दे दी। आप शीघ्र उठ खड़े हुए और वापस मदीने लौट आये। यहां आकर आपने उनके खिलाफ जंग की तैयारी आरम्भ कर दी। यह घटना हिजरत के चौथे वर्ष रबीउल अव्वल के महीने में हुई। आपने उनका मोहासिरा (घेराबन्दी) सात दिनों तक किया फिर अल्लाह ने उनके दिलों में डर व भय डाल दिया उन्होंने रसूलुल्लाह से स्वयं कहा कि आप हमें यहाँ से जिला वतन कर दें और हमारी जान बखशी करें और ऊँट, जितना माल ले जा सकें जाने दें अल्बत्ता हथियार न ले जायेंगे। आपने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और वह सारा सामान ऊँटों पर ले गये जो ले जा सके। रसूलुल्लाह ने उनका माल मुहाजिरीन अव्वलीन में वितरित कर (बांट) दिया।

गज़वा जात अर रिकाअ

हिजरत के चौथे वर्ष आपने जंग फरमाई। आपने मुकामे नख़्ल पर पड़ाव फरमाया। 6 आदमियों के बीच एक ऊंट था चलते चलते पैर

घिस गये नाखून उखड़ गये। इससे बचने के लिए उन्होंने अपने पैरों पर चिथड़े और पट्टियां लपेट लीं। इसलिए इस ग़जवे का नाम गजवा जात अर रिकाअ यानि पट्टियों वाला गजवा पड़ा। एक दूसरे के मुकाबले आये लेकिन जंग नहीं हुई। लोग एक दूसरे से डर रहे थे। आपने इस मौके पर डर वाली नमाज भी पढ़ी (सलातुल ख़ौफ) हिजरत के पांचवे वर्ष ग़जवे खनदक़ ग़जवे अहज़ाब हुआ। यह जंग भी बड़ी जबरदस्त तथा फैसला कुन (निर्णायक) हुई इसमें मुसलमानों की बड़ी परीक्षा हुई। इसके पूर्व ऐसी परीक्षा से मुसलमान नहीं गुजरे। अल्लाह फरमाता है।

''जिस समय दुश्मन तुम पर तुम्हारे ऊपर से और नीचे से आये थे और डर के मारे तुम्हारी आखें पथरा गई थी और दिल मुंहतक आ रहे थे और तुम अल्लाह की बाबत तरह-तरह के ख्याल करने लगे थे। वहाँ ईमान वालों (सब्र) की जाँच की गई और खूब हिलाये गये।

(सूरह अहजाब - 11)

इस गजवे का कारण यहूद थे। वास्तविकता यह है कि कुछ लोग बनी नजीर व बनी वायल के कुरैशे मक्का से मिलने आये और कुरैश से मिलकर उनको सुलह के खिलाफ जंग करने को तैयार किया उनका ऐसी जंग लड़ने का अभ्यास था लेकिन उनकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। यहूदियों ने कुरैश के सामने मामले को बड़े अच्छे ढ़ंग से रखा और उनको समझाया कि वह उनके साथ उस समय तक रहेंगे जब तक इस्लाम की जड़ें खोखली न हो जायें। इस पर कुरैश बड़े प्रसन्न हुए और उनकी दावत स्वीकार कर ली और सब इस पर सहमत हो गये और एक स्थान पर इकट्ठा हुए। फिर यह लोग वहाँ से बनी गतफान के पास आये और उनको भी मुसलमानों के खिलाफ भड़काया और उनके सामने एक योजना रखी जो मदीने पर चढ़ाई के लिए रचाई गयी थी और जिस पर कुरैश सहमत थे।

गज़्व-ए-ख़ंदक या गज़्व-ए-अहज़ाब

कुछ शर्तों पर आपस में सहमति हुई और कुरैश 4000 और गतफ़ान 6000 जवानों के साथ शरीक हुए। दोनों की संख्या 10000 थी इस लशकर की कियादत अबू सुफियान बिन हरब कर रहे थे।

हिकमत मोमिन का खोया हुआ माल

मुसलमानों को इस योजना की सूचना मिली तो उन्होंने मदीने मे किला बन्द होकर दिफाई जंग लड़ने की योजना बनाई और उसकी तैयारी की। इस जंग में मुसलमानों की संख्या तीन हज़ार थी। सलमान फ़ारसी ने ख़ंदक खोदने की राय दी और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल जब हमको घुड़सवारों का डर होता तो हम ख़ंदक खोदते थे। आप सलमान की राय से सहमत हुए और मदीने के शिमाल मगरिब (उत्तर पश्चिम) खुली जगह ख़ंदक खोदने के आदेश दिये। यहां से दुश्मन को हमला करने का अवसर मिल सकता था। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने ख़ंदक खोदने का कार्य वितरित कर दिया (बांट) दिया। 100 व्यक्तियों के बीच 40 हाथ ख़ंदक खोदने का कार्य आया।

मुसलमानों में हमदर्दी मसावात और समानता का जज़्बा था रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने स्वयं ख़ंदक खोदने में मुसलमानों का साथ दिया और हाथ बटाया ताकि उनमें सवाब (पुण्य) प्राप्त करने की ख्वाहिश (इच्छा) हो। सबने मिलकर यह कार्य किया हालांकि उस समय ठन्ड (सर्दी) बहुत थी खाने के लिए भी इतनी खुराक नहीं थी जिससे यह गाड़ी चलती। कभी तो फाकों की नौबत आती। अबू तलहा कहते हैं कि हमने रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से भूख की शिकायत की और अपने पेट पर पत्थर बंधे दिखलाया तो हुज़ूर ने अपना बतने मुबारक (पेट) दिखलाया तो उस

र दो पत्थर बंधे थे। इसके बाद भी सब प्रसन्न थे अल्लाह का शुक्र अदा कर रहे थे उसकी तारीफ कर रहे थे न किसी बात की शिकायत और न अपने थकने का कोई जिक्र।

हजरत अनस कहते हैं कि हुजूर खन्दक के पास आये तो आपने मुहाजिरीन व अनसार को ठन्ड में खन्दक खोदने में व्यस्त देखा। उनके पास कोई गुलाम या सेवक भी नहीं था जो उनकी जगह कार्य करता रसूलुल्लाह ने अब उनके परिश्रम व भूख को देखा तो फरमाया कि–

ऐ अल्लाह असल जिन्दगी (वास्तविक जीवन) तो आखिरत का है। ऐ अल्लाह मुहाजिरीन व अंसार की बखशीश फरमा। हम उसके उत्तर में कहते कि–

हम वह हैं। जिन्होंने अपनी जिन्दगी तक मुहम्मद के साथ जिहाद करने पर उनसे बेअत की है।

खन्दक की खुदाई के दौरान एक बड़ी भारी चट्टान आ गयी जिस पर कुदाल काम नहीं कर रही थी। सबने मिलकर रसूलुल्लाह से शिकायत की। जब आपने स्वयं उसको देखा तो कुदाल ली और बिसमिल्लाह कह कर उस पर चोट दी। उसका एक तिहाई भाग टूट गया और फरमाया कि अल्लाह बड़ा है। (अल्लाहु अकबर) मुझे मुल्के शाम की चाबियां दी गयी हैं। खुदा की कसम मैं उनके महल देख रहा हूँ फिर आपने बिसमिल्लाह कही और चोट दी। उसका फिर एक तिहाई भाग टूट गया फिर आपने फरमाया अल्लाहु अकबर मुझे फारस की चाबियां दी गयी हैं। और मैं मदायन का सफेद महल देख रहा हूँ। फिर आपने तीसरी बार बिसमिल्लाह पढ़कर चोट दी तो पत्थर का शेष भाग टूट गया और आपने फरमाया कि मुझे यमन की कुंजियां दी गयी हैं खुदा की कसम सनआ के दरवाजे देख रहा हूँ।

मुअजिज़ात का ज़हूर (प्रकट होना) गज़वा के समय

गज़वा-ए-ख़न्दक के मोके पर आपके मुअजिज़ात का ज़ुहूर जब मुसलमानों को खन्दक खोदने में परेशानी (कठिनाई) होती तो आप किसी बर्तन में पानी तलब फरमाते। उसमें आप अपना लोआबे दहन डालते और फिर अल्लाह जो उनसे कहलवाता कहते फिर वह पानी उस पत्थर पर छिड़का जाता तो वह रेत के ढेर की तरह नरम पड़ जाता। खाने में ऐसी बरकत होती कि थोड़ा खाना बहुत से लोगों के लिए काफ़ी होता बल्कि पूरा लशकर पेट भर कर खाता।

कुरैश ने आगे बढ़कर पड़ाव डाला। बनी गतफान अपने जेरे असर (प्रभावाधीन) कबीलों को साथ लेकर वहाँ पहुँच गये लशकर की तादात (संख्या) 10000 हजार थी। मुसलमान भी निकल पड़े और मुसलमानों की तादाद तीन हजार थी दोनों के बीच खनदक थी।

बनी कुरैजा और मुसलमानों के बीच एक समझौता हुआ था। हई बिन अख़तब जो बनी नजीर कबीले के सरदार थे, इन्होंने समझौता तोड़ने को उकसाया उन लोगों ने कुछ शशो पंज के बाद उस समझौते को तोड़ दिया। मुनफिकीन ने हाथ पैर मारे तो आपको ख्याल हुआ कि बनी गतफान से समझौता करके उनसे सुलह कर ली जाये और इसके बदले उनको फलों का एक तिहाई हिस्से के तौर पर दिया जायेगा। यह ख़याल आया कि दिल में अंसार की दिल जूई(सान्तवना) के खातिर आया जिन पर जंग का सबसे अधिक बोझ पड़ता था।

लेकिन औस व खजरज के दोनों सरदार सअ़द बिन उबादा और सअ़द बिन मुआज का इरादा और उनकी साबित कदमी देखकर आपने अपनी राय बदल दी उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल जब हम शिर्क में पडे थे बुतों (मूर्तियों) की पूजा करते थे हम अल्लाह की पूजा

नहीं करते थे और उसको पहचानते नहीं थे। उस समय हम किसी की मेहमानदारी के अतिरिक्त एक दाना भी किसी को देने को तैयार नहीं थे। अब जब कि हमको अल्लाह ने इस्लाम की दौलत दी (हम मुसलमान हो गये) अल्लाह ने हमें सहीह मार्ग दर्शाया हमको इज्जत दी आदर दिया क्या हम अपना माल उनको दे दें। खुदा की कसम हमको इसकी कोई आवश्यकता नहीं। हमारे पास केवल देने को तलवार है। अल्लाह हमारे और उनके बीच फैसला (निर्णय) फरमायेगा। फिर आपने फरमाया जैसी तुम्हारी इच्छा।

इस्लामी शहसवार और (जाहिलियत के शहसवार के बीच मुकाबला)

गजवा-ए-खन्दक में रसूलुल्लाह और मुसलमानों ने क़ियाम फरमाया और दुश्मनों ने उनका मुहासिरा कर रखा था लेकिन उनके बीच जंग की नौबत नहीं आयी क़ुरैश के कुछ सवारों ने अपने घोड़े आगे बढ़ाए खन्दक देख कर वह रूक गये और कहने लगे खुदा की कसम इन्होनें तो बिलकुल एक नई तदबीर सोची है। इसके पूर्व ऐसी कोई योजना उन्होंने कभी नहीं बनाई। बड़ी खोज और तलाश के बाद उनको खन्दक का वह स्थान नजर आया जहाँ खन्दक तंग थी (चौड़ाई कम थी) उन्होंने उस जगह घोड़े दौड़ाये और खन्दक पार कर गये और मदीने की जमीन (भूमि) पर उनके घोड़े दौड़ने लगे उन्हीं में अरब का एक शह सवार अम्र बिन अबदे वुद्द था जिसका मुक़ाबला एक हजार शह सवारों से किया जाता। जब वह खड़ा हुआ तो बोला कि मेरे मुक़ाबले को कौन आता है। हज़रत अली इसके लिए तैयार हुए और कहा कि ऐ अम्र तुमने तो अल्लाह से अहद किया था कि क़ुरैश का कोई व्यक्ति तुम्हें यदि दो बातों की दावत देगा तो उसमें से एक तुम अवश्य स्वीकार कर लोगे। उन्होंने कहा कि हां यह बात सत्य है। तो फिर मैं तुमको

अल्लाह और अल्लाह के रसूल और इस्लाम की दावत देता हूँ। अम्र बोला मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। तब हज़रत अली ने उससे कहा कि मैं तुम्हें मुकाबले की दावत देता हूँ, वह बोला ऐसा क्यों? ऐ मेरे भतीजे मैं तुम्हें कत्ल करना नहीं चाहता। इसके उत्तर में हजरत अली ने कहा लेकिन खुदा की कसम मैं तुम्हें कत्ल करना चाहता हूँ अम्र की ग़ैरत जोश में आयी और वह घोड़े से उतर गया और घोड़े की कूचे काट ड़ाली और गुस्से में उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा और हज़रत अली के मुकाबले पर आ गया। दोनों अपनी वीरता के प्रदर्शन करने लगे अन्त में हज़रत अली ने उसको ठिकाने लगा दिया।

माँ अपने बेटे को जिहाद के लिए उभारती है

हजरत आएशा फरमाती है कि व बनी हारिसा के किले में मुसलमान औरतों के साथ थी उस समय तक परदे के आदेश नहीं हुए थे फरमाती हैं कि सअद बिन मआज़ उधर से गुजरते नजर आये वह छोटी सी जिरह पहने थे। उनका हाथ उससे बाहर था और वह रज्ज़ (वीरता का गीत) पढ़ रहे थे। उनकी माता ने उनसे कहा कि मेरे बेटे तुमने बड़ी देर कर दी। जल्दी करो। हज़रत आयशा फरमाती है कि मैंने कहा कि उम्मे सअद मेरी इच्छा है कि सअद की जिरह बड़ी होती। और फिर वह हुआ जिसका मुझे डर था। उस खुले हाथ पर एक ऐसा तीर आकर लगा कि उसने एक विशेष रग काट दी और वह ग़जवा बिनी कुरैजा में शहीद हो गये।

अल्लाह के लिए हैं आकाश और धरती के लशकर

मुशरेकीन ने मुसलमानों को तकरीबन एक माह तक महसूर

(घेर) रखा इस बीच मुसलमानों को बड़ा कष्ट व कठिनाई का सामना करना पड़ा मुशरिकीन का निफ़ाक खुलकर सामने आ गया। उनमें से कुछ ने आपसे मदीने लौट जाने की इजाजत (आज्ञा) चाही और यह बहाना किया कि हमारे घर खुले रह गये जब कि हकीकत (वास्तविकता) यह थी कि वह भागना चाहते थे।

हुजूर के साथी (असहाब) इस कठिनाई व परेशानी में थे कि आपकी सेवा में नईम बिन मसऊद अलगतफ़ानी उपस्थित हुए और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल मैं तो इस्लाम ले आया लेकिन मेरी कौम को मेरे मुसलमान होने की जानकारी नहीं। आप जैसा आदेश दें मैं वही करू हुजूर (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि तुम उनमें बिल्कुल अकेले हो तुम उन्ही में रहकर हमारी सहायता कर सकते हो।

जंग बहाने व तदबीर का नाम है। नईम बिन मसऊद ने आपसे विदाई ली और आपने कबीला बनी कुरैजा में वापस आ गये और अपनी कौम के कुछ लोगों से बातें कीं और उनमें शंका पैदा कर दिया कि बनी ग़तफान और कुरैश से यह मेल जोल इतना क्यों? जब कि वह उनके हम वतन नहीं, फिर मुहाजिरीन व अंसार से इतनी दुश्मनी क्यों? जब कि वह उनके पड़ोसी हैं? नईम ने बनी करैजा के लोगों को यह परामर्श दिया कि लड़ने से पूर्व कुरैश के कुछ सरदारों को अपने पास रोक लें ताकि उनका भरोसा और विश्वास बना रहे। नईम के इस परामर्श पर वह सब बड़े प्रसन्न हुए और कहा कि तुमने बड़ा अच्छा परामर्श दिया। नईम कुरैश के पास आये और उनसे अपनी हमदर्दी जताने लगे उनसे उन्होंने कहा कि यहूद इस पर पछता रहे हैं। और कुरैश के कुछ सरदारों को बन्दी बनाने की योजना रच रहे हैं। ताकि वादा खिलाफी (वचन भंग) न हो वह यह भी विचार कर रहे हैं कि वे उन बन्दियों को नबी और उनके असहाब (साथियों) को सौंप दें और वह उनको कत्ल कर दें। फिर वह ग़तफ़ान में आये और उनसे वैसा ही कहा

जैसा उन्होंने कुरैश से कहा था अब दोनों गिरोह सतर्क (होशियार) हो गये। दोनों को एक दूसरे से नफरत हो गयी। उनके आपस में फूट पड़ गयी और दोनों एक दूसरे से डरने लगे। जब अबूसुफियान और गतफान के सरदारों ने निर्णायक जंग मुसलमानों से करने का फैसला किया तो यहूद ने टाल मटोल करनी शुरू की और बन्दी बनाने के लिए कुछ आदमियों को चाहा तो कुरैश को पूर्ण विश्वास हो गया कि नईम जो बात कह रहे थे वह बात शत प्रतिशत सत्य है। कुरैश ने उनकी यह बात अस्वीकार कर दी। इस प्रकार यहूद को भी नईम की बात सत्य मालूम पड़ी। इस प्रकार उनके इरादों और योजनाओं में कमजोरी आ गई और वह बिखर गये। इधर अल्लाह ने ऐसी तेज और ठन्डी हवा चला दी कि रात गुजारना कठिन हो गया। आंधी से उनकी हांडिया उलट गई। उनके खेमे गिर गये अबू सुफियान खड़े हुए और कुरैश से कहा कि यह जगह अब ठहरने के लायक नहीं रही। हमारे जानवर मर गये। बनू कुरैजा ने हमें धोखा दिया। उनकी ओर से हमें बुरी खबरें सुनने को मिली। तुमने अपनी आखों से देखा कि कैसी ठन्डी हवाएं चल रही हैं। जिसमें आग जलाना असम्भव है। यह स्थान अब सुरक्षित नहीं रहा। अच्छा यही है कि हम यहाँ से लौट चलें और मैं तो चला। अबू सुफ़ियान अपने ऊँट के पास आये जो बैठा हुआ था उस पर बैठे और एड़ लगाई जब वह खड़ा हो गया तो उसकी रस्सी खोली।

कुरैश ने जो कुछ किया उसकी सूचना गतफ़ान को मिली तो उन्होंने भी वापस लौटने का फैसला किया। उस समय हुजूर नमाज़ पढ़ रहे थे। इस स्थिति में हुजेफ़ा बिन यमान ने हुजूर को अवगत कराया हुजूर ने उनको अपना जासूस बनाकर भेजा था। उन्होंने आपसे वह सब कुछ बताया जो कुछ उन्होंने अपनी आँख से देखा था। सुबह आप खन्दक़ छोड़कर मदीने तशरीफ ले आये मुसलमान भी साथ लौट आये और हथियार उतार कर रख दिये। अल्लाह ने सच कहा कि-

"ऐ इमान वालो- अल्लाह की नेमतों को याद करो जब एक लशकर ने तुम पर हमले की ठान ली तो हमने उन पर हवा और लश्कर भेजा जिसको तुम देख नहीं रहे थे। तुम जो कर रहे थे अल्लाह उसको देख रहा था।

(सूरह अहजाब-6)

दूसरी जगह अल्लाह फरमाता है-

"और जो काफिर थे अल्लाह ने उनको लौटा दिया वह अपने गुस्से के कारण कुछ भलाई न हासिल कर सके और खुदा मोमिनों की लड़ाई में काफी हुआ। अल्लाह जबरदस्त और ताकतवाला है।

(अहजाब-25)

रसुलुल्लाह ने फरमाया कि अब जंग समाप्त आज के बाद कुरैश तुम पर हमला न कर सकेंगे लेकिन तुम उन पर हमला करोगे। जंग खन्दक में मुसलमान 7 शहीद हुए और मुशरेकीन 4 मारे गये।"

गजवा बनी कुरैजा बनी कुरैजा ने समझौता तोड़ा

जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) मदीने तशरीफ लाये और आपने अंसार और मुहाजेरीन के बीच एक समझौता कराया और यहूद को रक्षा दी। उनके धर्म व माल की रक्षा की जिम्मेदारी ली। कुछ शर्तें उनके हक में और कुछ उनके विरूद्ध थी समझौते में था एक दूसरे की मदद करना अनिवार्य होगा, बुराई को छोड़कर नेकी व भलाई का मामला रखना होगा। हम लोगों पर हमला होगा तो दोनों मिलकर उसका मुकाबला करेंगे। लेकिन हई बिन अख़तब यहूदी जो बनी नज़ीर का सरदार था बनी कुरैज़ा को समझौता तोड़ने पर राज़ी कर लिया और कुरैश से एकता पर तैयार कर लिया हालांकि उनके सरदार काब बिन असद कर्ज़ी ने बड़े साफ शब्दों में कहा था कि मैंने मुहम्मद में सच्चाई

और वफ़ादारी के अतिरिक्त कुछ नहीं देखा। फिर भी कअ़ब बिन असद ने अपना समझौता तोड़ दिया। आपके और उसके बीच जो कुछ तय हुआ था वह रद्द कर दिया गया। समझौता तोड़ने की सूचना जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पहुँची तो हुज़ूर ने सअ़द बिन मआ़ज जो औस के सरदार थे। औस और कुरैजा आपस में हलीफ (सहप्रतिज्ञ) थे। और सअ़द बिन उबादा खजरज के सरदार थे। अंसार के कुछ लोगों को आपने इस खबर की तसदीक के लिए भेजा। उन लोगों ने उससे अधिक बुरा पाया जो कुछ सुना था, उन लोगों ने आपके लिए अच्छे शब्दों का प्रयोग न करते हुए पारस्परिक समझौते से इनकार किया और कहने लगे कि हमारे और मुहम्मद (सल्लाहो अलैहे व सल्लम) के बीच कोई मुआहदा या समझौता नहीं हुआ। और उन्होंने मुसलमानों से जंग करने की तैयारी शुरूअ़ कर दी। यह सूरत मैदाने जंग में जंग करने से अधिक खतरनाक थी। उसको अल्लाह ने यूँ फरमाया कि--

"जब वह तुम्हारे ऊपर से आये और तुम्हारे नीचे से आये।"
(सूरह अहजाब - 10)

यह बात मुसलमानों के लिए बड़ी सख़्त थी।

जब मुसलमान खन्दक से लौटे और अपने हथियार रख दिये तो उस समय हज़रत जिबरईल आये और कहा कि क्या आपने हथियार रख दिये। आपने जवाब दिया कि हाँ हज़रत जिबरईल ने कहा कि फरिश्तों ने अभी अपने हथियार नहीं रखे। अल्लाह का आदेश है कि आप बनी कुरैजा की ओर यात्रा करें। मैं भी उसी तरफ जा रहा हूँ ताकि उनके दिलों में डर पैदा कर दूं। आपने एलान कर दिया कि लोग अस्र की नमाज़ बनी कुरैज़ा में पढ़ें। आपने बनी कुरैज़ा पहुँचकर उनका मुहासरा (घेराव) कर लिया। यह घेराव 25 दिन तक रहा। वह इस मुहासरे से थक गये। और अल्लाह ने उनके दिलों में डर व रोब डाल

दिया। बनी कुरैज़ा ने आपको आदेश माना लेकिन औस ने उनके लिए आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से सिफ़ारिश की कि खजरज के मुकाबले में हमारा इनसे समझौता है। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि औस के लोगो- क्या तुम यह नहीं चाहते कि तुम ही में से, कोई हकम (निर्णायक) हो, उन्होंने कहा हम तो यह चाहते हैं। आपने फरमाया कि मैं यह काम सअद बिन मआज़ के जिम्मे करता हूँ। सअ़द को बुलवाया गया। जब वह आये तो उनके कबीले के लोगों ने उनसे कहा कि अबू अम्र अपने हलीफ़ (सहयोगी) के साथ अच्छा मआमला करना इसलिए कि यह कार्य रसूल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सौंपा है। जब उनसे बहुत इसरार किया तो वह बोले कि भाग्य (किसमत) से सअद को यह अवसर मिला है। आज खुदा के आदेश के आगे किसी बात की चिन्ता नहीं। हज़रत सअद ने कहा कि मैं फैसला करता हूँ कि मरदों को कत्ल कर दिया जाये और उनका माल (धन) बांट दिया जाये। उनकी औरतें (महिलायें) और बच्चे गुलाम बना लिए जायें (रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि) ऐ सअद तुमने खुदा के आदेश के मुताबिक फैसला किया है। यह फैसला तो बनी इसराईल के जंगी कानून के मुताबिक था जो तौरात में आया था उसी के अनुसार है।

सअद का फैसला बनी कुरैजा पर लागू किया गया। इस प्रकार मुसलमान सुरक्षित हो गये पीछे के हमलों से भी और दाखिली साजिशों झगड़ों से भी।

खजरज ने सलाम बिन अबी अल हकीक़ को कत्ल कर दिया यह वह थे जिन्होंने मुसलमानों के खिलाफ पार्टी बन्दी की थी। औस ने इनके पूर्व कअ़ब बिन अशरफ़ को कत्ल कर दिया था। वह रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की दुश्मनी और फसाद पैदा करने में बहुत आगे था। इन सरदारों से अल्लाह ने छुटकारा

दिलाया। यह मुसलमान और इस्लाम के खिलाफ साजिश और षड़यंत्र रचा करते थे। अब मुसलमानों को सुकून मिला।

मुआफी और सखावत (क्षमा और दान)

आपने कुछ लोगों को नज्द की तरफ़ रवाना फरमाया वह समामा बिन आसाल (बनू हनीफ़ा के सरदार) को कैदी बनाकर लाये। उनको मस्जिद के एक सतून से बांध दिया। जब हुजूर उनके पास से गुजरे तो आपने फरमाया कि ऐ समामा तुम कुछ कहना चाहते हो तो कहो। उन्होंने कहा ऐ मुहम्मद (सल्ललाहो अलैहे वसल्लम) आप कत्ल कर दें तो ऐसे को कत्ल करेंगे जिसकी गर्दन पर खून है और यदि आप एहसान करेंगे तो एहसान शिनास, शुक्रगुज़ार एहसान करेंगे। यदि आप धन दौलत चाहते हैं तो वह आपको मिलेगा। आप उनकी बात सुनकर आगे बढ़ गये। दोबारा फिर आप उनके पास आये समामा ने वही बात फिर दोहराई जो पहले कही थी। आप जब उनके पास तीसरी बार तशरीफ लाये तो आपने उनकी आजादी के निर्देश दिये और वह आजाद कर दिये गये। समामा खजूर का बाग जो मस्जिद के करीब था वहाँ गये नहाये, धोए और आपकी सेवा में हाज़िर हुए और मुसलमान हो गये। और कहने लगे कि खुदा की कसम मुझे आपकी सूरत से बहुत ज़ियादा नफ़रत थी परन्तु आज मुझे आपकी सूरत सबसे अधिक महबूब (प्रिय) है। बखुदा इस धरती पर आपके दीन से अधिक मुझे किसी दीन धर्म से नफ़रत न थी। परन्तु आज आपका दीन मुझे सबसे अधिक अज़ीज़ है। सच्चाई यह है कि मैं उमरे के लिए जा रहा था। आपके लोगों ने मुझे पकड़ लिया। आपने उनको बशारत (शुभ संदेश) दी और उमरे की इजाजत दी। जब समामा कुरैश के पास आये तो उनसे कुरैश ने कहा कि समामा तुम बेदीन (अधर्मी) हो गये। उन्होंने जवाब दिया मैं तो मुहम्मद पर इस्लाम ले आया। बखुदा अब समामा से गेहूँ का एक दाना भी तुम तक नहीं पहुँच सकता जब तक रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की इजाजत न हो। समामा के पास यमामा में मक्का की ग़ल्ला मण्डी थी।

समामा अपने शहर लौट आये और जो गल्ला मक्का मण्डी जाता था उस पर रोक लगा दी। कुरैश को फ़ाके की नौबत आ गई तो उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) से रहम (दया) की प्रार्थना की कि आप समामा को लिखें कि वह गल्ला मण्डी में आने दें। रसूलुल्लाह (सल्लल्ल:हु अलैहि वसल्लम) ने ऐसा ही किया।

सुलहे हुदेबिया।

रसूलुल्लाह का ख़्वाब (स्वप्न) और (मक्के में मुसलमानों का प्रवेश)

रसूलुल्लाह ने मक्के में दाखिल होने तथा कअ़बे का तवाफ़ करते (स्वप्न में देखा) इसकी सूचना अपने साथियों को मदीने में दी। इससे सबसे बड़ी खुशी मुहाजिरीन को हुई। कअ़बा को और मक्का छोड़े बहुत दिन हो गये थे। मक्का के तवाफ़ करने का शौक स्वभाविक था। वह वहाँ पैदा हुए और बढ़े उससे उनको बेहद मुहब्बत थी। जब हुजूर ने मक्का जाने की सूचना दी तो सहाबा की आपके साथ मक्का जाने की इच्छा और बढ़ गयी। सब आपके साथ चलने को तैयार हो गये। और किसी ने इसकी मुखालफ़त नहीं की।

एक लम्बे जमाने के बाद मक्का में प्रवेश उमरे की नियत से एहराम बांधकर आप हिजरी के सातवे वर्ष ज़ीकादा के महीने मदीने से निकले ताकि यह लोग जान लें कि आप केवल उमरे के लिए निकले हैं। जंग के लिए नहीं। केवल काबा की जियारत के लिए निकले हैं। आपके साथ 1500 आदमी थे। आपने एक जासूस कुरैश को हालात का

पता लगाने के लिए भेजा। जब आप असफ़ान के क़रीब पहुँचे तो वह जासूस आया और बताया कि मैंने देखा कि काब बिन लुवई आपसे जंग करने तथा काबा की जियारत से रोकने के लिए लोगों को इकट्ठा (जमा) कर रहा था हुदैबिया के मुकाम (स्थान) पर आपने पड़ाव डाला वहाँ पानी थोड़ा था। लोगों ने प्यास की शिकायत की। आपने अपने तरकश से एक तीर निकाला फिर आपने फरमाया कि यह तीर उस गढ़े में डाल दें। तत्पश्चात पानी जोश मारने लगा और सबने जी भर कर पिया।

अब कुरैश को आपके आने तथा पड़ाव की सूचना मिली तो उनमें घबराहट पैदा हुई। आपने यह उचित समझा कि अपने असहाब में किसी को अपने पास भेज कर उनको इतमीनान दिलाएं। आपने हज़रत उसमान को बुलाया और फरमाया कि कुरैश के पास जाकर उनको समझाओ कि हम केवल उमरा और काबा की जियारत तथा तवाफ की नियत से आये हैं। हमारा जंग का कोई इरादा नहीं है। उनको इस्लाम की दावत भी देना और आपने उनको यह भी कहा कि जो मुसलमान मर्द और महिलायें हैं उनके पास जाना और कामयाबी (सफलता) की मुबारकबाद देना और खुश खबरी सुनाना और उनको बताना कि अल्लाह अपने दीन को मक्का में अवश्य ग़ालिब करेगा। अब किसी को अपने ईमान को छुपाने की आवश्यकता न रहेगी।

हजरत उसमान मक्का तशरीफ़ लाये और अबू सुफियान के पास गये और कुरैश के माननीय व्यक्तियों और सरदारों से भेंट की और उनको रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का संदेश पहुँचाया। हज़रत उसमान जब इस कार्य से फ़ारिग हुए तो उन्होंने हज़रत उसमान से कहा कि यदि तुम काबा का तवाफ़ करना चाहते हो तो तुमको इजाज़त है। हजरत उसमान ने उनको उत्तर दिया कि मैं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ ही तवाफ़ करूंगा।

बेअते रिजवान

रसूलुल्लाह को यह सूचना मिली कि हज़रत उसमान कत्ल कर दिये गये तो आपने सबको बेअत के लिए बुलाया। सब आपके इर्द गिर्द एक पेड़ के नीचे इकट्ठा हो गये। आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) सबसे इस बात की बैअ़त (प्रण) लिया कि कोई साथ छोड़कर भागेगा नहीं। सबने आपको यह विश्वास दिलाया कि वह आपको छोड़कर नहीं जायेंगे। फिर आपने अपना दूसरा दस्ते मुबारक बैअ़त वाले हाथ पर रख कर फरमाया कि यह उसमान की तरफ से है। यह बैअत बेअते रिजवान थी जो हुदैबिया में एक पेड़ के नीचे हुई। इसको अल्लाह ने यूं फरमाया–

"अल्लाह उन ईमान वालों से राज़ी हुआ जिन्होंने पेड़ के नीचे आपसे बेअत की"

(सूरह फतह–18)

कुरैश के चार आदमी आपके पास आये और चारों ने आपसे आने का कारण जानना चाहा हर एक को आप यही उत्तर देते कि हम केवल उमरा करने आये हैं। जंग करने नहीं आये हैं। लेकिन कुरैश के वह आदमी इस जवाब से संतुष्ट नहीं हुए, उन चारों में से एक उरवा बिन मसऊद सकफ़ी थे। वह जब अपने साथियों से लौट कर मिले और कहने लगे कि ऐ मेरी क़ौम-बखुदा मैंने बड़े बड़े बादशाहों की ज़ियारत की है। मैं कैसर किसरा तथा नजाशी से भी मिला लेकिन बखुदा जो मान, इज्जत, आदर मुहम्मद के असहाब उनकी करते हैं उतनी इज़्जत किसी बादशाह की उसके मुसाहबीन को करते नहीं देखा और जो कुछ उन्होंने देखा वह उनको बतला दिया।

सुल्हे हुदैबीया (समझौता)

कुरैशने सुहैल बिन अम्र को भेजा।जब आपने उनको आते देखा तो आपने फरमाया कि कौम ने सुलह का फैसला कर लिया है। तभी उन्होंने इनको भेजा है। आपने समझौता लिखने को फरमाया। लिखने वाला बुलाया गया वह हज़रत अली थे। आपने फरमाया लिखो बिसमिल्लाह हिर्रहमानीर्रहीम। सहैल बोले हम रहमान को जानते नहीं। लिखो (बिस्मिकल्लाहुम्मा) जैसे पहले लिखा करते थे। इस पर मुसलमानों ने आपत्ति उठाई और कहने लगे हम इसको नहीं लिखेंगे हम तो बिसमिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम ही लिखेंगे आपने फ़रमाया अच्छा बिस्मिकल्लाहुमा ही लिखो। फिर आपने फ़रमाश लिखों कि यह है वह (सन्धि) जिसका अल्लाह के रसूल मुहम्मद ने फ़ैसला फरमाया। इस पर सुहैल ने आपत्ति (एतिराज़) उठाई कि हम यदि यह स्वीकार करलें कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो कोई झगड़ा ही नहीं फिर हम आपको उमरा करने और बैतुल्लाह की जियारत से नहीं रोकेंगे। आपने फ़रमाया कि यह तो सत्य है। कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ नबी हूँ। यह अलग बात है कि तुम इससे इनकार करो। चलो यही लिख लो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हज़रत अली से आपने फरमाया जो पहले लिखा था। उसको मिटा दो हज़रत अली ने उसको मिटाने से इनकार किया और कहा कि यह मुझसे न हो सकेगा आपने हज़रत अली से फरमाया अच्छा वह जगह मुझे दिखाओ जहाँ यह जुम्ला लिखा है हज़रत अली ने यह स्थान दिखलाया और आपने वह लिखा मिटा दिया और आपने उनसे फरमाया कि इस समझौते के कारण अब तुम हमें उमरा और तवाफ़ से नहीं रोक सकते। सुहैल कहने लगे कि मुझे डर है कि कहीं अरब यह न समझ बैठें कि मैंने यह समझौता किसी डर या दबाव में आकर किया है। आप अगले वर्ष तवाफ कर सकते हैं फिर यह लिख दिया गया सुहैल ने कहा कि अगर हमारा आदमी आपके यहाँ आ जाये तो

आप हमारे आदमी को हमें लौटा देंगे। चाहे वह मुसलमान हो गया हो। मुसलमान बोले वाह क्या बात कही है। कैसे हम एक मुसलमान को मुशरिकीन के पास लौटा दें। यह बातें हो रही थी कि इसी बीच अबू जुंदल सुहैल बिन कैद से भाग कर बाहर आये। उनके पैरों में बेड़ी पड़ी थी। वह मक्का के नशेब से आये थे और अपने को मुसलमानों के हवाले कर दिया। सुहैल बोले कि- ऐ मुहम्मद समझौते के हिसाब से यह पहला मामला है इसलिए अबू जुनदल को हमें लौटा दें। आपने उत्तर दिया कि अभी तो समझौता मुकम्मल (पूर्ण) नहीं हुआ। सुहैल बोला कि यदि ऐसा है तो हमें आपसे समझौता नहीं करना है। आपने फ़रमाया कि इसको मेरे लिए इजाज़त दे दें। सुहैल बोले कि मैं आपके लिए इसको इजाज़त नहीं दे सकता। तो आपने फरमाया क्यों नहीं कर दो। सुहैल ने कहा कि यही करूंगा अबू जन्दल बोले मुसलमानो क्या तुम मुझे मुश्किरीन के पास लौटा दोगे, जबकि मैं तुम्हारे पास मुसलमान होकर आया हूँ। जो कुछ कष्ट तकलीफ पहुँची उसको क्या तुम नहीं देख रहे हो उन्होंने अल्लाह के रास्ते में बड़ी तकलीफ उठाई है। आपने उनको मुशरिकीन के हवाले कर दिया। दोनों इस पर सहमत हुए कि इस वर्ष आपस में जंग नहीं करेंगे। लोग शांति रहेंगे। कोई किसी के मामले में हस्तक्षेप (मुदाखलत) नहीं करेगा। कुरैश का कोई आदमी बिना इजाजत मुहम्मद के पास आ जाता है तो वह उसको लौटा देंगे लेकिन कोई मुसलमान कुरैश के पास आ जाता है तो वह उसको नहीं लौटायेंगे। मआहदे में मुहम्मद की तरफ जो दाखिल होना चाहे हो सकता है इसी प्रकार कुरैश के मुआहदे में जो आना चाहे आ सकता है।

मुसलमानों की परीक्षा (इम्तिहान)

अब मुसलमानों ने सुलह और वापसी से सम्बन्धित जो समझौता देखा और आपने जो कुछ भी सहन किया उससे मुसलमानों को कष्ट हुआ कि जान पर बन आई इसका प्रभाव उनके दिल व दिमाग़ पर

बहुत पड़ा। हज़रत उमर हज़रत अबूबकर के पास आये और कहा कि क्या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमसे मक्का चलने तथा काबा का तवाफ़ करने को नहीं कहा था। हज़रत अबूबक्र ने कहा कि हाँ फ़रमाया तो था। तुम मुझे बताओ कि आपने तुमसे इसी वर्ष चलने और बैतुल्लाह की जियारत तथाउसके तवाफ़ के लिए कहा था। हज़रत उमर ने कहा कि नहीं जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) समझौते से फ़ारिग हुए तो आप कुरबानी के जानवरों के पास आये और उनकी कुरबानी की उसके बाद सर मुण्डवाया। यह बात मुसलमानों के लिए किसी हादसे से कम नहीं थी। मदीने से निकलते समय उनको यह ख्याल भी नहीं आया था कि हम मक्का न जायेंगे और तवाफ़ न कर सकेंगे लेकिन उन सबने जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को कुरबानी करते और सर मुण्डवाते देखा तो उन सबने भी कुरबानी की और अपने सरों को मुण्डवाया फिर आप मदीने की तरफ़ लौटे तो रास्ते ही में यह आयत नाजिल हुई।

"ऐ मुहम्मद हमने तुमको सफलता दी खुली और साफ ताकि खुदा तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह (पाप) मॉफ कर दे और तुम पर अपनी नेमतें (निअ़मत) पूरी कर दे और तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाये और खुदा तुम्हारी जबरदस्त मदद (सहायता) करे

(फतेह-9)

हज़रत उमर ने आपसे पूछा कि या रसूलुल्लाह क्या यह फत्ह (सफलता) है। आपने फरमाया कि हाँ।

हो सकता है कोई बात देखने में तुमको अच्छी न लगे मगर वह तुम्हारे हक में भली हो।

जब आप मदीना तशरीफ़ ले आये तो कुरैश का एक आदमी मुसलमान होकर आया जिसका नाम अबू बसीर उर्बा बिन उसैद था, कुरैश ने दो आदमियों को अबू बसीर को वापस लाने के लिए भेजा

और समझौते का हवाला दिया। आपने उस आदमी को उनके हवाले कर दिया वह दोनों उसको लेकर चले वह उन दोनों की कैद से भाग गया और समुद्र के किनारे आ गया दूसरी तरफ अबू जुन्दल उनके कैद से भाग गये और वह अबू बसीर से आकर मिल गये अब जो भी मुसलमान कुरैश से भाग कर जाता वह इनसे आकर मिल जाता। इसी प्रकार यह एक गिरोह बन गया। और कुरैश का जो भी काफ़्ला रात में गुजरता उसको यह लोग रोक लेते और उसका सामान छीन लेते और उन सबको मार डालते। कुरैश ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रार्थना की और रिश्तेदारी व अल्लाह का वास्ता दिया कि आप इन लोगों को वापस बुला लें अब आपके पास जो भी आयेगा वह सुरक्षित होगा। बाद के हालात ने यह साबित (प्रमाणित) कर दिया कि सुल्हेहुदैबीयासे जिनको रसूलुल्लाह ने कुरैश को अधिक छूट देकर स्वीकार किया था और कुरैश उसको लाभदायक समझ रहे थे मुसलमानों ने अपनी ईमानी कुव्वत और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पूर्ण इताअत (आज्ञा कारिता) की भावना से सहन कर लिया था। वास्तव में जज़ीरतुल अरब में इस्लाम के प्रचार के लिए एक दरवाजा खुल गया। इसने मक्का की फत्ह का भी दरवाजा खोल दिया। इस सुलह से बादशाहों, सम्राटों, सरदारों को हक की दावत देने का मार्ग खुल गया। अल्लाह ने सच कहा कि-

"बहुत सी बातें ऐसी हैं जो तुमको बुरी मालुम पड़ती हैं। वास्तव में वह तुम्हारे हक में लाभदायक होती है। और ऐसा भी होता है कि कोई बात तुम चाहते हो लेकिन वह तुम्हारे लिए हानिकारक हो सकती है। उसमें भलाई न हो। अल्लाह सब जानता है। तुम्हें इसकी खबर नहीं।

(सूरह बक़रह 216)

ख़ालिद बिन वलीद व अम्र बिन आस का इस्लाम लाना

सुल्हे हुदैबीया ने दिलों को फत्ह कर लिया। ख़ालिद बिन वलीद जो कुरैश की घुड़सवार के कप्तान और फ़ौज के सेनापति थे। इन्होंने बड़ी–बड़ी जंगे जीती हैं। इसीलिए रसूलुल्लाह ने उनका नाम सैफुल्लाह रखा वह हर तरह सफल व बामुराद रहे। अल्लाह ने इनके हाथ पर शाम की फत्ह लिख दी।

अम्र बिन आस भी हुदैबिया के बाद इस्लाम लाये। यह भी बड़े जनरल (सेनापति) तथा अपनी कौम के सरदार थे। अल्लाह ने इनके जरिये मिस्र फत्ह करवाया। दोनों हुदैबिया के बाद मदीने आये और मुसलमान हुए। इस सुल्ह ने मुसलमानों और मुशरिकीने मक्का को करीब आने का मौका दिया। मुशरिकीन मुसलमानों की भलाइयों व व्यवहार से बेहद प्रभावित हुए और उसी वर्ष अधिक संख्या में मुसलमान हुए।

बादशाहों और सरदारों को इस्लाम की दावत

सुलहे हुदैबिया समाप्त हुई और वातावरण शान्त हुआ तब रसुलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने संसार के बादशाहों, सम्राटों तथा अरब के सरदारों को पत्र लिखे जिनमें इस्लाम की दावत दी। अल्लाह के रास्ते पर चलने के लिए बड़े भले अन्दाज से अल्लाह की तरफ बुलाया गया। हर एक के पास उसकी हैसियत के मुताबिक राजदूत भेजे। सभी असहाब ने आपसे अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल वह आपके पत्र को उस समय तक स्वीकार नहीं करेंगे जब तक आपके पत्र में आपकी मुहर न हो। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व

सल्लम) ने इसके लिए एक विशेष मुहर बनवाई जिसका हलका चाँदी का था तथा जिस पर मुहम्मद रसूल अल्लाह लिखा था। आपने जिन बादशाहों को पत्र भेजे उनमें रूम के बादशाह, हिरकल फारस के किसरा, हबश के नजाशी और मिस्र के मकूकश के नाम सर्वश्रेष्ठ (सरफेहरिस्त) हैं। हिरकल मकूकश तथा नजाशी ने आपके पत्र को आदर दिया तथा उसका उत्तर बड़े अदब व एहतराम से दिया। हिरकल ने आपके बारे में सही हाल जानना चाहा इस कारण उसने ऐसे आदमी की खोज की जो आपके जीवन के बारे में पूर्ण सूचना रखता हो ताकि वह सही व सत्य सूचना उपलब्ध करा सके। उस समय गज़्ज़ा में अबू सुफ़यान थे वह उस समय तिजारत की गरज़ से आये हुए थे। उसने इनको बुलवाया। बादशाह के सवाल (प्रश्न) समझदारी जानकारी तजर्बाकारी तथा अनुभवी के सवाल थे। जिसको मजाहिब के इतिहास, नबियों की विशेषताओं, उनकी जीवनी, उनके कामों का उनसे मुआमला और अल्ला की सुन्नत से भली भाँति अवगत है। अबू सुफ़यान ने उनके प्रश्नों का सही व सत्य उत्तर दिया और सब कुछ सही सही बता दिया केवल इसलिए कि लोग यह न कहें कि अरब झूठ बोलता है। जब हिरकल ने पूरी बात सुन ली जो उसने पूछी थी तो उसको शत प्रतिशत विश्वास हो गया कि आप नबी हैं। उसने कहा कि जहाँ मेरा कदम है। वहाँ तक उसका कब्जा होगा। मुझे मालूम था कि एक नबी आने वाला है। यह यकीन नहीं था कि वह तुम्हारे में से होगा। यदि मैं उनके पास जा सकता तो अवश्य उनसे भेंट करता और वहां होता तो उनके पैर धोता। रूम के माननीय और बड़े व्यक्तियों को उसने बुलवाया और दरवाजे को बन्द करने को कहा। फिर उन सब को मुखातब (सम्बोधित) करते हुए उनसे कहा कि ऐ देश वासियो यदि तुम भलाई चाहते हो और यह चाहते हो कि तुम्हारा देश सुरक्षित रहे तो तुम इस नबी पर ईमान ले आओ वह सुनकर तेजी से भागे तो दरवाजे को बन्द पाया। हिरकल ने जब उनकी यह नफ़रत क्रोध देखी

तो इनके ईमान से मायूस हो गया और उनसे वापस आ जाने को कहा और उनसे बोला कि अभी जो बात मैंने तुमसे कही थी वह तुम्हारी परीक्षा थी। मैंने तो यह बात तुमको तुम्हारे दीन पर कायम रहने के लिए कही थी। सो मैंने देख लिया। सब प्रसन्न हुए और उनको सजदा किया। उसने उन सबको तोहफ़े (उपहार) देकर विदा किया हज़रत अबू बक्र व उमर के जमाने में उसका देश उसके हाथ से जाता रहा।

नज्जाशी और मकूकश ने आपके राजदूतों को आदर दिया और सम्मान दिया। और दोनों ने उत्तर बड़ी नम्रता से दिया। मकूक़श ने तोहफ़े व उपहार भेजे उनमें लड़कियां भी थीं। इन्हीं में एक हज़रत मारया थीं जो रसूलुल्लाह के बेटे इब्राहीम की माता थीं।

जब आप का पत्र किसरा के सामने पढ़ा गया तो उसने आपके पत्र को फाड़ दिया और बोला कि मेरा गुलाम होकर मुझे ऐसा पत्र लिखता है। जब इस बात की सूचना रसूलुल्लाह को मिली तो आपने फरमाया कि अल्लाह ने उसके देश के टुकड़े टुकड़े कर डाले। किसरा ने बाजान को आपको लाने के लिए निर्देशित किया। बाज़ान उस समय यमन का गवर्नर था। यह सूचना जब आपको मिली तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह ने उसके बेटे शेरवैहि को उस पर मुसल्लत कर दिया। इस तरह अल्लाह ने उसकी सल्तनत (देश) को बरबाद कर दिया और मुसलमानों को उसका मालिक बना दिया। अल्लाह ने ईरान वालों को हिदायत दी वह मुसलमान हुए। आपने अरब सरदारों, बादशाहों को पत्र लिखे उनमें से कुछ तो मुसलमान हो गये और कुछ अपने दीन पर ही कायम रहे।

गजव-ए-खैबर

अल्लाह ने बैअते रिजवान में शरीक लोगों को हुदैबिया में सफलता, कामयाबी और निकट भविष्य में फतह और माले गनीमत

की प्राप्ति की बशारत दी।

"अल्लाह उनसे राजी हो गया जिन्होंने पेड़ के नीचे आपसे बेअत की। अल्लाह ने वह सब जान लिया जो उनके दिलों में था। अल्लाह ने उन पर सकीनत उतारी और जल्दी ही उनको सफलता और बहुत से माले गनीमत को प्राप्त की सूचना दी अल्लाह गालिब और हिकमत वाला है।

(सूरह फ़तह- 18.19)

इन सफलताओं और माले गनीमत का पेश खेमा गज़्व-ए-खैबर था। खैबर एक यहूदी आबादी थी जिसमें बड़े और मजबूत किले थे। और यह जंगी छावनी भी थी। अल्लाह के रसूल ने चाहा कि अब मुसलमान यहूदियों की साज़िशों (षड़यंत्रों) से सुरक्षित रहें और उनकी ओर से इतमिनान हो जाये यह बस्ती मदीने के शिमाल मशरिक़ (पूरब-उत्तर) में थी।

लशकरे इस्लाम आपकी क़ियादत में

जिलहिज्जा व मुहर्रम के कुछ हिस्से में हुदैबिया से लौटने के बाद आपने मदीने में कयाम फरमाया। मुहर्रम की शेष तारीखों में आप खैबर के लिए रवाना हुए। आमिर बिन उकबा इस लशकर के साथ थे और यह रजजिया अशआर (कविता) पढ़ते थे।

1. बा खुदा यदि अल्लाह ने हमें हिदायत न दी होती तो आज हम न हिदायत पाते न सदका करते और न नमाज़ पढ़ते।

2. हमतो उनमें से है जिन पर कोई क़ौम हमला करती है, फसाद फैलाती है तो हम उससे इनकार करते हैं।

3. ऐ अल्लाह हम पर सकीनत शान्ति उतार और हमको मुकाबले के लिए साबित कदम रख।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस लशकर को लेकर बढे। इस लशकर में 1400 आदमी शरीक थे उनके पास 200 घोड़े थे। आपने उन लोगों को जंग में शरीक होने से रोक दिया जो हुदैबिया के मौके पर नहीं थे। इसमें महिलाओं की संख्या 20 थी जो मरीजों, जखमियों की देखभाल इलाज तथा जखमियों की पट्टी इत्यादि के लिए शामिल थी। आपने लशकर की ग़िजा (खाद्यान्न) इत्यादि को उपलब्ध कराने के निर्देश दिये केवल सत्तू उपलब्ध हो सका। उसी पर लोगों ने संतोष किया। जब खैबर के पास पहुँचे तो आपने उसके खैर की दुआ फरमाई और उसकी बुराई से पनाह माँगी। आपकी यह आदतें मुबारका थी कि आप किसी पर रात में हमला नहीं फरमाते थे। सुबह तक आप इन्तेजार (प्रतिक्षा) फरमाते जब आप सुबह की अजान सुन लेते तो रूक जाते। यदि अजान की आवाज नहीं आती तो जंग की तैयारी फरमाते। आपने जब अजान की आवाज नहीं सुनी तो जंग की तैयारी की और क़ौम भी तैयार हो गई। आपको खैबर के मजदूर अपनी कुदाल व फ़वाडे के साथ नजर आये। जब उन लोगों ने आपको तथा आपके लशकर को देखा तो चीखने लगे कि मुहम्मद और उसका लशकर आ गया है। और वह उलटे पैर भागने लगे। अल्लाह के रसूल ने फरमाया कि अल्लाह बहुत बड़ा है। खैबर बरबाद (नष्ट) हो गया। हम जब किसी कौम पर हमला करते हैं तो उसकी सुबह बुरी होती है।

कामयाब लीडर (सफल सेनापति)

आपने खैबर के किलों के पास पड़ाव डाला और एक एक करके उसको फतह करना शुरू कर दिया। प्रथम किला जो फतह हुआ वह नाइम का था। इसको हज़रत अली ने फतह किया यह किला मुसलमानों के लिए बड़ा सख्त था। हज़रत अली की आँखे उठ आई थी आपने फरमाया कि झन्डा कल उसके हाथ में होगा जो अल्लाह और उसके

रसूल को अधिक पसंदीदा होगा अल्लाह उसी के हाथ पर फतह देगा। हर एक की इच्छा थी कि झन्डा कल उसके हाथ में हो। रसुलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने हज़रत अली को बुलवाया। उनकी आँखे दुख रही थी। हज़रत अली आपके बुलावे पर हाजिर हुए आपने उनकी आखों पर अपना लोआबे दहन लगाया और उनके लिए दुआ फरमाई। हजरत अली की आँख ठीक हो गई जैसे उन आँखों में कोई तकलीफ़ थी नहीं। फिर आपने उनको झन्डा इनायत फरमाया। हजरत अली ने पूछा कि क्या मैं उस समय तक जंग करू जब तक वह सब मुसलमान न हो जायें। रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि तुम यहाँ से रवाना हो और उनके सामने पड़ाव डाल दो फिर उनको इस्लाम की दावत दो और उनको बताओ कि अल्लाह ने अपने हुकूक क्या अनिवार्य किये है (लागू किये) खुदा की कसम उनमें से एक भी तुम्हारी वजह से मुसलमान हो गया तो वह तुम्हारे लिए सुर्ख ऊँटों से बेहतर है।

हजरत अली और यहूद का मुकाबला

हज़रत अली खैबर शहर पहुँचे तो मरहब जो मशहूर शह सवार था रजजिया(युद्ध पर मारने वाले) अशआर (कविता) पढ़ते हुए निकला। फिर उससे लड़ाई हुई उसको हज़रत अली ने ऐसी मार मारी कि वह उसकी ख़ौद फाड़ती हुई दाढ़ तक पहुँच गयी और अल्लाह ने फ़तह (कामयाबी) दी।

कार्य (काम) थोड़ा और उसका बदला बड़ा

खैबर वालों की तरफ से हबशी गुलाम जो बकरियां चराने पर रखा गया था जब खैबर वालों को असलेहा उठाते देखा तो उनसे पूछा आखिर तुम चाहते क्या हो वह बोले हम तो उस व्यक्ति से लड़ना

चाहते हैं जो अपने को नबी कहता है। नबी के जिक्र से उसके हृदय पर असर पड़ा और वह अपनी रेवड़ सहित आपकी सेवा में आ गया और कहने लगा तुम क्या कहते हो और काहे की दावत देते हो। आपने उससे फरमाया कि हम इस्लाम की दावत देते हैं। और तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के अलावा और कोई पूजा के लायक (योग्य) नहीं है। और मैं रसूल हूँ और तुमको यह विश्वास दिलाना होगा कि तुम अल्लाह को छोड़कर किसी और की पूजा नहीं करोगे। गुलाम बोला मेरे लिए क्या है? यदि मैं मुसलमान हो जाऊ तो आपने फ़रमाया कि इसका बदला जन्नत है। वह इस्लाम ले आया और कहने लगा कि ऐ अल्लाह के नबी मेरे पास यह बकरियों का रेवड़ अमानत है। आपने फ़रमाया कि तुम इसको हसबा के मैदान में छोड़ आओ। अल्लाह तुम्हारी अमानत को अदा कर देगा उस गुलाम ने ऐसा ही किया उसने रेवड़ को मालिक के पास लौटा दिया। यहूदियों को उसके मुसलमान होने की सूचना मिल गई। इस अवसर पर आपने नसीहत फरमाई और जिहाद के लिए लोगों को उभारा। जब मुसलमान और यहूद का मुकाबला हुआ शोहदा में वह गुलाम भी शामिल था। हुजूर सलल्लाहु अलेहि व सल्लम सहाबा से मुखातब हुए और फरमाया अल्लाह ने इस गुलाम को इज्जत बख्शी इसको खैर की ओर खींच लाया। मैंने देखा कि उसके सरहाने जन्नत की हूरें मौजूद हैं। हालाकि उसने अल्लाह के लिए एक दिन भी सजदा नहीं किया।

मैंने इसलिए आपकी इताअत नहीं की

एक दिहाती आपके पास आया और मुसलमान हो गया वह आपसे कहने लगा कि मैं आपके साथ हिजरत करूंगा- आपने अपने बाज असहाब (साथियों) को नसीहत फरमाई। ग़जवा खैबर के मौके पर आपने माले गनीमत का वितरण फरमाया। आपने उसका भी हिस्सा

लगाया। जबकि वह उस समय अपनी चारागाह में था। जब वह आया और उसको उसका हिस्सा मिला तो वह बोला कि इसके लिए मैं आपके साथ थोड़ी हुआ था। मेरी तो इच्छा यह थी कि हलक की तरफ इशारा करके यहां नेजा लगता और मेरी मौत होती और मैं जन्नत में जाता। आपने फ़रमाया कि यदि तुम सत्य कह रहे हो तो ऐसा ही होगा। सब जंग के लिए तैयार हुए और वह गुलाम आपकी खिदमत में लाया गया वह शहीद हो गया था कि आपने फरमाया कि यह वही है। लोगों ने जवाब दिया कि जी हाँ यह वही है। आपने फ़रमाया कि अल्लाह ने इसकी बात को सच कर दिखाया। फिर आपने अपने जुब्बा मुबारक में उसे कफ़न दिया फिर उसे लाया गया और उसकी नमाज़े जनाजा पढ़ाई उसके लिए दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह यह तेरा गुलाम है। तेरे रास्ते में तेरे लिए हिजरत को निकला और शहीद हो गया इसकी मैं गवाही देता हूँ।

खैबर में क़ियाम (ठहरने की शर्त)

एक-एक कर सब किले फतह हो रहे थे और कई दिन जंग, लड़ाई, मुहासिरे में गुजर रहे थे अंत में यहूद ने आजिज आकर सुलह (समझौता) करना चाही। लेकिन आप उनका यहां से जिला वतन और बेदखल करना चाहते थे। वह कहने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल हमें यहीं रहने दें हम खेती बाड़ी में मशगूल (व्यस्त) रहेंगे आपने उनको इस शर्त (प्रतिबंध) के साथ इजाजत दे दी कि खेती का आधा मुसलमानों को मिलेगा। रसुलुल्लाह पैदावार की तकसीम (वितरण) के लिए हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा को भेजा करते थे वह अनदाजे से उसको आधा आधा करते फिर उनसे कहते इसमें से तुम जो चाहो ले लो इस इनसाफ को देखकर वह कहते हैं कि यही कारण है। जो आकाश और धरती कायम है।

यहूद की मुजरिमाना साजिश

इस गुजवे में सलाम बिन मुशकम की पत्नी जैनब बिंत हारिस यहुदीया ने नबी सल्ललाहो अलैहे व सल्लम को एक भुनी बकरी जहर मिलाकर तुहफे में पेश की। फिर आपसे पूछा कि आपको कौन सा गोश्त पसंद है। आपने फरमाया दस्त का। उस दस्त में जहर की मात्रा अधिक कर दी। जब आपने निवाला लिया तो दस्त ने स्वयं कहा कि मुझमें जहर मिलाया गया है। आपने वह लुकमा (निवाला) उगल दिया। फिर आपने यहूद को जमा किया और उनसे फरमाया कि यदि मैं तुमसे कुछ पूछूं तो सच सच बताओगे। उन्होंने कहा हां क्यों नही आपने फरमाया कि तुमने इस बकरी में जहर मिलाया? उन्होंने कहा कि हां आपने फ़रमाया कि तुम्हें ऐसा करने के लिए किसने मजबूर (बाध्य) किया उन्होंने जवाब दिया कि हम आपकी परीक्षा लेना चाहते थे कि यदि आप झूठे होंगे तो (नाऊजो बिल्लाह) आपसे छुट्टी मिल जायेगी और यदि आप सच्चे हैं और नबी हैं तो आपको नुकसान (हानि) न होगा। फिर वह महिला आपके पास लाई गई और कहने लगी कि मैंने आपके कत्ल की साज़िश की थी। आपने फ़रमाया कि अल्लाह तुम्हे मुझ पर काबू नहीं दे सकता। सहाबा फ़रमाने लगे कि आप आदेश दें हम इसको कत्ल कर देंगे आपने मना फ़रमाया और आपने उसको कोई सजा (दण्ड) नहीं दी और नहीं आपने उसको कत्ल करने की आज्ञा दी। लेकिन जब उसके खाने से बिश्र बिन अलबराआ बिन मारूर की मौत हुई तो फिर उसको कत्ल कर दिया गया।

फुतूहात (सफलताएं) और माले गनीमत

जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने खैबर से फुरसत पाई तो आपने फ़िदक की तरफ रूख किया और जब आप वादिए कुरा तशरीफ़ ले गये तो आपने वहां इस्लाम की दावत दी उनको

आपने बतलाया कि यदि तुम मुसलमान हो जाते हो तो तुम्हारी जान, तुम्हारा माल, सुरक्षित है और उसका हिसाब अल्लाह पर होगा। यहूद के पास जो कुछ था वह मुसलमानों को दे दिया रसूलुल्लाह ने इस माले गनीमत को मुसलमानों में तक़सीम किया। वादिये कुरा में खजूर के बाग़ात और जमीनें यहूद के कब्जे में रहने दीं। इसी पर आपने उनसे मामला फरमाया। जब इसकी सूचना तीमा के यहूदियों को मिली तो उन्होंने भी खैबर, फिदक और वादिये कुरा के यहूद के साथ आपने जो मामला फरमाया था उसी आधार पर उन्होंने भी आपसे सुलह कर ली। आपने उनका धन उन्हीं के पास रहने दिया और मदीने वापस तशरीफ़ ले आये।

उम्रे की कज़ा

आने वाली हिजरी के सातवे वर्ष आप और मुसलमान उमरतुल कजा की नियत से तशरीफ ले चले। कुरैश ने किसी प्रकार की मुजाहमत नहीं की और अपने घरों को ताला लगाकर पहाड़ों पर चले गये। आपने मक्का में 3 दिन कियाम फ़रमाया और उमरा किया। अल्लाह ताला ने फरमाया। "बेशक अल्लाह ने अपने पैगम्बर को स्वप्न की घटना सच्ची कर दिखाई कि अल्ला चाहे तो तुम अदब वाली मस्जिद (काबा) में अमन के साथ जरूर दाखिल होगे, (उमरे बाद) सर मुडाओगे, बाल कतरवाओगे, तुमको कोई खतरा नहीं होगा और वह जानता था। फिर उसके अलावा उसने एक करीब की फतह (खैबर की तुमको) खबर दी"

(सूरह फतह - 26)

लड़कियों की तरबियत में मुकाबला

इस्लाम के कारण लोगों और लोगों की सोच में जबरदस्त परिवर्तन आया। वह लड़की जो पहले रईसों और इज्जतदार लोगों में

लज्जा और ज़लील समझी जाती थी अब इस्लाम के कारण उसकी तरबियत, शिक्षा में मुकाबला होने लगा और उसको चाहा जाने लगा। जब आपने मक्का से निकलने का इरादा किया तो उमामा बिन्ते हमजा चाचा चाचा कहते हुए साथ हो गई। हजरत अली ने उनको लिया और हज़रत फ़ातमा के हवाले कर दिया और उनसे कहा कि यह देखो यह चाचा हमज़ा की लड़की है। इसके लिए हज़रत अली, जैद और जाफर में कशमकश होने लगी। हजरत अली ने कहा कि यह मेरे चाचा की लड़की है। हज़रत जाफ़र ने कहा कि यह मेरी चचा जाद बहन है। और इसकी खाला मेरी पत्नी है। हज़रत जैद ने कहा कि यह मेरे भाई की लड़की है। नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि खाला का हक़ जियाद है। खाला माँ समान होती है।

हुजूर सलल्लाहु अलैही व सल्लम ने हज़रत अली से फरमाया कि तुम मुझसे और मैं तुमसे हूँ। हज़रत जाफ़र से कहा कि तुम सीरत और सूरत दोनों में मुझसे मुशाबेह हो। हज़रत जैद से फ़रमाया कि तुम मेरे भाई हो और मेरे मित्र हो।

गजवा-ए-मूता

मुसलमान सफीर का कत्ल और उसका अन्जाम (परिणाम)

रसूलुल्लाह ने एक पत्र देकर हारिस बिन उमैर अजदी को शरहबील बिन अम्र अलग़स्सानी जो उस समय बसरे का हाकिम था तथा कैसरे रूम के मातेहत था के पास भेजा। शरहबील ने उनको धोखा दिया और फिर कत्ल कर दिया। ऐसा अब तक नहीं हुआ था कि जो सुफ़रा (राजदूत) बादशांह और रईसों के पास भेजे जायें और वह कत्ल कर दिये जायें। राजदूतों के लिए खतरे की बात थी और जो पत्र लिख

रहा है और जिसको लिख रहा है दोनों के लिए जिल्लत की बात थी। इसलिए इसको रोकना आवश्यक और इसकी सजा देना अनिवार्य था ताकि भविष्य में कोई फिर ऐसी हरकत न करे।

रूम की धरती पर इस्लामी लश्कर

जब रसूलुल्लाह को इसकी सूचना मिली तो आपने एक लशकर बसरे भेजने का इरादा फ़रमाया। यह बात जुमादलऊला वर्ष 8 हिजरी की है। मुसलमानों ने तैयारी कर ली उस समय उनकी संख्या 3000 तीन हज़ार थी आपने इस लश्कर की क़ियादत (नेतृत्व) हजरत जैद बिन हारिसा को सौंपी जो गुलामी से आजाद हुए थे। इस लश्कर में बड़े-बड़े महान सहाबा अंसार और मुहाजेरीन मौजूद थे। आपने फरमाया कि जैद को कुछ हो जाये तो क्यादत जाफ़र बिन अबी तालिब करेंगे और उनके बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा कियादत करेंगे इस लशकर के चलने का समय आया तो आपने उनको सलामती की दुआ के साथ रूखसत (विदा) किया उनके सामने एक लम्बा सफ़र था और शान शौकत रखने वाले दुश्मन से मुकाबला था। लशकर चला और मआन आकर उसने पड़ाव डाला। यहाँ पहुँचकर मुसलमानों को सूचना मिली कि हिरक़ल रूम से एक लाख के लशकर के साथ आ रहा है और अरब कबीला के लोग भी उसके साथ साथ शरीक हो रहे हैं। मुसलमानों ने मआन में आकर 2 रातें गुजारी स्थिति जानने के लिए उन्होंने वहाँ का मुआयना (निरीक्षण) किया फिर यह फैसला किया कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को पत्र लिखकर स्थिति से अवगत करायें और उनकी तादाद की जानकारी आपको दे दें। फिर आप जो निर्णय लें उसके अनुसार हम अगला कदम उठायें। मजीद कुमक भेजें या इसी हाल में लड़ने का आदेश दें।

हम जंग बल और संख्या के बलबूते नहीं करते

उस समय हजरत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने हिम्मत (साहस) बटोरा और लोगों से कहा कि ऐ कौम आज तुम उस चीज को बुरा समझ रहे हो जिसके लिए यह तुमने घर छोड़ा यानी शहादत। उन्होंने कहा कि हम दुशमन की तादाद और उसकी ताकत पर जंग नहीं करते। हम तो केवल उस दीन धर्म के लिए जंग करते हैं। जिसमें हमें मान दिया और इज्जत दी। बस खड़े हो जाओ। इसी में हमारा लाभ है। हम या तो सफलता पायेंगे या फिर शहादत फिर लोग चल पड़े।

जब मुसलमानों का लशकर बलका पहुँचा तो रूमी और अरबी लशकर को सामने पाया। मुसलमानों ने मूता नामी गाँव में पड़ाव डाला और हज़रत जैद के नेतृत्व (क़ियादत) में जंग शुरू (प्रारम्भ) हुई। हज़रत ज़ैद शहीद हुए उनका जिस्म (शव) तीरों से छलनी हो गया था उसके बाद क़ियादत हजरत जाफर ने संभाली और बराबर लड़ते रहे जब जंग का दबाव अधिक बढ़ा तो वह घोड़े से उतर पड़े और अपने घोड़े की टांग काट दी। लड़ते लड़ते आपका सीधा हाथ कट गया तो झण्डा बायें हाथ में ले लिया। बायाँ हाथ कटने पर झण्डे को दोनों बाज़ुओं से पकड़ लिया यहाँ तक कि शहीद हो गये। उनकी आयु उस समय 33 वर्ष की थी। उनके सीने और बाज़ुओं के बीच 90 ज़ख्म आये थे। और कोई ज़ख्म पीछे नहीं था जब हजरत जाफ़र शहीद हो गये तो झण्डा अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने संभाल लिया। और आगे बढ़े। वह भी घोड़े से उतर आये। उनके चचाजाद भाई एक हड्डी जिस पर गोश्त लगा था लेकर आये उनको वह हड्डी देते हुए बोले कि इसको मुँह में डाल लो। तुमने कई दिन से कुछ नहीं खाया। उन्होंने उसमें से थोड़ा खाया। और शेष फेंक दिया और आगे बढ़े लड़े और शहीद हो गये।

हजरत खालिद की हिकमते अमली (रणनीति)

सब लोग हजरत खालिद की क़ियादत पर राजी हो गये। और झण्डा उनको दे दिया गया। वह बलवान थे, बहादुर (वीर) थे, और जंग की सियासत का भली प्रकार से ज्ञान रखते थे। उन्होंने इस्लामी लशकर का रूख जुनुब (दखिन) की ओर ढकेल दिया। रात हुई दोनों तरफ के लोगों ने जंग बंदी स्वीकार कर ली इसी में दोनों का लाभ था।

आँखों देखा हाल

इधर मुसलमान अपनी बहादुरी वीरता के जौहर दिखा रहे थे उधर रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) मदीने में इस जंग का आखों देखा हाल सुना रहे थे। अनस बिन मालिक कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने हजरत जैद, जाफर और अब्दुल्लाह बिन रवाहा की शहादत की सूचना लशकर के मदीना पहुँचने से पहले ही दे दी थी। आपने फरमाया कि– जैद ने झण्डा लिया और वह शहीद हो गये फिर जाफर ने झण्डा लिया और वह शहीद हो गये। फिर झण्डा अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने लिया और वह भी शहीद हो गये। इसके बाद आपकी आँखों में आसूं आ गये यहां तक कि हजरत खालिद ने झण्डा लिया और उनके हाथ पर अल्लाह ने सफ़लता दी।

जाफर तय्यार 2 पंख वाले

आपने फरमाया कि अल्लाह ने जाफर के दोनों हाथों को दो परों में तबदील फरमा दिया। वह उनके ज़रीये जन्नत में जहां भी चाहें उड़ कर जा सकते हैं। इसी लिए उनको जुल जनाहैन का लकब अता हुआ।

हमला करने वाले न कि भागने वाले

लशकर वापसी में जब मदीने पहुंचा तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मुसलमानों ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और लोग कहने लगे ए भगोड़ो अल्लाह के रास्ते में भी तुमने राहे फरार इख्तियार की। तो आपने फरमाया कि यह भगोडे नहीं यह तो इन्शाअल्लाह हमला करने वाले हैं।

फ़तहे मक्का

जब अल्लाह का दीन मुकम्मल (पूरा) हो गया तो अल्लाह ने मुसलमानों को मक्का में दाखिल (प्रवेश) होने की इजाजत दी ताकि वह काबा को बुतों (मूर्तियों) से पाक व साफ़ कर दें और उसको संसार के लिए बाबरकत तथा मार्ग दर्शक बनाए और मक्का अपनी पहली हालत में लौट आये वह लोगों के लिए शान्ति का स्थान था।

बनी बक्र और कुरैश की अहद शिकनी (वचन भंगता)

अल्लाह ने फ़तह (सफलता) के लिए असबाब पैदा फरमाये और स्वयं कुरैश को इसका सबब बनाया। सुलह हुदैबिया की एक शर्त यह भी थी कि जो भी रसूलुल्लाह की पनाह में आना चाहे वह आ सकता है और जो कुरैश की पनाह में जाना चाहे वह आजाद होगा। इसीलिए बनूबकर ने कुरैश को तरजीह दी। उनकी हिमायत और उनका सहयोग स्वीकार किया और खुजाआ आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की पनाह में आ गये।

बनू बकर और खुजाआ में बहुत दुशमनी थी। इस्लाम ने आकर उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी। अब दोनों कबीले शांति से अपने

कैम्प में चले गये। बनू बकर ने इस मौके (अवसर) को गनीमत जाना और अपना पुराना हिसाब बेबाक करना चाहा। बनू बकर के कुछ लोगों ने मनसूबा (योजना) बनाकर बनी खुजाआ पर रात में हमला कर दिया। बनू खजाआ पानी के एक चशमे के पास पड़ाव डाले हुए थे। लड़ाई हुई और खुजाआ के कुछ आदमी मारे गये। कुरैश ने बनू बकर की असलहे से सहायता की कुरैश के इज्जतदार आदमियों ने इस जंग में रात के अंधेरे से लाभ उठाकर उनकी मदद की और उनको ढकेलते हुए हरम तक पहुंच गये। हरम पहुंच कर बनू बकर ने अपने कुछ साथियों से कहा कि अब तो हम हरम आ गये अपने उपास्यों का ध्यान रहे। इसका उत्तर उनको यह मिला कि आज के दिन कोई देवता नहीं। आज तो बदला ले लो आज के बाद फिर यह मौका (अवसर) नहीं मिलेगा।

रसूलुल्लाह से फरयाद

अमर बिन सालिम अल खुजाई आपसे आकर मिले और खड़े होकर कुछ अशआर (कविता) पढ़े। आपके और बनी खुजाआ के साथ जो मुआहदा (समझौता) हुआ था उसको याद दिलाया और मदद व सहायता के लिए अनुरोध किया और आपको बतलाया कि कुरैश ने माआहदा के खिलाफ किया है और अहद तोड़ा है। जब वह चश्मे पर थे तो उन्होंने रात में उन पर हमला कर रूकू सुजुद की हालत में उनको कत्ल कर दिया। आपने फरमाया "ऐ उमर बिन सालिम तुम्हारी सहायता जरूर (अवश्य) की जायेगी।"

अहद के नवीनीकरण की कुरैश की कोशिश (प्रयत्न)

जब रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) को यह सूचना

मिली तो आपने फरमाया कि मैं देख रहा हूँ कि अबू सुफयान मुआहदा (समझौता) की तजदीद (नवीनीकरण) तथा समय बढ़ाने के लिए आये हैं और ऐसा ही हुआ। कुरैश ने जो कुछ किया था उस पर भयभीत थे।

अपने माता पिता तथा औलाद पर नबी को तरजीह

अबू सूफयान आपकी सेवा में मदीने आये तो अपनी बेटी (उम्मे हबीबा) रसूलुल्लाह की पवित्र पत्नी के घर गये। अबू सुफयान ने आपके बिस्तर पर बैठना चाहा तो उम्मे हबीबा ने बिस्तर लपेट दिया। उन्होंने कहा कि! ऐ बेटी मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि तुमने इस बिस्तर को मेरे लायक (योग्य) नहीं समझा या मुझको इस बिस्तर के लायक नहीं समझा। उन्होंने उनको उत्तर दिया कि यह बिस्तरा रसूलुल्लाह का है। आप मुशरिक और नापाक हैं। मैं यह नहीं चाहती कि आप हुजूर के बिस्तरे पर बैठें। उन्होने कहा तुम हमसे अलग होने के बाद बहुत बदल गयी हो। तुममें बड़ा परिवर्तन आ गया है।

अबू सूफ्यान की हैरत (आश्चर्य) परेशानी और असफलता

अबू सूफयान आये और आपसे बात की लेकिन आपने उनको उनकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। फिर वह हजरत अबूबकर के पास आये और उनसे बात की कि वह उनके लिए रसूलुल्लाह से बात करें। हज़रत अबू बक्र ने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं बात नहीं कर सकता। फिर वह बारी बारी हजरत उमर, उसमान और अली और फातिमा के पास आये। किसी ने उनकी बात का उत्तर नहीं दिया। कहा कि मामला बड़ा अहम (महत्वपूर्ण) है इसमें हम कुछ नहीं कर सकते।

मक्के की तैयारी

रसूलुल्लाह ने सबको तैयारी के आदेश दिये और इसका प्रबन्ध किया कि कार्यवाही खुफया (गुप्त) रहे। किसी को इसकी सूचना न हो। फिर आपने लोगों को बता दिया कि आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) मक्का कूच करने वाले हैं। आपने तैयारी पूरी करने के आदेश दिये और फरमाया कि- " ए अल्लाह कुरैश का कोई जासूस और मुखबिर अपना कार्य न कर सके यहाँ तक कि हम मक्का पहुँच जायें। आपने रमजान में मदीने से कूच किया (चले) आपके साथ दस हजार का लशकर था। रसूलुल्लाह जहरान के स्थान पर पहुँच गये। अल्लाह ने हर चीज को कुरैश से छिपा रखा। रास्ते में आपके चचा जाद भाई अबू सुफयान मिले आपने उनकी तरफ से मुँह फेर लिया। इसलिए कि आपको उन्होंने बड़े कष्ट दिये थे और आपका मजाक उड़ाया तथा कविता द्वारा आपका अपमान किया था। उन्होंने हजरत अली से शिकायत की। हजरत अली ने उनको मशवरा दिया कि आपकी खिदमत में सामने से आओ और वह कहो जो यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ से कहा था कि "खुदा की कसम तुमको खुदा ने हम पर फ़जीलत (श्रेष्ठता) दी है और बेशक हम मुजरिम हैं।" आप यह पसंद नहीं फरमाते कि कोई भी आपसे बढ़कर और नरम बात कहे। अबू सुफयान ने यही किया और आपके सामने आये तो उनसे फरमाया कि "आज तुम पर कोई इल्जाम नहीं। अल्लाह तुम्हें माफ (क्षमा) करे वह सबसे अधिक रहम करने वाला है।" उसके बाद उनका शुमार अच्छे और पक्के मुसलमानों में इस्लाम लाने के बाद उन्होंने कभी आपसे आंखे नहीं मिलाई।

अबू सुफयान बिन हरब हुजूर की सेवा में

रसूलुल्लाह ने लशकर (सेना) को आग रौशन करने के आदेश

दिये। अबू सुफयान सूचना प्राप्त करने हेतु जासूसी के लिए निकले तो उनका कहना था कि इस शान का लशकर (सेना) और रात में ऐसी रोशनी कभी देखी ही नहीं। अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब अपने परिवार सहित मुसलमान हुए और हिजरत की तथा इस लशकर से आकर मिल गये। उन्होंने अबू सुफयान की आवाज पहचान ली और उनसे कहा कि देखो रसूलुल्लाह लोगों में मौजूद है। कल कुरैश का अनजाम (परिणाम) क्या होगा। उनको अपने खच्चर पर बिठाया इस डर से कि कहीं कोई मुसलमान इनको देख ले और कत्ल न कर दे। उनको रसूलुल्लाह की खिदमत में ले आये। जब रसूलुल्लाह ने उनको देखा तो उनसे आपने फरमाया कि "ऐ अबू सुफयान तुम्हारा भला हो आज तक तुमने यह नहीं जाना कि पूजा के लायक केवल अल्लाह है। उन्होंने उत्तर दिया कि आप पर मेरे माता पिता वारी जायें। आप कितने रहीम और बुर्दबार हैं। बखुदा मैं तो यह समझता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजा के लायक होता तो कुछ काम आता। आपने फरमाया कि अबू सुफयान अल्लाह तुम्हें अकल (बुद्धि) दे। तुम्हारी समझ में अब तक यह नहीं आया कि मैं अल्लाह का भेजा नबी हूँ। वह बोले मेरे माता पिता आप पर वारी हों। आप कितने महान, रहमदिल और शरीफ हैं। जहाँ तक इस मामले का सम्बन्ध है उसमें मुझे अभी शकोशुबहा है। हजरत अब्बास बोले कि अल्लाह के बन्दे इससे पहले कि तुम्हारी गरदन उड़ा दी जाये तुम मुसलमान हो जाओ और इकरार करो कि अल्लाह के सिवा कोई पूजा के लायक नहीं और मुहम्मद सल्लाहोअलेहे वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। फिर वह मुसलमान हो गये और हक की गवाही दे दी।

आम मुआफी (क्षमा)

आपने सबको मुआफ (क्षमा) कर दिया। आज मक्के वालों में वही हलाक हो सकता था जिसको अपना जीवन प्रिय न हो या वह

शान्ति प्रिय न हो। आपने फरमाया कि जो भी अबू सुफयान के घर में पनाह लेगा (शरण लेगा) वह सुरक्षित (महफूज) है। जो अपने घर का दरवाजा बंद कर लेगा वह भी (सुरक्षित) महफूज होगा। जो मसजिदे हराम में प्रवेश करेगा वह सुरक्षित होगा। रसूलुल्लाह ने लशकर (सेना) को हिदायत (निर्देश) फरमाई कि मक्का में प्रवेश करते समय केवल उन पर हाथ उठाया जाये जो उनके लिए रूकावट बनें या उनको रोकें। आपने यह भी निर्देश दिये कि मक्का वालों की मनकूला (अचल सम्पत्ति) जायदाद के मामले में पूरी तरह एहतियात बरतें और उसमें किसी प्रकार की दस्त दराजी (हस्तक्षेप) न की जाये।

अबू सुफयान फतह के जूलूस का नजारा करते हुए

हुजूर ने अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब को निर्देशित किया कि वह अबू सुफयान को ऐसे स्थान पर बिठाए जहाँ से उनको इस्लामी लशकर का गुजरना नजर आये। फतह (सफलता) प्राप्त लशकर के दस्ते ऐसे गुजर रहे थे गोया समुद्र मौजे मार रहा हो। भिन्न भिन्न कबीले अपने अपने झण्डे उठाये गुजर रहे थे। जब कोई कबीला उनके सामने से गुजरता वह अब्बास से कबीले का नाम पूछते कहते कि इस कबीले से क्या लेना। जब हुजूर स्वयं मुसल्लह दस्ते में तशरिफ लाये जो हरा झण्डा उठाये हुए था। यह दस्ता मुहाजिरीन व अंसार का था यह लोहे के वस्त्र में थे इनकी केवल आँखें नजर आ रहीं थी जब अबू सुफयान के सामने से गुजर रहा था तो बोले सुबहानअल्लाह अब्बास यह कौन है। हजरत अब्बास ने कहा यह हुजूर हैं। मुहाजिरीन और अंसार के बीच। अबू सुफयान बोले– यह शानो शौकत इससे पूर्व किसी को नहीं मिली। बखुदा ऐ अबुल फजल तुम्हारे भतीजे का इकतिदार आज की सुबह कितना अज़ीम और महान है। हज़रत अब्बास ने कहा कि यह

ुब्‍ वत का मोजेज़ा (चमत्कार) है। उसके बाद अबू सुफ़यान ने एलान किया कि ऐ कुरैश के लोगो यह मुहम्मद आज इतनी ताकत के साथ तुम्हारे पास आये हैं जिसका तुम्हें अनुभव नहीं हुआ। वह कहते हैं जो भी अबू सुफयान के घर में दाखिल (प्रवेश) होगा वह सुरक्षित होगा। लोग यह सुनकर कहने लगे कि अबू सुफयान तुमको अल्लाह हलाक करे तुम्हारे घर की हकीकत क्या है। और उन्होंने कहा कि जो अपने घर का दरवाजा बंद कर लेगा वह भी सुरक्षित होगा। लोग मुनताशिर (बिखर) हो गये और अपने अपने घरों और मस्जिद की तरफ रवाना हो गये।

नियाजमंदाना दाखला (प्रवेश)

आजिज़ी इनकी सारी और अपने सर को झुकाते हुए आप मक्के में दाखिल (प्रवेश) हुए। अल्लाह के शुक्र और इन्किसारी में अपने सर को इतना झुका रखा था कि करीब था कि आपकी ठुड़ी मुबारक ऊँटनी के कजावे से लग जाये। आप मक्का में प्रवेश के समय सूरह फतह की तिलावत फरमा रहे थे। मक्का में इस फातेहाना दाखले (प्रवेश) में इनसाफ मसावत (बराबरी) तवाजो इनकिसारी का जो इजहार आपने फरमाया उसका कोई तसव्वुर (अनुमान) नहीं कर सकता था। उसामा बिन जैद जो आपके आजाद किये हुए गुलाम थे और हजरत जैद के सुपुत्र थे उनको अपनी सवारी के पीछे स्थान दिया। बनी हाशिम और कुरैश के बहुत से सम्मानित सपूत और लोग मौजूद थे लेकिन यह इज्जत यह शरफ किसी और के भाग्य में नहीं आया। यह बात जुमे (शुक्रवार) के दिन 20 रमजान आठ हिजरी की है। फतह के दिन एक आदमी ने आपसे बात की उस पर कपकपी तारी थी। उसको यकीन दिलाया कि डरो नहीं मैं कोई बादशाह नहीं मैं तो कुरैश की एक महिला का पुत्र हूँ जो सुखाया नमकीन गोश्त खाया करती थी।

मुआफी (क्षमा) रहम (दया) का दिन न कि खूंरेजी (रक्त पात) का

अनसार दस्ते के काइद (सेनापति) हजरत सअद बिन उबादा जब अबू सुफयान के पास से गुजरे तो कहने लगे कि आज खूंरेजी (बदले) का दिन है। आज हुरमत हलाल है आज कुरैश को अल्लाह ने रूसवा व जलील किया। जब रसूलुल्लाह अपने दस्ते के साथ गुजरे तो अबू सुफयान ने शिकायत की। और कहने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल आपने वह नहीं सुना जो सअद कह रहे थे। आपने उनसे पूछा कि क्या कह रहे थे। अबू सुफयान ने वह बताया जो उन्होंने कहा था। आपने उसको नापसन्द किया और फरमाया नहीं आज तो रहम का दिन (दया) है अल्लाह कुरैश को इज्जत देगा और कअ़बे की अज़मत बढ़ाएगा। आपने हजरत सअद को बुलाया और उनसे झण्डा ले लिया और वह झण्डा उनके बेटे (पुत्र) कैस को दे दिया। बेटे को झण्डा देने से ऐसा मालूम होता गोया उनसे झण्डा लिया ही नहीं गया।

छोटी मोटी झड़पें

सुफयान बिन उमय्या व अकरमा बिन अबू जहल और सुहैल बिन अम्र और खालिद बिन वलीद के साथियों के बीच मामूली झड़पे हुई। इसमें एक दर्जन (12) मुशरिकीन मारे गये और उनकी शिकस्त हुई। रसूलुल्लाह ने मुसलमान सरदारों से मक्के में दाखिल होते समय यह अहद लिया कि जब तक कोई उनसे न लड़े वह किसी से न लड़ें।

हरम शरीफ की बुतों व मूर्तियों से पाकी

जब रसूलुल्लाह मक्का में अपने मुकाम पहुँच गये और लोग संतुष्ट हो गये तो उस समय आप हरम तशरिफ लाये बैतुल्लाह

(काबा) का तवाफ किया। आपके हाथ में एक कमान (धनुष) थी। उस समय काबा के गिर्द और उसके ऊपर 360 बुत थे। आप उस कमान से बुतो को मारते और गिराते जाते और फरमाते कि "सत्य आ गया और बातिल (झूठ) गया और बातिल तो मिटाने की चीज है ही। हक आया अब बातिल कभी नहीं पनपेगा, नहीं लौटेगा। बुत सर के बल गिर रहे थे आपने बाद में जो भी शबीह और मूर्ति देखी उसको भी तोड़ने का आदेश दिया।

आज का दिन अच्छे व्यवहारों का दिन है

जब आपने तवाफ समाप्त किया तो हजरत उसमान बिन तलहा को बुलवाया। उनसे काबा की चाबी ली फिर आपने काबे का दरवाजा खोला। मदीने हिजरत से पूर्व आपने जब उनसे काबा की चाबी मांगी तो उन्होंने गाली गलोच की थी। आपका अपमान किया था। और चाबी देने से इनकार कर दिया था। उस समय आपने उनसे बड़ी नम्रता और सब्र से फरमाया था कि ऐ उसमान तुम देखना एक दिन इसकी चाबी मेरे हाथ में होगी। उस समय मैं जिसको चाहूँगा उसको दूँगा। उन्होंने इसके उत्तर में कहा था कि वह दिन कुरैश की जिल्लत (अपमान) और तबाही का दिन होगा। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया नहीं उस दिन वह जिन्दगी और इज्जत पायेंगे। यह शब्द उस्मान बिन तलहा को ज़िह्न नशीन हो गये थे और उन्होंने महसूस किया कि शायद आज वही होगा जो हुजूर ने फरमाया था। जब आप काबा से निकले हजरत अली आपके साथ थे और काबे की चाबी आपके हाथ में थी। हजरत अली ने फरमाया कि आप पानी पिलाने और काबा की देख भाल (दरबानी) का कार्य हमें दीजिए। आपने फरमाया कि उसमान बिन तलहा कहाँ हैं। उनको बुलवाया और चाबी उनको दे दी और फरमाया कि आज नेकी अच्छे व्यवहार और वफ़ा का

दिन है। लो यह चाबी अब यह हमेशा (सदैव) तुम्हारे पास रहेगी। इसको अब तुमसे कोई दूसरा अत्याचार करके ही ले सकता है।

इस्लाम दीने तौहीद

रसूलुल्लाह ने काबा का दरवाजा खोला तो कुरैश मस्जिद में सफबसता (पंक्तिबद्ध) लाइन में खड़े हो गये और यह इन्तजार (प्रतिक्षा) कर रहे थे कि अब आप क्या करते हैं। आपने दरवाजे के बाजू थाम लिये। सब उसके नीचे थे। आपने उनसे फरमाया कि अल्लाह के सिवा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है। वह अकेला है। उसका कोई शरीक व साझेदार नहीं। उसने अपना वादा (वचन) पूरा किया। उसने अपने बन्दे की सहायता की। उसने तन्हा सबको शिकस्त (पराजय) दी तमाम गर्व, धन, दौलत, खून बहा आज मेरे पैरों के नीचे हैं। काबे की तवलियत और हाजियों को पानी पिलाना शामिल नहीं है।

ऐ कुरैश अल्लाह ने जिहालत का गुरू और नसब पर गुरूर खानदानी असबीयत घमण्ड खत्म कर दिया सब इन्सान (मनुष्य) आदम की औलाद हैं और आदम का जन्म मिट्टी से हुआ है। फिर आपने यह आयत पढ़ी-

"ऐ इन्सानो हमने तुम्हे एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। हमने तुम में कबीले और कौम बनाये ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। तुममे सबसे अधिक सम्मानित, आदर और इज्जत वाला अल्लाह के यहाँ वह है जो अल्लाह से सबसे अधिक डरने वाला तथा परहेजगार हो। बेशक अल्लाह को हर चीज की जानकारी और खबर है।"

प्रेम करने वाले नबी और दया करने वाले रसूल

ऐ कुरैश! तुम्हारा क्या खयाल है कि मैं तुम्हारे साथ कैसा मामला करूंगा? सबने कहा कि आप हमारे साथ अच्छा ही मामला करेंगे। आप करम करने वाले भाई और नेकी करने वाले भाई के लड़के हैं। आपने फरमाया कि आज मैं तुमसे वही कहूंगा जो यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा था। "आज तुम पर कोई इल्जाम नहीं। जाओ तुम सब आजाद हो।" आपने हजरत बिलाल से फरमाया कि काबे पर चढ़कर अजान दो सब कुरैश के सरदारों और सम्मानित लोगों ने अजान सुनी। अल्लाह की बड़ाई के कल्मे सुने और मक्का अजान से गूंज उठा। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब के घर तशरीफ ले गये, नहाये और आठ रकआत विजय की नमाज़ पढ़ी और अल्लाह का शुक्र अदा किया।

अल्लाह की शरीअत और हुदुद को लागू करने में किसी प्रकार का भेद भाव नहीं

बनी मख्जूम की फातमा नामी एक महिला ने इस गजवे में चोरी की। उसके कबीले के लोग उसको उसामा बिन जैद के पास लाये कि वह आपसे उसकी सिफारिश कर दें। जब उन्होंने बात की तो आपके चेहरे मुबारक का रंग बदल गया और फरमाया कि तुम अल्लाह की हुदुद के बारे में बात करते हो। उसामा ने कहा कि या रसूलुल्लाह मुझे माफ कर दें जब रात हुई तो आपने खिताब फरमाया। प्रारम्भ में अल्लाह की तारीफ की फिर फरमाया कि तुमसे पहले के लोग इसलिए हलाक व बर्बाद हुए कि जब उनका कोई शरीफ चोरी करता तो उसको छोड़ देते थे। और जब कोई कमजोर चोरी करता तो फिर उसको सजा

देते थे। बखुदा (यदि) अगर फातमा बिन्ते मुहम्मद चोरी करेगी तो उसका भी हाथ काटा जायेगा। फिर आपने हुक्म दिया और उसका हाथ काट दिया गया। इसके बाद इस सजा व तौबा से उसकी जिन्दगी संवर गयी।

इस्लाम पर बैअत

लोग मक्का में आपसे इस्लाम पर बैअत के लिए जमा हुए। आप सफा पर तशरीफ लाए और अल्लाह और उसके रसूल की मक़दूर भर फरमाबारदारी करेंगे की बैअ़त ली जब आप मरदों की बैअत से फारिग हुए तो आपने महिलाओं से बैअत ली इनमें हिन्द बिन उतबा जो अबू सुफयान की पत्नी थी और नकाब डाले थी। उन्होंने जो हजरत हमजा के साथ किया उसको छिपाना नहीं चाहती थीं। आपने उसकी बातों से पहचान लिया। वह मुसलमान हो गई और उन्होंने बैअत की।

तुम्हारे ही साथ मरना और तुम्हारे ही साथ जीना

अल्लाह ने आपके हाथ पर मक्का फत़ह किया। यह मक्का आपका शहर, आपका वतन और आपकी जन्म भूमि थी। अल्लाह ने आपके देश और आपके वतन की आजादी (स्वतंत्रता) दिलाई। यह बात अंसार आपस में कर रहे थे कि आप अब यही रहेंगे मदीने नहीं जायेंगे। रसूलुल्लाह ने अंसार से पूछा कि क्या बातें कर रहे हो। यह बात अंसार के अलावा कोई नहीं जानता था। आपके पूछने पर सब बड़े शरमिन्दा हुए और जो कहा उसको स्वीकार किया। आपने फरमाया कि भला ऐसा कहीं हो सकता है। अब तो मेरी जिन्दगी और मौत तुम्हारे ही साथ है।

जाहिलियत के निशानों का मिटना

आपने सराया भेज कर काबा के इर्द गिर्द और उसके अतराफ में उन सारे बुतों को तोड़ने के आदेश दिये जो बाकी थे। उन्हीं में लात व मनात और उज्जा शामिल थे। फिर आपने एलान (घोषणा) फरमाया कि सुन लो जो अल्लाह और आखिरत, पर ईमान रखता है वह अपने घर के बुत अगर हैं तो उनको तोड़ डाले। और इस कार्य के लिए अपने सहाबा को कबीलों में भेजा। उन्होंने उन बुतों को तोड़ डाला। उसके बाद आपने क्यिामत तक के लिए मक्का की हुरमत का एलान फरमाया। आपने फरमाया कि किसी मोमिन को इसकी इजाजत नहीं कि वह यहाँ खूंरेजी (खून बहाये) करे और और दरख्त को (वृक्ष) काटे। आपने यह भी फरमाया कि मुझसे पहले भी किसी को ऐसा करने की इजाजत नहीं थी और न मेरे बाद किसी को होगी। फिर आप मदीने तशरिफ ले गये।

फ़त्हे मक्का के असरात
(मक्का की विजय के प्रभाव)

अरबों के दिलों पर मक्का की फतह (विजय) का बड़ा गहरा असर (प्रभाव) पड़ा। अल्लाह ने मुसलमान होने के लिए बहुत सों के दिलों को खोल दिया कि वह झुन्ड के झुन्ड मुसलमान होने लगे। अल्लाह ने सच फरमाया।

जब अल्लाह की मदद (सहायता) और फतह (विजय) आई तो तुमने अपनी आंखों से देख लिया कि लोग झुन्ड के झुन्ड इस्लाम में दाखिल हो रहे हैं।

गजव-ए-हुनैन

मक्का फत्ह (विजय) हो गया। लोग झुण्ड के झुण्ड मुसलमान

होने लगे तो अरबों ने अपने तरकश का एक तीर और मारा। कुरैश के बाद यदि कोई दूसरा बलवान (ताकतवर) कबीला था तो वह हवाजिन का था। कुरैश से इनका बराबर मुकाबला रहता था।

मालिक बिन ओ़फ अन्नसरी सरदारे हवाजिन खडे हुए और जंग का एलान कर दिया। इसका साथ सक़ीफ इतियादि कबीलों ने दिया और सब मिलकर इस्लाम के खिलाफ जंग के लिए तैयार हो गये। साथ में औरतें, बच्चें तथा धन-दौलत भी लाए ताकि इनकी वजह से उनमें हिम्मत और साहस बना रहे। इनसे लड़ने के लिए आप निकले। आपके साथ दो हजार 2000 मक्का के ऐसे लोग थे जो अभी नये मुसलमान थे। उनमें कुछ वह भी थे जो इस्लाम नहीं लाये थे। दस हजार वह थे जो आपका साथ देने के लिए मदीने से निकले। यह तादाद (संख्या) इसके पूर्व किसी गजवे में मुसलमानों की नहीं रही। बाज मुसलमानों ने यह कहा कि आज कम होने के सबब शिकस्त (पराजित) न खाएंगे। और मुसलमानों को अपनी तादाद के जियादा होने पर नाज़ (गर्व) हुआ।

हुनैन की वादी में

वादी हुनैन जब मुसलमान पहुँचे तो वर्ष आठ हिजरी और शाबान की 10 तारीख थी। उन्होंने सुबह तड़के वादी के नशेब में उतरना शुरू कर दिया। हवाजिन पहले ही इस वादी में पहुँच चुके थे उन्होंने तंग रास्ते तथा खाइयों में मोर्चा संभाल लिये थे। मुसलमानों ने जब यह देखा कि वह उनके तीरों की जद में और तलवार की नोक पर हैं फिर वह बड़ी तीरंदाज क़ौम थी। उन्होंने एक साथ और एक ही वक्त हमला कर दिया। मुसलमान इस अचानक हमले पर परेशान हुए उनको एक दूसरे की खबर भी न रही। यह एक फैसलाकुन हमले से परेशान हुए करीब था कि यह हमला मुसलमानों के खिलाफ हो जाये

और उनको संभलने का मौका (अवसर) भी न मिले। इसका हाल भी गज़्वा उहद की तरह था। जब यह मशहूर करा दिया गया कि रसूलुल्लाह शहीद कर दिये गये। तो मुसलमानों के पैर उखड गये।

कामयाबी (सफलता) और स्थिरता

मुसलमानों को जो तम्बीह (चेतावनी) अल्लाह को करनी थी वह अब पूरी हो गयी। तादाद कसरत (अधिकतर) पर उनको जो घमण्ड हो गया था अल्लाह ने उसका मज़ा शिकस्त के रूप में दिखला दिया। लेकिन अल्लाह ने फिर उनके पैर जमा दिये और उनको हमले की हालत में कर दिया। अल्लाह ने अपने रसूल पर सकीनत (संतोष) को उतारा। फिर आप अपने खच्चर पर बिना किसी डर व भय के तशरीफ रखते थे। आपके साथ अंसार मुहाजेरीन में से कुछ रह गये थे। हज़रत अब्बास उस खच्चरर की नकेल थामे हुए थे। और आप फरमाते जाते थे मैं नबीए सादिक हूँ, मैं इब्ने मुत्तलिब हूँ। जब मुशरेकीन के जतथे मुकाबले पर आये तो आपने एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मुशरेकीन की आँखों में दूर तक फैंक दी। वह उनकी आंखों में पड़ गयी। जब आपने देखा कि नफ़सी नफ़सी की हालत है तो आपने फ़रमाया कि ऐ अब्बास चीख कर कहो कि ए अंसार ऐ बबूल के दरख्त वालो। उनका जवाब मिला कि हाजिर (मौजूद) हैं। जो भी उनकी आवाज सुनता वह अपने घोड़े से उतर आता और अपनी तलवार और ढाल लेकर हुजूर के इर्द गिर्द जमा हो जाता आप को घेरे में ले लेता जब एक जमाअत (टुकड़ी) तैयार हो गयी तो उन्होंने मुशरेकीन से मुकाबला शुरू (आरम्भ) कर दिया। आप अपने दस्ते के साथ तशरीफ़ लाये। दोनों फरीक (दोनों पक्ष) अच्छी तरह लड़े। अभी शिकस्त खाकर लोग वापस भी नहीं हुए थे• कि उनके कैदी जिनके हाथ बंधे थे हुजूर की सेवा में आये अल्लाह ने सफलता और सहायता के लिए आसमान से

फिरश्ते भेजे पूरी वादी उनसे भर गई। इस प्रकार हवाजन की शिकस्त हुई।

अल्लाह ने फरमाया कि :-

खुदा ने बहुत से मौको (अवसरों) पर तुम्हारी सहायता की है। और जंगे हुनैन के दिन जबकि तुमको अपनी कसरत (अधिकता) पर गर्व था, वह तुम्हारे काम नहीं आया और जमीन अपनी कुशादगी (फैलाव) के बावुजूद तुम पर तंग हो गई और तुम पीठ फेर कर फिर गये तब खुदा ने अपने रसूल पर मोमिनों पर अपनी तरफ से सकीनत (स्थिरता) उतारी और तुम्हारी मदद व सहायता आसमान से फरिश्ते भेज कर की जो तुम्हें नजर नहीं आ रहे थे और काफ़िरों को अजाब दिया और कुफ्र करने वालों की यही सजा है।

(सूरह तोबा 25.26)

गजव-ए-ताइफ

सकीफ़ के बचे खुचे लोग तायफ़ चले गये। यहाँ आकर उन्होंने शहर के दरवाजे बन्द कर लिये। उन्होंने उसके अन्दर साल भर का गल्ला बगैरा जमा कर दिया और लड़ाई के लिए बिल्कुल तैयार हो गये। आप उनकी सरकूबी सजा के लिए निकले और तायफ़ के करीब आपने पड़ाव डाल दिया। लशकर तायफ़ के करीब था। लेकिन तायफ में दाखिल (प्रवेश) नहीं हो सकता था। क्योंकि उन्होंने किलों के दरवाजे बंद कर रखे थे और तीरों की बारिश मुसलमानों पर बराबर कर रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि चिड़ियों का दल आ गया हो। सकीफ़ के लोग बड़े तीरंदाज थे।

तायफ़ का मुहासिरा (घेराव)

इस्लामी लशकर दूसरी जगह मुनतकिल हो गया और वहाँ उन्होंने

उनका 20 दिन मुहासिरा किया। इस बीच उनसे लड़ाई भी होती रही और दोनों तरफ़ से तीरों की बारिश भी होती रही। रसूलुल्लाह ने पहली बार इस जंग में तोप का इस्तेमाल (प्रयोग) किया और मुहासिरा और सख़्त कर दिया। कई मुसलमान शहीद हो गये।

अब मुहासिरा (घेरा) और सख़्त कर दिया गया। और जंग जियादा लम्बी हो गई तो आपने उनके अंगूर के बाग़ात काटने का हुक्म (आदेश) दिया इन्हीं बागात पर उनकी जिन्दगी का इनहिसार (निर्भर) था। मुसलमानों ने उनके बागात काटने शुरू कर दिये तो उन्होंने आपसे प्रार्थना की कि अल्लाह के लिए पेड़ काटना छोड़ दें। और हम पर दया करें। आपने फरमाया कि मैं केवल अल्लाह के लिए छोड़ता हूँ फिर आपने एलान फरमाया जो कोई किले से बाहर आकर हमसे मिलेगा वह आजाद (स्वतंत्र) है। यह पुकार सुनकर दस आदमी किले के बाहर आ गये। आपको तायफ़ फतेह होने की सूचना नहीं मिली थी। आपने हज़रत उमर से फरमाया कि वापसी का एलान कर दें जब वापसी का एलान हुआ तो लोग शोर मचाने लगे कि हम तायफ़ फतेह किये बगैर कैसे चले जाये फिर रसुलुल्लाह ने फरमाया अच्छा तो चलो जंग करो। जंग में मुसलमान जख़्मी हुए। आपने फरमाया इन्शाअल्लाह कल वापस लौटेंगे। सब यह सुनकर बहुत खुश हुए।

हिसार ख़तम (घेरा समाप्त)

तायफ़ की फतह (सफलता) की इज़ाजत आपको अब तक नहीं मिली थी लोगों ने इस्लाम लाना शुरू कर दिया और आपने चलने की इजाजत दे दी।

रसूलुल्लाह अपने साथियों के साथ जअ़राना पहुँचे और हवाजिन को इसका मौका (अवसर) दिया कि वह दस दिन के अन्दर इस्लाम ले आयें और आपकी सेवा में आये फिर आपने माले गनीमत को बाटना

शुरू किया (वितरण आरम्भ किया) सबसे पहले मुअल्लफ़तिल कुलूब का हिस्सा निकाला। हवाज़िन का वफ़्द (प्रतिनिधि मण्डल) जिसमें 10 लोग शामिल थे। आपकी खिदमत में आये और कहा कि आप कृपया हमारे माल और कैदियों को लौटा दें। आपने फरमाया कि तुम्हें पता है और देख रहे हो कि मेरे साथ कौन लोग हैं। मुझे सबसे अधिक सच बात पसंद है। अब तुम बताओ कि तुम्हें तुम्हारी औरतें (महिलायें) औलादें अधिक अज़ीज हैं या दौलत। उन्होंने जवाब दिया कि हम अपनी महिलाओं और औलादों को अधिक मान देते हैं। आपने फरमाया कि कल नमाज़ के समय तुम खड़े होकर कहना कि हम मुसलमानों के लिए रसूलुल्लाह की और रसूलुल्लाह के लिए मुसलमानों की सिफ़ारिश करते है कि हमारे गुलाम और कैदी वापस कर दें। जब आपने नमाज़ खत्म की तो उन्होंने खड़े होकर वैसा ही कहा जैसा कि आपने उनको बताया था। उस पर आपने फरमाया कि मेरे और बनी मुत्तलीब के हिस्से में जो कुछ है वह तुम्हारे हवाले। और लोगों से मैं सिफ़ारिश करता हूँ। अंसार और मुहाजेरीन ने कहा जो कुछ हमारा है वह हकीकत (वास्तव) में रसूलुल्लाह का है। बनी तमीम, बनी फजारा और बनी सलीम के लोग अपना हक् छोड़ना नहीं चाहते थे। आपने फ़रमाया कि यह लोग अभी मुसलमान होकर आये हैं। मैंने इनका इन्तेजार भी किया और मैंने इनको इख़तियार भी दिया लेकिन लोग अपनी महिलाओं और औलाद को अधिक चाहते हैं। इसलिए यदि किसी के पास ऐसे कैदी हों और उनको अपनी इच्छानुसार देना चाहें तो वह दे सकता है। और यदि वह अपना हक छोड़ना न चाहे तो उनको पहले माले गनीमत से (6) गुना दिया जायेगा। अल्लाह हमें देगा। लोगों ने जवाब दिया या रसूलुल्लाह आपकी खातिर हम अपनी इच्छा से पेश करते हैं। आपने फ़रमाया कि इससे यह स्पष्ट नहीं होता है कि तुममें कौन इस पर राजी है और कौन नहीं। इस समय तुम सब वापस जाओ जब तक तुम्हारे सरदार हकीकत (वास्तविकता) न बता दे। सबने उनकी औरतों और

बच्चों को वापस कर दिया एक ने भी इसकी मुखालफ़त नहीं की साथ में आपने हर कैदी को पोशाक भी अता फरमाई।

रहम व करम (दया दृष्टि)

मुसलमानों के पास जो कैदी आये। उनमें हुजूर की दूध शरीक़ बहन शीमा बिन्ते हलीमा सादिया भी थी। लोगों ने लाइलमी अनजाने में उनको पकड़ लिया। उन्होंने मुसलमानों से कहा कि तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मैं हुजूर की दूध शरीक बहन हूँ। उन लोगों ने उनकी बात पर यकीन नहीं किया और उनको आपकी सेवा में पेश किया।

जब वह रसूलुल्लाह की खिदमत में आई तो कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल मैं आपकी दूध शरीक बहन हूँ। आपने फ़रमाया कि इसका क्या सुबूत (प्रमाण) तुम्हारे पास है कहने लगीं कि आपने मेरी पीठ पर काट खाया था जब मैं आपको उठाए हुई थी यह निशान अभी पीठ पर है। आपने उस निशान को पहचाना फिर आपने उनके लिए चादर बिछाई और उस पर उनको बिठाला और उनके साथ अच्छा व्यवहार किया और फ़रमाया कि तुम मेरे पास रहना पसंद करो तो आदर और मान के साथ रह सकती हो और यदि तुम अपने घर जाना पसंद करो तो मैं तुम्हें सामान देकर तुमको तुम्हारी कौम में भेज दूँ। उन्होंने जवाब दिया कि आप सामान देकर मुझे मेरी कौम में भिजवा दें। आपने सामान देकर उनको उनकी कौम में भिजवा दिया फिर वह मुसलमान हो गई। आपने उनको तीन गुलाम, एक लोंडी और बकरीयों का एक रेवड़ दिया।

खुशी से मजबूरी से नहीं

जब मुसलमान तायफ से वापस हुए तो आपने कहा कि हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, अपने पैदा करने वाले की इबादत

करने वाले हैं और उसी की तारीफ (प्रसंशा) है। लोगों ने कहा कि या रसूलुल्लाह बनी सकीफ के लिए बद दुआ करें। आपने फरमाया कि अल्लाह हिदायत दे और उनको यहाँ लाये। उरवा बिन मसऊद सक़फी मदीने में दाखि़ल होने से पहले आपसे रास्ते में मिले और मुसलमान हो गये फिर वह अपने कबीले लौटे और इस्लाम की दावत देने लगे वह अपनी कौम में महबूब (प्रिय) थे। अपनी कौम में उनका मान था इज्जत थी। जब कबीले वालों को उन्होंने इसलाम की दावत दी तो उन्होंने उन पर तीरों की बारिश कर उनको शहीद कर दिया। उनको शहीद करने के बाद सकीफ वहां एक माह रूके रहे। फिर आपस में मशवरा, किया और यह फैसला (निर्णय) किया कि अब अरबों से लड़ने की ताक़त नहीं है। लेहाज़ा सबने बैअत की और मुसलमान हो गये। और एक वफ़द मंडल आपकी खि़दमत (सेवा) में भेजा।

बुत परस्ती के साथ कोई नरमी नहीं (कोई समझौता नहीं)

जब वह लोग आपकी खि़दमत में आये तो आपने मस्जिद के करीब एक शामियाना लगवा दिया वह सब मुसलमान हो गये तो आपसे कहने लगे कि आप लात को (बुत का नाम) तीन वर्ष के लिए छोड़ दें उसको न तोड़ें आपने उनकी बात नहीं मानी, वह लोग सब एक एक साल (वर्ष) कम करते गये और आप बराबर इनकार फरमाते रहे आखिर में वह एक माह पर उतर आये आपने इससे भी इनकार किया। आपने अबू सुफयान बिन हर्ब और मुगीरा बिन शोबा जो उन्ही की कौम के थे, को बुलाया और बुतों को तोड़ने को कहा। उन्होंने उसके बाद नमाज माफ करने को कहा तो आपने इसको कुबूल करने से साफ इनकार कर दिया और फरमाया कि उस दीन धर्म की कोई हैसियत नहीं जिसमें नमाज न हो।

जब वह अपने काम से फ़ारिग हुए (फुरसत मिली) तो अपने घर जाने का इरादा किया तो आपने उनके साथ अबू सुफयान बिन हर्ब और मुगीरा बिन शोबा को भेजा मुगीरा बिन शोबा ने उसको गिरा दिया। इस प्रकार बनू सकीफ का हर व्यक्ति मुसलमान हो गया।

तबूक की जंग (गजव-ए-तबूक)

अरबों में रूमियों से लड़ने की अब सकत नहीं थी। वह अपने को उनके मुकाबले कमजोर समझने लगे थे रूमी हर समय गजवा मोता का जिक्र करते रहते उससे उनको तसल्ली नहीं हुई थी। ऐसी सूरत में आपने यह अच्छा समझा कि आप खुद (स्वयं) आगे बढ़कर लड़ें। उनके अरब में दाखिल होने से पहले रूम की हुदुद में इसलामी फौजें (लशकर) दाखिल हो जाये ताकि वह इस्लामी मरकज को चुनौति न दे सकें।

गजवे का समय

यह गजवा वर्ष 9 हिजरी के रजब महीने में हुआ। इस मौसम में सख्त गर्मी पड़ रही थी। खजूर पकने लगी थी, उसके साये घने हो गये थे। आपने बहुत दूर का सफर सहराई इलाकों में जाने तथा एक ताकतवर, बलवान दुश्मन से लड़ने का फैसला फरमाया। इसलिये यह बात मुसलमानों को स्पष्ट रूप से बतला दी कि इस गजवे में उनको हर तरह का कष्ट मिल सकता है। लेहाजा इसको ध्यान में रखकर तैयारी करें। वह जमाना बड़ी तंगी और खुश्कसाली (कहत) का था। मुनाफिकों ने इस जंग में शरीक न होने के बहुत से बहाने बनाये थे ताकतवर, बलवान दुश्मन से लड़ने, सख्त गर्मी में निकलने जेहाद में दिलचस्पी न लेने और हक में शक महसूस करने की वजह से उनमें साहस नहीं था। इसलिये आपके साथ गजवे पर जाना नापसंद किया इसको अल्लाह

ने कुर्आन में कहा कि-

"पीछे रह जाने वाले खुश हुए रसूलुल्लाह के जाने के बाद अपने बैठे रहने पर उनको अल्लाह की राह में अपने माल (धन) व जान के साथ जिहाद करना अच्छा नहीं लगा और (दूसरों को भी) कहते हैं कि तुम गर्मी में मत निकलो आप कह दीजिये कि जहन्नम की आग इससे भी अधिक सख्त और गरम है कितना अच्छा होता यदि वह यह बात समझते।"

सहाब-ए-किराम का सफर और जिहाद का शौक

रसूलुल्लाह ने इस सफर में खास तौर पर तैयारी की और सहाबा किराम को तैयारी के आदेश दिये और धन वालों को अल्लाह के रास्ते खर्च करने को उभारा अल्लाह के बहुत से मुसलमान बन्दे अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के लिए आगे बढ़े। हजरत उसमान ने पूरे लशकर के सफर का सामान फराहम (उपलब्ध) कराया। और 1000 एक हजार दीनार खर्च किये। आपने उनके लिए दुआ फरमाई।

तबूक को लशकरे इस्लाम की रवानगी

रसूलुल्लाह 30000 हजार मुजाहिदीन का लशकर लेकर मदीने से रवाना हुए। अब तक के गजवात (जंगों) के मुकाबला इस गजवे में मुसलमानों की सबसे बड़ी संख्या (तादाद) थी। आपने अलहिज्र में जो कौमे समुद का इलाका था। पड़ाव किया और सहाबा को बतलाया कि यह बस्ती अजाब पाने वाली कौम की है जब तुम उनके घरों में दाखिल (प्रवेश) हो तो इस डर से रोते हुए दाखिल हो कि अल्लाह तुमको उससे बचाये जो उनको पहुँचा। सुबह जब लोगों को पानी नहीं

मिला तो आपसे लोगों ने इसकी शिकायत की। रसूलुल्लाह ने पानी के लिए दुआ फरमाई। अल्लाह ने बादल भेज दिये बरसात हुई उससे सहाबा सैराब हुए और अपनी जरूरतें पूरी कीं।

रसूलुल्लाह का मदीने लौटना

आपके तबूक पहुँचने पर अरब के बड़े लोग आये जो उसकी सरहदों पर आबाद थे उन्होंने आपसे सुलह की और जिजया देना स्वीकार किया। आपने कुछ को ऐसी दस्तावेज लिखकर दी जिसमें खुशकी और समंदरी रास्तों की हिफाजत तथा दोनों फरीको (पक्षों) का सलामती की जमानत थी।

तबूक पहुचने पर आपको उनके बिखर जाने और अरब पर हमला न करने की सुचना मिली फिर भी आपने उनके शहरों में घुसकर उनसे लड़ना पसंद नहीं फरमाया और आपका यहाँ आने का मकसद भी पूरा हो गया। तबूक में आपने 10 राते क्रियाम फरमाया और फिर आप मदीने लौट आये।

काब बिन मालिक की आजमाइश और उसमें उनकी सफलता

जो लोग इस गजवे में शरीक न हो सके थे उनमें काब बिन मालिक, मरारा बिन रबिआ और हिलाल बिन उमय्या थे। इन तीनों का शुमार साबेकिन अव्वलीन में था। (पहले इस्लाम लाने वालों में) इस्लाम में उन्होंने बड़ी तकलीफे उठाई थीं। और वे आजमाइशों से गुजरे। हेलाल बिन उमय्या और मरारा बिन रबी जंगे बद्र में शरीक थे। गजवात से भाग जाना और उनमें शिरकत न करना उनकी फितरत के खिलाफ था। उनकी शिरकत न करने को अल्लाह की मरजी कहा जा सकता है या उनकी आत्मा का सुधार और मुसलमानों की तरबियत

(प्रशिक्षण) अल्लाह को मंजूर था या इसमें कमजोर इरादे को दखल था या उनको उस समय वसायल पर अधिक भरोसा था।

हुजूर ने सबको इन तीनों से बात करने को मना फरमा दिया। मुसलमानों को आपके आदेश को मानने, आपकी बात को स्वीकार करने के अलावा कोई चारा (रास्ता) नहीं था। लोग उनसे बचने लगे। इस तरह उन्होंने पचास रातें बिता दीं। कअ़ब बिन मालिक निकलते लोगों के साथ नमाज पढ़ते, बाजारों में घूमते, लेकिन उनसे कोई भी बात नहीं करता लेकिन इस सजा से आपसे उनकी महब्बत और बढ़ी।

यह सजा लोगों से केवल बात न करने तक नहीं रही बल्कि उन लोगों को हुक्म हुआ कि तीनों अपनी बीबियों (पत्नियों) से अलग हो जायें। तीनों ने इस आदेश को भी स्वीकार किया और पत्नियों से अलग हो गये।

जब गस्सान के बादशाह को इसकी खबर हुई तो उसने काब बिन मालिक को अपने यहाँ आने की दावत दी ताकि वह उन पर नम्रता की बारिश कर दे उनका आदर करे। उनका कासिद (राजदूत) पत्र लेकर काब बिन मालिक के पास आया और काब बिन मालिक को बादशाह का पत्र दिया। हजरत काब ने उस पत्र को तंदूर में डाल दिया। उन पर यह दिन पहाड़ बन गये गोया जमीन उन पर तंग हो गई तो अल्लाह ने उनकी तौबा कुबूल की। अल्लाह ने फरमाया कि:–

"बेशक़ अल्लाह ने रसूल के हाल पर तवज्जोह फरमाई अंसार व मुहाजिरीन के हाल पर जिन्होंने इस तंगी के समय नबी का साथ दिया बाद इसके कि एक गिरोह के दिल फिर जाने को थे। अल्लाह ने उनके हाल पर तवज्जोह फरमाई। अल्लाह बड़ा शफ़ीक और रहीम है। और उन तीनों के हाल पर भी तवज्जोह फरमाई जिनका मामला मुलतवी (स्थगित) छोड़ दिया गया। यहाँ तक कि अब उनकी परेशानी

यहाँ तक बढ़ गई कि अब जमीन अपनी कुशादगी के बावजूद उन पर तंग हो गई और वह स्वयं अपनी जान से तंग हो गई और वह स्वयं अपनी जान से तंग आ गये और उन्होंने समझ लिया कि खुदा की पकड़ से कहीं पनाह नहीं मिल सकती सिवाए इसके कि उसी की तरफ रूजु किया जाये और फिर उनके हाल पर भी अल्लाह ने मेहरबानी फरमाई ताकि आइन्दा भी तौबा करें। अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला बड़ा रहीम है।

गजवा तबूक आखरी (अंतिम) गजवा

गजवा तबूक के बाद गजवात (जंगो) का सिलसिला खत्म (समाप्त) हो गया। वह गजवात जिनमें आप स्वयं शरीक हुए 26 थे और दूसरे सराया और छापे की तादाद 60 है। इसमें से कुछ तो ऐसे हैं जिनमें लड़ने की नोबत नहीं आई। तमाम गज़वात व सराया में दोनों तरफ़ के 1018 कत्ल हुए। लेकिन इस कम तादाद ने कितने खून खराबे से रोका इसको अल्लाह ही जानता है। इससे जो अमन व शान्ति इस क्षेत्र में हुई उसकी कोई मिसाल (उदाहरण) नहीं कि एक (महिला) हीरा से चलती और काबा का तवाफ करके लौटती है। उसको अल्लाह के अलावा किसी का डर (भय) नहीं।

इस्लाम में पहला (प्रथम) हज और सूरह बराअत का उतरना

9 हिजरी को हज फर्ज (अनिवार्य) हुआ। उस वर्ष हजरत अबू बक्र को अमीरे हज बनाकर भेजा गया ताकि वह सबको हज करा सकें। हज के लिए जो लोग हजरत अबू बक्र के साथ गये उनकी तादाद (300) तीन सौ थी। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हजरत अली को बुलाया और फरमाया कि जाओ और कुरबानी के दिन

एलान कर दो कि कोई काफिर जन्नत में दाखिल न होगा। आज के बाद कोई मुशरिक हज नहीं करेगा और आज के बाद कोई नंगेपन की हालत में तवाफ़ नहीं करेगा।

वुफूद का वर्ष, मदीने में वुफूद का आना

मक्का की फतह के बाद जब आप सही सालिम (सुरक्षित) मदीने तशरिफ़ लाये तो मरकजे इस्लाम मदीने में वुफूद के आने का सिलसिला शुरू हो गया। इससे पहले आपने इस्लाम की दावत के लिए वुफूद भेजे जिन्होंने इस्लाम की दावत दी और बुतों की पूजा और जाहिलियत की रस्मों की बुराई की तबलिग की।

बनी सअद बिन बकर की तरफ से ज़माम बिन सालबा नुमाइन्दा (प्रतिनिधि) बनकर आये और फिर लौटकर अपनी कौम में दाओी बनकर गये। उन्होंने अपनी कौम से जो पहली बात की वह यह कि बुरा हो लात व उज़्ज़ा का। वह बोले ऐ ज़माम बर्स (बीमारी) कोढ़ और पागलपन से डरो। ज़माम ने कहा कि तुम्हारी खराबी हो। बखुदा ये दोनों बुत न नुकसान पहुँचा सकते हैं और न ही फायदा (लाभ) पहुंचा सकते हैं। अल्लाह ने तुममें एक नबी भेजा और उस पर किताब उतारी जिसके द्वारा तुम्हें उन बातों और कर्मो से जिनमें तुम पड़े हो छुटकारा दिलाया। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई और पूजा और इबादत के लायक (योग्य) नहीं और मुहम्मद उसके बंदे और नबी हैं। मैं तुम्हारे पास वही लेकर आया हूँ जिसके करने का उन्होंने हुक्म (आदेश) दिया है। और जिन कामों को करने से मना किया है। शाम तक उनके कबीले के सब मर्द और औरतें मुसलमान हो गये।

अदी बिन हातिम आपके अख्लाक व्यवहार देखकर इस्लाम लाये और कहने लगे बखुदा यह किसी बादशाह का हुक्म (आदेश) नहीं हो सकता।

आपने मुआज बिन जबल और अबू मुसा को यमन इस्लाम की दावत देने के लिए भेजा और उनको यह वसीयत की कि देखो नरमी से पेश आना सख्ती मत करना लोगों को खुशखबरी सुनाना। नफरत पैदा न करना। आपने मुगीरा बिन शोबा को तायफ भेजा, वहाँ उन्होंने लात को तोड़ा उसके बुतखाने की चहारदीवारी पर चढ़ गये उनके साथ और भी लोग थे उन्होंने वहां नसब बुत को तोड़ तोड़ कर जमीन बराबर कर दी उसके बाद उसी दिन यह वफ्द आप (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की खिदमत में वापस आ गया। आपने इसकी तारीफ (प्रशंसा) की।

वुफूद आये इस्लाम की तालीम (शिक्षा) सीखने दीन को समझने और आपके अख्लाक व्यवहार को देखने आपके असहाब के साथ रहते थे। आपने उन लोगों के लिए मस्जिद के सहन में खेमे लगवा दिये थे। वह कुर्आन सुनते, मुसलमानों को नमाज पढ़ते देखते और जो बात समझ में न आती वह रसूलुल्लाह से पूछते। आप उनको अच्छे ढ़ंग से जवाब देते कुर्आन द्वारा समझाते पस वह लोग ईमान लाते और मुतमईन (संतुष्ट) हो जाते।

जकात और सदक़ात का फर्ज होना

9 हिजरी में जकात फर्ज (अनिवार्य) हुई।

हिजजतुल विदा (आखरी हज)

अल्लाह ने जो चाहा उसकी तकमील (पूरा) कर दी अल्लाह के घर (काबा) की गंदगी और बुत परस्ती से सफाई हो गई और मुसलमानों में हज का शौक पैदा हो गया। हज किये हुए काफी अरसा हो चुका था। अतः कअबे की मुहब्बत बहुत बढ़ गई थी। उधर अल्लाह के इल्म में नबी (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) की उम्मत से

जुदाई की घड़ी भी करीब आ गई थी। हालात का तकाजा हुआ कि उम्मत को विदाअ् कहा जाए तो अल्लाह ने आपको हज करने की इजाजत दी। इस्लाम में आपका यह पहला हज था और आखिरी भी।

आप हज के लिए मदीने से निकले ताकि लोगों से मुलाकात करें और दीन और हज की जरूरी बातों की शिक्षा दें और उनको हज करने का तरीका बतायें। इस्लाम की अमानत उम्मत तक पहुंचायें और उन्हें आखरी वसियत करें और उम्मत से वअदा लें और जाहिलियत के निशान मिटायें उनको अपने पैरों के नीचे रौंद डालें। उस साल (वर्ष) एक लाख मुसलमानों ने हज किया। इसी हज को हिज्जतुल विदाअ् कहते हैं।

आपने हज कैसे फरमाया (किया)

रसूलुल्लाह ने जब हज का इरादा फरमाया और लोगों को इसकी जानकारी हो गयी तो उन्होंने भी आपके साथ हज का इरादा कर लिया।

मदीने के आस पास के लोगों को आपके हज पर जाने की बात मालूम हुई तो उन्होंने भी आपके साथ हज करने का इरादा कर लिया और मदीने आने लगे रास्ते में आपको बड़ी तादाद में लोग मिलते चले गये और आपके दायें, बाये, आगे और पीछे जमा थे और जहां तक नजर जाती आदमियों का समंद्र नजर आता था।

नबी सल्लाहो अलैहे वसल्लम जुहर की नमाज के बाद सनीचर के दिन 25 जीक़ादा को चार रक्आत नमाज पढ़कर मदीने से निकले। चलने से पहले आपने खुतबा दिया और लोगों को एहराम, उसके वाजिबात और उसकी सुन्नतों की शिक्षा दी। वहाँ से चलकर जुलहुलैफा जो मदीने से 10 किमी0 पर है और मदीने की मीक़ात है में एहराम बांधा।

फिर आप तलबिया पढ़ते हुए रवाना हुए। आप फरमा रहे थे

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल हमद वन निअ़मत लक वल मुल्क ला शरीक लक आप 4 जिलहिज्जा को मक्का मुकररमा पहुंचे और मसजिदे हराम में दाखिल हुए। आपने सबसे पहले बेतुल्लाह शरीफ (काबा) का तवाफ किया और सफा मरवा के बीच सई (दौड़) की। आपने मक्का मुकररमा में 4 दिन क्याम फरमाया फिर तरविया के दिन यानि 8 जिल हिज्जा को अपने सहाबा के साथ मिना रवाना हुए दिन वहां क्याम फरमाया वहाँ जुहर और असर की नमाज़ पढ़ी और रात मिना ही में गुजारी। 9 जिल हिज्जा को सुरज निकला तोमिना से अरफात के लिए रवाना हुए। उस दिन जुमा था। आप अरफात में रूके आपने अरफात के दिन अपनी सवारी पर से ही लोगों को खुतबा दिया जिसमें इस्लाम की बुनियादी बातों को दोहराया। इस खुतबे में आपने शिर्क और जाहिलियत की बुनयादों को समाप्त कर दिया। आपने उन बातों को बताया जिनकी हुरमत पर सब मिल्लतों का इत्तिफाक है यानी खून रेजी और लोगों के माल और इज्जत की हुरमत। इस खुतबे में आपने तमाम जाहिली रस्मो रिवाज को अपने पैरों तले रोंध डाला। जाहिलियत का तमाम सूद समाप्त कर दिया। औरतों के साथ भलाई करने को कहा और फरमाया कि उनके जो हुकुक मरदों पर अनिवार्य हैं जैसे उनका नान व नफका, उनके कपड़े वगैरा और उनके साथ भलाई।

उस खुतबे में आपने अल्लाह की किताब को मजबूती से पकड़े रहने की वसीयत की ताकि कभी रास्ता न भटके आपने फरमाया कि क्यामत में आपके बारे में पूछा जायेगा। आपने फरमाया तुम क्या गवाही दोगे। लोगों ने कहा कि हम गवाही देंगे कि आपने हम तक अल्लाह का पैगाम पहुँचाया, उसका हक अदा कर दिया और लोगों के साथ भलाई की फिर आपने आसमान की तरफ उंगली उठाई और कहा कि अल्लाह तू इन पर गवाह रहना इसको आपने तीन बार दोहराया

फिर आपने फरमाया कि वह लोग जो हाजिर हैं वह गैर हाजिर लोगों को पैगाम पहुँचा दें।

खुतबा समाप्त हुआ। आपने हजरत बिलाल को बुलाया हजरत बिलाल ने अजान दी। जुहर की 2 रकात पढ़ी फिर आप खड़े हुए और असर की 2 रकात पढ़ी। जब आप नमाज़ से फारिग हुए (नमाज़ पढ़ चुके) तो आप मौकफ़ (खड़े होने की जगह) पर तशरिफ लाये। आप अपने ऊँट पर तशरिफ रखते थे। आपने सुरज गुरूब होने तक अल्लाह से बड़े खुशूअ़ खुजूअ़ (लगन) से और गिड़ गिड़ा कर दुआ़ मांगी। दुआ़ के वक्त (समय) आपके हाथ सीने तक उठे हुए थे। आप फरमा रहे थे कि ऐ रब (ऐ खुदा) ऐ अल्लाह तू मेरी बात और मेरा कलाम सुनता है। मेरी जगह को देखता है मेरा जाहिर और मेरा बातिन तू जानता है। तुझसे मेरी कोई चीज पोशिदा और छुपी हुई नहीं है। मैं मुसीबत ज़दा हूँ। हिरासां (परेशान) हूँ अपने गुनाहों का एतराफ (स्वीकार) करता हूँ। तेरे हुजूर सवाल करता हूँ जैसे बेकस सवाल करता है। तेरे आगे गिड़गिड़ाता हूँ। जैसे गुनाहगार गिड़गिड़ाता है। तुझसे मांगता हूँ जैसे डरने वाला मुसीबत ज़दा तुझसे मांगता है, जिसकी गरदन तेरे आगे झुकी हो, उसके आंसू बह रहे हों, उसका जिस्म (बदन) तेरे सामने झुका हुआ हो उसकी नाक खाक आलूद हो (मिट्टी लगी हुई) ऐ अल्लाह तू अपनी पुकार के साथ बद बख्त न करना। ऐ अल्लाह तू मेरे लिये मेहरबान और रहीम होजा। ऐ सब से अच्छा सवाल कुबूल (स्वीकार) करने वाले और सबसे अच्छा देने वाले। इस मौके पर यह आयत नाजिल हुई। अनुवाद : "आज के दिन तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल (पूर्ण) कर दिया और मैंने तुम पर अपनी निअमतें पूरी कर दीं और मैंने इस्लाम को तुम्हारा दीन (बन्ने के लिए) पसंद कर लिया" *(सूरः मायदा 5/3)*

जब सूरज डूब गया तो आप अरफात से चले। जब आप

मुजदलफा पहुंचे तो आपने मग़रिब और इशा की नमाज साथ पढ़ी। सुबह तक सो गये। सुबह सादिक हुई तो आपने सुबह की अव्वल वक्त नमाज पढ़ी फिर आप सवार होकर मशअरि हराम आये। वहां आपने किबले की तरफ मुंह किया और तकबीर तहलील की और अल्लाह से बड़ी खुशूअ़ खुजूअ़ से दुआ मांगी। सूरज निकलने से पहले आप बड़ी तेजी से मुजदलिफा से रवाना हुए और मिना तशरिफ ले आये। उसके बाद आप कंकरी मारने के स्थान पर तशरिफ ले गये और जमरतुलउक्बा को कंकरी मारी फिर आप मिना लौट आये और लोगों से खिताब फरमाया उसमें आपने कुर्बानी के दिन की हुरमत (सम्मान) लोगों को बताई कि अल्लाह के यहाँ इस की क्या फजीलत है। मक्का की हुरमत (सम्मान) सभी शहरों पर और जो अल्लाह की किताब के साथ क्यादत करे उसकी इताअ़त करने को आपने आदेश दिया। फिर आपने मनासिके हज मालूम कर लेने को फरमाया कि मुझसे मालूम करो। आपने फरमाया कि देखो मेरे बाद दीन से न फिर जाना (काफिर न हो जाना) कि एक दूसरे की आपस में गरदन काटने लगो। आपने अपनी बातों की तबलीग के लिए लोगों को उभारा। आपने अपने खुतबे में फरमाया कि देखो अपने रब (खुदा) की इबादत करते रहो। पांचों वक्त की नमाज पढ़ते रहो, रमजान माह के रोजे रखो। और जिस काम को करने का हुक्म दिया जा रहा है वह करोगे तो अल्लाह तुम्हें जन्नत में दाखिल कर देगा। उस दिन आपने लोगों को अलविदा कहा तो लोगों ने कहा यह अलविदाई (आखिरी) हज है।

फिर आप मिना में कुरबानी की जगह गये और आपने 63 ऊँटों को अपने हाथ से जब्ह किया। आपने जितने जानवरों की कुरबानी की वह तादाद आपकी उम्र आयु के बराबर थी फिर आपने हजरत अली से फरमाया कि 100 ऊँटों में से जबह करने के बाद बच रहे ऊँटों को तुम जबह करो। जब कुरबानी पूरी हो गई तो आपने बाल बनाने वाले

को बुलवाया और सर मुण्डवाया और अपने आस पास के लोगों में बाँट दिये फिर आप मक्का तशरीफ लाये और तवाफे जियारत फरमाया फिर ज़म ज़म के पास आये और ज़म ज़म खड़े होकर पिया उसी दिन मिना तशरिफ ले आये और रात वहीं रहे। जब सुबह हुई तो जवाल का इन्तेजार किया। सूरज ढलने के बाद जुमरात (कंकरी मारने की जगह) गये जमरतुल ऊला से शुरू किया, फिर जुमरतुलवस्ता फिर उकबा (आखरी) पर कंकरी मारी फिर आप तीसरे दिन की कंकरी मारने तक वहीं रूके और उनको तीन दिन (अय्यामे तशरीक्) में पूरा किया फिर आप मक्का मुकररमा तशरिफ ले गये और सहरी के वक्त (समय) तवाफे विदाअ् अदा किया। फिर आपने लोगों को मदीने रवाना होने को फरमाया। जब आप जुल हुलैफा पहुंचे तो आपने वहां रात गुजारी और जब आपने मदीने को देखा तो तीन बार तकबीर कही (अल्लाह की बड़ाई की) और फरमाया–

उसका कोई शरीक नहीं है। वह अकेला है। उसका कोई शरीक नहीं है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ है। वह हर चीज पर कादिर है। हम लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले सजदा करने वाले और अपने रब की तारीफ (हम्द) करने वाले है अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया और उसने अपने बन्दों की मदद (सहायता) की और तनहा उसने दुश्मन को शिकस्त दी। फिर दिन में आप मदीने में दाखिल हुए।

वफात (देहांत)
तबलीगी और तशरीई कामों का पूरा होना और लिकाए (मिलन) रब्बी का आना

जब दीन का काम पूरा हो गया तो अल्लाह ने फरमाया कि :–

आज के दिन मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और

मैंने तुम पर अपनी निअमतें तमाम (पूरा) कर दीं और इस्लाम को तुम्हारा दीन पसंद किया।

जब रिसालत का पैगाम आपने पहुचाँ दिया और अमानत अदा कर दी। अल्लाह के रास्ते में मेहनत और जान खपाने का जो हक था वह अदा कर दिया और अल्लाह ने रसूल की आंख को लोगों के झुण्ड के झुण्ड दीन में दाखिल होने की वजह से ठंडक पहुँचाई तो अल्लाह ने अपने नबी को यह संसार छोड़ने की इजाजत दे दी और अल्लाह से मिलने का समय आ गया इसके बारे में लोगों से

अल्लाह ने फरमाया :-

ऐ मुहम्मद (सल्लाहो अलेहे वसल्लम) जब खुदा की मदद (सहायता) और फ़तह (फ़तहे मक्का) आ पहुंचे और आप लोगों को अल्लाह के दीन में झुण्ड के झुण्ड इस्लाम में दाखिल होना देख लें तो अपने रब की तसबीह और हमद (तारिफ) कीजिये और उससे इसतिग़फार की दुआ कीजिये वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है।

रसूलुल्लाह का मरजे वफात

रसूलुल्लाह की बीमारी की इबतिदा (शुरूआत) माह सफर के आखरी दिनों में हुई। वह मरज शुरू ऐसे हुआ कि आप (बकीउल ग़रकद) में आधी रात को तशरिफ ले गये। उनके लिए आपने दुआए मगफ़िरत की और फिर आप अपने परिवार में लौट आये। जब सुबह हुई तो आपके सर में दर्द शुरू हुआ।

उम्मुल मुअमिनीन हज़रत आयशा फरमाती है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब बक़ी से वापस आये तो आपने मुझे सर दर्द में मुबतला देखा। उस समय मैं कह रही थी कि हाय मेरा सर, मेरा सर उस समय आपके सर में दर्द बढ़ गया। उस दिन आप

हज़रत मैमूना के घर में थे। फिर आपने अपनी अज़्वाजे मुतहहरात (पवित्र पत्नियां) को बुलाया और उनसे इजाज़त मांगी कि आप हज़रत आयशा के घर रूक जायें। उन सबने आपको रूकने की इजाज़त दे दी। उस समय आप इस तरह घर से निकले कि आपके पाव (पैर) दो आदमियों के बीच घिसट रहे थे। उन दो आदमियों में से एक हजरत फजल बिन अब्बास और दूसरे हजरत अली थे। आपने अपने सर पर कपड़ा बांध रखा था। पाव जमीन छू रहे थे इस हालत में आप हजरत आयशा के घर में दाखिल हुए। हजरत आयशा फरमाती हैं कि आप अपनी इस बीमारी में जिसमें आपका विसाल (देहांत) हुआ वह फरमाते थे "मैं उस खाने की तकलीफ महसूस कर रहा हूँ जो मैने खैबर में खाया था। इस वक़्त उस जहर से मेरे दिल की रग (अबहरी) कट रही है।

आखिरी (अंतिम) लशकर (सेना)

इन्हीं दिनों आपने हज़रत उसामा बिन जैद बिन हारिसा को सेना के साथ शाम को भेजा और फ़रमाया कि उनके घोड़े बल्का और दारून तक जरूर (अवश्य) जायें जो फ़लस्तीन का हिस्सा (भाग) है।

आपने उस लशकर (सेना) में चुने हुए अंसार और मुहाजिरीन को शामिल किया। उनमें सबसे बड़े हज़रत उमर थे। आपने लशकर रवाना किया ही था कि आपकी बीमारी और बढ़ गई अभी यह लशकर अलजरफ़ में पड़ाव डाले था हज़रत अबू बकर ने आपके विसाल के बाद इस लशकर को भिजवाया ताकि आपके हुक्म (आदेश) का पालन हो और आपका मक़सद पूरा हो।

रसुलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने इस बीमारी में मुसलमानों को वसियत की कि सहाबा मदीने आने वाले मेहमानों की मेहमानदारी उस तरह करेंगे जैसे आप किया करते थे और जज़ीरतुल

अरब में कोई दूसरा दीन (धरम) न रहने दें। आपने फ़रमाया कि यहां से सभी मुशरिकीन को निकाल बाहर करो।

घमण्ड से मुसलमानों को रोकना और मुसलमानों के लिए दुआ

जिस दिन आप सरकी तकलीफ में मुबतिला हुए बहुत से लोग हज़रत आयशा के घर जमा हुए रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) ने उन सबका स्वागत किया और हिदायत और मदद की दुआ दी और फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह से डरते रहने की वसीयत करता हूँ और अल्लाह को तुम पर निगहबान छोड़ता हूँ मैं उसी की तरफ से डराने वाला हूँ और यह कि तुम उसके बंदों और उसके शहरों पर चढ़ाई न करो। अल्लाह ने मेरे और तुम्हारे लिए फ़रमाया है कि यह आखिरत का घर हम उन लोगों के लिए करते हैं जो जमीन में न लड़ाई चाहते हैं और न फ़साद और अच्छा अनजाम परहेज गारो के लिए है। क्या जहन्नम (दोजख) घमण्ड करने वालों के लिए काफी नहीं है।

दुनिया के माल से कनारा कशी और बचे हुए माल को घर में रखने पर अपनी ना पसंदीदगी

हज़रत आयशा फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह ने उस बीमारी में जिसमें आपका विसाल हुआ फ़रमाया कि ऐ आयशा मैं सोने का क्या करूं। आपके पास सात, आठ या नौ दिरहम थे। आप उनको हाथ में लेकर उलटने पलटने लगे और फ़रमाया कि यदि यह माल मेरे पास रहा और अपने रब से जा मिला तो गोया मैने अल्लाह पर भरोसा और यकीन नहीं किया ऐ आयशा इनको खर्च कर दो।

नमाज़ का एहतिमाम और हज़रत अबू बकर की इमामत

रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) का दर्द जब ज़ियादा (अधिक) बढ़ गया तो आपने फ़रमाया क्या लोगों ने नमाज़ पहले पढ़ ली। सहाबा ने जवाब दिया नहीं या रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) हम आपका इन्तेजार कर रहे हैं। आपने फ़रमाया कि लगन में पानी रख दो लोगों ने पानी रख दिया। आपने गुस्ल (स्नान) फ़रमाया और तैयारी की आप बेहोश हो गये। जब आपको होश आया तो फिर पूछा कि क्या लोगों ने नमाज पढ़ली सहाबा ने जवाब दिया नहीं या रसूलुल्लाह हम आपका इन्तेजार कर रहे हैं। आपने फ़रमाया कि लगन में पानी रख दो। पानी रख दिया गया आप नहाये और तैयारी फरमाई तो फिर बेहोश हो गये फिर होश आया तो आपने फरमाया कि क्या लोगों ने नमाज़ पढ़ ली। सहाबा ने कहा कि नहीं या रसूलुल्लाह हम आपके मुनंतजिर हैं। आपने लगन में पानी रखने को फरमाया पानी रख दिया गया। आपने गुस्ल किया, तैयारी कर रहे थे कि आप फिर बेहोश हो गये। होश आया तो आपने पूछा कि क्या लोगों ने नमाज पढ़ ली। सहाबा ने कहा कि नहीं या रसूलुल्लाह हम आपका मस्जिद में बैठे नमाज़े इशा के लिए इन्तजार कर रहे हैं। आपने हज़रत अबू बकर के पास पैगाम भेजा कि वह नमाज़ पढ़ायें। हजरत अबू बकर नर्म दिल इनसान थे उन्होंने हजरत उमर से नमाज़ पढ़ाने को कहा। हज़रत उमर ने कहा कि नहीं। आप इसके ज्यादा मुसतहिक हैं। फिर उन्होंने उन दिनों में कई नमाज़े पढ़ाई।

फिर आपको इफ़ाका (सम्भाला) हुआ तो आप, दो आदमियों (इनमें एक हजरत अब्बास और दूसरे हज़रत अली) के सहारे बाहर तशरीफ़ लाये। उस वक्त जुहर की नमाज़ हो रही थी जब हज़रत अबू

बकर को आपके आने का एहसास हुआ तो उन्होंने पीछे हटना चाहा मगर आपने उनको इशारे से पीछे हटने से मना फरमा दिया। फिर आपने दोनों सहाबा से कहा कि वह आपको नीचे हज़रत अबू बकर के पास बिठा दें। हज़रत अबू बकर खड़े होकर नमाज़ पढ़ा रहे थे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बैठ कर नमाज़ अदा फरमा रहे थे।

आखिरी अंतिम खुतबा

आखिरी खुतबे में जब आप मिमबर पर तशरीफ़ फ़रमा थे और सर पर कपड़ा बंधा था फ़रमाया कि–

अल्लाह ने अपने बन्दों में से एक बन्दे को दुनिया और अल्लाह के पास जो है उसमें इखतियार दिया तो उसने अल्लाह के पास जो है उसे पसन्द कर लिया। हजरत अबूबकर आपकी इस बात का मतलब (अर्थ) समझ गये कि यह बात आप अपने लिये फ़रमा रहे हैं। वह सोच कर रो पड़े और कहा कि या रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) हमारी जान, माल और औलाद सब आप पर कुरबान हैं।

मुसलमानों पर आख़री निगाह जब कि वह सब सफ़ें बनाये नमाज में खड़े थे

हज़रत अबू बकर नमाज़ पढ़ा रहे थे। पीर (सोमवार) की सुबह की नमाज़ में सफ़ बाधे खड़े थे। आपने अपने हुजरे मुबारक (कमरे) का परदा उठाया और मुसलमानों को देखा कि वह अपने रब के हुजूर (सामने) खड़े हैं। आपने देखा आपकी दावत और कोशिश (प्रयास) सफ़ल हुई तो खुशी से आपका चेहर–ए–अनवर चमक उठा।

सहाबा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम)

ने हज़रत आयशा का हुजरा (कमरा) का परदा खोला। आप हम लोगों को खड़े देख रहे थे। उस समय आपका चेहरा मुसहफ के वरक़ की तरह हो रहा था। फिर आप मुस्कुराये तो हम लोगों को खुशी हुई और हमने समझा कि आप नमाज के लिए तशरीफ़ ला रहे हैं। लेकिन आपने नमाज पूरी करने का इशारा किया फिर आपने परदा गिरा दिया और उसी दिन आपका विसाल (इन्तेकाल) हुआ।

कब्रो को पूजने और उन्हें मस्जिद बनाने से डराना

सबसे आखिरी बात जो आपने फरमाई यह थी कि अल्लाह यहूद व नसारा को बरबाद करें जिन्होंने अपने नाबियों की कबरों को सजदागाह बना लिया है और दीन अरब की जमीन पर न बाकी रहें।

हज़रत आयशा और इब्ने अब्बास कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह पर निज़ाई कैफ़ियत हुई तो आप अपनी धारीदार चादर को अपने चेहरे मुबारक पर डाल लिया। जब आप बेहोश हो जाते तो आपका चेहरा खुल जाता। उसी हालत में आपने फरमाया कि यहूद व नसारा पर अल्लाह की लानत हो जिन्होंने अपने नबियों की कबरों को सजदागाह (मस्जिद) बना लिया। इससे आपने लोगों को डराया।

आखरी (अंतिम) वसियत

जब विसाल (इन्तेकाल) का समय करीब आया तो आपने सब लोगों को वसियत की कि नमाज की पाबंदी करें और आपने (नीचे) मातहत काम करने वालों का खयाल रखें। आपकी आवाज सीने में बंद होना शुरू हुई और जबान में हरकत की ताकत खत्म हो गई। हज़रत अली फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ललाहु अलैहि व् सल्लम) ने नमाज़ जकात और लौडी गुलामों के साथ अच्छा व्यवहार करने की

तकीद की।

हजरत आयशा फरमाती हैं कि मैं आप पर मुअव्विज़तैन कुर्आन की आखरी सूरें को पढ़कर दम करने लगी तो मैंने देखा कि आपकी निगाह आसमान की तरफ उठी हुई थी और आप फरमा रहे थे कि सबसे अअ्ला (उत्तम) रफीक के पास सबसे अअला रफीक के पास।

उसी समय हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबूबक्र दाखिल हुए और उनके हाथ में मिसवाक थी। आपने उनको निगाह जमाकर देखा जिससे उनको खयाल हुआ कि शायद आपको मिसवाक की जरूरत (आवश्यकता) है। हज़रत आ़यशा फरमाती है कि मैंने उनसे मिसवाक लेकर अपने दातों से नर्म किया और फिर वह मिसवाक आपको दे दी तो आपने अच्छे तरीके से मिसवाक की। जब उसको मुझे लौटाने लगे तो वह आपके हाथ से गिर गयी।

हजरत आयशा फरमाती हैं कि आपके हाथ में पानी का प्याला था। आप उसमें हाथ डालकर अपने चेहरे पर फेरते थे और फरमाते थे इबादत के लायक केवल, अल्लाह है। ला इलाह इल्ललाह बेशक मौत की सखतियां हैं फिर आपने अपनी दायी उंगली को उठाया और फरमाया कि अअ्ला और बरतर रफी के पास सबसे अअ्ला और बरतर रफीक के पास फिर आपकी जान कब्ज हो गई और आपका हाथ पानी में गिर गया।

हज़रत आयशा फ़रमाती हैं कि आपका सर मेरी रान पर था आप पर एक क्षण (लमहे) के लिए बेहोशी तारी हुई फिर आपको एफ़ाका हुआ तो आपने अपनी निगाहें छत पर लगादी और फ़रमाया अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़लअअ्ला आखिरी लफ़ज़ (शब्द थे) जो आपने फरमाये।

रसूलुल्लाह ने दुनिया को कैसे छोड़ा

आपने जब दुनिया (संसार) छोड़ी तो आप जज़ीरतुल अरब (अरब खाड़ी) के हाकिम थे। दुनिया के सभी बादशाह व सम्राट डरते थे लेकिन जब आपका विसाल हुआ तो घर में न तो दीनार था और न दिरहम न गुलाम थे और न कोई बांदी (लौंडी) और न कोई चीज छोड़ी। केवल एक सफेद रंग का खच्चर, असलेहा और थोड़ी सी जमीन जिसको आपने सदका कर दिया। जब आपका विसाल हुआ तो आपकी जिरह एक यहूदी के पास तीस साआ जौं के बदले गिरवीं थी। विसाल तक आप जौ देकर उसको छुड़ा न सके।

अपनी बीमारी की हालत में आपने 40 गुलामों को आजाद किया। आपके पास 6 या सात दीनार थे जिनका सदका करने के लिए आपने हज़रत आइशा से कहा हजरत आइशा फरमाती है कि जब आपके विसाल के समय घर में इल्मारी पर थोड़े से जौ थे। मैं उसी में खाती रही लेकिन जब मैंने उसका वजन किया तो वह खतम हो गये।

जवाल का वक्त था

पीर सोमवार का दिन था, तारीख 12 रबीउल अव्वल थी और सन 11 "हिजरी और ज़वाल का वक्त था आपकी आयु उस समय 63 वर्ष थी। यह दिन मुसलमानों के लिए सबसे अधिक तारीक व मुसीबत का दिन था। इनसानियत के लिए यह बहुत बड़ा हादिसा था जिस तरह आपकी पैदाइश (जन्म) के समय सबके लिए बाबरकत और खुशी का दिन था।

हज़रत अनस अबू सईद खुदरी कहते हैं कि जिस दिन आपकी विलादत (जन्म) हुई वह दिन हर चीज से अधिक रोशन था, और जिस दिन आपका विसाल हुआ वह दिन सबके लिए तारीक दिन था।

उम्मे ऐमन रो रही थीं तो उनसे पूछा गया क्यों रो रही हो? हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जुदाई पर उन्होंने जवाब दिया कि मैं इसलिए नहीं रो रही हूँ कि आपका विसाल हो गया। यह तो होना ही था। मुझे रोना इस बात पर आ रहा है कि आपके बाद वही का सिलसिला समाप्त हो गया।

सहाबा पर आपके विसाल का क्या असर (प्रभाव) पड़ा

सहाबा को आपसे जो महब्बत थी उसको देखते हुए आपके विसाल की खबर (सूचना) उनपर बिजली बनकर गिरी। इसलिए कि सहाबा आपसे बड़ी महब्बत रखते थे। वह आपकी शफ़क़त में इस तरह दिन गुजारे थे जैसे बच्चे अपने माता पिता की आगोश में दिन गुजारते हैं। बल्कि उससे भी अधिक। अल्लाह फ़रमाता है–

ऐ लोगो तुम्हारे पास ऐसे रसूल आये जो तुम्हारी नस्ल (जिंस)से हैं जिन पर तुम्हारी तकलीफ (कष्ट) गरां गुजरती है। जो तुम्हारे फायदे (लाभ) के ख्वाहिशमन्द (इच्छुक हैं) ईमानदारों के साथ बड़े शफ़ीक व मेहरबान (दयालू) है।

(सूरह तौब 128)

सहाबा में से हर व्यक्ति समझता था कि वह आपका सबसे अधिक प्रिय आदर वाला है। आपके विसाल की सूचना पर कुछ ने यकीन नहीं किया। इनमें सबसे आगे हज़रत उमर थे। उन्होंने उनकी बातों पर यकीन नहीं किया जिन्होंने आपके विसाल की खबर दी थी (सूचना) खबर पाकर वह सीधे मस्जिद गये। और खुतबे में लोगों से कहा कि आपका विसाल उस समय तक नहीं हो सकता जब तक मुनाफ़िक खतम न हो जाये।

हजरत अबूबकर का आख़री फैसला

हजरत अबू बक्र पहाड़ के समान अटल थे। वह न तो हिल सकते थे न डुल सकते थे। हज़रत अबू बक्र को आपके विसाल की सूचना मिली तो शीघ्र घर से निकले और मस्जिद पहुँच गये उस समय हज़रत उमर लोगों से बात चीत कर रहे थे। वह सीधे हज़रत आयशा के कमरे में आये। उस समय आपका जिस्मे मुबारक (पवित्र) शव कपड़े से ढका हुआ था। हज़रत अबू बकर ने आपका चेहरा मुबारक खोला उसका बोसा लिया और फरमाया कि आप पर मेरे माता पिता कुरबान जो मौत आपके लिए लिखी थी उसका मजा आपने चख लिया। इसके बाद दोबारा मौत की तकलीफ न होगी फिर आप पर चादर डाल दी। फिर आपके कमरे से बाहर आ गये हज़रत उमर को बाते करते पाकर हज़रत उमर से कहा कि ऐ उमर ठहरो और खामोश हो जाओ लेकिन उन्होंने चुप होने से इनकार कर दिया। उनका खामोश न होते देखकर हज़रत अबू बक्र लोगों से मुखातब हुए। लोग उमर की बातें छोड़कर हज़रत अबू बक्र की बाते सुनने लगे। हज़रत अबू बक्र ने पहले अल्लाह की तारीफ की और फिर कहा कि ऐ लोगो जो कोई (हज़रत) मुहम्मद की पूजा करता था तो वह जान ले कि मुहम्मद की वफ़ात (देहांत) हो गई और जो अल्लाह की पूजा करता था वह जान ले कि अल्लाह सदा के लिए जिन्दा है। फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी–

और मोहम्मद तो रसूल हैं। आपसे पहले और भी बहुत से रसूल गुजर चुके हैं। सो यदि आपका विसाल हो जाये या आप शहीद हो जायें तो क्या तुम लोग (अपने दीन से) वापस लौट जाओगे और जो शख्स (व्यक्ति) अपने दीन से फिरा वह अल्लाह का कोई नुकसान (हानि) नहीं करेगा और अल्लाह जल्द ही शुक्र करने वालों को बदला देगा।

(आले इमरान 3/244)

जो सहाबा इस समय मौजूद (उपस्थित) थे कहते हैं कि ऐसा जान पड़ता था जैसे यह आयत हजरत अबू बक्र ने पढ़ी उसी समय उतरी है। और हजरत अबू बक्र ने उनकी बात कह दी। हज़रत उमर कहते हैं कि बखुदा जब मैंने हज़रत अबू बकर के मुँह से यह आयत सुनी तो मैं हैरान रह गया और मै जमीन पर गिर गया। मेरे पैर मेरा बोझ नहीं उठा सकते थे। मैंने समझ लिया कि हुजूर का इन्तकाल हो गया।

खिलाफत पर हजरत अबू बक्र से बेअत

उस समय जब मुसलमानों ने सकीफ़ा बनी साअ्दा में हज़रत अबू बक्र की खिलाफत पर बेअत की। ताकि शैतान को भड़काने और लोगों में फूट डालने का मौका अवसर न मिल पाये। और मुसलमानों में उस समय जब नबी (सल्ललाहु अलैहि व सल्लम) इस दुनिया से जा रहे हों इत्तिहाद (एकता) हो उनका अमीर (नेता) हो जो उनके मामले को देखे भाले। उसी में आपकी तजहीज व तदफीन शामिल है।

मुसलमानों ने आपको कैसे रुख़सत (विदा) किया और आप पर कैसे नमाज़ पढ़ी

लोग शांत हो गये उनकी हैरत और परेशानी समाप्त हो गयी और लोग उन कार्यों में मशगूल (व्यस्त) हो गये जिनकी तालीम (शिक्षा) आपने दुनिया छोड़ते समय दी थी। जब सहाबा ने आपके गुस्ल (नहलाकर) और कफ़न से फुरसत पाई जिसको आपके परिवार ने किया था तो आपका जसदे मुबारक (पवित्र शव), आपके हुजरे मुबारक (कमरा) में रख दिया गया। उस समय हज़रत अबू बक्र ने बताया कि उन्होंने रसूलुल्लाह को यह कहते सुना था कि जब भी दुनिया से कोई नबी जाता है तो उसको वहीं दफ़न कर दिया जाता है

जहाँ उसका विसाल हुआ है। इसलिए वहीं आपकी लहद (कब्र) खोदकर तैयार की गई। यह कार्य हजरत अबूतलहा अंसारी ने किया। फिर सहाबा ने टुकड़ियों में जाकर आप पर नमाज़ पढ़ी। जब मर्द पढ़ चुके तो महिलाओं ने जा जा कर आप पर नमाज पढ़ी। महिलाओं के बाद बच्चों और बच्चियों ने जा जा कर आप पर नमाज पढ़ी। कोई आपकी कब्र पर नहीं झुका।

वह दिन मंगल का था, मदीने में वह दिन ग़म का था। सुबह हज़रत बिलाल ने जब अजान दी तो आपका जिक्र आया तो सब रो दिये उससे मुसलमानों का ग़म (दु:ख) और बढ़ गया। लोग उस अजान के सुनने के आदी थे जिसमें आप खुद (स्वयं) मौजूद रहते थे।

उम्मुल मोमेनीन हजरत उम्मे सलमा फरमाती है कि

हम मुसीबत और कष्ट जो आपके बाद हम पर पड़ा आपकी वफ़ात की याद करते तो कम पड़ जाता था आप फ़रमाया करते थे ऐ लोगो जब किसी मुसलमान को कोई कष्ट या मुसीबत पहुँचे तो मेरी मुसीबत याद कर ले उसको शान्ति मिलेगी। मेरी उम्मत में किसी भी शख्स को मेरी जुदाई की मुसीबत से जियादा मुसीबत नहीं पहुंची।

उम्माहातुल मोमेनीन

हज़रत खदीजा बिन खुवेलद अलकिरशिया अल असदिया आपकी पहली बीबी (प्रथम पवित्र पत्नी थीं) नबी होने के पूर्व आपने उस समय उनसे शादी की जब हजरत खदीजा की आयु 40 वर्ष थी। हजरत खदीजा का विसाल हिजरत से 3 वर्ष पूर्व हुआ हज़रत इब्राहिम के अलावा सारी संतान हज़रत खदीजा से हुई। इनके इन्तेक़ाल के बाद आपने हज़रत सौदा बिन्त जमआ कुरैशिया से, फिर हज़रत आयशा

बिन्त अबू बक्र सिद्दीक से निकाह फरमाया। हज़रत आयशा महिलाओं में सबसे अधिक विद्वान (आलिमा) और फ़कीहा थीं। फिर आपने हज़रत हफ़सा फिर आपने हज़रत जैनब बिन्त खुजैमा से निकाह फ़रमाया उनका दो माह के बाद इन्तेकाल हो गया। फिर आपने हज़रत उम्मे सलमा हिन्द बिन्त अबू उमैय्या अल किरशिया अलमख़ जूमिया से निकाह फ़रमायां इनका इन्तेक़ाल सबसे आखीर में हुआ। फिर आपने हज़रत जैनब बिन्त जहश जो आपकी फुफी उमैय्या की बेटी थी और उसी जुबे ज्वेरिया बिन्त अलहारिस से निकाह फरमाया। फिर उम्मे हबीबा रमला बिन्ते अबी सुफ़यान, फिर सफीया बिन्ते हुई बिन्त अखतब से निकाह फरमाया इसके बाद मैमूना बिन्त अल हारिस अल हिललिया से निकाह फ़रमाया यह आखिरी हैं जिनसे आपने निकाह फ़रमाया। जब आपका विसाल हुआ आपके अक्द (निकाह) में 9 पत्नियां थीं। हजरत खदीजा तथा हज़रत जैनब का इन्तेकाल आपकी जिन्दगी में हो गया था। विसाल के समय आपके निकाह में 2 बाँदिया थीं। एक हज़रत मारया बिन्त शमून अलमिसरिया जो मक्कूकस मिसर के बादशाह ने आपको हदये में दी थी और जो हज़रत इब्राहीम की माता थीं और दूसरी रैहाना बिन्त जैद थीं जो कबीले बनी नजीर से थीं वह मुसलमान हो गई थी। रसूलुल्लाह ने उन्हें आजाद करके निकाह फ़रमा लिया था।

आपकी अवलाद

हज़रत खदीजा से आपका बेटा जिनका नाम कासिम था और इन्हीं के नाम पर आपकी कुन्नीयत अबुल कासिम थी। इनका इन्तेकाल बचपन में ही हो गया था। फिर जैनब, फिर रूकय्या, उम्मे कुलसुम, फ़ातिमा, अब्दुल्लाह, (तय्यब, ताहिर) का जन्म हुआ ताहिर व तैय्यब अब्दुल्लाह के लक़ब थे। यह सब औलाद हज़रत खदीजा से हुई।

हज़रत फ़ातिमा आपको अपनी औलादों में सबसे अधिक महबूब थीं। आपने उनसे बताया कि वह जन्नत में समस्त महिलाओं की सरदार होगी। हज़रत फ़ातिमा की शादी हज़रत अली से हुई जो आपके चाचा के लड़के थे। इनके दो लड़के एक हसन तथा दूसरे हुसैन थे। आपने इन दोनों के लिए फ़रमाया कि यह दोनों जन्नत में नव जवान जन्नतियों के सरदार होंगे।

हज़रत मारिया किबतिया से इब्राहिम पैदा हुए वह जब ज़रा बड़े हुए तो उनका इन्तेक़ाल हो गया। उनके इन्तेक़ाल के समय आपने फ़रमाया था कि आँख रोती है, दिल परेशान है हम अल्लाह को नाराज करने वाली कोई बात नहीं कर सकते। ऐ इब्राहिम हमें तुम्हारी जुदाई का ग़म है।

आपके अखलाक व आदाब

हज़रत अली जो आपके साथ अधिक रहे आपके अखलाक़ आपके व्यौहार दूसरे लोगों के मुकाबले ज्यादा जानते थे। वह फ़रमाते थे कि आपने कभी गाली नहीं बकी किसी से बद कलामी नहीं की बाजार में किसी से चीख कर या ऊँची आवाज में बात नहीं की कभी बुराई का बदला बुराई से नहीं दिया उसको माफ किया जिसने आपके साथ बुराई की। कभी अपने हाथ से किसी को नहीं मारा सिवाये इसके आपने अल्लाह की राह में जिहाद किया कभी औरत (महिला) और ना ही आपने किसी नौकर को मारा। मैंने किसी से आपको अपना बदला लेते कभी नहीं देखा। हां यदि किसी ने अल्लाह की हुरमत को खत्म करना चाहा तो आपको गुस्सा आता और आप इस मामले में सख्त होते आपको जिन कामों के करने का हुक्म दिया जाता आप उसमें से सरल कार्य को करते जब घर में होते तो आम आदमियों की तरह

रहते आप अपने कपड़े स्वयं (खुद) धोते बकरी का दूध खुद दूहते और अपना काम आप स्वयं करते। आप जब भी किसी मजलिस में बैठते या उठते तो अल्लाह का जिक्र करते हुए किसी मजलिस में जाते तो आपको जहाँ जगह (स्थान) मिलती वहीं बैठ जाते और ऐसा ही करने का आप सबको आदेश भी देते। आप मजालिस में बैठने वाले को उसका हक़ देते। हर आदमी समझता कि वही आपकी नजरों में जियादा इज्ज़त वाला है। जो कोई आपको अपने पास बिठाता या आपसे मामला करता तो आप उसके सामने खड़े रहते। उस समय तक जब तक वह वहाँ से चला नहीं जाता कोई आपसे अपनी जरूरत बताता या सवाल करता तो उसकी जरूरत को पूरी फरमाते। या उसको नरमी से मुतमइन (संतुष्ट) करके वापस करते।

आप अखलाक और अच्छे व्यवहार में बहुत बढ़े हुए थे। आप लोगों में उनके पिता के स्थान पर थे। आप सबके साथ समानता बराबरी का मामला फ़रमाते। आपकी मजलिस शर्मो व हया वाली मजलिस होती थी। आप सबसे अधिक सख़ी (दानी) थे। सबसे ज्यादा सच बात कहने वाले नरम तबीअत वाले और परिवार में सबसे अच्छी तरह रहने वाले थे। जो आपको अचानक देखता डरता और जो आपसे मामला करता वो आपसे महब्बत करने लग जाता। आपको जो देखता कहता कि आप जैसा न मैंने आपसे पहले दखा और न आपके बाद।

अल्लाह ने अपने नबी को हसीन व जमील बनाया और उनको अपनी महब्बत और हैबत अता की, हजरत बरा बिन आजिब आपकी तारीफ़ में फ़रमाते हैं कि–

आप मियाना कद थे। मैंने आपको एक बार लाल लिबास में देखा मुझे आप इतने हसीन व जमील नज़र आये कि इससे पहले इतनी

हसीना व खूबसूरत चीज़ नहीं देखी। आपके अवसाफ़ बताते हुए हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि आप मियाना क़द थे लम्बाई के क़रीब आपकी घनी व सियाह (काली) दाढ़ी थी, पट्टों के बाल लम्बे और दोनों आखों के बाल घने थे। दोनों कंधों के बीच फासला ज्यादा था कहते हैं कि मैंने आप जैसा न पहले देखा और न बाद में। हज़रत अनस कहते हैं कि मैंने किसी रेशम व हरीर को आपकी हथेली से ज्यादा नरम नहीं पाया और मैंने आपकी खुशबू से ज्यादा अच्छी कोई खुशबू नहीं सूंघी।

(समाप्त)